भा० दि० जैनसंघग्रन्थमालायाः प्रथमपुष्पस्य एकादशोदलः

श्रीयतिवृषभाचार्यरचितचूर्णिसूत्रसमन्वितम्

श्रीभगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीतम्

# कसायपाहुडं

तयोश्च

## श्रीवीरसेनाचार्यविरचिता जयधवला टीका

[ सप्तमोऽधिकारः वेदकअनुयोगद्वारम् ]

सम्पादकौ

प० फूलचन्द्र
सिद्धान्तशास्त्री सिद्धान्ताचाय
सम्पादक महाबन्ध सहसम्पादक
धवला

प० कैलाशचन्द्र
सिद्धान्तरत्न सिद्धान्ताचार्य,
सिद्धान्तशास्त्री न्यायतीर्थ
प्रधानाचाय स्याद्वाद महाविद्यालय
काशी

प्रकाशक
मन्त्री साहित्य विभाग
भा० दि० जैन संघ, चौरासी, मथुरा

वि० स० २०२५ ] वीरनिर्वाणाब्द २४९५ [ ई० सं० १९६८

मूल्यं रुप्यकत्रयोदशकम्

# भा० दि० जैनसंघ ग्रंथमाला

इस ग्रन्थमाला का उद्देश्य
संस्कृत प्राकृत आदिमें निबद्ध दि० जैनागम, दर्शन,
साहित्य पुराण आदिका यथासम्भव
हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशन

---

सञ्चालक
**भा० दि० जैनसंघ**

ग्रन्थाङ्क १-११

प्राप्तिस्थान
मैनेजर
भा० दि० जैनसंघ
चौरासी, मथुरा

मुद्रक
आनन्द प्रेस, भेलूपुर वाराणसी-१

स्थापनाब्द ] प्रति ८०० [ वी० नि० स० २४६८

Sri Dig. Jain Sangha Granthamala No I-XI

# KASAYA-PAHUDAM
# XI
## VEDAK

BY
GUNADHARACHARYA

WITH
Churni Sutra Of Yativrashabhacharya

AND
THE JAYADHAVALA COMMENTARY OF
VIRASENACHARYA THERE-UPON

*EDITED BY*
Pandit Phoolchand Sidhantshastry
*EDITOR MAHABANDHA*
*JOINT EDITOR DHAVALA*

Pandit Kailashchandra Siddhantashastri
Nyayatirtha Siddhantaratna
Pradhanadhyapak Syadvada Digambara Jain
Mahavidyalaya Varanasi

*PUBLISHED BY*
THE SECRETARY PUBLICATION DEPARTMENT
THE ALL-INDIA DIGAMBAR JAIN SANGHA
CHAURASI MATHURA

VIKRAMA S. 2025 VIRA-SAMVAT 2495 1968 A. C.

# Sri Dig. Jain Sangha Granthamala

**Foundation year— ]** **[ Vira Niravan Samvat 2468**

*Aim Of the Series —*

## Publication of Digambara Jain Siddhanta, Darshana. Purana, Sahitya and other woks in Prakrit atc-, possibly with Hindi Commentary and Translation

*DIRECTOR—*

**SRI BHARATA VARSAIYA**
**DIGAMBARA JAINSANGHA**
NO 1 VOL XI

*To be had from —*

THE MANAGER
**SRI DIG JAIN SANGHA,**
CHAURASI, MATHURA.

PRINTED BY
Anand Press, Bhelupur, Varanasi-1

**800 Copies,** **Price Rs Thirteen only**

# प्रकाशक की ओर से

कसायपाहुड ( श्री जयधवल जी ) का दसवा भाग जाडोमे प्रकाशित हुआ था। एक वर्षके भीतर ही उसका ग्यारहवाँ भाग स्वाध्याय प्रेमी पाठकोंके हाथोंमें देते हुए हमे परम प्रसन्नता होना स्वाभाविक है ।

अब इस महान् ग्रन्थराज के ४ भाग छपना शेष हैं। हमारी तीव्र भावना है कि शीघ्र ही शेष भागो को भी छपाकर प्रकाशित कर दिया जाये। किन्तु यह उदार दानियोके दातृत्व पर ही निर्भर है। यदि उदार दाती इस सत्कार्यमे हाथ बटावे तो यह कार्य शीघ्र पूरा हो सकता है।

जैन समाजमे प्रतिवर्ष अनेक बिम्बप्रतिष्ठाएं होती है, नवीन मन्दिरो का निर्माण होता है। उनमे समाजका लाखों रुपया व्यय होता है। श्री जयधवल जी तो उन्हीं भगवानकी वाणीसे प्रकट हुए है। उनका प्रकाशन कार्य बिम्ब प्रतिष्ठा से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।
पं० आशाधर जी ने अपने सागारधर्मामृतमे लिखा है—

ये यजन्ते श्रुतं भक्त्या ते यजन्तेऽञ्जसा जिनम् ।
न किञ्चिदन्तरं प्राहुराप्ता हि श्रुतदेवयो ।।

जो भक्तिपूर्वक जिनवाणीकी पूजा करते हैं वे यथार्थ में जिनेन्द्रदेवकी ही पूजा करते है, क्योंकि गणधरादि आप्त पुरुषोने जिन और जिनवाणीमे कुछ भी भेद नहीं कहा है।

इसीसे मन्दिरोमे जिनदेवकी मूर्तिके साथ जिनवाणीकी मूर्तिरूप शास्त्र भी विराजमान किये जाते है। जैसे पुरानी मूर्तियोके होते हुए भी नवीन मूर्तिया पधराई जाती हैं, वैसे ही शास्त्रभण्डारोमे पुराने शास्त्रोके होते हुए भी नये नये प्रकाशित हुए शास्त्र भी विराजमान करना चाहिये। श्री जयधवल जी तो ऐसा महान् ग्रन्थ है कि इसका दुबारा प्रकाशित होना संभव नही है। ऐसे ग्रन्थराजको तो अवश्य मन्दिरोमे विराजमान करना चाहिये। यदि मन्दिरोके द्रव्यका उपयोग जिनवाणीके प्रकाशनमें तथा खरीदनेमे किया जाये तो इससे जिनवाणीका उद्धार होनेके साथ मन्दिरोके द्रव्यका भी सदुपयोग होगा।

दीपावली
वी० नि०स० २४९५

जिनवाणीसेवक
कैलाशचन्द्र शास्त्री

# विषय परिचय

वेदक महाधिकारके मुख्य अनुयोग द्वार चार हैं—प्रकृतिउदीरणा, स्थितिउदीरणा, अनुभागउदीरणा और प्रदेशउदीरणा। इनमेंसे प्रकृति उदीरणा और स्थितिउदीरणाका स्पष्टीकरण पहले ( भाग १० में ) कर आये हैं। शेष दोका स्पष्टीकरण यहाँ अवसर प्राप्त है। उनमेसे सर्वप्रथम अनुभागउदीरणाका स्पष्टीकरण करते हैं—

## १. मोहनीय अनुभाग उदीरणा

वेदक महाधिकारकी दूसरी गाथाका दूसरा पाद है—'को व के य अणुभागे।' इसमें इतना ही कहा गया है कि 'कौन जीव किस अनुभागमे मिथ्यात्व आदि कर्मोंका प्रवेशक है।' इसका विशेष व्याख्यान करते हुए आचार्य यतिवृषभने अपने चूर्णिसूत्रों में 'उदीरणा' की व्याख्या करते हुए बतलाया है कि 'जो अनुभाग प्रयोगसे अपकर्षितकर उदयमें दिया जाता है वह उदीरणा है। जो अनुभाग वर्तमानमे पक्व नही है, प्रयोग विशेषसे उसे पचाना उदीरणा है यह इसका तात्पर्य है।

'प्रयोग'का अर्थ प्रकृतमे परिणामविशेष है। जीवका जो परिणामविशेष प्रकृत उदीरणाका अविनाभावी होता है वह उस उदीरणाका बाह्य निमित्त कहलाता है। इस विषयको स्पष्टरूपसे समझनेके लिए जयधवला भाग १० पृ० १२३-१२४ के इस वचन पर दृष्टिपात करना चाहिए—

कसायोवसामणादो परिवदिदो उवसंतदसणमोहणीयो दंसणमोहउवसंतद्धाए दुचरिमादिहेट्ठिमसमएसु जइ आसाण गच्छइ तदो तस्स सासणभावं पडिवण्णस्स पढमसमए अणंताणुबंधीणमण्णदरस्स पवेसेण बावीस-पवेसट्ठाणं होइ। कुदो तत्थाणंताणुबंधीणमण्णदरपवेसणियमो ? ण, सासणगुणस्स तदुदयाविणाभावित्तादो। कथं पुव्वमसंतस्साणंताणुबंधिकसायस्स तत्थुदयसंभवो ? ण, परिणामपाहम्मेण सेसकसायदव्वस्स तक्कालमेव तदायारेण परिणमिय उदयदंसणादो।

कषायोपशामनासे गिरता हुआ उपशान्त दर्शनमोहनीय जीव दर्शनमोहके उपशामनाके कालके अन्तर्गत द्विचरम आदि अधस्तन समयोंमे यदि सासादन गुणस्थानको प्राप्त होता है तो सासादनभावको प्राप्त होनेवाले उस जीवके प्रथम समयमें अनन्तानुबन्धियोमेसे किसी एक प्रकृतिका प्रवेश होनेसे बाईस प्रकृतिक प्रवेशस्थान होता है।

शंका—वहाँ अनन्तानुबन्धियोंमेसे किसी एक प्रकृतिके प्रवेशका नियम क्यो है ?

समाधान—नही, क्योकि सासादन गुण उसके उदयका अविनाभावी है।

शंका—पूर्वमे ( उदय कालके पूर्वमे ) सत्तासे रहित अनन्तानुबन्धी कषायका वहाँ पर उदय कैसे सम्भव है ?

समाधान—नही, क्योकि परिणामोके माहात्म्यवश शेष कषायोका द्रव्य उसी समय उस रूपसे परिणमकर उसका उदय देखा जाता है।

इससे स्पष्ट है कि जीव शास्त्रमे जीवके जिस सासादन गुणका अनन्तानुबन्धी चतुष्कमेंसे अन्यतम कषायकी उदीरणा अविनाभाव सम्बन्धवश बाह्य निमित्त कही गई है। यहाँ कर्मशास्त्रमें उसी कारणवश वही परिणामविशेष अनन्तानुबन्धीचतुष्कमेंसे अन्यतम कषायकी उदीरणाका बाह्य निमित्त कहा गया है। इसीका नाम बाह्य-निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है, जिसका विवक्षाके अनुसार अदल-बदलकर कथन किया जाता है। जहाँ संयोगी जीव परिणामकी कार्यरूपसे विवक्षा होती है वहाँ उसका अविनाभावी कर्मोदय-

उदीरणा उसका बाह्य निमित्त कहा जाता है और जहाँ कर्मोदय-उदीरणाकी कार्यरूपसे विवक्षा होती है वहाँ उसका अविनाभावी जीवपरिणाम तथा यथासम्भव अन्य बाह्य सामग्री उसका बाह्य निमित्त कहा जाता है। यह बात उक्त उल्लेखसे तो स्पष्ट है ही, कषाय-प्राभृतकी गाथा ५९ 'कदि आवलियं पवेसेइ' इत्यादिके 'खेत्त-भवकाल-पोग्गल' इत्यादि वचनसे भी स्पष्ट है।

यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि जहाँ भी न्याय-शास्त्रमे कार्य-कारणके मध्य क्रमभावी अविनाभाव सम्बन्धका उल्लेख किया गया है वहाँ वह उपादन-उपादेयभावको ध्यानमें रखकर ही किया गया है, बाह्य निमित्त-नैमित्तिक भावको ध्यानमे रखकर नही, क्योकि बाह्य-निमित्त-नैमित्तिकभावका उल्लेख उन एकाधिक द्रव्योकी ऐसी विवक्षित पर्यायोमे किया जाता है जिनका एक कालमे होनेका नियम है। जैसे क्रोध कर्मका उदय और क्रोध भाव एक हो कालमे होते है, इसलिए क्रोध-कर्मके उदयको बाह्य निमित्त कहते हैं और क्रोध भावको उसका नैमित्तिक। इसी प्रकार सत्र बंजानना चाहिए।

अनुभाग फलदान शक्तिका दूसरा नाम है। उदय-उदीरणाकालके पूर्वतक यह द्रव्यरूपमे रहती है। किन्तु उदय-उदीरणाकालके प्राप्त होते ही वह पर्यायरूपसे प्रगट हो जाती है जो पर्यायगत अपने-अपने, अविभागप्रतिच्छेदोंके द्वारा परिलक्षित होती है। यहाँ द्रव्यशक्ति पदसे मात्र त्रैकालिक योग्यताको ग्रहण न कर योग और कषायको निमित्तकर प्रतिसमय कर्मबन्धके कालमे प्राप्त होनेवाली ऐसी योग्यता ली गई है जो यथायोग्य उत्तरकालमे फलदान सामर्थ्यसे सम्पन्न होती है।

प्रकृतमे उदीरणाका प्रकरण होनेसे यहाँ विचार यह करना है कि स्पर्धकगत उस योग्यतामेसे किस योग्यता सम्पन्न स्पर्धकोंका अपकर्षण होता है और किन स्पर्धकोका नही होता? इसी प्रश्नका समाधान करते हुए यहाँ पर बतलाया है कि प्रथम स्पर्धक से लेकर जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापनाप्रमाण अनन्त स्पर्धकोका अपकर्षण नहीं होता। इसके आगे अन्य जितने भी स्पर्धक है उनका अपकर्षण होनेमे कोई बाधा नही है। यहाँ अपकर्षणके योग्य जो अनुभाग अपकर्षित होकर अन्य जिस अनुभागरूप परिणम जाता है उसकी निक्षेप संज्ञा है और अपकर्षणके योग्य अनुभाग तथा निक्षेपरूप अनुभागके मध्य जो अनुभाग रहता है उसकी अतिस्थापना संज्ञा है।

## २. मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणा

यह अर्थपद है। इसके अनुसार अनुभाग उदीरणा दो प्रकारकी है—मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणा और उत्तरप्रकृति अनुभाग उदीरणा। यहाँ सर्व प्रथम मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणाका अनुगम करते समय ये तेईस अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। संज्ञा, उत्कृष्ट उदीरणा, अनुत्कृष्ट उदीरणा, जघन्य उदीरणा, अजघन्य उदीरणा, सर्व उदीरणा, नोसर्व उदीरणा, सादि उदीरणा, अनादि उदीरणा, ध्रुव उदीरणा, अध्रुव उदीरणा, स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोकी अपेक्षा भगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व तथा भुजगार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थान।

मोहनीय कर्मके प्रत्येक अनुभागकी निश्चित संज्ञा है यह बतलानेके लिए सज्ञा अनुयोगद्वारका निर्देश किया है। वह सज्ञा दो प्रकारकी है—घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा। उनमेसे प्रत्येक जघन्य और उत्कृष्टके भेदसे दो दो प्रकारकी है। उनमेंसे अपने अवान्तर भेदोके साथ घातिसंज्ञाका विचार करते हुए बतलाया है कि सामान्यसे मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा नियमसे सर्वघाति है तथा अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति और देशघाति दोनो प्रकारकी है। इसी प्रकार मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा नियमसे देशघाति है। और अजघन्य अनुभाग उदीरणा देशघाति और सर्वघाति दोनों प्रकारको है।

स्थानसंज्ञाका निरूपण करते हुए बतलाया है कि सामान्यसे मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा नियमसे चतुःस्थानीय है तथा अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है, त्रिस्थानीय है, द्विस्थानीय है और एक स्थानीय भी है। इसी प्रकार मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा नियमसे एक स्थानीय है तथा अजघन्य अनुभाग

उदीरणा एक स्थानीय है, द्विस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और चतुःस्थानीय भी है। इसका विशेष विचार महाबन्ध और कर्मकाण्ड आदि सिद्धान्त ग्रन्थोके आधारसे कर लेना चाहिए।

यह सामान्यसे मोहनीय कर्मकी अनुभाग उदीरणाको ध्यानमें रखकर चूर्णसूत्र और उच्चारणाके अनुसार स्पष्टीकरण किया गया है। आगे सर्व और नोसर्व आदि अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर इसीका उच्चारणाके अनुसार विशेष व्याख्यान किया गया है।

## ३. उत्तर प्रकृति अनुभाग उदीरणा

यहाँ मोहनीय उत्तर प्रकृति अनुभाग उदीरणाका विचार २४ अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर किया गया है। पूर्वोक्त २३ अनुयोगद्वारोंमे एक सन्निकर्षके मिला देने पर कुल २४ अनुयोगद्वार होते है। उनमेसे सर्व प्रथम संज्ञाका विचार करते हुए उसके दो भेदोका निर्देश किया गया है। वे ये है—घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा। घातिसंज्ञाके दो भेद है—सर्वघाति और देशघाति। स्थानसंज्ञा लतासदृश आदिके भेदसे चार प्रकारकी है। उत्तर प्रकृतियोंमेसे कौन प्रकृति किसरूप है इसका स्पष्टीकरण करते हुए बतलाया है कि मिथ्यात्व और प्रारम्भकी बारह कषायोंकी अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है। इन प्रकृतियोकी अनुभाग उदीरणा द्वारा सम्यक्त्व और संयमका निरवशेष विनाश होता है, इसलिए वह सर्वघाति है। यद्यपि प्रत्याख्यान कषायोकी अनुभाग उदीरणाके होने पर भी संयमासंयम गुणकी प्राप्ति होती है, फिर भी वह सकल संयमकी प्रतिबन्धी होनेके कारण सर्वघाति ही है। इनकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा नियमसे चतु.स्थानीय होती है तथा अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतु स्थानीय, त्रिस्थानीय, और द्विस्थानीय होती है।

जिस प्रकार मिथ्यात्वकी अनुभाग उदीरणासे सम्यक्त्व संज्ञावाली जीव पर्यायका अत्यन्त उच्छेद होता है उस प्रकार सम्यक्त्व प्रकृतिकी अनुभाग उदीरणा द्वारा उसका अत्यन्त उच्छेद नही होता, इसलिये सम्यक्त्वकी अनुभाग उदीरणा देशघाति तथा एकस्थानीय और द्विस्थानीय है। किन्तु सम्यग्मिथ्यात्वकी अनुभाग उदीरणा द्वारा सम्यक्त्व संज्ञावाली जीवपर्यायका अत्यन्त उच्छेद हो जाता है, इसलिए वह सर्वघाति और द्विस्थानीय है।

चार सज्वलन और तीन वेदोंकी अनुभाग उदीरणा देशघाति और सर्वघाति दोनो प्रकारकी है, क्योकि इनकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा नियमसे सर्वघाति है, जघन्य अनुभाग उदीरणा नियमसे देशघाति है तथा अजघन्य और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा दोनो प्रकारकी है। तात्पर्य यह है कि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक उक्त कर्मोकी अनुभाग उदीरणा संक्लेश परिणामवश सर्वघाति होती है और विशुद्धिरूप परिणाम वश देशघाति होती है। तथा संयतासंयतसे लेकर आगे सर्वत्र अपने-अपने उदीरणा स्थल तक नियमसे देशघाति होती है। वहाँ इनकी सर्वघाति अनुभाग उदीरणाके होनेका विरोध है। इस प्रकार इनकी अनुभाग उदीरणाके देशघाति और सर्वघाति दोनो प्रकारकी होनेके कारण वह यथा-सम्भव एकस्थानीय, द्विस्थानीय, त्रिस्थानीय और चतु स्थानीय होती है। अन्तरकरण करनेके बाद नियमसे एक-स्थानीय होती है। तथा गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें द्विस्थानोय होती है और मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमे द्विस्थानीय, त्रिस्थानीय तथा चतु स्थानीय होती है

अब रही छह नोकषाय सो इनकी अनुभाग उदीरणा भी देशघाति और सर्वघाति दोनों प्रकारकी होती है, क्योंकि चौथे गुणस्थान तक तो इनकी अनुभाग उदीरणाकी देशघाति और सर्वघाति दोनो प्रकारसे प्रवृत्ति देखी जाती है। मात्र पाँचवें गुणस्थानसे लेकर उसकी प्रवृत्ति देशघातिरूपसे ही होती है। इनकी अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय तो बन नही सकती, क्योंकि अपूर्वकरण गुणस्थान तक ही इनकी उदय-उदीरणा होती है। अतः वह द्विस्थानीय, त्रिस्थानीय और चतु.स्थानीय होती है। देशसंयत गुणस्थानसे लेकर आगेके गुणस्थानोमे तो वह देशघाति द्विस्थनीय ही होती है। मात्र पिछले चारों गुणस्थानोंमें वह यथासम्भव देशघाति और सर्वघाति दोनों प्रकारकी पाई जानेके कारण द्विस्थानीय, त्रिस्थानीय और चतुःस्थानीय तीनों

प्रकारकी सम्भव है। यहाँ यह स्पष्ट रूपसे जानना चाहिए कि प्रारम्भके चारों गुणस्थानों और सभी जीव-समासोंमें चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी यह अनुभाग उदीरणा देशघाति और सर्वघाति रूपसे दोनों प्रकारकी बन जाती है, क्योकि संक्लेश और विशुद्धि रूप परिणामोंका ऐसा ही माहात्म्य है।

इस प्रकार संज्ञा और उसके अवान्तर भेदोंका तथा उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट आदि अनुयोग-द्वारोका निरूपण करनेके बाद चूर्णिसूत्रों द्वारा मिथ्यात्व आदि सभी कर्मोंकी उत्कृष्ट और जघन्य अनुभाग उदीरणाके स्वामित्वका विचार करते समय एक महत्त्वपूर्ण विषयकी चर्चा को गई है। बात यह है कि मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका स्वामी ऐसे मिथ्यादृष्टि जीवको बतलाया गया है जो सब पर्याप्तियों-से पर्याप्त है और उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाला है। अब प्रश्न यह है कि उक्त जीवके यह उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाले जीवके ही होती है या अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाले जीवके भी हो सकती है ? यदि मात्र उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाले जीवके ही मानी जाती है तो जो जीव स्थावरकायिकोंमें से आकर त्रसोमे उत्पन्न हुआ है उसके तो प्रारम्भमे उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मका सद्भाव बनेगा ही नही, उसके तो मात्र अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्म ही होता है, क्योकि वह द्विस्थानीय है। और संज्ञी पञ्चेन्द्रिय होकर ज्यो ही सत्कर्मकी उदीरणा करता है तब उसके चतु.स्थानीय अनुत्कृष्ट अनुभागका ही बन्ध होता है। अब यदि इस चतु.स्थानीय अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकके उत्कृष्ट सक्लेश परिणाम नही माने जाते हैं तो वह कभी भी उत्कृष्ट अनुभागके बन्धके योग्य नही हो सकता, और जब वह उत्कृष्ट संक्लेशरूप परिणामोके अभावमे उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध ही नही करेगा तो वह उसके अभावमे उत्कृष्ट सक्लेशरूप परिणामोका अविनाभावी उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक कैसे हो सकेगा अर्थात् त्रिकालमे नही हो सकेगा। इसलिए यह सिद्ध हुआ कि—

१. जो संज्ञी पञ्चेन्द्रिय चतु स्थानीय अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है उसके भी उत्कृष्ट सक्लेशरूप परिणाम हो सकते हैं।

२ जब कि उसके उत्कृष्ट संक्लेशरूप परिणाम हो सकते है तो वह जहाँ उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध कर सकता है वहाँ वह अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्ममे से भी उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा कर सकता है। इतना अवश्य है कि यह अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्म उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाके योग्य होना चाहिए।

समग्र कथनका तात्पर्य यह है कि जो उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला या तत्प्रायोग्य अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला उत्कृष्ट संक्लेश परिणामोसे युक्त संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव है वह मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका स्वामी है। इसी प्रकार यथायोग्य सब प्रकृतियोके भी उत्कृष्ट और जघन्य अनुभाग सत्कर्मके स्वामीका विचार चूर्णिसूत्रोके अनुसार कर लेना चाहिए। इस विषयमे अन्य विशेष वक्तव्य नही होनेसे यहाँ अलगसे स्पष्टीकरण नही कर रहे है।

यहाँ हमने सज्ञा और स्वामित्व अनुयोगद्वारोका संक्षेपमे स्पष्टीकरण किया है। इनके सिवाय अन्य जितने भी अनुयोगद्वार और भुजगारादि अधिकार है उन सबका स्पष्टीकरण इस अधिकारमें विस्तारसे किया हो गया है, इसलिए यहाँ उनका अलग-अलग स्पष्टीकरण नही किया है। इतना अवश्य है कि एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर तथा अल्पबहुत्व इनका विचार जहाँ चूर्णिसूत्रोंमे किया गया है वहाँ इन सहित सभी अनुयोगद्वारोका स्पष्ट खुलासा उच्चारणाके अनुसार किया गया है। मात्र एक जीवकी अपेक्षा अन्तर प्ररू-पणाका कथन करनेके बाद एक चूर्णिसूत्र अवश्य आया है जिसमे नाना जीवोकी अपेक्षा भंगविचय, भागा-भाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, सन्निकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारों की सूचना मात्र की गई है। तथा २४ अनुयोगद्वारोकी प्ररूपणाके समाप्त होनेके बाद एक चूर्णिसूत्र और है, जिसमे भुजगार, पद-निक्षेप और वृद्धि इन तीन अनुयोगद्वारों के जाननेकी सूचना की गई है।

## ४. मोहनीय प्रदेशउदीरणा

इसके बाद मोहनीय प्रदेश उदीरणाका प्रकरण प्रारम्भ होता है। इस प्रकरणमें मोहनीयके प्रदेशोंको

उदीरणाका यथासम्भव अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर विस्तारसे विचार किया गया है। इस दृष्टिसे विचार करते हुए उसके मूलप्रकृति प्रदेश उदीरणा और उत्तर प्रकृति प्रदेश उदीरणा ये दो भेद किये गये हैं।

## ५. मूल प्रकृति प्रदेशउदीरणा

उनमेंसे मूल प्रकृतिप्रदेश उदीरणाका परामर्श करते हुए चूर्णिसूत्रमें मात्र उसकी सूचना की गई है। इस सम्बन्धी समस्त विवरण उच्चारणाके अनुसार २३ अनुयोगद्वारों तथा भुजगार आदि अधिकारों द्वारा निबद्ध किया गया है। २३ अनुयोगद्वार वे ही हैं जिनका नाम निर्देश मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणाका परिचय कराते समय कर आये है। यहाँ यह बात विशेष रूपसे ध्यान देने योग्य है कि मोहनीय यह अप्रशस्त कर्म है, इसलिए जो तत्प्रायोग्य जीव इसकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करता है उसके इसकी प्रदेशउदीरणा प्राय· जघन्य होती है और जो जीव इसकी जघन्य अनुभाग उदीरणा करता है उसके इसकी प्रदेशउदीरणा उत्कृष्ट होती है। यह तथ्य इनके उत्कृष्ट और जघन्य स्वामित्व पर दृष्टिपात करनेसे भले प्रकार विदित हो जाता है। उदाहरणार्थ जो क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिक जीव अपने कालमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर मोहनीयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है वही जीव मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा और उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके विषयमे भी यथासम्भव जान लेना चाहिए। इसका कारण यह है कि जहाँ मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा उत्कृष्ट संक्लिष्ट तत्प्रायोग्य जीवके होती है वहाँ उसकी जघन्य अनुभाग उदीरणा क्षपकके अन्तिम अनुभाग उदीरणाके समय होती है। किन्तु इसके विपरीत जहाँ मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा क्षपकके अन्तिम प्रदेश उदीरणाके समय होती है वहाँ इसकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सर्वसंक्लिष्ट या तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट मिथ्यादृष्टिके होती है।

प्रकृति उदीरणामे तो इस प्रकारसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्यका भेद है नही, इसीलिए उसकी प्ररूपणा करते समय इस अपेक्षासे विवेचन नही किया गया है। हाँ स्थिति उदीरणामे ये उत्कृष्टादि भेद अवश्य ही सम्भव है सो वहाँ इसके विचारका आधार कुछ भिन्न प्रकारका है। बात यह है कि मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका सम्बन्ध उत्कृष्ट स्थितिबन्धके साथ है। जो जीव मोहनीयका उत्कृष्ट स्थिति॰ बन्ध करता है वही जीव एक आवलि काल जाने पर उसकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। उस समय वह उत्कृष्ट सक्लिष्ट है या नही यह विचार यहाँ मुख्य नही है। हाँ उसकी जघन्य स्थिति उदीरणाका स्वामी वही जीव है जो उसकी जघन्य अनुभाग उदीरणाका स्वामी है। कारण स्पष्ट है। बात यह है क्षपकश्रेणिमे विशुद्धि वश जैसे अप्रशस्त प्रकृतियोके अनुभागमे उत्तरोत्तर हानि होती जाती है उसी प्रकार सब कर्मोकी स्थितिमे भी उत्तरोत्तर हानि होती जाती है। इसलिए जो सामान्यसे मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणाका स्वामी है वही जघन्य स्थिति उदीरणाका भी स्वामी है। किन्तु मोहनीयकी सभी उत्तर प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति उदीरणाको प्राप्त करनेके लिए यह नियम नही लागू करना चाहिए। उसका कारण अन्य है, जिसका विशेष स्पष्टीकरण उत्तर प्रकृति प्रदेश उदीरणाका विवेचन करते समय करेंगे।

यह तो हम पहले ही बतला आये है कि मोहनीयकी प्रदेश उदीरणाका विवेचन जिन २३ अनुयोगद्वारों और भुजगार आदि अधिकारों द्वारा किया गया है उनका विशेष ऊहापोह उन उन अधिकारोमे किया ही है, इसलिए वहाँसे जान लेना चाहिए। विशेष वक्तव्य न होनेसे यहाँ हम पृथक् पृथक् स्पष्टीकरण नहीं कर रहे हैं।

## ६. उत्तरप्रकृति प्रदेश उदीरणा

उत्तर प्रकृति प्रदेश उदीरणाका विचार भी पूर्वोक्त २४ अनुयोगद्वार और भुजगार आदि अधिकारोंके द्वारा किया गया है। यहाँ स्वामित्वके सम्बन्धमें विचार करते समय अनुभाग-प्रदेश उदीरणा सम्बन्धी जिन

तुलनात्मक विशेषताओंका उल्लेख मूल प्रकृति प्रदेश उदीरणाका स्पष्टीकरण करते समय कर आये हैं उनको यहाँ भी जान लेना चाहिए। इसी तथ्यको आगे कोष्ठक द्वारा स्पष्ट किया जाता है—

| प्रकृति | उत्कृष्ट अनु० उदी० का स्वामी | जघन्य प्रदेश उदीरणाका स्वामी |
|---|---|---|
| मिथ्यात्व | उत्कृष्ट संक्लिष्ट संज्ञी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि। | उत्कृष्ट संक्लिष्ट या ईषत् मध्यमपरिणाम-वाला संज्ञी मिथ्यादृष्टि |
| १६ कषाय | ,, ,, ,, | ,, ,, ,, |
| स्त्री-पुरुषवेद | सर्व संक्लिष्ट ८ वर्षका ऊँट। | ,, ,, ,, |
| नपुंसकवेद, अरति शोक, भय, जुगुप्सा | सर्व संक्लिष्ट सातवें नरकका नारकी | ,, ,, ,, |
| हास्य, रति | सर्व संक्लिष्ट शतार-सहस्रार कल्पका देव। | ,, ,, ,, |
| सम्यक्त्व | सर्व संक्लिष्ट मिथ्यात्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टि। | सर्व संक्लिष्ट या ईषत् मध्यमपरिणाम-वाला मिथ्यात्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि। |
| सम्यग्मिथ्यात्व | सर्व संक्लिष्ट मिथ्यात्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टि। | सर्व संक्लिष्ट या ईषत् मध्यम परिणाम-वाला मिथ्यात्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टि। |

यह मोहनीयकी सब प्रकृतियोकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा और जघन्य प्रदेश उदीरणाके स्वामीका ज्ञान करानेवाला कोष्ठक है। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि जो मोहनीयकी सब प्रकृतियोकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करता है प्राय वही उनको जघन्य प्रदेश उदीरणा करता है। यहाँ यद्यपि नौ नोकषायोकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाके स्वामी अलग-अलग जीवोको बतलाया है किन्तु ऐसा भेद उनकी जघन्य प्रदेश उदीरणाके स्वामियोमे दृष्टिगोचर नही होता, पर इससे उक्त सामान्य नियमको स्वीकार करनेमे इसलिए अन्तर नही पडता, कारण कि जिनके स्त्रीवेद आदि नोकषायोकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है उनके भी उन नोकषायोकी जघन्य प्रदेश उदीरणा हो सकती है। इतना अवश्य है कि स्त्रीवेद आदि नोकषायोकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सर्व सक्लिष्ट या ईषत् मध्यम परिणामवाले संज्ञी मिथ्यादृष्टि अन्य जीवोंके भी हो सकती है। एक विशेषता तो यह है और दूसरी विशेषता यह है कि सब प्रकृतियोकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्व संक्लिष्ट परिणाम वालेके हो होती है। जब कि जघन्य प्रदेश उदीरणा सर्व संक्लिष्ट परिणामवालेके होकर भी ईषत् मध्यम परिणामवालेके भी होती है।

यह तो मोहनीयकी सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा और जघन्य प्रदेश उदीरणाके अधिकारी प्राय कैसे समान है इसका विचार है। अब मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा और उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा-के अधिकारी एक कैसे हैं इसका ज्ञान करानेके लिए दूसरा कोष्ठक देते है—

| प्रकृति | ज० अनु० उदीरणाका स्वामी | उ० प्रदेश उदी० का स्वामी। |
|---|---|---|
| मिथ्यात्व | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समय-वर्ती सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि। | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समय-वर्ती मिथ्यादृष्टि। |
| सम्यक्त्व | जिसके दर्शनमोहनीयकी क्षपणामे एक समय अधिक एक आवलिकाल शेष है वह। | जिसके दर्शनमोहनीयकी क्षपणामें एक समय अधिक एक आवलिकाल शेष है वह। |
| सम्यग्मिथ्यात्व | सम्यक्त्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समय-वर्ती सर्वविशुद्ध सम्यग्मिथ्यादृष्टि। | सम्यक्त्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समय-वर्ती सर्वविशुद्ध सम्यग्मिथ्यादृष्टि। |

| | | |
|---|---|---|
| अनन्तानुबन्धी ४ | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि । | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि । |
| अप्रत्याख्यान ४ | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध असंयतसम्यग्दृष्टि । | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध या ईषत् मध्यम परिणामवाला असंयतसम्यग्दृष्टि । |
| प्रत्याख्यान ४ | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध संयतासंयत । | संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध या ईषत् मध्यम परिणामवाला संयतासंयत । |
| संज्वलन ४ और तीन वेद | अपने-अपने वेदककालमें एक समय अधिक एक अवलिकाल शेष रहने पर क्षपकके । | अपने-अपने वेदककालमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर क्षपकके । |
| छह नोकषाय | क्षपक अपूर्वकरणके अन्तिम समयमे । | क्षपक अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें । |

ओघसे यह मोहनीयकी सब प्रकृतियोकी जघन्य अनुभाग उदीरणा और उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके अधिकारीका ज्ञान करानेवाला कोष्ठक है । इससे यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि जिस अवस्थासे युक्त जो-जो जीव मोहनीयकी मिथ्यात्व आदि प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा करता है उसी अवस्थासे युक्त वही वही जीव उनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इस तथ्यको ठीक तरहसे समझनेके लिए उपशमना प्रकरण और क्षपणा प्रकरण पर सम्यक्‌रूपसे दृष्टिपात करना चाहिए। वहाँ बतलाया है कि अपूर्वकरणके प्रथम समयसे ही स्थितिकाण्डकघात, अप्रशस्त कर्मोका अनुभागकाण्डकघात, गुणश्रेणि और गुणसंक्रम ये चार विशेषताएँ प्रारम्भ हो जाती है। ये विशेषताएँ आगे भी चालू रहती हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक समयमे वहाँ अप्रशस्त कर्मोंकी अनुभाग उदीरणा उत्तरोत्तर कम होती जाती है और प्रदेश उदीरणा बढती जाती है। यही कारण है कि मिथ्यात्व आदि कर्मोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणाका जो जीव स्वामी होता है वही जीव उनको उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका भी स्वामी होता है। अर्थात् जो जीव मिथ्यात्व या अन्य कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा करता है वही जीव उस कर्मकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा भी करता है। यह नियम मोहनीयके सब अवान्तर भेदों पर लागू होता है।

यह तो अनुभाग उदीरणा और प्रदेश उदीरणाके सम्बन्धका विचार है। किन्तु मोहनीयके सब अवान्तर भेदोकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थिति उदीरणाका विचार भिन्न प्रकारका है। बात यह है कि जिनकी बन्धसे उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त होती है उनकी तो उत्कृष्ट स्थितिबन्ध होनेके एक आवलि बाद उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा होती है और जो सक्रमसे उत्कृष्ट स्थितिवाली प्रकृतियाँ है उनकी संक्रमसे अपने-अपने योग्य उत्कृष्ट स्थितिको प्राप्त होनेके एक आवलि बाद उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा सम्भव है। मात्र सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा ऐसे वेदक सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है जो मिथ्यादृष्टि मिथ्यात्वका उत्कृष्ट बन्ध कर उसका घात किये बिना अन्तर्मुहूर्तमे वेदक सम्यग्दृष्टि हो जाता है उसके दूसरे समयमें सम्यक्त्वकी और उसीके अन्तर्मुहूर्तमें सम्यग्मिथ्यादृष्टि हो जाने पर सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। यह सब प्रकृतियोकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका विचार है।

जघन्य स्थिति उदीरणाके विषयमे ऐसा समझना चाहिए कि अनन्तानुबन्धी आदि बारह कषाय और छह नोकषाय इनकी जघन्य स्थिति उदीरणा एकेन्द्रिय जीवोंमे ही सम्भव है, अन्यत्र नहीं। कारण कि इनके उदयके साथ इनकी जघन्य स्थिति वही पर सम्भव है, अन्यत्र नहीं। मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, तीन वेद और चार संज्वलन इन कर्मोंकी जघन्य स्थिति उदीरणा एक स्थितिवाली यथासम्भव उपशमना या क्षपणाके समय बन जाती है। मात्र सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति उदीरणा ऐसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके बनती है जो मिथ्यादृष्टि वेदक-प्रायोग्य जघन्य स्थिति सत्कर्मके साथ सम्यग्मिथ्यादृष्टि होकर उसके अन्तिम समयमें अवस्थित है।

इस तुलनासे ज्ञात होता है कि उक्त प्रकारसे जो जीव मिथ्यात्व, तीन वेद और चार संज्वलनोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणाका और उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका स्वामी है वह तो इनकी जघन्य स्थिति उदीरणाका स्वामी हो ही सकता है, साथ ही अन्य प्रकारसे भी इन प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति उदीरणा बन जाती है। मात्र सम्यक्त्वकी जघन्य स्थिति उदीरणाका वही जीव स्वामी है जो इसकी जघन्य अनुभाग उदीरणा और उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका स्वामी है।

यह तुलनाके साथ सामान्यसे स्वामित्वका विचार है। इसी प्रकार अन्य सब प्ररूपणाका विचार कर लेना चाहिए। उसका विशेष विचार उस उस अनुयोगद्वारमें किया ही है, इसलिए यहाँ अलगसे ऊहापोह नहीं किया गया है।

## ७. चूलिका

कषायप्राभृतमें इस चूलिका अधिकारके पूर्व तक विभक्ति, संक्रम और वेदक इन महाधिकारोंका विवेचन हुआ है। इस चूलिका अधिकारका इन तीनोंसे सम्बन्ध है। इसमें मोहनीयकी २८ प्रकृतियोंके उदय, उदीरणा, बन्ध, संक्रम और सत्त्व इन पाँच पदोंका अवलम्बन लेकर अल्पबहुत्वका सविस्तर विचार किया गया है। यहाँ अन्य सब कथन तो सुगम है। मात्र उक्त पाँच पदोंके आश्रयसे जघन्य स्थिति अल्पबहुत्वका विचार करते हुए जो यत्स्थितिका निरूपण हुआ है वह अवश्य ही विचारणीय है। स्थिति दो प्रकारकी है— एक निषेकस्थिति और दूसरी कालस्थिति। कालकी अपेक्षा जहाँ जिस कर्मकी जो जघन्य स्थिति प्राप्त होती है उसकी यत्स्थिति संज्ञा है और वहाँ जितने निषेक हों तत्प्रमाण स्थिति ही निषेकस्थिति जाननी चाहिए। इस विषयका विशेष खुलासा हमने यथास्थान किया ही है।

•

# विषय सूची

## ३. उत्तर प्रकृति अनुभाग उदीरणा



## भुजगार



## पदनिक्षेप



## वृद्धि

●

सिरि-जइवसहाइरियविरइय-चुण्णिसुत्तसमण्णिदं

सिरि-भगवंतगुणहरभडारओवइट्ठं

# कसायपाहुडं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरियविरइया टीका

# जयधवला

तत्थ

वेदगो णाम सत्तमो अत्थाहियारो

-:-:※:-:-

※ 'को व केय अणुभागे' त्ति अणुभागउदीरणा कायव्वा ।

§ १. को व केय अणुभागे त्ति वेदगमहाहियारपडिबद्धविदियगाहाए विदिया-

---

※ 'को व केय अणुभागे' इस सूत्र वचनके अनुसार अनुभाग उदीरणा का कथन करना चाहिए ।

§ १. 'को व केय अणुभागे' यह वेदक महाधिकारसे सम्बन्धित दूसरी गाथाका

वयवभूदं जमत्थपदं तमवलंबणं कादूणाणुभागउदीरणा इदाणिं विहासियव्वा त्ति भणिदं होइ । संपहि अणुभागुदीरणाए सरूवविसेसजाणावणट्ठमट्ठपदं परूवेमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* तत्थ अट्ठपदं ।

§ २. तत्थाणुभागुदीरणावसरे अट्ठपदं ताव कस्सामो । किमट्ठपदं णाम ? जत्तो सोदाराणं पयदत्थविसए सम्ममवगमो समुप्पज्जइ तमट्ठस्स वाचयं पदमट्ठपदमिदि भण्णदे ।

* तं जहा ।

* अणुभागा पयोगेण ओकड्डियूण उदये दिज्जंति सा उदीरणा ।

§ ३. एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे—अणुभागा मूलुत्तरपयडीणमणंतभेयभिण्ण-फद्दयवग्गणाविभागपलिच्छेदसरूवा पयोगेण परिणामविसेसेण ओकड्डियूण अणंतगुण-हीणसरूवेण जमुदए दिज्जंति सा उदीरणा णाम । कुदो ? 'अपक्कपाचनमुदीरणे त्ति' वचनात् । तदो अणुभागुदीरणा ओकड्डणाविणाभाविणि त्ति कट्टु ओकड्डणाविसयमेत्थ किंचि अत्थपदं परूवेमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

दूसरा अवयवभूत अर्थपद है। उसका अवलम्बन कर इस समय अनुभाग उदीरणाका व्याख्यान करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब अनुभाग उदीरणाके स्वरूप विशेषका ज्ञान करानेके लिए अर्थपद की प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्र प्रबन्धको कहते हैं—

* उस विषयमें यह अर्थपद है ।

§ २. वहाँ अनुभाग उदीरणाके अवसर पर सर्वप्रथम अर्थपदका कथन करते हैं ।

**शंका**—अर्थपद किसे कहते हैं ?

**समाधान**—जिससे श्रोताओंको प्रकृत अर्थके विषयमें सम्यक् ज्ञान उत्पन्न होता है अर्थके वाचक उस पदको अर्थपद कहते हैं ।

* यथा—

* प्रयोगवश अनुभाग अपकर्षित कर उदयमें दिये जाते हैं वह उदीरणा है ।

§ ३. अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—मूल और उत्तर प्रकृतियोंके अनन्त भेदोंको प्राप्त स्पर्धक, वर्गणा और अविभागप्रतिच्छेदस्वरूप अनुभाग प्रयोग वश अर्थात् परिणाम विशेषके कारण अपकर्षित कर अनन्तगुण हीनरूपसे जो उदयमें दिये जाते हैं उसकी उदीरणा संज्ञा है, क्योंकि अपक्वपाचनको उदीरणा कहते हैं ऐसा आगमवचन है । इसलिए अनुभाग उदीरणा अपकर्षणकी अविनाभाविनी है ऐसा समझकर यहाँ अपकर्षणाविषयक थोड़ेसे अर्थ-पदका प्ररूपण करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

*** तत्थ जं जिस्से आदिफद्दयं तं ण ओकड्डिज्जदि ।**

§ ४. कुदो ? तत्तो हेट्ठा अणुभागफद्दयाणमसंभवादो ।

*** एवमणंताणि फद्दयाणि ण ओकड्डिज्जंति ।**

§ ५. कुदो ? णिरुद्धफद्दयादो हेट्ठा जहण्णाइच्छावणा-णिक्खेवमेत्तफद्दएहिं विणा ओकड्डणाए संभवाणुवलंभादो ।

*** केत्तियाणि ? जत्तिगो जहण्णगो णिक्खेवो जहण्णिणा च अइच्छावणा तत्तिगाणि ।**

§ ६. अणंताणि फद्दयाणि ण ओकड्डिज्जंति त्ति पुव्वसुत्ते परूविदं । ताणि केत्तियाणि त्ति पुच्छिदे जहण्णाइच्छावणा-णिक्खेवमेत्ताणि त्ति तेसिं पमाणणिद्देसो कदो । एवमेदेण सुत्तेण जहण्णाइच्छावणा-णिक्खेवमेत्ताणं फद्दयाणमोकड्डणा णत्थि त्ति पदुप्पाइय संपहि एत्तो उवरिमफद्दएसु ओकड्डणाए पडिसेहो णत्थि त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरं सुत्तमाह—

*** आदीदो पहुडि एत्तियमेत्ताणि फद्दयाणि अइच्छिदूण तं फद्दयमोकड्डिज्जदि ।**

---

*** वहाँ जो जिस कर्म प्रकृतिका आदि स्पर्धक है उसका अपकर्षण नहीं होता ।**

§ ४. क्योंकि उससे नीचे अनुभाग स्पर्धकोंका होना असम्भव है ।

*** इसी प्रकार अनन्त स्पर्धक नहीं अपकर्षित होते ।**

§ ५. क्योंकि विवक्षित स्पर्धकसे नीचे जघन्य अतिस्थापना और जघन्य निक्षेपमात्र स्पर्धकोंके बिना अपकर्षण होना सम्भव नहीं है ।

*** वे ( अपकर्षणके अयोग्य स्पर्धक ) कितने हैं ? जितना जघन्य निक्षेप है और जघन्य अति स्थापना है उतने हैं ।**

§ ६. अनन्त स्पर्धक नहीं अपकर्षित होते हैं यह पूर्व सूत्रमें कहा है । वे कितने हैं ऐसा पूछने पर वे जघन्य अतिस्थापना और जघन्य निक्षेप प्रमाण हैं, इस प्रकार इस सूत्र द्वारा उनका प्रमाणनिर्देश किया है । इस प्रकार इस सूत्रद्वारा जघन्य अतिस्थापना और जघन्य निक्षेपप्रमाण स्पर्धकोंका अपकर्षण नहीं होता ऐसा कथन करके अब इनसे ऊपरके स्पर्धकोंमें अपकर्षणका प्रतिषेध नहीं है इसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** आदि स्पर्धकसे लेकर इतने स्पर्धकोंको उल्लंघन कर जो स्पर्धक है उसका अपकर्षण होता है ।**

§ ७. सुगमं

*** तेण परमपडिसिद्धम् ।**

§ ८. सुगमं

*** एदेण अट्ठपदेण अणुभागुदीरणा दुविहा—मूलपयडिअणुभाग-उदीरणा च उत्तरपयडिअणुभागउदीरणा च ।**

§ ९. एदेणाणंतरपरूविदेण अट्ठपदेण जा अणुभागउदीरणा अहिकीरदे सा दुविहा होइ मूलुत्तरपयडिविसयाणुभागुदीरणाभेदेण । तत्थ ताव मूलपयडिअणुभागुदीरणा पुव्वं विहासियव्वा त्ति परूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

*** एत्थ मूलपयडिअणुभागउदीरणा भाणियव्वा ।**

§ १०. संखेवरुइसत्ताणुग्गहट्ठमेदं सुत्तं पयट्टं । तदो एदस्स वित्थारपरूवण-मुच्चारणाइरियोवएसबलेण पयासइस्सामो । सं जहा—मूलपयडिअणुभागुदीरणाए तत्थ इमाणि तेवीसमणियोगद्दाराणि—सण्णा सव्वुदीरणा जाव अप्पाबहुए त्ति । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढिउदीरणा चेदि ।

§ ११. तत्थ सण्णा दुविहा—घादिसण्णा ठाणसण्णा च । घादिसण्णा दुविहा—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क०

§ ७. यह सूत्र सुगम है ।

* उससे आगे प्रतिषेध नहीं है ।

§ ८. यह सूत्र सुगम है ।

*** इस अर्थपदके अनुसार अनुभाग उदीरणा दो प्रकारकी है—मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणा और उत्तर प्रकृति अनुभाग उदीरणा ।**

§ ९. पूर्वमें कथित इस अर्थपदके द्वारा जो अनुभाग उदीरणा अधिकृत की गई है वह मूल और उत्तर प्रकृतिविषयक अनुभाग उदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है । उसमे सर्वप्रथम मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणाका व्याख्यान करना चाहिए इसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** यहाँ मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणा का व्याख्यान करना चाहिए ।**

§ १०. संक्षेप रुचिवाले जीवोंका अनुग्रह करनेके लिए यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है । इस-लिए इसका विस्तारसे कथन करनेके लिए उच्चारणाचार्यके उपदेशके बलसे उसका प्रकाशन करते हैं । यथा—मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणाके विषयमें ये २३ अनुयोगद्वार हैं—संज्ञासे लेकर अल्पबहुत्वतक तथा भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धि उदीरणा ।

§ ११. उनमें से संज्ञा दो प्रकार की है—घाति संज्ञा और स्थान संज्ञा । घातिसंज्ञा दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है—निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और

सव्वघादी । अणुक्क० सव्वघादी वा देसघादी वा । एवं मणुसतिए । सेसगदीसु उक्क० अणुक्क० सव्वघादी । एवं जाव० ।

§ १२. जहण्णए पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० देसघादी० । अजह० देसघादी वा सव्वघादी वा । एवं मणुसतिए । सेसगदीसु जह० अजह० अणुभागुदी० सव्वघादी । एवं जाव० ।

§ १३. ठाणसण्णा दुविहा—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० चउट्ठाणिया । अणुक्क० चउट्ठाणिया वा तिट्ठाणिया० दुट्ठाणिया० एयट्ठाणिया वा । एवं मणुसतिए । आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुभागुदी० चउट्ठाणिया । अणुक्क० अणुभागु० चउट्ठा० तिट्ठाणिया० विट्ठाणिया वा । एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव सहस्सार त्ति । आणदादि सव्वट्ठा त्ति मोह० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० विट्ठाणिया । एवं जाव ।

§ १४. जहण्णए पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० एगट्ठाणिया । अजह० एगट्ठा० विट्ठा० तिट्ठा० चउट्ठाणिया

---

आदेश । ओघसे मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है और देशघाति है । इसीप्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । शेष गतियोंमें उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ १२. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयकर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा देशघाति है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा देशघाति है और सर्वघाति है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । शेष गतियोंमे जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ १३. स्थानसंज्ञा दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है, त्रिस्थानीय है, द्विस्थानीय है और एकस्थानीय है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और द्विस्थानीय है । इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमे जानना चाहिए । आनत कल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें मोहनीयकर्मकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरण द्विस्थानीय है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ १४. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा

**वा । एवं मणुसतिए । आदेसेण णेर० मोह० जह० बिट्ठाणि० । अजह० विट्ठाणि० तिट्ठा० चउट्ठा० । एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुस-अपज्ज०-देवा भवणादि जाव सहस्सारा त्ति । आणदादि सव्वट्ठा त्ति जह० अजह० अणुभागुदी० बिट्ठाणिया । एवं जाव० ।**

**§ १५. सव्वुदीरणा-णोसव्वुदीरणा उक्क० उदी० अणुक्क० उदी० जह० उदी० अजह० उदी० अणुभागविहत्तिभंगो ।**

**§ १६. सादि०-अणादि०-धुव०-अद्धुवाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण उक्क० अणुक्क० जह० अणुभागुदी० किं सादि० ४ ? सादि० अद्धुवा । अजह० अणुभागु० किं सादि ४ ? सादिया वा अणादिया वा धुवा वा अद्धुवा वा । आदेसेण सव्वगदीसु उक्क० अणुक्क० जह० अजह० अणुभागुदी० किं सादि० ४ ? सादि० अद्धुवा० । एवं जाव० ।**

---

एकस्थानीय है, द्विस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और चतुःस्थानीय है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और चतुःस्थानीय है । इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें जानना चाहिए । आनत कल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ १५ सर्वउदीरणा और नोसर्व अनुभाग उदीरणाकी अपेक्षा उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा, अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा और अजघन्य अनुभाग उदीरणाका भंग अनुभाग विभक्तिके समान है ।

§ १६. सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव अनुभाग उदीरणाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट और जघन्य अनुभाग उदीरणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि और अध्रुव है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि है, अनादि है, ध्रुव है और अध्रुव है । आदेशसे सब गतियोंमें उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि औरअ ध्रुव है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला जो जीव उत्कृष्ट संक्लेश परिणामसे मोहनीयकी अनुभाग उदीरणा कर रहा है उसके उस समय मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है । यतः यह कादाचित्क है, इसलिए इसे तथा इस पूर्वक होनेवाली अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाको ओघसे सादि और अध्रुव कहा है । क्षपकश्रेणिमें सकषाय जीवके एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा होती है, इसलिए ओघसे इसे भी सादि और अध्रुव कहा है । किन्तु इसके पूर्व एक तो अनादि कालसे अजघन्य अनुभाग उदीरणा पाई जाती है, दूसरे उपशमश्रेणिसे गिरनेवाले जीवके वह सादि

**§ १७. सामित्ताणु० दुविहो०—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० उक्कस्साणुभागसंतकम्मियस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स तस्स उक्क० अणुभागुदी० । एवं चदुगदीसु । णवरि पंचिं०-तिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० मणुसस्स वा मणुसिणीए वा पंचिं० तिरिक्खजोणियस्स वा उक्कस्साणुभागं बंधिऊण अपज्जत्तएसु उववज्जिय तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । आणदादि उवरिमगेवज्जा त्ति मोह० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० जो दव्वलिंगी तप्पाओग्गउक्कस्साणुभागसंतकम्मिओ अप्पप्पणो देवेसु उववज्जिऊण तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो जादो तस्स । अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति मोह० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्ण० जो वेदयसम्माइट्ठी तप्पाओग्गउक्कस्साणुभागसंतकम्मिओ अप्पप्पणो देवेसु उववण्णो तस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । एवं जाव० ।**

**§ १८. जहण्णए पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जहण्णाणु-भागुदी० कस्स० ? अण्णद० खवगस्स समयाहियावलियसकसायिस्स ।**

होती है । साथ ही अभव्योंके ध्रुव और भव्योंके वह अध्रुव होती है, इसलिए ओघसे मोहनीयकी अजघन्य अनुभाग उदीरणा सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव चारों प्रकारकी कही है । शेष कथन सुगम है ।

§ १७. स्वामित्वानुयोगद्वार दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? जो अन्यतर उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला जीव उत्कृष्ट संक्लेशसे युक्त है उसके मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है । इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? जो अन्यतर मनुष्य या मनुष्यिनी या पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक जीव उत्कृष्ट अनुभाग बाँधकर अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामोंसे युक्त है उसके मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है । आनत कल्पसे लेकर उपरिम ग्रैवेयक तकके देवोंमें मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला जो अन्यतर जीव अपने-अपने योग्य देवोंमें उत्पन्न होकर तत्प्रायोग्य संक्लेशपरिणामोंसे युक्त है उसके मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला जो अन्यतर वेदकसम्यग्दृष्टि जीव अपने-अपने योग्य देवोंमें उत्पन्न हुआ तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाले उस जीवके मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ १८. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? जिस सकषाय जीवके क्षपक

**एवं मणुसतिए। आदेसेण णेरइय० मोह० जह० अणुभागुदी० कस्स० ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स। एवं सव्वणेरइय-सव्वदेवाणं। तिरिक्खेसु मोह० जह० अणुभागुदी० कस्स० ? अण्णद० संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स। एवं पंचिंदिय-तिरिक्खतिए। पंचि० तिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मोह० जह० अणुभागुदी० कस्स० ? अण्णद० तप्पाओग्गविसुद्धस्स। एवं जाव०।**

§ १९. **कालो दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० केव० ? जह० एगस०, उक्क० बेसमया। अणुक्क० जह० एगस० उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एवं तिरिक्खा।**

श्रेणिमें एक समय अधिक एक आवलिकाल शेष है उस अन्यतर जीवके मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा होती है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमे मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि सर्वविशुद्ध नारकीके होती है। इसी प्रकार सब नारकी और सब देवोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर संयतासंयत सर्वविशुद्ध तिर्यञ्चके होती है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमे जानना चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीय कर्मकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर तत्प्रायोग्य विशुद्ध उक्त जीवोंके होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए।

§ १९. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीय कर्मके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनके बराबर है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—उत्कृष्ट संक्लेशका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। इसलिए यहाँ मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय कहा है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जघन्य काल एक समय इसलिए है, क्योंकि जो जीव उत्कृष्ट अनुभागबन्धके योग्य उत्कृष्ट संक्लेश परिणामसे परिणमकर उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करके परिणाम वश एक समय तक अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करता है उसके मोहनीय कर्मकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जघन्य काल एक समय पाया जाता है। यद्यपि उत्कृष्ट संक्लेशसे प्रतिभग्न हुआ जीव अन्तर्मुहूर्त हुए बिना पुनः उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त नहीं होता ऐसा नियम है। परन्तु अनुभागबन्धाध्यवसान स्थानोंमें इस प्रकारका नियम नहीं है, इसलिए यहाँ अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जघन्य काल एक समय बन जाता है। इसका उत्कृष्टकाल असंख्यात पुद्गल परिवर्तनके बराबर अनन्त काल है यह स्पष्ट ही है, क्योंकि संज्ञी पञ्चेन्द्रियोंके योग्य उत्कृष्ट संक्लेशके बिना इतने काल तक एकेन्द्रियोंमें परिभ्रमण देखा जाता है। तिर्यञ्चोंमें यह ओघप्ररूपणा अविकल घटित हो जाती है, इसलिए उनमें ओघके समान जाननेकी सूचना की है। आगे आदेशप्ररूपणाको भी उक्त नियमोंको ध्यानमें रखकर

§ २०. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुभागु० जह० एयस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमं। एवं सव्वणेरइय०। णवरि सगट्ठिदी। पंचिंदियतिरिक्खतिय-मणुसतियम्मि मोह० उक्क० अणुभागु० जह[1]० एयस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। देवेसु मोह० उक्क० जह० एगस० उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो०। एवं सव्वदेवाणं। णवरि सगट्ठिदी। एवं जाव।

§ २१. जह० पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जहण्णाणुभाग० जह० उक्क० एगस०। अजह० तिण्णि भंगा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो जह० अंतोमु०। उक्क० उवड्ढपोग्गल०। मणुसतिये मोह० जह० अणुभाग० जह० उक्क० एगस०। अजह० जह० एग० उक्क० सगट्ठिदी। सेसगदीसु

घटित कर लेना चाहिए। मात्र अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाके उत्कृष्ट कालको अपनी-अपनी गतिके उत्कृष्ट कालको ध्यानमें रखकर घटित कर लेना चाहिए। अन्य कोई विशेषता न होनेसे यहाँ हम उसका अलगसे निर्देश नहीं कर रहे हैं।

§ २०. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीय कर्मके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिक और मनुष्यत्रिकमें मोहनीय कर्मके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्टकाल अपनी-अपनी स्थिति प्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्टकाल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है। इसी प्रकार सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २१. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभाग उदीरकके तीन भंग है। उनमेंसे जो सादि-सान्त भंग है उसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्टकाल उपार्ध पुद्‌गल परिवर्तन प्रमाण है। मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके जघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य और उत्कृष्टकाल एक समय है। अजघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थिति प्रमाण है।

१ ता० प्रतौ जह० उक्क० इति पाठः।

**उक्कस्सभंगो । एवं जाव० ।**

**§ २२. अंतरं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्कस्साणुभागुदी० अंतरं जह० एगस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० ।**

---

शेषगतियोंमें उत्कृष्टके समान भंग है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा क्षपकश्रेणिमें सकषाय भावके एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर एक समय तक होती है, इसलिए इसका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय कहा है । जो जीव उपशमश्रेणिपर आरोहणकर अन्तर्मुहूर्त कालके बाद पुनः क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उसके मोहनीयकी अजघन्य अनुभाग उदीरणाका जघन्यकाल अन्तर्मुहूर्त देखा जाता है और जो जीव उपशम श्रेणिसे उतरते हुए अजघन्य अनुभाग उदीरणाका प्रारम्भकर कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तन काल तक अजघन्य अनुभाग उदीरणा ही करता रहता है उसके कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तन काल तक अजघन्य अनुभाग उदीरणा देखी जाती है, इसलिए ओघसे इसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तन प्रमाण कहा है । मनुष्यत्रिकमें मोहनीयकी जघन्य अनुभाग उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट एक समय काल ओघके समान ही घटित कर लेना चाहिए । अजघन्य अनुभाग उदीरणाके कालमें विशेषता है । बात यह है कि मनुष्यत्रिकमें से कोई एक जीव उपशम श्रेणिपर चढ़ा । पुनः वहाँसे उतरते हुए एक समय तक उसने मोहनीय कर्मकी अजघन्य अनुभाग उदीरणा की । इसके बाद मर कर वह देव हो गया । इस प्रकार इस तथ्यको ध्यानमें रखकर मनुष्यत्रिकमें मोहनीयकी अजघन्य अनुभाग उदीरणाका जघन्य काल एक समय कहा । उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थिति प्रमाण है यह स्पष्ट ही है । शेष गतियोंमें जैसे उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट काल घटित कर आये हैं उसी प्रकार जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट काल घटित कर लेना चाहिए ।

§ २२. अन्तर दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तर काल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनके बराबर है । अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

**विशेषार्थ**—पहले ओघसे मोहनीयकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जो जघन्य और उत्कृष्ट काल बतला आये हैं वही यहाँ उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका क्रमसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल जानना चाहिए । तथा ओघसे मोहनीयकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अपने स्वामित्वको देखते हुए कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त कालके अन्तरसे हो यह सम्भव है, इसलिए यहाँ उसका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है । खुलासा इस प्रकार है कि मोहनीयकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करनेवाला जो जीव एक समय तक उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करके एक समयके बाद पुनः अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करने लगा उसके तो मोहनीयकी अनुत्कृष्ट

**§ २३. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अंतरं केव० ? जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० बे समया। एवं सव्वणेरइय०। णवरि सगट्ठिदी देसूणा। तिरिक्खेसु मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस० उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० बे समया। पंचिंदियतिरिक्खतिये मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। अणुक्क० जह० एयस०। उक्क० बे समया। एवं मणुसतिए। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुस-अपज्ज० मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० बे समया। देवेसु मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० अट्ठारससागरो० सादिरेयाणि। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० बे समया। एवं भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति। णवरि सगट्ठिदी देसूणा। एवं जाव०।**

---

अनुभाग उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय प्राप्त होता है तथा अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करनेवाला जो जीव उपशमश्रेणिपर आरोहण कर और वहाँसे उतरकर पुनः अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा करने लगता है उसके अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है।

§ २३. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका अन्तरकाल कितना है ? जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागर है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनके बराबर है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्व प्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर-काल अन्तर्मुहूर्त है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्त-र्मुहूर्त है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तर-काल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागर है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ २४. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० णत्थि अंतरं। अज० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। एवं मणुसतिए। ह० जह० उक्क० अंतोमु०।**

**§ २५. आदेसेण सव्वणेरइय०-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज० उक्कस्सभंगो। देवेसु मोह० जह० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। अजह० अणुक्कस्सभंगो। एवं भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति। णवरि सगट्ठिदी देसूणा। तिरिक्खेसु मोह० जह० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। अजह० जह० एगस०, उक्क० बे समया। एवं जाव०।**

र्थ—ओघसे मोहनीयकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका जो अन्तरकाल बतला आये हैं वह मनुष्यत्रिकमें बन जानेसे उस प्रकार घटित कर लेना चाहिए। सामान्यसे देवोंमें उत्कृष्ट अनुभाग बन्ध बारहवें स्वर्ग तक ही सम्भव है, इसलिए उनमें मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागर कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २४. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभाग उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। अजघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अजघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—अजघन्य अनुभाग उदीरणा करनेवाला जो जीव उपशमश्रेणिपर चढ़कर और एक समयके लिए उसका अनुदीरक होकर दूसरे समयमें मरकर देव हो जाता है उसके मोहनीयकी अजघन्य अनुभाग उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय बन जानेसे वह उक्त काल प्रमाण कहा है। इसका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है यह स्पष्ट ही है। कारण कि उपशमश्रेणिमें इसका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त देखा जाता है। मनुष्यत्रिकमें इसका जघन्य अन्तर एक समय नहीं बनता। इसलिए इनमें मोहनीयकी अजघन्य अनुभाग उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २५. आदेशसे सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें उत्कृष्टके समान भंग है। देवोंमें मोहनीयके जघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागर है। अजघन्य अनुभाग उदीरकका भंग अनुत्कृष्टके समान है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके जघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है। अजघन्य अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ २६. णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्कस्साणु० सिया सव्वे अणुदीरगा, सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च । अणुक्कस्सियाए अणुभागुदी० सिया सव्वे उदीरगा, सिया उदीरगा च अणुदीरगो च, सिया उदीरगअणुदीरगा च । एवं चदुगदीसु । णवरि मणुसअपज्ज० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० अट्ठ भंगा । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं । एवं जाव० ।**

**§ २७. भागाभागाणु० दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० सव्वजी० केवडिओ भागो ? अणंतभागो । अणुक्क० अणुभागुदी० अणंता भागा । एवं तिरिक्खा० । आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुभागुदी० सव्वजी० केव० ? असंखे० भागो । अणुक्क० असंखेज्जा भागा । एवं सव्वणेरइय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुस-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसपज्ज०-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा मोह० उक्क० अणुभागुदी०**

विशेषार्थ—अपने-अपने जघन्य अनुभाग उदीरणाके स्वामित्वको जानकर यह अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए । विशेष वक्तव्य न होनेसे यहाँ हम उसका अलगसे स्पष्टीकरण नहीं कर रहे हैं ।

§ २६. नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग विचय दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाके कदाचित् सब जीव अनुदीरक हैं, कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और एक जीव उदीरक है तथा कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और नाना जीव उदीरक हैं । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाके कदाचित् सब जीव उदीरक हैं, कदाचित् नाना जीव उदीरक हैं और एक जीव अनुदीरक है तथा कदाचित् नाना जीव उदीरक हैं और नाना जीव अनुदीरक हैं । इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्तकोंमें उत्कृष्ट तथा अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाकी अपेक्षा आठ भंग होते हैं । इसी प्रकार जघन्यकी अपेक्षा भी जानना चाहिए । इस प्रकार अनाहारक मार्गणा तक ले जाना चाहिए ।

§ २७. भागाभागानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव अनन्त बहुभाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सामान्य मनुष्य, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भाग प्रमाण हैं ? संख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट अनुभागके

**सव्वजी० केव० ? संखे०भागो । अणुक्क० अणुभागुदी० संखेज्जा भागा । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं ।**

**§ २८. परिमाणं दुविहं–जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो–ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० केत्तिया ? असंखेज्जा[1] । अणुक्क० के० ? अणंता । एवं तिरिक्खा० । आदेसेण णेरइय० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० केत्ति० ? असंखेज्जा । एवं सव्वणेर०–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०–देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसेसु मोह० उक्क० अणुभागुदी० केत्तिया ? संखेज्जा । अणुक्क० अणुभागुदी० केत्ति० ? असंखेज्जा । मणुसपज्ज०-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा मोह० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० केत्ति० संखेज्जा । एवं जाव० ।**

**§ २९. जहण्णए पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० केत्ति० ? संखेज्जा । अजह० के० ? अणंता । चदुगदीसु उक्कस्सभंगो । एवं जाव० ।**

**§ ३०. खेत्ताणु० दुविहं–जह० उक्क० । उक्क० पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण उक्क० अणुभागुदी० केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे० भागे ।**

उदीरक जीव संख्यात बहुभाग प्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार जघन्य भी ले जाना चाहिए।

§ २८. परिमाण दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव तथा भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्योंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २९. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं। चारों गतियोंमें उत्कृष्टके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३०. क्षेत्रानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भाग प्रमाण क्षेत्र है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका

१ ता० प्रतौ संखेज्जा इति पाठः ।

अणुक्क० सव्वलोगे । एवं तिरिक्खा० । सेसगदीसु मोह० उक्क० अणुक्क० केवडि० लोग० असंखे० भागे । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं ।

§ ३१. पोसणं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० केवडि खेत्तं पोसिदं ? लोग० असंखे० भागो अट्ठ-तेरह चोद्दस भागा । अणुक्क० सव्वलोगो ।

§ ३२. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुक्क० लोगस्स असंखेभागो छ चोद्दस० । एवं विदियादि सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तं । तिरिक्खेसु मोह० उक्क० अणुभागुदी० केव० खेत्त पो० ? लोग० असंखे० भागो छ चोद्दस० । अणुक्क० सव्वलोगो । एवं पंचि० तिरिक्खतिये । णवरि अणुक्क० लोग० असंखे० भागो सव्वलोगो वा । पंचिं० तिरिक्खपज्ज०-मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० लोग० असंखे० भागो सव्वलोगो वा ।

---

कितना क्षेत्र है ? सर्वलोक प्रमाण क्षेत्र है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । शेष गतियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए। इसी प्रकार जघन्यको भी जानना चाहिए ।

§ ३१. स्पर्शन दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम तेरह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**विशेषार्थ**—यहाँ नीचे कुछ कम छह राजु और ऊपर कुछ कम सात राजु मिलाकर त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम तेरह राजु स्पर्शन ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका जान लेना चाहिए । उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका शेष दो प्रकारका जो स्पर्शन बतलाया है वह सुगम है ।

§ ३२. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार दूसरीसे लेकर सातवी पृथ्वी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन जानना चाहिए । प्रथम पृथ्वीमे क्षेत्रके समान भंग है । तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट अनुभाग के उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व-लोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**§ ३३. मणुसतिए मोह० उक्क० अणुभागुदी० लोग० असंखे० भागो। अणुक्क० लोग० असंखे० भागो सव्वलोगो वा। देवेसु मोह० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० दे०। एवं भवणादि जाव अच्चुदा त्ति। णवरि सगपोसणं। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव०।**

**§ ३४. जहण्णए पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० लोग० असंखे० भगो। अजह० केवडि० पोसिदं? सव्वलोगो। आदेसेण णेरइय० मोह० जह० अणुभागुदी० केव० पोसिदं? लोग० असंखे० भागो। अजह० लोग० असंखे० भागो छ चोद्दस०। एवं बिदियादि जाव सत्तमा त्ति। णवरि सगपोसणं। पठमाए खेत्तं। तिरिक्खेसु मोह० जह० अणुभागुदी० लोग० असंखे०**

विशेषार्थ—सामान्यसे नारकियोंका मारणान्तिक समुद्घातकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण स्पर्शन बन जानेके कारण इनमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका उक्त स्पर्शन कहा है। इसी प्रकार तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंकी अपेक्षा स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ ३३. मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर अच्युत कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। आगे क्षेत्रके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

विशेषार्थ—यहाँ सर्वत्र अपने-अपने स्वामित्व और स्पर्शनको जानकर यह स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए। अन्य कोई विशेषता न होनेसे अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया है।

§ ३४. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन जानना चाहिए। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है। तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके

भागो छ चोद्दस०, अजह० सव्वलोगो। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिए। णवरि अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा।

§ ३५. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-सव्वमणुस० जह० खेत्तं। अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। देवेसु मोह० जह० अणुभागुदी० लोग० असंखे०-भागो अट्ठचोद्दस०। अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस०। एवं सोहम्मी-साण०। भवण०-वाणवें०-जोदिसि० मोह० जह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठ अट्ठ चोद्दस०। अजह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठ अट्ठ णव चोद्दस०। सणक्कुमारादि जाव सहस्सार त्ति मोह० जह० अजह० अणुभागुदी० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस०। आणदादि अच्चुदा त्ति जह० अजह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस०। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव।

चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च-त्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**विशेषार्थ**—यहाँ अपने-अपने स्वामित्वको देखते हुए सामान्य तिर्यञ्चों और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण बन जानेसे वह उक्तप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ३५. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और सब मनुष्योंमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। देवोंमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेसे कुछ कम साढ़े तीन और कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेसे कुछ कम साढ़े तीन, कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सनत्कुमार कल्पसे लेकर सहस्रार कल्पतकके देवोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्पतकके देवोंमे मोहनीयके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आगे क्षेत्रके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ ३६. कालो दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० केवचिरं? जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० सव्वद्धा। एवं चदुगदीसु। णवरि मणुसतिए मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया। अणुक्क० सव्वद्धा। एवं सव्वट्ठे। मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एवं जाव०।**

**§ ३७. जह० पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया। अजह० सव्वद्धा। एवं मणुसतिए। सेसगदीसु उक्कस्सभंगो। एवं जाव०।**

---

§ ३६. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका कितना काल है? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका काल सर्वदा है। इसीप्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिक और सर्वार्थसिद्धिके देव संख्यात हैं। इसलिए इनमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक नाना जीवोंका उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है, क्योंकि अत्रुट्यत सन्तानकी अपेक्षा इनमें नाना जीव यदि निरन्तर उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करे तो उस कालका जोड़ संख्यात समय ही होगा। ओघसे और आदेशसे शेष गतियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक नाना जीव असंख्यातसे अधिक नहीं हो सकते, इसलिए इनमें उक्त न्यायके अनुसार उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक नाना जीवोंका उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए इसमें मोहनीयके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक नाना जीवोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जानेसे उक्त कालप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ३७. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। शेष गतियोंमें उत्कृष्टके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३८. अंतरं दुविहं–जह० उक्क० । उक्क० पयदं । दुविहो णि०–ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणुक्क० णत्थि अंतरं । एवं चदुगदीसु । णवरि मणुसअपज्ज० अणुक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एवं जाव० ।

§ ३९. जहण्णए पयदं । दुविहो णि०–ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० छम्मासं । अजह० णत्थि अंतरं । एवं मणुसतिए । णवरि मणुसिणी० वासपुधत्तं । सेसगदीसु उक्कस्सभंगो । एवं जाव० ।

§ ४०. भावाणु० सव्वत्थ ओदइओ भावो ।

विशेषार्थ—अधिकसे अधिक संख्यात जीव ही क्षपक श्रेणिमें पाये जाते हैं, इसलिए नाना जीव यदि लगातार मोहनीयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करें तो उस कालका कुल योग संख्यात समय ही होगा, इसलिए ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ३८. अन्तर दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका अन्तरकाल नहीं है । इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्तकोंमें अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

विशेषार्थ—यहाँ जो मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण बतलाया है, उसका इतना ही तात्पर्य है कि यदि नाना जीव निरन्तर उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा न करें तो उक्त काल तक नहीं करते । इतने कालके बाद एक या नाना जीव नियमसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक हो जाते हैं । शेष कथन सुगम है ।

§ ३९. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है । अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि मनुष्यनियोंमें जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । शेष गतियोंमें उत्कृष्टके समान भंग है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

विशेषार्थ—क्षपक श्रेणिका उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना प्रमाण होनेसे यहाँ ओघसे तथा मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक नाना जीवोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना कहा है । मात्र कोई भी मनुष्यिनी जीव यदि क्षपकश्रेणि पर आरोहण न करे तो अधिकसे-अधिक वर्षपृथक्त्वकाल तक नहीं करता ऐसा नियम है, इसलिए इसमें मोहनीयके जघन्य अनुभागके उदीरक नाना जीवोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्व प्रमाण कहा है । सुगम है ।

४०. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है ।

§ ४१. अप्पाबहुआणु० दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०— ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वत्थोवा मोह० उक्क० अणुभागुदी० । अणुक्क० अणुभागुदी० अणंतगुणा । एवं तिरिक्खा० । आदेसेण णेरइय० सव्वत्थोवा मोह० उक्क० अणुभागुदी० । अणुक्क० अणुभागुदी० असंखे०गुणा । एवं सव्वणेरइय०- सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुस-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसपज्ज०-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा सव्वत्थो० मोह० उक्क० अणुभागुदी० । अणुक्क० अणुभागुदी० संखेज्जगुणा । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं ।

§ ४२. भुजगारउदीरणाए तत्थ इमाणि तेरस अणियोगद्दाराणि—समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुए त्ति । समुक्कित्तणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण अत्थि भुज०-अप्प०-अवट्ठि-अवत्त० । एवं मणुसतिए । आदेसेण णेरइय० अत्थि भुज०-अप्प०-अवट्ठि० । एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-सव्वदेवा त्ति । एवं जाव० ।

§ ४३. सामित्ताणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण भुज-अप्प०- अवट्ठि० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठि० मिच्छाइट्ठिस्स वा । अवत्त० कस्स ? अण्णद० उवसामगस्स परिवदमाणगस्स पढमसमयदेवस्स वा । एवं मणुसतिए । णवरि पढमसमय-

§ ४१. अल्पबहुत्वानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक है । उनसे अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सामान्य मनुष्य, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमे जानना चाहिए । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट अनुभागके उदरीक जीव सबसे स्तोक है । उनसे अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । इसी प्रकार जघन्यका भी कथन करना चाहिए ।

§ ४२. भुजगार उदीरणाका प्रकरण है । उसमें ये तेरह अनुयोगद्वार होते है—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक । समुत्कीर्तनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव हैं । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें भुजगार, अल्पतर और अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव है । इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४३. स्वामित्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे भुजगार, अल्पतर और अवस्थित अनुभागकी उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि या मिथ्यादृष्टिके होती है । अवक्तव्य उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर गिरनेवाले उपशामकके या उपशामकके मरने पर प्रथम समयवर्ती देवके होती है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना

देवस्से त्ति ण भाणिदव्वं । आदेसेण णेरइय० भुज-अप्प०-अवट्ठि० ओघं । एवं सव्व-णेरइय-तिरिक्खतिय-देवा भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज०-अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपदा कस्स ? अण्णद० । एवं जाव ।

§ ४४. कालाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण भुज०-अप्प० जह०[1] एयस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। अवत्त० जह० उक्क० एगस० । आदेसेण णेरइय० भुज०-अप्प०-अवट्ठि० ओघं । एवं सव्वणेरइय०-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-सव्वदेवा त्ति । मणुसतिये ओघं । एवं जाव० ।

§ ४५. अंतराणु० दु० णि०-ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० भुज०-अप्प०

चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें 'प्रथम समवर्ती देवके होती है' यह नहीं कहलाना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें भुजगार, अल्पतर और अवस्थितपदका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सब नारकी, तिर्यञ्चत्रिक, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त तथा नौ अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब पद किसके होते हे ? अन्यतरके होते हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए।

§ ४४. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे भुजगार और अल्पतर अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित अनुभागके उदीरकका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। आदेशसे नारकियोंमें भुजगार, अल्पतर और अवस्थित अनुभागके उदीरकका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—कोई एक जीव यदि मोहनीयके अनुभागकी भुजगार और अल्पतर उदीरणा करता है तो परिणामप्रत्यय वश कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्तकाल तक करता है, इसलिए इन पदोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। मात्र अवस्थित उदीरणा अधिकसे अधिक संख्यात समय तक ही हो सकती है, इसलिए इस पदका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है। अवक्तव्य उदीरणा उपशमश्रेणिसे उतरते समय एक समय तक ही होती है या उपशमश्रेणिमें मोहनीयका अनुदीरक होकर मरकर देव होने पर प्रथम समयमें एक समय तक होती है, इसलिए इसकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय कहा है। यह ओघसे कालका विचार है। इसी प्रकार यथासम्भव गति मार्गणाके अवान्तर भेदोंमें जान लेना चाहिए।

§ ४५. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके भुजगार और अल्पतर उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट

१. आ० प्रतौ भुज० जह० इति पाठः ।

**जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । एवं तिरिक्खेसु । णवरि अवत्त० णत्थि ।**

§ ४६. **आदेसेण णेरइय० भुज०-अप्प० ओघं । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एवं सव्वणेरइय० । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । पंचिंदिय-तिरिक्खतिये भुज०-अप्प० ओघं । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठि० दे० । पंचिं०-तिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० भुज०-अप्प०-अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । मणुसतिए पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडि-पुधत्तं । देवेसु भुज०-अप्प० ओघं । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एव भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । एवं जाव० ।**

अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है ।

**विशेषार्थ**—प्रत्येक जीवके मोहनीयकी भुजगार और अल्पतर उदीरणा कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्तके अन्तरसे नियमसे होती रहती है, इसलिए इन पदोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कहा है । किन्तु अवस्थित पद यदि न हो तो अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण काल तक नहीं होता, इसलिए अवस्थित उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है । तथा एक जीवकी अपेक्षा उपशम श्रेणिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर अवक्तव्य उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण कहा है । तिर्यञ्चोंमें उपशम श्रेणिका होना सम्भव नहीं, इसलिए इनमें अवक्तव्य उदीरणाका निषेध किया है ।

§ ४६. आदेशसे नारकियोंमें भुजगार और अल्पतर उदीरणाका भंग ओघके समान है । अवस्थित उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरप्रमाण है । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें भुजगार और अल्पतर उदीरणाका भंग ओघके समान है । अवस्थित उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें भुजगार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण है । देवोंमें भुजगार और अल्पतर उदीरणाका भंग ओघके समान है । अवस्थित उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागर है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४७. णाणाजीवेहि भंगविचयाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण भुज०-अप्प०-अवट्ठि० णियमा अत्थि, सिया एदे च अवत्तव्वगो च, सिया एदे च अवत्तव्वगा च। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्तव्वं णत्थि। आदेसेण णेरइय० भुज०-अप्प० णियमा अत्थि, सिया एदे च अवट्ठिदगो च, सिया एदे च अवट्ठिदगा च। एवं सव्वणेरइय०-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख०-सव्वदेवा त्ति। मणुसतिये भुज०-अप्प० णिय० अत्थि, सेसपदा भयणिज्जा। मणुसअपज्ज० सव्वपदा भयणिज्जा। एवं जाव०।

§ ४८. भागाभागाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण भुज०उदी० सव्वजी० केव० भागो? दुभागो सादि०। अप्प० दुभागो देसूणो। अवट्ठि० असंखे०-भागो। अवत्त० अणंतभागो। एवं सव्वणेरइय०-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं सव्वट्ठे। णवरि अवट्ठि० संखे० भागो। मणुसेसु भुज० दुभागो सादिरे०। अप्प० दुभागो देसू०। अवट्ठि०-अवत्त०

विशेषार्थ—यहाँ सर्वत्र, यथायोग्य अपनी-अपनी कायस्थिति और भवस्थितिको जानकर अवस्थित उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ ४७. नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगमसे निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पदके उदीरक जीव नियमसे हैं, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवक्तव्य पदका उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवक्तव्य पदके उदीरक जीव हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदके उदीरक जीव नहीं हैं। आदेशसे नारकियोंमें भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवस्थित पदका उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवस्थित पदके उदीरक जीव हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्यत्रिकमें भुजगार और अल्पतरपदके उदीरक जीव नियमसे हैं, शेष पद भजनीय हैं। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब पद भजनीय हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए।

§ ४८. भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे भुजगार पदके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं? साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अल्पतरपदके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। अवस्थित पदके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अवक्तव्य पदके उदीरक जीव अनन्तवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव तथा भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जान लेना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवस्थित पदके उदीरक जीव संख्यातवें भागप्रमाण हैं। मनुष्योंमें भुजगार पदके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अल्पतर पदके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। अवस्थित और अवक्तव्य पदके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनु

**असंखे०भागो। एवं मणुसपज्ज०-मणुसिणीसु। णवरि संखेज्जं कायव्वं। एवं जाव०।**

**§ ४९. परिमाणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण भुज०—अप्प०—अवट्ठि० केत्तिया? अणंता। अवत्त० केत्तिया? संखेज्जा। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। आदेसेण णेरइय० सव्वपदा केत्ति०? असंखेज्जा। एवं सव्वणेरइय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा जाव अवराइदा त्ति। मणुसेसु अवत्त० केत्ति०? संखेज्जा। सेसपदा केत्ति०? असंखेज्जा। मणुसपज्ज०-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा० सव्वपदा० केत्ति०? संखेज्जा। एवं जाव०।**

**§ ५०. खेत्ताणु० दुवि० णि०—ओघे० आ०। ओघेण भुज०—अप्प०-अवट्ठि० केव० खेत्ते०? सव्वलोगे। अवत्त० लोगस्स असंखे०। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। सेसगदीसु सव्वपदा० केव०? लोगस्स असंखे०। एवं जाव०।**

**§ ५१. पोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण भुज०-अप्प०—अवट्ठि० केवडि० पोसिदं? सव्वलोगो। अवत्त० केवडि० पोसिदं? लोग० असंखे०भागो। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि।**

ष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि असंख्यातवें भागके स्थानमें संख्यातवां भाग करना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४९. परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे भुजगार, अल्पतर और अवस्थितपदके उदीरक जीव कितने हैं? अनन्त हैं। अवक्तव्य पदके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदके उदीरक जीव नहीं हैं। आदेशसे नारकियोंमें सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्योंमें अवक्तव्यपदके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। शेष पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५०. क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पदके उदीरक जीवोंका कितना क्षेत्र है? सर्वलोकप्रमाण क्षेत्र है। अवक्तव्य पदके उदीरक जीवोंका लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। शेष गतियोंमें सब पदोंके उदीरक जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५१. स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे भुजगार, अल्पतर और अवस्थित अनुभागके उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है।

§ ५२. आदेसेण णेरइय० सव्वपद० केवडि० पोसिदं ? लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । एवं विदियादि जाव सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तं । सव्वपंचि०तिरिक्ख-मणुसअपज्ज० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । एवं मणुसतिये । णवरि अवत्त० लोग० असंखे०भागो । देवेसु सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० । एवं सोहम्मीसाणेसु । भवण०-वाण०-जोदिसि० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस० । सणक्कुमारादि जाव सहस्सारे त्ति सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० । आणदादि जाव अच्चुदा त्ति सव्वपद० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । उवरि खेत्तं । एवं जाव० ।

§ ५३. कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण अवत्त० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । सेसपदा० सव्वद्धा । आदेसेण णेरइय० भुज०-अप्प० सव्वद्धा । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं

§ ५२. आदेशसे नारकियोंमें सब पदोंके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है। सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब पदोंके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। देवोंमें सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंमें जानना चाहिए। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनतसे लेकर अच्युत कल्पतकके देवोंमें सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। ऊपर क्षेत्रके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—स्पर्शन विषयक स्पष्टीकरण सुगम है, इसलिए अलगसे खुलासा नहीं किया है। तात्पर्य यह है कि जहाँ जो स्पर्शन है उसे ध्यानमें रखकर स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए।

§ ५३. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। शेष पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। आदेशसे नारकियोंमें भुजगार और अल्पतर पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च,

सव्वणेरइय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-देवा[1] भवणादि जाव अवराइदा त्ति । तिरिक्खा० सव्वपदा० सव्वद्धा । मणुसेसु णारयभंगो । णवरि अवत्त० जह० एयस०, उक्क संखेज्जा समया । एवं मणुसपज्ज०-मणुसिणी० । णवरि संखेज्जं कादवं । एवं सव्वट्ठे । णवरि अवत्त० णत्थि । मणुसअपज्ज० भुज०-अप्प० जह० एयस०, उक्क पलिदो० असंखे०-भागो । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं जाव० ।

§ ५४. अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण भुज०-अप्प०- अवट्ठि० णत्थि अंतरं । अवत्त० जह० एयस०, उक्क० वासपुधत्तं । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि । आदेसेण णेरइय० भुज०- अप्प० णत्थि अंतरं । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं सव्वणेरइय-सव्वपंचिंदिय-तिरिक्ख-सव्वदेवा त्ति । मणुसतिये णारयभंगो । णवरि अवत्त० ओघं । मणुसअपज्ज०

---

देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवों में जानना चाहिए । तिर्यञ्चोंमें सब पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है । मनुष्योंमें नारकियोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आवलिके असंख्यातवें भागके स्थानमें संख्यात समय कहना चाहिए । इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—यहाँ एक जीवकी अपेक्षा काल और ओघ तथा आदेशसे अपने-अपने परिमाणको जानकर नाना जीवोंकी अपेक्षा कालका विचार कर लेना चाहिए । विशेष वक्तव्य न होनेसे अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया है ।

§ ५४. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पदके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्यपद नहीं है । आदेशसे नारकियोंमें भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए । मनुष्यत्रिकमें नारकियोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदके उदीरकोंका भंग ओघके समान है । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अव-

१ आ० ता०प्रत्यो. तिरिक्खतिय देवा इति पाठः ।

भुज०-अप्प० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। एवं जाव।

§ ५५. भावाणुगमेण सव्वत्थ ओदइओ भावो।

§ ५६. अप्पाबहुआणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० अणंतगुणा। अप्प० असंखे०गुणा। भुज० विसेसा०। एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। मणुसेसु सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० असंखे०गुणा। अप्प० असंखे०गुणा। भुज० विसेसा०। एवं मणुसपज्ज०-मणुसिणी०। णवरि संखेज्जगुणं कायव्वं। एवं सव्वट्ठे। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं जाव०।

§ ५७. पदणिक्खेवे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि—समुक्कित्तणा सामित्तं अप्पाबहुए त्ति। समुक्कित्तणं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० अत्थि उक्क० वड्ढी हाणी अवट्ठा०। एवं चदुगदीसु। एवं जहण्णयं पि णेदव्वं। एवं जाव।

§ ५८. सामित्ताणु० दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—

---

स्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५५. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है।

§ ५६. अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे अवक्तव्य पदके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थितपदके उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे अल्पतर पदके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे भुजगारपदके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। मनुष्योंमें सबसे स्तोक अवक्तव्य पदके उदीरक जीव हैं। उनसे अवस्थित पदके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अल्पतरपदके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे भुजगारपदके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५७ पदनिक्षेपका प्रकरण है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—समुत्कीर्तना, स्वामित्व और अल्पबहुत्व। समुत्कीर्तना दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि और अवस्थान अनुभागके उदीरक जीव हैं। इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार जघन्यको भी जान लेना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५८. स्वामित्वानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है।

**ओघेण ओदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० वड्ढी कस्स ? अण्णद० जो उक्कस्साणुभागसंतकम्मि० उक्कस्ससंकिलेसं गदो, तदो उक्कस्साणुभागमुदीरिदो तस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स ? अण्णद० देवो उक्कस्साणुभागमुदीरेमाणो मदो एइंदिओ जादो, तदो तस्स पढमसमयउदीरगस्स उक्क० हाणी। उक्क० अवट्ठाणं कस्स ? अण्णद० उक्कस्साणुभागमुदीरेमाणो तप्पाओग्गजहण्णयमुदीरिदो तस्स से काले उक्क० अवट्ठा०।**

**§ ५९. आदेसेण णेरइय० उक्क० वड्ढी ओघं। उक्क० हाणी कस्स ? अण्णद० उक्क० अणुभागमुदीरेमाणो तप्पाओग्गविसोहीए पडिभग्गो तस्स उक्क० हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्सयमवट्ठाणं। एवं सव्वणेरइय०–सव्वतिरिक्ख–सव्वमणुस–सव्वदेवा त्ति। णवरि पचिं०तिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज०–आणदादि सव्वट्ठा त्ति तप्पाओग्गसंकिलेसो भाणियव्वो। एवं जाव०।**

**§ ६०. जहण्णए पयदं। दुविहो णि०–ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० जो उवसमसेढीदो ओदरमाणगो विदियसमयउदीरगो तस्स जह० वड्ढी। जह० हाणी कस्स ? अण्णद० खवगस्स समयाहियावलियसकसायस्स तस्स जह० हाणी। जह० अवट्ठाण० कस्स ? अण्ण० अधापवत्तसंजदस्स अणंतभागेण वड्ढिदूणावट्ठिदस्स तस्स जह० अवट्ठाणं। एवं मणुसतिये।**

निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट वृद्धिका स्वामी कौन है ? उत्कृष्ट अनुभागके सत्कर्मवाला जो जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ, उसके बाद उसने उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा की ऐसा जीव उत्कृष्ट वृद्धिका स्वामी है। उत्कृष्ट हानिका स्वामी कौन है ? उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर देव मरा और एकेन्द्रिय हो गया, तदनन्तर प्रथम समयमें उदीरणा करनेवाला वह जीव उत्कृष्ट हानिका स्वामी है। उत्कृष्ट अवस्थानका स्वामी कौन है ? उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर जीव तत्प्रायोग्य जघन्य अनुभागकी उदीरणा करने लगा वह तदनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थानका स्वामी है।

§ ५९. आदेशसे नारकियोंमें उत्कृष्ट वृद्धिका भंग ओघके समान है। उत्कृष्ट हानिका स्वामी कौन है ? उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर नारकी तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे प्रतिभग्न हुआ वह उत्कृष्ट हानिका स्वामी है। तथा वही तदनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थानका स्वामी है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त और आनत कल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें तत्प्रायोग्य संक्लेश कहना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६०. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी जघन्य वृद्धिका स्वामी कौन है ? उपशमश्रेणिसे उतरनेवाला जो अन्यतर जीव द्वितीय समयमें उदीरक है वह जघन्य वृद्धिका स्वामी है। जघन्य हानिका स्वामी कौन है ? जो अन्यतर क्षपक एक समय अधिक एक आवलि कालके शेष रहने पर सकषायभावसे स्थित है वह जघन्य हानिका स्वामी है। जघन्य अवस्थानका स्वामी कौन है ? जो अन्यतर अधः

**§ ६१. आदेसेण णेरइय० मोह० जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स तप्पाओग्गअणंतभागेण वड्ढिऊण वड्ढी, हाइदूण हाणी, एगदरत्थावट्ठाणं। एवं सव्व-णेरइय०–सव्वदेवा०। तिरिक्खेसु मोह० जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० संजदासंजदस्स तप्पाओग्गअणंतभागेण वड्ढिदूण वड्ढी हाइदूण हाणी एगदरत्थावट्ठाणं। एवं पंचिंदिय-तिरिक्खतिए। पंचिं०तिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० मोह० जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गअणतभागेण वड्ढिदूण वड्ढी हाइदूण हाणी एगदरत्थमवट्ठाणं। एवं जाव०।**

**§ ६२. अप्पाबहुआणु० दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०–ओघेण ओदेसेण य। ओघेण सव्वत्थोवा मोह० उक्क० वड्ढी। उक्क० अवट्ठाणं विसे०। उक्क हाणी विसे०। आदेसेण णेरइय० सव्वत्थोवा उक्क० वड्ढी। हाणी अवट्ठा० दो वि सरिसा विसेसा०। एवं सव्वणेरइय०–सव्वतिरिक्ख०–सव्वमणुस-सव्वदेवा त्ति। एवं जाव०।**

**§ ६३. जह० पयदं। दुविहो णि०–ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० सव्वत्थोवा जह० हाणी। जह० वड्ढी अणंतगुणा। जह० अवट्ठा० अणंतगुणं। एवं**

प्रवृत्तसंयत जीव अनन्तवे भाग वृद्धि करके अवस्थित है वह जघन्य अवस्थानका स्वामी है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए।

§ ६१. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी जघन्य वृद्धिका स्वामी कौन है ? जो अन्यतर सम्यग्दृष्टि नारकी तत्प्रायोग्य अनन्तवे भागरूपसे वृद्धि करता है वह जघन्य वृद्धिका स्वामी है, उतनी ही हानि करता है वह जघन्य हानिका स्वामी है तथा इनमेंसे किसी एक जगह अवस्थान होने पर जघन्य अवस्थानका स्वामी है। इसी प्रकार सब नारकी और सब देवोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें मोहनीयकी जघन्य वृद्धिका स्वामी कौन है ? जो अन्यतर संयतासंयत जीव अनन्तवे भागरूपसे वृद्धि करता है वह जघन्य वृद्धिका स्वामी है, उतनी ही हानि करता है वह जघन्य हानिका स्वामी है तथा इनमेंसे किसी एक जगह अवस्थान होने पर जघन्य अवस्थानका स्वामी है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयकी जघन्य वृद्धिका स्वामी कौन है ? जो अन्यतर तत्प्रायोग्य अनन्तवेभागरूपसे वृद्धि करता है वह जघन्य वृद्धिका स्वामी है, उतनी ही हानि करता है वह जघन्य हानिका स्वामी है तथा इनमेंमें किसी एक जगह अवस्थान होने पर जघन्य अवस्थानका स्वामी है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६२. अल्पबहुत्वानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है। उससे उत्कृष्ट अवस्थान विशेष अधिक है। उससे उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है। आदेशसे नारकियोंमें उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है। उससे उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों ही समान होकर विशेष अधिक है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६३. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी जघन्य हानि सबसे स्तोक है। उससे जघन्य वृद्धि अनन्तगुणी है। उससे जघन्य

**मणुसतिये। आदेसेण णेरइय० जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणाणि तिण्णि वि सरिसाणि। एवं सव्वणेरइय०-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-सव्वदेवा त्ति। एवं जाव०।**

**§ ६४. वड्ढिअणुभागुदीरणाए तत्थ इमाणि तेरस अणिओगद्दाराणि—समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुए त्ति। समुक्कित्तणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण अत्थि छवड्ढि-छहाणि-अवट्ठि०-अवत्त०अणुभागुदी०। एवं मणुसतिए। एवं चेव सव्व-णेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-सव्वदेवा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं जाव०।**

**§ ६५. सामित्ताणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण अत्थि छवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणं कस्स? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स मिच्छाइट्ठिस्स वा। अवत्त० भुज०-भंगो। एवं मणुसतिए। एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-सव्वदेवा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज०-अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० कस्स? अण्णद०। एवं जाव०।**

**§ ६६. कालाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण पंचवड्ढि-हाणि० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणंतगुणवड्ढि-हाणि०**

---

अवस्थान अनन्तगुणा है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही समान है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६४. वृद्धि अनुभाग उदीरणाका प्रकरण है। उसमें ये तेरह अनुयोगद्वार हैं—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक। समुत्कीर्तनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे छह वृद्धि, छह हानि, अवस्थित और अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए।

§ ६५. स्वामित्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थानका स्वामी कौन है? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीव स्वामी है। अवक्तव्य पदका भंग भुजगारके समान है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेपता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त तथा अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित पदका स्वामी कौन है? अन्यतर जीव स्वामी है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६६. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे पाँच वृद्धि और पाँच हानिका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असं-

जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । अवत्त० जह० उक्क० एगसमओ । एवं मणुसतिये । एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-सव्वदेवा त्ति । णवरि अवत्त० णत्थि । एवं जाव० ।

§ ६७. अंतराणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण पंचवड्डि-हाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणंतगुणवड्डि-हाणि० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु० । अवत्त० भुज० भंगो । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि ।

§ ६८. आदेसेण णेरइय० पंचवड्डि-हाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । अणंतगुणवड्डि-हाणि० ओघं । एवं सव्वणेरइय० । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । पंचिंदियतिरिक्खतिये पंचवड्डि-हाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी देसू० । अणंतगुणवड्डि-हाणि० ओघं । एवं मणुसतिए । णवरि अवत्त० भुज०भंगो । पंचि०तिरिक्खअप०-मणुसअप० छवड्डि-हा०-अवट्ठि० जह०

ख्यातवें भागप्रमाण है। अनन्त गुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित पदका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अवक्तव्य पदका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमे अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६७. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थितपदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनन्त गुणवृद्धि और अनन्त गुणहानिका जघन्य अन्तर काल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवक्तव्य पदका भंग भुजगारके समान है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है।

§ ६८. आदेशसे नारकियोंमें पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरप्रमाण है। अनन्त गुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति करनी चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। अनन्त गुणवृद्धि और अनन्त गुणहानिका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्यपदका भंग भुजगारके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थितपदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। देवोंमें नारकियोंके

एग०, उक्क० अंतोमु० । देवाणं णारयभंगो । एवं सव्वदेवाणं । णवरि अप्पप्पणो ट्ठिदी देसूणा । एवं जाव० ।

§ ६९. णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० णियमा अत्थि, सिया एदे च अवत्तव्वगो च, सिया एदे च अवत्तव्वगा च । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि । आदेसेण णेरइय० अणंतगुणवड्ढि-हाणि० णिय० अत्थि, सेसपदाणि भयणिज्जाणि । एवं सव्वणेरइय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसतिय-सव्वदेवा त्ति । मणुसअपज्ज० सव्वपदा भयणिज्जा । एवं जाव० ।

§ ७०. भागाभागाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण अणंतगुणवड्ढि० दुभागो सादिरेगो । अणंतगुणहाणि० दुभागो देसूणो । अवत्त० अणंतभागो । सेसपदा असंखे०भागो । एवं सव्वणेरइय–सव्वतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति । णवरि अवत्त० णत्थि । एव मणुसेसु । णवरि अवत्त० सव्वजीव० केव० ? असंखे०भागो । एवं मणुसपज्ज –मणुसिणीसु । णवरि संखेज्जं कायव्वं । एवं सव्वट्ठे । णवरि अवत्त० णत्थि । एवं जाव० ।

---

समान भंग है। इसी प्रकार सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६९. नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगमका अवलम्बन लेकर निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव नियमसे हैं, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवक्तव्य अनुभागका उदीरक जीव है। कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव नहीं है। आदेशसे नारकियोंमें अनन्त गुणवृद्धि और अनन्त गुणहानि अनुभागके उदीरक जीव नियमसे हैं, शेष पद भजनीय हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्यत्रिक और सब देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब पद भजनीय हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ७० भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे अनन्त गुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अनन्त गुणहानि अनुभागके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव अनन्तवें भागप्रमाण है। शेष पदसम्बन्धी अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्यपद नहीं है। इसी प्रकार मनुष्योंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें असंख्यातवें भागके स्थानमें संख्यातवाँ भाग करना चाहिए। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए।

**§ ७१. परिमाणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० केत्ति० ? अणंता। अवत्त० केत्ति० ? संखेज्जा। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। आदेसेण सव्वणिरय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा जाव अवराजिदा त्ति सव्वपदा० केत्ति० ? असंखेज्जा। एवं मणुसेसु। णवरि अवत्त० केत्ति० ? संखेज्जा। पज्जत्त-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा० सव्वपदा० केत्ति०। संखेज्जा। एवं जाव०।**

**§ ७२. खेत्ताणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० केव० ? सव्वलोगे। अवत्त० लोग० असंखे०भागे। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। सेसगदीसु सव्वपदा० लोग० असंखे०भागे। एवं जाव०।**

**§ ७३. पोसणाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण अवत्त० लोग० असंखे०भागो। सेसपदा० सव्वलोगो। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। आदेसेण णेरइय० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस भागा। एवं विदियादि सत्तमा त्ति। णवरि सगपोसणं। पढमाए खेत्तं। सव्वपंचिं०तिरिक्ख-मणुसअपज्ज०**

---

इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ७१. परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं। अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। आदेशसे सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब पद-सम्बन्धी अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं। इसी प्रकार सामान्य मनुष्योंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब पदसम्बन्धी अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ७२. क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित अनुभागके उदीरकोंका कितना क्षेत्र है। सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमे अवक्तव्य पद नहीं है। शेष गतियोंमें सब पदसम्बन्धी अनुभागके उदीरकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ७३. स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष पदसम्बन्धी अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। आदेशसे नारकियोंमें सब पदसम्बन्धी अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन

**सव्वपदा० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। एवं मणुसतिये। णवरि अवत्त० खेत्तं। देवेसु सव्वपदा० लोग० असंखे०भागो अट्ठ-णव चोद्दस० देसूणा। एवं भवणादि जाव अच्चुदा त्ति। णवरि सगपोसणं। उवरि खेत्तं। एवं जाव०।**

**§ ७४. कालाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण अवत्त० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। सेसपदा० सव्वद्धा। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। आदेसेण णेरइय० अणंतगुणवड्ढि-हाणि० सव्वद्धा। सेसपदा० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं सव्वणिरय०-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-देवा जाव अवराजिदा त्ति। एवं मणुसेसु। णवरि अवत्त० ओघं। एवं मणुसपज्ज०-मणुसिणी०। णवरि अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। एवं सव्वट्ठे। णवरि अवत्त० णत्थि। मणुसअपज्ज० अणंतगुणवड्ढि-हाणि० जह० एयस०, उक्क०**

कहना चाहिए। पहली पृथिवीमें स्पर्शन क्षेत्रके समान है। सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब पदसम्बन्धी अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदका भंग क्षेत्रके समान है। देवोंमें सब पद सम्बन्धी अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर अच्युत कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। ऊपर क्षेत्रके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—ओघसे मोहनीयकी अवक्तव्य उदीरणा उपशमश्रेणिसे उतरते समय वा मोहनीयके अनुदीरकके मर कर देव होने पर प्रथम समयमें होती है। यतः ऐसे जीवोंका स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें ही पाया जाता है, इसलिए वह उक्त क्षेत्र-प्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ७४. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। शेष पदअनुभागके उदीरक जीवोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। आदेशसे नारकियोंमें अनन्त गुणवृद्धि और अनन्त गुणहानि अनुभागके उदीरक जीवोंका काल सर्वदा है। शेष पद अनुभागके उदीरक जीवोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार मनुष्योंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवस्थित अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें अनन्त गुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक

**पलिदो० असंखे०भागो । सेसपदा० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं जाव० ।**

**§ ७५. अंतराणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण अवत्त० जह० एयस०, उक्क० वासपुधत्तं । सेसपदाणं णत्थि अंतरं । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि । आदेसेण णेरइय० अणंतगुणवड्ढि–हाणि० णत्थि अंतरं णिरंतरं । सेसपदा० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–सव्वदेवा त्ति । एवं मणुसतिये । णवरि अवत्त० ओघं । मणुसअपज्ज० अणंतगुणवड्ढि–हाणि० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । सेसप० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं जाव० ।**

**§ ७६. भावाणुगमेण सव्वत्थ ओदइओ भावो ।**

**§ ७७. अप्पाबहुआणुगमेण दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वत्थोवा अवत्त०उदी० । अवट्ठि० अणंतगुणा । अणंतभागवड्ढि–हाणि० असंखे०गुणा । असंखे० भागवड्ढि–हाणि०असंखे०गुणा । संखेज्जभागवड्ढि–हाणि० संखे०गुणा । संखे०-**

समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवे भागप्रमाण है । शेष पद अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय हैऔर उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ७५. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । शेष पद अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है । आदेशसे नारकियोंमें अनन्त गुणवृद्धि और अनन्त गुणहानि अनुभागके उदीरकोका अन्तरकाल नहीं है निरन्तर हैं । शेष पद अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदका भंग ओघके समान है । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें अनन्त गुणवृद्धि और अनन्त गुणहानि अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । शेष पद अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ७६. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है ।

§ ७७. अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे अनन्त भागवृद्धि और अन्त भागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे असंख्यात भागवृद्धि और असंख्यात भागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यात भागवृद्धि और संख्यात भागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे है । उनसे संख्यात गुणवृद्धि और संख्यात गुणहानि अनुभागके उदीरक जीव

गुणवड्ढि–हाणि० संखे०गुणा। असंखे०गुणवड्ढि–हाणि० असंखे०गुणा। अणंतगुणहाणि० असंखे०गुणा। अणंतगुणवड्ढि० विसेसा०। एवं सव्वणिरय–सव्वतिरि०–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। मणुसेसु सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० असंखे०गुणा। सेसमोघं। एवं मणुसपज्ज०–मणुसिणी०। णवरि संखेज्जगुणं कादव्वं। एवं सव्वट्ठे। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं जाव०।

§ ७८. एत्थाणुभागुदीरणट्ठाणाणं बंधसमुप्पत्तियादिभेदेण तिहा विहत्ताणं परूवणाए अणुभागसंकमभंगो। णवरि सव्वत्थ अणुभागसंतकम्मट्ठाणस्स अणंतिमभागमेत्तं चेव उदीरणट्ठाणं होइ। कारणं सुगमं।

एवं मूलपयडिअणुभागुदीरणा समत्ता।

* उत्तरपयडिअणुभागुदीरणं वत्तइस्सामो।

§ ७९. मूलपयडिअणुभागुदीरणविहासणाणंतरमेत्तो जहावसरपत्तमुत्तरपयडिअणुभागुदीरणं वत्तइस्सामो त्ति पइण्णावक्कमेदं।

* तत्थेमाणि चउवीसमणियोगद्दाराणि–सण्णा सव्वउदीरणा एवं जाव अप्पाबहुए त्ति भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढि-ट्ठाणाणि च।

---

संख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यात गुणवृद्धि और असंख्यात गुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्त गुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। सामान्य मनुष्योंमें अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। शेष भंग ओघके समान है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि संख्यातगुणा करना चाहिए। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ७८. यहाँ पर बन्धसमुत्पत्ति आदिके भेदसे तीन प्रकारके अनुभाग उदीरणास्थानोंकी प्ररूपणाका भंग अनुभागसंक्रमके समान है। इतनी विशेषता है कि सर्वत्र अनुभाग सत्कर्मस्थानके अनन्तवें भागप्रमाण ही उदीरणास्थान होता है। कारण सुगम है।

इस प्रकार मूलप्रकृति-अनुभाग-उदीरणा समाप्त हुई।

* अब उत्तरप्रकृतिअनुभागउदरिणाको बतलाते हैं।

§ ७९. मूल प्रकृति अनुभाग उदीरणाका विशेष व्याख्यान करनेके बाद यथावसर प्राप्त उत्तर प्रकृति अनुभाग उदीरणाको बतलाते हैं इस प्रकार यह प्रतिज्ञा वाक्य है।

* उसके विषयमें ये चौबीस अनुयोगद्वार हैं—संज्ञा और सर्व उदीरणासे लेकर अल्पबहुत्व तक तथा भुजगार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थान।

§८०. संपहि एदेहिं अणियोगद्दारेहिं जहाकममुत्तरपयडिअणुभागुदीरणं परूवेमाणो सण्णाणुगममेव ताव परूवेदुमुत्तरसुत्तपबंधमाह—

*** तत्थ पुव्वं गमणिज्जा दुविहा सण्णा—घाइसण्णा ठाणसण्णा च।**

§ ८१. तत्थ तेसु अणियोगद्दारेसु पुव्वं पढममेव गमणिज्जा अणुमग्गियव्वा दुविहा सण्णा—घाइसण्णा ट्ठाणसण्णा चेदि। तत्थ जा सा घादिसण्णा सा दुविहा सव्वघादिदेसघादिभेदेण। ठाणसण्णा चउव्विहा लदासमाणादिसहावभेदेण भिण्णत्तादो। एवमेसा दुविहा सण्णा पुव्वमेत्थ गमणिज्जा, अण्णहा अणुभागविसयणिच्छयाणुप्पत्तीदो।

*** ताओ दो वि एक्कदो वत्तइस्सामो।**

§ ८२. ताओ दो वि सण्णाओ एयपघट्टयेणेव वत्तइस्सामो, पुध पुध परूवणाए गंथगउरवप्पसंगादो।

*** तं जहा—मिच्छत्त-बारसकसायाणमणुभागउदीरणा सव्वघादी।**

§ ८३. कुदो ? एदेसिमणुभागोदीरणाए सम्मत्त–संजमगुणाणं णिरवसेसविणासदंसणादो। पच्चक्खाणकसायोदीरणाए संतीए वि देससंजमो समुवलब्भदि तदो ण तेसिं सव्वघादित्तमिदि णासंकणिज्जं, सयलसंजममस्सिऊण तेसिं सव्वघादित्तसमत्थणादो।

---

§ ८०. अब इन अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर यथाक्रम उत्तर प्रकृति अनुभाग उदीरणाकी प्ररूपणा करते हुए संज्ञानुगमका ही सर्व प्रथम कथन करनेके लिए उत्तरसूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

*** वहाँ सर्व प्रथम घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा यह दो प्रकारकी संज्ञा जानने योग्य है।**

§ ८१. वहाँ उन अनुयोगद्वारोंमें 'पुव्वं' अर्थात् सर्व प्रथम 'गमणिज्जा' अर्थात् मार्गण करने योग्य है—घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा यह दो प्रकारकी संज्ञा। वहाँ जो घातिसंज्ञा है वह सर्वघाति और देशघातिके भेदसे दो प्रकारकी है। लतासमान आदि स्वभावके भेदसे भिन्नताको प्राप्त हुई स्थानसंज्ञा चार प्रकारकी है। इस प्रकार यह दो प्रकारकी संज्ञा सर्व प्रथम यहाँ जानने योग्य है, अन्यथा अनुभागविषयक निश्चय नहीं हो सकता।

*** उन दोनों ही संज्ञाओंको एकसाथ बतलावेंगे।**

§ ८२. उन दोनों ही संज्ञाओंको एक साथ ही बतलावेंगे, क्योंकि पृथक्-पृथक् कथन करने पर ग्रन्थविस्तारका प्रसंग उपस्थित होता है।

*** यथा—मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है।**

§ ८३. क्योंकि इन प्रकृतियोंकी अनुभाग उदीरणासे सम्यक्त्व और संयमगुणोंका पूरी तरहसे विनाश देखा जाता है।

**शंका**—प्रत्याख्यान कषायोंकी उदीरणाके होनेपर भी देशसंयमकी प्राप्ति होती है, इसलिए उनका सर्वघातिपना नहीं बनता ?

**समाधान**—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि सकलसंयमका अवलम्बन लेकर उनके सर्वघातिपनेका समर्थन किया है।

एवमेदेण सुत्तेण मिच्छत्त–बारसकसायाणमणुभागुदीरणाए उक्कस्साणुक्कस्सजहण्णाजहण्ण-भेयभिण्णाए सव्वघादित्तमणवयवेण परूविदं, तत्थ पयारंतरासंभवादो।

*** दुट्ठाणिया तिट्ठाणिया चउट्ठाणिया वा।**

§ ८४. कुदो ? मिच्छत्त-बारसकसायाणमुक्कस्साणुभागुदीरणाए चउट्ठाणियत्तदंसणादो, तेसिं चेवाणुक्कस्साणुभागुदीरणाए चउट्ठाण–तिट्ठाण–दुट्ठाणियत्तदंसणादो।

*** सम्मत्तस्स अणुभागमुदीरणा देसघादी।**

§ ८५. कुदो ? मिच्छत्तुदीरणाए इव सम्मत्तुदीरणाए सम्मत्तसण्णिदजीवपज्जायस्स अच्चंतुच्छेदाभावादो।

*** एयट्ठाणिया वा दुट्ठाणिया वा।**

§ ८६. कुदो ? सम्मत्तजहण्णाणुभागुदीरणाए एगट्ठाणियत्तदंसणादो, तदुक्कस्साणुभागुदीरणाए दुट्ठाणियत्तदंसणादो।

*** सम्मामिच्छत्तस्स अणुभागउदीरणा सव्वघादी विट्ठाणिया।**

§ ८७. कुदो ताव सव्वघादित्तं ? मिच्छत्तोदीरणाए इव सम्मामिच्छत्तोदीरणाए वि सम्मत्तसण्णिदजीवगुणस्स णिम्मूलविणासदंसणादो। एसा पुण दुट्ठाणिया चेव। कुदो ? सम्मामिच्छत्ताणुभागम्मि दुट्ठाणियत्तं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो।

---

इस प्रकार इस सूत्र द्वारा मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्यके भेदसे भिन्नताको प्राप्त हुई अनुभाग उदीरणाका सर्वघातिपना सामान्यरूपसे कहा, क्योंकि वहाँ प्रकारान्तर सम्भव नहीं है।

*** वह द्विस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और चतुःस्थानीय है।**

§ ८४. क्योंकि मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय देखी जाती है तथा उन्हींकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय, त्रिस्थानीय और द्वि-स्थानीय देखी जाती है।

*** सम्यक्त्वकी अनुभाग उदीरणा देशघाति है।**

§ ८५. क्योंकि जिस प्रकार मिथ्यात्वकी उदीरणासे सम्यकत्वपर्यायका अत्यन्त उच्छेद होता है उस प्रकार सम्यक्त्वकी उदीरणासे सम्यक्त्व संज्ञावाली जीवपर्यायका अत्यन्त उच्छेद नहीं होता।

*** वह एकस्थानीय है और द्विस्थानीय है।**

§ ८६. क्योंकि सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय देखी जाती है तथा उसकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय देखी जाती है।

*** सम्यग्मिथ्यात्वकी अनुभाग उदीरणा सर्वघाति और द्विस्थानीय है।**

§ ८७. **शंका**—इसका सर्वघातिपना कैसे है ?

**समाधान**—मिथ्यात्वकी उदीरणासे जिस प्रकार सम्यक्त्वगुणका निर्मूल विनाश होता है उसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणासे भी सम्यक्त्व संज्ञावाले जीवगुणका निर्मूल विनाश देखा जाता है।

*** चदुसंजलण-तिवेदाणमणुभागुदीरणा देसघादी वा सव्वघादी वा।**

§ ८८. कुदो ? एदेसिं जहण्णाणुभागुदीरणाए देसघादित्तणियमदंसणादो, उक्कस्साणुभागुदीरणाए च णियमदो सव्वघादित्तदंसणादो, अजहण्णाणुक्कस्साणुभागोदीरणासु देस-सव्वघादिभावाणं दोण्हं पि समुवलंभादो च। एतदुक्तं भवति—मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव एदेसिं कम्माणमणुभागुदीरणा सव्वघादी देसघादी च होदि संकिलेस-विसोहिबलेण, संजदासंजदप्पहुडि उवरि सव्वत्थेव देसघादी होदि, तत्थ सव्वघादिउदीरणाए तग्गुणपरिणामेण सह विरोहादो त्ति। संपहि एत्थेव ट्ठाणसण्णावहारणट्ठमाह—

*** एगट्ठाणिया वा दुट्ठाणिया तिट्ठाणिया चउट्ठाणिया वा।**

§ ८९. कुदो ? अंतरकरणे कदे एदेसिमणुभागोदीरणाए णियमेणेगट्ठाणियत्तदंसणादो। हेट्ठा सव्वत्थेव गुणपडिवण्णेसु दुट्ठाणियत्तणियमदंसणादो। मिच्छाइट्ठिम्मि दुट्ठाण-तिट्ठाण-चउट्ठाणभेदेण परियत्तमाणाणुभागोदीरणाए दंसणादो।

*** छण्णोकसायाणमणुभागउदीरणा देसघादी वा सव्वघादी वा।**

§ ९०. कुदो ? असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि हेट्ठा सव्वत्थेव देस-सव्वघादिभावेणेदेसि-

---

परन्तु यह द्विस्थानीय ही होती है, क्योंकि सम्यग्मिथ्यात्वके अनुभागमें द्विस्थानीयपनेको छोड़कर प्रकारान्तर सम्भव नहीं है।

*** चार संज्वलन और तीन वेदोंको अनुभाग उदीरणा देशघाति है और सर्वघाति भी है।**

§ ८८. क्योंकि इनकी जघन्य अनुभाग उदीरणामें देशघातिपनेका नियम देखा जाता है, तथा इनकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणामें नियमसे सर्वघातिपना देखा जाता है तथा इनकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाओंमें–दोनोंमें ही देशघातिपना और सर्वघातिपना उपलब्ध होता है। उक्त कथनका यह तात्पर्य है कि मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक तो इन कर्मोंकी अनुभाग उदीरणा संक्लेश और विशुद्धिके वशसे सर्वघाति और देशघाति दोनों प्रकारकी होती है। तथा संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर आगे सर्वत्र देशघाति होती है, क्योंकि इनकी सर्वघाति उदीरणाका संयमासंयम आदि गुणरूप परिणामोंके साथ विरोध है। अब यहीं पर स्थानसंज्ञाका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्र कहते है—

*** वह एकस्थानीय है, द्विस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और चतुःस्थानीय है।**

§ ८९. क्योंकि अन्तरकरण करने पर इनकी अनुभाग उदीरणा नियमसे एकस्थानीय देखी जाती है। नीचे सर्वत्र गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें द्विस्थानीयपनेका नियम देखा जाता है। तथा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें द्विस्थानीय, त्रिस्थानीय और चतुःस्थानीयके भेदसे परिवर्तमान अनुभागकी उदीरणा देखी जाती है।

*** छह नोकषायोंकी अनुभागउदीरणा देशघाति और सर्वघाति है।**

§ ९०. क्योंकि असंयतसम्यग्दृष्टि प्रभृति नीचेके गुणस्थानोंमें सर्वत्र इनकी अनुभाग

---

१. ता० प्रतौ –भागुदीरणाए इति पाठः।

मणुभागोदीरणाए पउत्तिदंसणादो, संजदासंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो त्ति देसघादि-भावेणुदीरणाए पउत्तिणियमदंसणादो च ।

*** दुट्ठाणिया वा तिट्ठाणिया वा चउट्ठाणिया वा ।**

§ ९१. कुदो ? संजदासंजदादिउवरिमगुणट्ठाणेसु छण्णोकसायाणमणुभागोदीरणाए देसघादिदुट्ठाणियत्तणियमदंसणादो । हेट्ठिमेसु वि गुणपडिवण्णेसु विट्ठाणियाणुभागुदीरणाए देस-सव्वघादिविसेसिदाए संभवोवलंभादो । मिच्छाइट्ठिम्मि विट्ठाण-तिट्ठाण-चउट्ठाणवियप्पाणं सव्वेसिमेव संभवादो । संपहि चदुसंजलण-णवणोकसायाण-मविसेसेण सव्वगुणट्ठाणेसु जीवसमासेसु च परिणामपच्चएण देसघादिउदीरणा संभवदि त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

*** चदुसंजलण-णवणोकसायाणमणुभागउदीरणा एइंदिए वि देसघादी होइ ।**

§ ९२. ण केवलसंजदादिउवरिमगुणट्ठाणेसु चेव पयदकम्माणं देसघादिउदीरणा, किं तु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सण्णिमिच्छाइट्ठि त्ति ताव एदेसु वि गुणट्ठाणेसु विसोहिकाले देसघादिउदीरणाए णत्थि पडिसेहो । ण च केवलं सण्णिपाओग्गविसोहीए चेव देसघादिउदीरणा जायदे, किं तु असण्णिपंचिंदिय-विगलिंदियपाओग्गविसोहीए वि एदेसिं कम्माणं देसघादिउदीरणाए णत्थि णिवारणा । किं बहुणा, चदुसंजलण-

---

उदीरणाकी देशघाति और सर्वघातिभावसे प्रवृत्ति देखी जाती है । तथा संयतासंयत गुणस्थान-से लेकर अपूर्वकरण गुणस्थान तक देशघातिरूपसे इनकी उदीरणाकी प्रवृत्तिका नियम देखा जाता है ।

*** वह द्विस्थानीय है, त्रिस्थानीय है और चतुःस्थानीय है ।**

§ ९१. क्योंकि संयतासंयत आदि आगेके गुणस्थानोंमें छह नोकषायोंकी अनुभाग उदीरणाके देशघातिपने और द्विस्थानीयपनेका नियम देखा जाता है, नीचेके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें भी देशघाति और सर्वघाति भेदरूप द्विस्थानीय अनुभाग उदीरणा पाई जाती है तथा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें द्विस्थानीय, त्रिस्थानीय और चतुःस्थानीय भेदरूप सभी अनुभाग उदी-रणा सम्भव है । अब चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी सामान्यरूपसे परिणाम प्रत्ययवश सब गुणस्थानों और सब जीवसमासोंमें देशघाति उदीरणा सम्भव है यह कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी अनुभाग उदीरणा एकेन्द्रिय जीवमें भी देशघाति होती है ।**

§ ९२. केवल संयत आदि उपरिम गुणस्थानोंमें ही प्रकृत कर्मोंकी देशघाति उदीरणा नहीं होती, किन्तु असंयतसम्यग्दृष्टि प्रभृति संज्ञी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान तकके इन गुणस्थानोंमें भी विशुद्धिके कालमें देशघाति उदीरणाका प्रतिषेध नहीं है । केवल संज्ञी प्रायोग्य विशुद्धिसे ही देशघाति उदीरणा होती है सो बात नहीं है, किन्तु असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय प्रायोग्य विशुद्धिसे भी इन कर्मोंकी देशघाति उदीरणाका निषेध नहीं है । बहुत कहनेसे क्या,

णवणोकसायाणमणुभागउदीरणा एइंदिए वि देसघादी होइ, तप्पाओग्गविसोहिपरिणामसंभवस्स तत्थ वि णिरंकुसत्तादो[1] त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एत्थ देसघादी चेव उदीरणा होइ त्ति णावहारेयव्वं, किं तु एदेसु जीवसमासेसु सव्वघादिउदीरणासब्भावमविप्पडिवत्तिसिद्धं कादूण देसघादिउदीरणाए तत्थासंभवणिरायरणमुहेण संभवविहाणभेदेण सुत्तेण कीरदे। तदो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि एइंदियपज्जवसाणसव्वजीवसमासेसु एदेसिं कम्माणमणुभागुदीरणा देसघादी वा सव्वघादी वा होदूण लब्भदि त्ति णिच्छयो कायव्वो। एवं घादिसण्णा ट्ठाणसण्णा च ओघं विसेसिदाओ दो वि एक्कदो परूविदाओ। संपहि दोण्हं पि सण्णाणं पुध पुध अणुगममोघादेसेहिं वत्तइस्सामो। तं जहा—

§ ९३. सण्णा दुविहा—घादिसण्णा ट्ठाणसण्णा चेदि। घादिसण्णा दुविहा—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-बारसक०-सम्मामि० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० सव्वघादी। सम्म० उक्क० अणुक्क० देसघादी। चदुसंजलण-णवणोक० उक्क० अणुभागुदी० सव्वघादी। अणुक्क० सव्वघादी वा देसघादी वा। सव्वणेरइय०-सव्वतिरिक्ख-सव्वमणुस-सव्वदेवा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। एवं जहण्णयं पि णेदव्वं। णवरि जह० अजह० भाणिदव्वं।

चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी अनुभाग उदीरणा एकेन्द्रियके भी देशघाति होती है, क्योंकि तत्प्रायोग्य विशुद्धिरूप परिणामोंकी सम्भावना वहाँ भी बिना किसी बाधाके पाई जाती है यह इस सूत्रका तात्पर्य है। यहाँ इन सबके मात्र देशघाति ही उदीरणा होती है ऐसा अवधारण नहीं करना चाहिए, किन्तु इन जीवसमासोंमें सर्वघाति उदीरणाका सद्भाव निर्विवाद सिद्ध है ऐसा जानकर देशघाति उदीरणा वहाँ सम्भव नहीं है इस बातके निराकरण द्वारा उसकी सम्भावनाका विधान अलगसे इस सूत्र द्वारा किया गया है, इसलिए संज्ञी मिथ्यादृष्टिसे लेकर एकेन्द्रिय तकके सब जीवसमासोंमें इन कर्मोंकी अनुभाग उदीरणा देशघाति और सर्वघाति होकर प्राप्त होती है ऐसा निश्चय करना चाहिए। इस प्रकार सामान्य और विशेषताको लिये हुए घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा इन दोनोका एकसाथ कथन किया। अब दोनों ही संज्ञाओंका ओघ और आदेशसे अलग-अलग अनुगम करते हैं। यथा—

§ ९३. संज्ञा दो प्रकारकी है—घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा। घातिसंज्ञा दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, बारह कषाय और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा देशघाति है। चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति है। अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सर्वघाति भी है और देशघाति भी है। सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा होती हैं उनका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार जघन्यको भी जान लेना चाहिए। इतनी विशेषता है कि जघन्य और अजघन्य ऐसा कथन करना चाहिए।

१. आ० प्रतौ तत्थ णिरकुसत्तादो इति पाठः।

**§ ९४. ट्ठाणसण्णा दुविहा—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०— ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–बारसक०–छण्णोक० उक्क० चउट्ठाणिया । अणुक्क० चउट्ठा० तिट्ठाणिया विट्ठाणिया वा । सम्म० उक्क० विट्ठाणिया । अणुक्क० विट्ठाणिया एगट्ठाणिया वा । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० विट्ठाणिया । चदु-संजलण०–तिण्णिवे० उक्क० चउट्ठाणिया । अणुक्क० चउट्ठाणिया वा तिट्ठाणिया वा विट्ठाणिया वा एगट्ठाणिया वा । एवं मणुसतिए । णवरि पज्जत्तएसु इत्थिवेदो णत्थि । मणुसिणीसु पुरिस०[1]–णवुंस० णत्थि ।**

**§ ९५. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० चउट्ठाणिया । अणुक्क० चउट्ठा० तिट्ठाणि० विट्ठाणि० । सम्म०–सम्मामि० ओघं । एवं पढमाए । विदियादि जाव सत्तमि त्ति एवं चेव । णवरि सम्म० उक्क० अणुक्क० विट्ठाणिया । तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खतिये[2] मिच्छ०–सोलसक०–णवणोक० उक्क० चउट्ठाणिया । अणुक्क० चउट्ठा० तिट्ठा० विट्ठाणिया । सम्म०–सम्मामि० ओघं । णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि । जोणिणीसु पुरिस०–णवुंस० णत्थि । सम्म० उक्क०**

§ ९४. स्थानसंज्ञा दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, बारह कषाय और छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है और द्विस्थानीय भी है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय भी है और एकस्थानीय भी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । चार संज्वलन और तीन वेदोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है, द्विस्थानीय भी है और एकस्थानीय भी है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि मनुष्यपर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है । तथा मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है ।

§ ९५. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है और द्विस्थानीय भी है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए । दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । तिर्यञ्च और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुःस्थानीय है । अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा चतुः-स्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है और द्विस्थानीय भी है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि तिर्यञ्चपर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा

१ ता. प्रतौ णत्थि । जोणिणीसु ( मणुसिणीसु ) पुरिस० णवुंस० इति पाठः । आ. प्रतौ णत्थि जोणिणीसु पुरिस० णवुंस० इति पाठः ।

२. आ. प्रतौ पंचिंदियतिये इति पाठः ।

अणुक्क० विट्ठाणि० । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० णारयभंगो । देवा० तिरिक्खोघं । णवरि णवुंस० णत्थि । एवं सोहम्मीसाण० । एवं भवण०-वाणवें०-जोदिसि० । णवरि सम्म० उक्क० अणुक्क० विट्ठाणि० । सणक्कुमारादि जाव सहस्सारे त्ति देवोघं । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । आणदादि जाव सव्वट्ठा त्ति अप्पप्पणो पयडीणं उक्क० अणुक्क० विट्ठाणि० । णवरि सम्म० ओघं । एवं जाव० ।

§ ९६. जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-बारसक०-छण्णोक० जह० विट्ठाणि० । अजह० विट्ठाणि० तिट्ठाणि० चउट्ठाणि० । सम्म० जह० एगट्ठाणि० । अज० एगट्ठाणि० विट्ठाणिया वा । सम्मामि० जह० अजह० विट्ठाणि० । चदुसंजल०-तिण्णिवेद० जह० एगट्ठाणि० । अजह० एगट्ठाणि० विट्ठाणि० तिट्ठा० चउट्ठाणिया वा । एवं मणुसतिए । णवरि पज्जत्तएसु इत्थिवेदो णत्थि । मणुसिणीसु पुरिसवे०-णवुंस० णत्थि ।

§ ९७. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० जह० विट्ठाणिया ।

योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग नारकियोंके समान है । सामान्य देवोंमें सामान्य तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है । इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए । इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्व की उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है । आनत कल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ९६. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, बारह कषाय और छह नोकषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है और चतुःस्थानीय भी है । सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय भी है और द्विस्थानीय भी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । चार संज्वलन और तीन वेदोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय भी है, द्विस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है और चतुःस्थानीय भी है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंकसवेद नहीं है ।

§ ९७. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है । अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय

अजह० विट्ठाणि० तिट्ठाणि चउट्ठाणि० । सम्म०–सम्मामि० ओघं । एवं पढमाए । विदियादि जाव सत्तमा त्ति एवं चेव । णवरि सम्म० जह० अजह० विट्ठाणि० ।

§ ९८. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सोलसक०–णवणोक० जह० विट्ठाणिया । अजह० विट्ठा० तिट्ठा० चउट्ठा० । सम्म०–सम्मामि० ओघं । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिए । णवरि पज्ज० इत्थिवे० णत्थि । जोणिणी० पुरिसवे०-णवुंस० णत्थि । सम्म० जह० अजह० विट्ठाणि० । पंचिं०तिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० णारयभंगो ।

§ ९९. देवेसु तिरिक्खोघं । णवरि णवुंस० णत्थि । एवं सोहम्मीसाण० । एवं भवण०–वाणवें०–जोदिसि० । णवरि सम्म० जह० अजह० विट्ठाणि० । सणक्कुमारादि जाव सहस्सारा त्ति देवोघं । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । आणदादि सव्वट्ठा त्ति अप्पप्पणो पयडीणं जह० अजह० विट्ठाणि० । णवरि सम्म० जह० एगट्ठा० । अजह० एगट्ठा० विट्ठाणिया वा । एवं जाव० ।

§ १००. एत्थ सुगमत्तादो सुत्तेणापरूविदाणं सव्वुदीरणादीणमुच्चारणादो अणुगमं

---

भी है और चतुःस्थानीय भी है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय ही है।

§ ९८. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है। अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय भी है, त्रिस्थानीय भी है और चतुःस्थानीय भी है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। योनियोमे सम्यक्त्वकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग नारकियोंके समान है।

§ ९९. देवोंमें सामान्य तिर्यञ्चोके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसक वेद नहीं है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्पतकके देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। आनत कल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा द्विस्थानीय है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय है। अजघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय भी है और द्विस्थानीय भी है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ १००. यहाँ सुगम होनेसे सूत्रद्वारा नहीं कहे गये सर्व उदीरणा आदिका उच्चारणाके अनुसार अनुगम करते हैं। यथा—सर्व अनुभाग उदीरणा और नोसर्व अनुभाग उदीरणानु-

**कस्सामो । तं जहा—सव्वुदीर०–णोसव्वुदीरणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपयडी० सव्वाणि फद्दयाणि उदीरेमाणस्स सव्वुदीरणा । तदूणं णोसव्वुदीरणा । एवं जाव०**

**§ १०१. उक्क०उदी०–अणुक्क०उदीरणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपयडी० सव्वुक्कस्सयाणि अणुभागफद्दयाणि उदीरेमाणस्स उक्कस्स-उदीर० । तदूणमणुक्क०उदी० । एवं जाव० ।**

**§ १०२. जह०–अजह०उदी० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्व-पयडी० सव्वजहण्णयाणि अणुभागफद्दयाणि उदी० जह०उदीरणा । तदुवरि अजह०-उदीर० । एवं जाव० ।**

**§ १०३. सादि०–अणादि०–धुव०–अद्धुवाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ० उक्क० अणुक्क० जहण्णमणुभागुदीरणा किं सादिया४ ? सादि-अद्धुवा । अजह० किं सादि०४ ? सादि० अणादि० धुव० अद्धुवा वा । सोलसक०–णवणोक०–सम्म०–सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अजह० किं सादि०४ ? सादि–**

गमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके सब स्पर्धकोंकी उदीरणा करनेवालेके सर्व अनुभाग उदीरणा होती है और उससे कमकी उदीरणा करनेवालेके नोसर्व अनुभाग उदीरणा होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ १०१. उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा और अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके सबसे उत्कृष्ट अनुभाग-स्पर्धकोंकी उदीरणा करनेवालेके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है और उनसे न्यून स्पर्धकोंकी उदीरणा करनेवालेके अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ १०२. जघन्य अनुभाग उदीरणा और अजघन्य अनुभाग उदीरणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है। ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके सबसे जघन्य अनुभाग स्पर्धकोंकी उदीरणा करनेवालेकी जघन्य अनुभाग उदीरणा होती है और उनसे अधिक अनु-भाग स्पर्धकोंकी उदीरणा करनेवालेके अजघन्य अनुभाग उदीरणा होती है। इसी प्रकार अना-हारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ १०३. सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुवानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट और जघन्य अनुभाग उदीरणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि और अध्रुव है। अजघन्य अनुभाग उदी-रणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि है, अनादि है, ध्रुव है और अध्रुव है। सोलह कषाय, नौ नोकषाय, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि और अध्रुव है। आदेशसे नारकियोंमें सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट,

अद्धुवा । आदेसेण णेरइय० सव्वपयडीणं उक्क० अणुक्क० जह० अजह० सादि०-अद्धुवा वा । एवं जाव० ।

*** एगजीवेण सामित्तं ।**

§ १०४. एत्तो एगजीवेण सामित्तमहिकयं दट्ठव्वमिदि अहियारसंभालणवक्कमेदं ।

*** तं जहा ।**

§ १०५. सुगमं । तं च सामित्तं दुविहं । जह० उक्क०—तत्थुक्कस्ससामित्ताणुगमो ताव कीरदे । तस्स दुविहो णिद्देसो ओघादेसभेदेण । तत्थोघपरूवणट्ठमाह—

*** मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ १०६. सुगमं ।

*** मिच्छाइट्ठिस्स सण्णिस्स सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तयदस्स उक्कस्स-संकिलिट्ठस्स ।**

§ १०७. एत्थ मिच्छाइट्ठिणिद्देसो सेसगुणट्ठाणेसु पयदसामित्तसंभवासंकाणिवारणफलो । सण्णिस्से त्ति णिद्देसो असण्णिपंचिंदियप्पहुडि हेट्ठिमासेसजीवसमासेसु पयद-

जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणा सादि और अध्रुव है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—आगे उत्कृष्ट और जघन्य स्वामित्वका जो कथन किया है उससे स्पष्ट है कि मिथ्यात्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट और जघन्य अनुभाग उदीरणा सादि और अध्रुव होती है । किन्तु अजघन्य अनुभाग उदीरणा सादि आदि चारों प्रकारकी होती है । शेष कथन सुगम है ।

*** अब एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वका अधिकार है ।**

§ १०४. यहाँसे एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वका अधिकार जानना चाहिए इस प्रकार अधिकारकी सम्हाल करनेवाला यह वचन है ।

*** यथा—**

§ १०५. यह सूत्र सुगम है । वह स्वामित्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उसमें सर्व प्रथम उत्कृष्ट स्वामित्वका अनुगम करते हैं—ओघ और आदेशके भेदसे उसका निर्देश दो प्रकारका है । उनमेसे ओघका कथन करनेके लिए कहते है—

*** मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १०६. यह सूत्र सुगम है ।

*** सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त तथा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए संज्ञी मिथ्यादृष्टिके होती है ।**

§ १०७. यहाँ पर शेष गुणस्थानोंमें प्रकृत स्वामित्वकी सम्भावनाकी आशंकाका निराकरण करनेके लिए 'मिथ्यादृष्टि' पदका निर्देश किया है । असंज्ञी पञ्चेन्द्रियसे लेकर नीचेके समस्त जीवसमासोंमें प्रकृत स्वामित्वका निवारण करनेके लिए सूत्रमें 'संज्ञी' पदका निर्देश

सामित्तणिवारणफलो। सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तयदस्से त्ति विसेसणं सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तएसु णिव्वत्तिअपज्जत्तएसु वा पयदसामित्तसंभवाभावपदुप्पायणट्ठं। तदो सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्सेव पयदुक्कस्ससामित्तं होइ, णाण्णस्से त्ति सिद्धं। तस्स वि सव्वुक्कस्सो जो पज्जवसाणसंकिलेसपरिणामो तेणेव परिणदस्स मिच्छत्तुक्कस्साणुभागुदीरणा होदि, णाण्णस्से त्ति जाणावणट्ठमुक्कस्ससंकिलिट्ठस्से त्ति भणिदं। किमट्ठमण्णजोगववच्छेदेण सव्वसंकिलिट्ठस्सेव पयदसामित्तणियमो? ण, मंदसंकिलेसेण विसोहीए वा परिणदस्स सव्वुक्कस्साणुभागुदीरणाणुववत्तीदो। तदो उक्कस्साणुभागसंतकम्मट्ठाणचरिमफद्दयचरिमवग्गणाविभागपडिच्छेदे उक्कस्ससंकिलेसवसेण थोवयरे चेव हाइदूण[2] तप्पाओग्गहेट्ठिमाणंतगुणहीणचउट्ठाणाणुभागसरूवेण उदीरेमाणस्स सण्णिपंचिंदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्सयं मिच्छत्ताणुभागुदीरणासामित्तं होदि त्ति एसो सुत्तत्थसमुच्चयो। एत्थ उक्कस्साणुभागसंतकम्मादो चेव उक्कस्साणुभागुदीरणा होदि त्ति णत्थि णियमो, किंतु तप्पाओग्गाणुक्कस्साणुभागसंतकम्मेण वि उक्कस्साणुभागुदीणाए होदव्वं, अण्णहा थावरकायादो आगंतूण तसकाइएसुप्पण्णस्स सव्वकालमुक्कस्साणुभागसंतकम्मुप्पत्तीए अभावप्पसंगादो। तं जहा—

किया है। संज्ञी पञ्चेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकों या निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंमें प्रकृत स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है इस बातका कथन करनेके लिए सूत्रमें 'सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तयदस्स' यह विशेषण दिया है। इससे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय निर्वृत्ति पर्याप्तके ही प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, अन्यके नहीं यह सिद्ध हुआ। उसमें भी सर्वोत्कृष्ट जो अन्तिम संक्लेश परिणाम है उससे ही परिणत हुए उस जीवके मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है, अन्यके नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स' यह वचन कहा है।

**शंका**—अन्ययोगके व्यवच्छेद द्वारा सबसे उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवालेके ही प्रकृत स्वामित्वका नियम किसलिए किया है?

**समाधान**—नहीं, क्योंकि मन्द संक्लेश या विशुद्धिरूपसे परिणत हुए जीवके सर्वोत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा नहीं बन सकती।

इसलिए उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मस्थानके अन्तिम स्पर्धककी अन्तिम वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदोंको उत्कृष्ट संक्लेशवश अति स्वल्प घटाकर तत्प्रायोग्य अधस्तन अनन्त गुणहीन चतुःस्थान अनुभागस्वरूपसे उदीरणा करनेवाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवके मिथ्यात्वकी अनुभाग उदीरणाका उत्कृष्ट स्वामित्व होता है यह इस सूत्रका समुच्चय अर्थ है। यहाँ उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मसे ही उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है ऐसा नियम नहीं है, किन्तु तत्प्रायोग्य अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मसे भी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होनी चाहिए, अन्यथा स्थावरकायमें से आकर त्रसकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवके सर्वदा उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मकी उत्पत्तिका अभाव प्राप्त होता है। यथा—

१ आ॰ प्रतौ सव्वाहि पज्जत्तयदस्से त्ति इति पाठः।

२. आ॰प्रतौ थोवरे चेव होदूण इति पाठः, ता प्रतौ थोवयरे चेव होइदूण इति पाठः।

§ १०८. थावरकायादो आगंतूण तसकाइएसुप्पण्णस्साणुभागसंतकम्ममणुक्कस्सं होइ, विट्ठाणियत्तादो । पुणो एदं संतकम्ममुदीरेमाणो पंचिंदियो चउट्ठाणमणुक्कस्साणुभागं बंधदि । संपहि एवं विहाणेण बद्धचउट्ठाणियाणुक्कस्साणुभागसंतकम्मेण सो चेव उक्कस्साणुभागबंधपाओग्गो वि होइ, सव्वुक्कस्ससंकिलेसपरिणामेण परिणदस्स तस्स तदविरोहादो । जइ पुण उक्कस्साणुभागसंतकम्मेण विणा उक्कस्साणुभागुदयो उदीरणा वा ण होदि त्ति णियमो तो तस्स उक्कस्सोदयाभावेण तदविणाभविउक्कस्ससंकिलेसाभावादो उक्कस्साणुभागबंधो सव्वकालं ण होज्ज ? ण च एवं, तहा संते उक्कस्साणुभागुप्पत्तीए तत्थाभावप्पसंगादो । तदो उक्कस्साणुभागसंतकम्मियस्स तप्पाओग्गाणुक्कस्साणुभागसंतकम्मियस्स वा सण्णिमिच्छाइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स उक्कस्साणुभागुदीरणासामित्तं होदि त्ति णिच्छेयव्वं । एवं मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणासामित्तविणिण्णयं कादूण संपहि एदेणेव गयत्थाणमण्णेसिं पि कम्माणं पयदसामित्तसमप्पणट्ठमुत्तरसुत्तं भणइ—

* एवं सोलसकसायाणं ।

§ १०९. सुगममेदमप्पणासुत्तं । एत्थ सव्वुक्कस्ससंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिअणुभागुदीरणाए सामित्तविसईकयाए माहप्पजाणावणट्ठमेदमप्पाबहुअमणुगंतव्वं । तं जहा—सम्म-

§ १०८. स्थावरकायिकोंमेंसे आकर त्रसकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवके अनुभाग सत्कर्म अनुत्कृष्ट होता है, क्योंकि वह द्विस्थानीय है । पुनः इस सत्कर्मकी उदीरणा करनेवाला पञ्चेन्द्रिय जीव चतुःस्थानीय अनुत्कृष्ट अनुभागका बन्ध करता है । अब इस विधिसे बन्धको प्राप्त हुए चतुःस्थानीय अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मके द्वारा वही जीव उत्कृष्ट अनुभागबन्धके योग्य भी होता है, क्योंकि सर्वोत्कृष्ट संक्लेश परिणामसे परिणत हुए उस जीवके उसके होनेमें कोई विरोध नहीं है । किन्तु यदि उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मके विना उत्कृष्ट अनुभागका उदय या उदीरणा नहीं होती है ऐसा नियम हो तो उसके उत्कृष्ट उदयका अभाव होनेसे उसका अविनाभावी उत्कृष्ट संक्लेशका अभाव होनेसे उत्कृष्ट अनुभागबन्ध सर्व काल नहीं होगा । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि ऐसा होने पर वहाँ पर उत्कृष्ट अनुभागकी उत्पत्तिका अभाव प्राप्त होता है । इसलिए उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाले या तत्प्रायोग्य अनुत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाले सर्व संक्लिष्ट संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका स्वामित्व है ऐसा यहाँ निश्चय करना चाहिए । इस प्रकार मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाके स्वामित्वका निर्णय करके अब इसीके द्वारा जिनके अर्थका ज्ञान हो गया है ऐसे अन्य कर्मोंके भी प्रकृत स्वामित्वका ज्ञान करानेके लिए आगे का सूत्र कहते हैं—

* इसी प्रकार सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका स्वामित्व जानना चाहिए ।

§ १०९. यह अर्पणासूत्र सुगम है । यहाँ पर स्वामित्वकी विषयभूत सर्वोत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले मिथ्यादृष्टिसम्बन्धी अनुभाग उदीरणाके माहात्म्यका ज्ञान करानेके लिए यह अल्पबहुत्व जानना चाहिए । यथा—सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि-

त्ताहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स अणुभागुदीरणा थोवा। दुचरिमसमए अणंतगुणब्भहिया। तिचरिमसमए अणंतगुणब्भहिया। एवं चउत्थसमयादी० णेदव्वं जाव। सव्वुक्कस्ससंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिस्स अणुभागुदीरणा अणंतगुणा त्ति। तदो अण्णजोगववच्छेदेणेत्थेव मिच्छत्त-सोलसकसायाणमुक्कस्ससामित्तमवहारेयव्वमिदि। संपहि सम्मत्तस्स उक्कस्ससामित्तविहासणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

*** सम्मत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ ११०. सुगममेदं पुच्छावक्कं।

*** मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्मादिट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स।**

§ १११. जो असंजदसम्माइट्ठी सम्मत्तं वेदेमाणो परिणामपच्चयेण मिच्छत्ताहिमुहो होदूण अंतोमुहुत्तमणंतगुणाए संकिलेसवड्ढीए वड्ढिदो तस्स चरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होदि। कुदो ? जीवादिपयत्थे दूसिय मिच्छत्तं गच्छमाणस्स तस्स उक्कस्ससंकिलेसेण बहुआणुभागहाणीए अभावेण सम्मत्तुक्कस्साणुभागुदीरणाए तत्थ सुव्वत्तमुवलंभादो। सव्वत्थुक्कस्ससंकिलेसेण बहुगो

---

के अनुभाग उदीरणा स्तोक है। उससे द्विचरम समयमें अनन्तगुणी अधिक है। उससे त्रिचरम समयमें अनन्तगुणी अधिक है। इस प्रकार चतुःचरम समयसे लेकर सर्वोत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले मिथ्यादृष्टिके अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। इसलिए अन्ययोग व्यवच्छेदसे यहीं पर मिथ्यात्व और सोलह कषायोंका उत्कृष्ट स्वामित्व जानना चाहिए। अब सम्यक्त्वके उत्कृष्ट स्वामित्वका व्याख्यान करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ ११० यह पृच्छावाक्य सुगम है।

*** मिथ्यात्वके सन्मुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टि सर्व संक्लेश परिणामवाले जीवके होती है।**

§ १११. जो असंयत सम्यग्दृष्टि जीव सम्यक्त्वका वेदन करता हुआ और परिणाम प्रत्ययवश मिथ्यात्वके अभिमुख होकर अन्तर्मुहूर्त काल तक अनन्तगुणी संक्लेशकी वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टि सर्व संक्लेश परिणामवाले जीवके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, क्योंकि जीवादि पदार्थोंको दूषितकर मिथ्यात्वको जानेवाले उस जीवके उत्कृष्ट संक्लेशवश बहुत अनुभागकी हानिका अभाव होनेसे सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा वहाँपर सुव्यक्त पाई जाती है।

**शंका**—सर्वत्र उत्कृष्ट संक्लेशसे बहुत अनुभाग हानिको नहीं प्राप्त होता यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

**समाधान**—इसी सूत्रसे जाना जाता है।

अणुभागो ण हीयदि त्ति कत्तो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । संपहि सम्मामिच्छ-त्तुक्कस्साणुभागोदीरणाए सामित्तविहाणट्ठमाह—

*** सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ ११२. सुगमं ।

*** मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ।**

§ ११३. एत्थ मिच्छत्ताहिमुहविसेसणं सत्थाणसम्मामिच्छाइट्ठिवुदासट्ठं सम्मत्ता-हिमुहसमामिच्छाइट्ठिपडिसेहट्ठं वा, तत्थुक्कस्ससंकिलेसाभावेण पयदसामित्तविहाणो-वायाभावादो । चरिमसमयविसेसणं दुचरिमादिहेट्ठिमसमयावट्ठिदसम्मामिच्छाइट्ठिपडि-सेहट्ठं । सम्मामिच्छाइट्ठिणिद्देसो सेसगुणट्ठाणेसु पयदसामित्तस्स अच्चंताभावपदुप्पायण-फलो । सव्वसंकिलिट्ठस्से त्ति विसेसणं मंदसंकिलेसेण मिच्छत्तं पडिवज्जमाणचरिमसमय-सम्मामिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा ण होदि त्ति जाणावणट्ठं । तदो एवंविहस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होइ त्ति सिद्धं ।

*** इत्थिवेद-पुरिसवेदाणमुक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ ११४. सुगमं ।

---

अब सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाके स्वामित्वका विधान करनेके लिए कहते हैं—

*** सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ ११२. यह सूत्र सुगम है ।

*** मिथ्यात्वके अभिमुख हुए सर्व संक्लेश परिणामवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके होती है ।**

§ ११३. यहाँ पर स्वस्थान सम्यग्मिथ्यादृष्टिका निराकरण करनेके लिए 'मिथ्यात्व के अभिमुख' यह विशेषण दिया है अथवा सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रतिषेध करनेके लिए 'मिथ्यात्वके अभिमुख' यह विशेषण दिया है, क्योंकि वहाँपर उत्कृष्ट संक्लेशका अभाव होनेसे प्रकृत स्वामित्वके विधानके उपायका अभाव है । द्विचरमआदि अधस्तन समयोंमें स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रतिषेध करनेके लिए 'अन्तिम समय' यह विशेषण दिया है । शेष गुणस्थानोंमें प्रकृत स्वामित्वके अत्यन्ताभावको दिखलानेके लिए 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि' पद-का निर्देश किया है । मन्द संक्लेशसे मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले अन्तिम समयवर्ती सम्य-ग्मिथ्यादृष्टि जीवके उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा नहीं होती इसका ज्ञान करानेके लिए 'सव्व-संकिलिट्ठस्स' यह विशेषण दिया है। इसलिए इस प्रकारके जीवके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है यह सिद्ध हुआ ।

*** स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ ११४. यह सूत्र सुगम है ।

*** पंचिंदियतिरिक्खस्स अट्ठवासजादस्स करहस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ।**

§ ११५. एत्थ पंचिंदियतिरिक्खणिद्देसो मणुस-देवगदिवुदासट्ठो, तत्थुक्कस्सवेद-संकिलेसाभावादो । कुदो एदं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । अट्ठवासजादस्से त्ति तस्स विसेसणमट्ठवस्सेहिंतो हेट्ठा सव्वुक्कस्सो वेदसंकिलेसो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं । करभस्से त्ति वयणं जादिविसेसेण तत्थेवित्थि-पुरिसवेदाणमुक्कस्साणुभागुदीरणा होदि त्ति पदुप्पायणट्ठं । तस्स वि उक्कस्ससंकिलेसेण परिणदावत्थाए चेव उक्कस्साणु-भागउदीरणा होदि त्ति जाणावणट्ठं सव्वसंकिलिट्ठस्से त्ति भणिदं । तदो एवंविहस्स जीवस्स पयदुक्कस्ससामित्तमिदि सिद्धं ।

*** णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणमुक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ ११६. सुगमं ।

*** सत्तमाए पुढवीए णेरइयस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ।**

§ ११७. एत्थ सत्तमपुढविम्मि एदेसिं कम्माणमुक्कस्ससामित्तविहाणस्साहि-प्पाओ वुच्चदे । तं जहा—एदाओ पयडीओ अच्चंतमप्पसत्थसरूवाओ, एयंतेण दुक्खुप्पा-यणसहावत्तादो । तदो एदासिमुदीरणाए सत्तमपुढवीए चेव उक्कस्ससामित्तं होइ, तत्तो

---

*** आठ वर्षकी आयुवाले तथा सर्व संक्लेश परिणामवाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च ऊँटके होती है ।**

§ ११५. यहाँ सूत्रमें मनुष्यगति और देवगतिका निराकरण करनेके लिए 'पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च' पदका निर्देश किया है, क्योंकि उन गतियोंमें उत्कृष्ट वेदरूप संक्लेशका अभाव है ।

**शंका**—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

**समाधान**—इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

आठ वर्षसे पूर्व सर्वोत्कृष्ट वेदरूप संक्लेश नहीं होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसके विशेषणरूपसे 'अष्टवर्षजात' यह वचन दिया है । करभके ही स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है इस बातका कथन करनेके लिए 'करभस्य' यह वचन दिया है । उसके भी उत्कृष्ट संक्लेशसे परिणत अवस्थाके होनेपर ही उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'सर्वसंक्लिष्टस्य' यह कहा है । इसलिए इस प्रकारके जीवके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है यह सिद्ध हुआ ।

*** नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ ११६. यह सूत्र सुगम है ।

*** सातवीं पृथिवीमें सबसे अधिक संक्लेश परिणामवाले जीवके होती है ।**

§ ११७. यहाँ सातवीं पृथिवीमें इन कर्मोंके उत्कृष्ट स्वामित्वके विधान करनेका अभिप्राय कहते है । यथा—ये प्रकृतियाँ अत्यन्त अप्रशस्तस्वरूप हैं, क्योंकि ये एकान्तसे दुःखके उत्पादन करनेकी स्वभाववाली है । इसलिए इनकी उदीरणाका सातवीं पृथिवीमें ही उत्कृष्ट स्वामित्व

**अण्णस्स[1] दुक्खणिहाणस्स तिहुवणभवणब्भंतरे कहिं पि अणुवलंभादो । तदुदीरणाकारण-बज्झदव्वाणं पि असुहयराणं तत्थेव बहुलं संभवोवलंभादो ।**

*** हस्स-रदीणमुक्कस्साणुभागउदीरणा कस्स ?**

**११८. सुगमं ।**

*** सदार-सहस्सारदेवस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ।**

**११९. कुदो ? सदार-सहस्सारदेवेसु रागबहुलेसु हस्स-रदिकारणाणं बहूणमुवलंभादो । णेदमसिद्धं, उक्कस्सेण छम्मासमेत्तकालं तत्थ हस्स-रदीणमुदयो होदि त्ति परमागमोवएसबलेण सिद्धत्तादो । एवमोघेण उक्कस्ससामित्तं समत्तं ।**

**१२०. संपहि आदेसपरूवणट्ठमुच्चारणं वत्तइस्सामो । तं जहा—सामित्तं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । तत्थोघणिद्देसो जइ वि सुत्तसंबद्धो परूविदो, तो वि मंदबुद्धीणं सुहावगमणट्ठं ओघादो वत्तइस्सामो । ओघेण मिच्छ०-सोलसक० उक्कस्साणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० उक्कस्साणुभागसंतकम्मियस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । णवुंसय०-अरदि-सोग-भय-दुगुंछ० उक्क० कस्स ? अण्णद० सत्तमाए णेरइयस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । इत्थिवेद-पुरिसवेद० उक्क०**

होता है, क्योंकि उससे दुःखका निधानभूत अन्य कोई स्थान तीन भुवनके भीतर कहीं भी उपलब्ध नहीं है। उनकी उदीरणाका कारण अशुभतर बाह्य द्रव्य भी वहीं पर बहुलतासे सम्भव है।

*** हास्य और रतिकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ ११८. यह सूत्र सुगम है।

*** सबसे अधिक संक्लेश परिणामवाले शतार और सहस्रार कल्पके देवके होती है।**

§ ११९. क्योंकि रागबहुल शतार और सहस्रार कल्पके देवोंमें हास्य और रतिके बहुत कारण पाये जाते हैं। यह असिद्ध नहीं है, क्योंकि उत्कृष्टसे छह माह तक वहाँ हास्य और रतिका उदय होता है इस परमागमके उपदेशसे यह सिद्ध है।

इस प्रकार ओघसे उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

§ १२०. अब आदेशका कथन करनेके लिए उच्चारणाको बतलाते हैं। यथा—स्वामित्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। वहाँ ओघसे निर्देश यद्यपि सूत्रमें पूरी तरहसे निरूपित कर दिया है तो भी मन्दबुद्धि शिष्योंको सुखपूर्वक ज्ञान करानेके लिए ओघसे बतलावेंगे। ओघसे मिथ्यात्व और सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? जो उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला है और उत्कृष्ट संक्लेश परिणामसे युक्त है उसके होती है। नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर सातवीं पृथिवीके नारकीके होती है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा

---

१. आ० प्रतौ तत्तो अण्णदरस्स, ता० प्रतौ तदो अण्णस्स इति पाठः।

**कस्स ? अण्णद० पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स अट्ठवासजादस्स करभस्स । हस्स-रदि० उक्क० कस्स ? अण्णद० सहस्सारदेवस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । सम्म० उक्कस्साणु० कस्स ? अण्ण० मिच्छत्ताहिमुहस्स तप्पाओग्गुक्कस्ससंकिलिट्ठस्स चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स । सम्मामि० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० मिच्छत्ताहिमुहस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स ।**

§ १२१. **आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-सोलसक०-हस्स-रदि० उक्क अणुभागुदी० कस्स ? अण्ण० मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । सम्म०-सम्मामि०-णवुंसय०-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा० ओघं । पढमादि जाव सत्तमा त्ति मिच्छ-सोलसक०-सत्तणोक० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । सम्म०-सम्मामि० ओघं ।**

§ १२२. **तिरिक्खेसु ओघं । णवरि हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसय० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्ण० मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । एवं पंचिदियतिरिक्खतिये । णवरि पज्जत्तएसु इत्थिवेदो णत्थि । जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० उक्क० अणुभा-**

---

किसके होती है ? आठ वर्षकी आयुवाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक ऊँटके होती है । हास्य और रतिकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर शतार-सहस्रार कल्पके देवके होती है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती अन्यतर सम्यग्दृष्टि जीवके होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्यतर अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके होती है ।

§ १२१. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय, हास्य और रतिकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका भंग ओघके समान है । पहली पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवी तकके नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है ।

§ १२२. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है और योनिनियोंमें पुरुषवेद तथा नपुंसकवेद नहीं है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर जीवके होती है । मनुष्यत्रिकमें सब प्रकृतियों-

गुदी० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गुक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । मणुसतिये सव्वपय० उक्क० कस्स ? अण्णद० उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स मिच्छाइट्ठिस्स । णवरि सम्म०–सम्मामि० ओघं ।

§ १२३. देवेसु मिच्छ–सोलसक०–इत्थिवे०–पुरिसवे०–अरदि-सोग-भय-दुगुंछा० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स मिच्छा० । सम्म०–सम्मामि०–हस्स-रदि० ओघं । भवणादि जाव सहस्सारे त्ति अप्पणो पयडि० उक्क० कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । णवरि सम्म०–सम्मामि० ओघं । आणदादि णवगेवज्जा त्ति अप्पप्पणो पयडी० उक्क० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स मिच्छा० । सम्म०–सम्मामि० ओघं । णवरि तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति अप्पप्पणो पय० उक्क० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स वेदयसम्माइट्ठिस्स । एवं जाव० ।

*** एत्तो जहण्णिया उदीरणा ।**

§ १२४. एत्तो उवरि जहण्णिया उदीरणा अणुभागविसया सामित्तविसेसिदा कायव्वा त्ति भणिदं होइ ।

*** मिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ १२५. सुगमं

---

की उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है ।

§ १२३. देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, हास्य और रतिका भंग ओघके समान है । भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्पतकके देवोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । आनतकल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवालेके होती है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाले अन्यतर वेदकसम्यग्दृष्टिके होती है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

*** इससे आगे जघन्य अनुभाग उदीरणाके स्वामित्वका अधिकार है ।**

§ १२४. इससे आगे स्वामित्व विशेषणसे युक्त अनुभागविषयक जघन्य उदीरणा करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

*** मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १२५. यह सूत्र सुगम है ।

*** संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स।**

§ १२६. मिच्छाइट्ठी संजमाहिमुहो होदूण समयं पडि अणंतगुणविसोहीए विसुज्झमाणो गच्छइ जाव चरिमसमयो त्ति तेण तस्स संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वुक्कस्सविसोहीए विसुद्धस्स मिच्छत्ताणुभागुदीरणा जहण्णिया होदि। किं कारणं? विसोहिपयरिसेण अप्पसत्थाणं कम्माणमणुभागो सुट्ठु ओहट्टिऊण हेट्ठिमाणंतिमभागसरूवेणुदीरिज्जदि त्ति। तदो सम्मत्तं संजमं च जुगवं गेण्हमाणचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स जहण्णसामित्तमेदं दट्ठव्वं।

*** सम्मत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स?**

§ १२७. सुगमं

*** समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणीयस्स।**

§ १२८. कुदो? दंसणमोहक्खवयतिव्वपरिणामेहि बहुअं खंडयघादं पाविदूण पुणो अंतोमुहुत्तमेत्तकालमणुसमओवट्टणाए सुट्ठु ओहट्टिऊण ट्ठिदसम्मत्ताणुभागविसयउदीरणाए तत्थ जहण्णभावसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो। एसा समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणीयस्स जहण्णाणुभागुदीरणा एयट्ठाणिया। एत्तो पुव्विल्लासेसअणुभागुदीरणाओ एयट्ठाणिय–विट्ठाणियसरूवाओ जहाकममणंतगुणाओ। तदो तप्परिहारेणेत्थेव जहण्णसामित्तं गहिदं।

---

*** संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है।**

§ १२६. मिथ्यादृष्टि जीव संयमके अभिमुख होकर प्रति समय अनन्तगुणी विशुद्धिसे विशुद्ध होता हुआ मिथ्यात्व गुणस्थानके अन्तिम समय तक जाता है, इसलिए संयमके अभिमुख हुए तथा सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिसे विशुद्ध हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा होती है, क्योंकि विशुद्धिके प्रकर्षसे अप्रशस्त कर्मोंका अनुभाग बहुत कम होकर अन्तिम अनन्तवें भागरूपसे उदीरित होता है। इसलिए सम्यक्त्व और संयमको युगपत् ग्रहण करनेवाले अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके यह जघन्य स्वामित्व जानना चाहिए।

*** सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है।**

§ १२७. यह सूत्र सुगम है।

*** जिसके अभी दर्शनमोहनीयकी क्षपणा सम्पन्न नहीं हुई, किन्तु उसमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष है उसके होती है।**

§ १२८. क्योंकि दर्शनमोहनीयके क्षपकके तीव्र परिणामोंसे बहुत काण्डकघातोंको प्राप्त कर पुनः अन्तर्मुहूर्तकाल तक प्रति समय अपवर्तनाके द्वारा अच्छी तरह घटाकर स्थित हुए सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा वहाँ पर जघन्यरूपसे निर्बाध पाई जाती है। जिसके अभी दर्शनमोहनीयकी क्षपणा पूरी नहीं हुई, किन्तु उसमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष है उसके यह जघन्य अनुभाग उदीरणा एकस्थानीय होती है। इससे पूर्वकी एकस्थानीय और द्विस्थानीय समस्त अनुभाग उदीरणायें क्रमसे अनन्तगुणी हैं, इसलिए उनके निराकरण द्वारा यहाँ पर ही जघन्य स्वामित्व ग्रहण किया है।

*** सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ।**

§ १२९. सुगमं ।

*** सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ।**

§ १३०. एत्थ संजमाहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्से त्ति किण्ण वुच्चदे ? ण, सम्मामिच्छाइट्ठिस्स संजमगुणपडिवत्तीए अच्चंताभावेण पडिसिद्धत्तादो । तम्हा सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गसव्वुक्कस्सविसोहीए विसुद्धस्स पयदजहण्णसामित्तमिदि घेत्तव्वं ।

*** अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

§ १३१. सुगमं ।

*** संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ।**

§ १३२. एदस्स सुत्तस्स मिच्छत्तजहण्णसामित्तसुत्तस्सेव अत्थपरूवणा कायव्वा, विसेसाभावादो ।

*** अपच्चक्खाणकसायस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

§ १३३. सुगमं ।

---

*** सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १२९. यह सूत्र सुगम है ।

*** सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है ।**

§ १३०. **शंका**—यहाँपर संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है ऐसा क्यों नहीं कहते ?

**समाधान**—नहीं, क्योंकि सम्यग्मिथ्यादृष्टिके संयमगुणकी प्राप्ति अत्यन्ताभावरूपसे निषिद्ध है ।

इसलिए सम्यक्त्वके अभिमुख हुए तत्प्रायोग्य सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिसे विशुद्ध अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके प्रकृत जघन्य स्वामित्व होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

*** अनन्तानुबन्धियोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १३१. यह सूत्र सुगम है ।

*** संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है ।**

§ १३२. मिथ्यात्वके जघन्य स्वामित्वविषयक सूत्रके समान इस सूत्रके अर्थका कथन करना चाहिए, क्योंकि इन दोनोंके कथनमें कोई विशेषता नहीं है ।

*** अप्रत्याख्यानावरण कषायकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १३३. यह सूत्र सुगम है ।

* संजमाहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ।

§ १३४. संजमाहिमुहो असंजदसम्माइट्ठी संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठि-विसोहीदो अणंतगुणाए विसोहीए विसुज्झमाणो समयं पडि अणंतगुणहीणमपच्चक्खाण-कसायाणुभागमुदीरेदि जाव अंतोमुहुत्तमेत्तविसोहिकालचरिमसमयो त्ति तदो विसयंतर-परिहारेणेत्थेव पयदजहण्णसामित्तमवहारेयव्वं ।

* पच्चक्खाणकसायस्स जहण्णाणुभागमुदीरणा कस्स ?

§ १३५. सुगमं ।

* संजमाहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स ।

§ १३६. एत्थ विसेसगुणट्ठाणपरिहारेण संजदासंजदम्मि सामित्तविहाणस्स कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

* कोहसंजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?

§ १३७. सुगमं ।

* खवगस्स चरिमसमयकोधवेदगस्स ।

§ १३८. जो खवगो कोधोदएण खवगसेढिमारूढो अट्ठकसाए खविय पुणो जहाकममंतरकरणं समाणिय णवुंसय०–इत्थिवेद-छण्णोकसाए पुरिसवेदं च जहावुत्तेण

---

* संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टिके होती है ।

§ १३४. संयमके अभिमुख हुआ असंयत सम्यग्दृष्टि जीव संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि जीवकी विशुद्धिसे अनन्तगुणी विशुद्धिसे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ प्रति समय अनन्तगुणे हीन अप्रत्याख्यान कषायके अनुभागको अन्तर्मुहूर्तमात्र विशुद्धि-कालके अन्तिम समय तक उदीरित करता है। इसलिए विषयान्तरके परिहार द्वारा यहीं पर प्रकृत जघन्य स्वामित्वका निश्चय करना चाहिए।

* प्रत्याख्यानावरण कषायकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?

§ १३५. यह सूत्र सुगम है।

* संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके होती है ।

§ १३६. यहाँपर विशेषगुणस्थानके परिहारद्वारा संयतासंयतके जो स्वामित्वका विधान किया है उसका कारण पहलेके समान कहना चाहिए।

* क्रोधसंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?

§ १३७. यह सूत्र सुगम है।

* अन्तिम समयवर्ती क्रोधवेदक क्षपकके होती है ।

§ १३८. क्रोधके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुआ जो क्षपक आठ कषायोंका क्षय कर पुनः क्रमसे अन्तरकरण समाप्तकर नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, छह नोकषाय और पुरुषवेदका यथोक्त क्रमसे नाशकर तदनन्तर अश्वकर्णकरण और कृष्टिकरण कालको बिताकर क्रोधकी

कमेण णिण्णासिय तदो अस्सकण्णकरण-किट्टीकरणद्धाओ गमिय कोहतिण्णिसंगह-किट्टीओ वेदेमाणो तदियसंगहकिट्टीवेदयपढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए चरिम-समयकोहवेदगो जादो, तस्स कोहसंजलणविसया जहण्णाणुभागुदीरणा होदि, हेट्ठिमासेस-उदीरणाहिंतो एदिस्से उदीरणाए अणंतगुणहीणत्तदंसणादो ।

*** माणसंजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

§ १३९. सुगमं ।

*** खवगस्स चरिमसमयमाणवेदगस्स ।**

§ १४०. एदस्स वि सुत्तस्सत्थो अणंतरादिक्कंतस्स सामित्तसुत्तस्सेव वक्खाणेयव्वो । णवरि कोह-माणाणमण्णदरोदएण खवगसेढिमारूढस्स चरिमसमयमाणवेदगावत्थाए वट्टमाणस्स पयदजहण्णसामित्तं होदि त्ति वत्तव्वं ।

*** मायासंजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

§ १४१. सुगमं ।

*** खवगस्स चरिमसमयमायावेदगस्स ।**

§ १४२. एत्थ वि कोह-माण-मायाणमुदएण सेढिमारूढस्स पयदजहण्णसामित्त-मवगंतव्वं ।

*** लोहसंजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

---

तीन संग्रह कृष्टियोंका वेदन करता हुआ तृतीय संग्रहकृष्टिवेदकर्का प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिमात्र कालके शेष रहने पर अन्तिम समयवर्ती क्रोधवेदक हो गया उसके क्रोधसंज्वलनविषयक जघन्य अनुभाग उदीरणा होती है, क्योंकि अधस्तन समस्त उदीरणाओंसे इस उदीरणाका अनन्तगुणा हीनपना देखा जाता है ।

*** मान संज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १३९. यह सूत्र सुगम है ।

*** अन्तिम समयवर्ती मानवेदक क्षपकके होती है ।**

§ १४०. इस सूत्रके अर्थका भी अनन्तर अतिक्रान्त हुए स्वामित्वविषयक सूत्रके समान व्याख्यान करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि क्रोध और मानमेंसे अन्यतरके उदयसे क्षपक श्रेणिपर आरूढ हुए तथा मानवेदकके अन्तिम समयमें होनेवाली अवस्थामें विद्यमान हुए जीवके प्रकृत जघन्य स्वामित्व होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए ।

*** मायासंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १४१. यह सूत्र सुगम है ।

*** अन्तिम समयवर्ती मायावेदक क्षपकके होती है ।**

§ १४२. यहाँपर भी क्रोध, मान और मायाके उदयसे श्रेणिपर चढ़े हुए जीवके प्रकृत जघन्य स्वामित्व जानना चाहिए ।

*** लोभसंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १४३. सुगमं।

*** खवयस्स समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स।**

§ १४४. कुदो ? समयाहियावलियचरिमसमयवट्टमाणसुहुमसांपराइयखवगस्स सुहुमकिट्टिसरूवाणुभागोदीरणाए सुट्ठु जहण्णभावोववत्तीदो।

*** इत्थिवेदस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

§ १४५. सुगमं।

*** इत्थिवेदखवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयसवेदस्स।**

*** पुरिसवेदस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ?**

*** पुरिसवेदखवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयसवेदस्स।**

*** णवुंसयवेदस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ?**

*** णवुंसयवेदखवयस्स समयाहियावलियचरिमसमयसवेदस्स।**

§ १४६. एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि, अप्पप्पणो उदएण खवगसेढिमारूढसमयाहियावलियचरिमसमयसवेदं मोत्तूणण्णत्थेदेसिमणुभागुदीरणाए जहण्णभावाणुवलद्धीदो।

---

§ १४३. यह सूत्र सुगम है।

* एक समय अधिक आवलिके उदीरणासम्बन्धी अन्तिम समयमें स्थित सकषाय क्षपक जीवके होती है।

§ १४४. क्योंकि समयाधिक आवलिके उदीरणासम्बन्धी अन्तिम समयमें विद्यमान सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपक जीवके सूक्ष्मकृष्टिस्वरूप अनुभाग उदीरणाका अत्यन्त जघन्यपना बन जाता है।

* स्त्रीवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?

§ १४५. यह सूत्र सुगम है।

* समयाधिक आवलिके उदीरणाविषयक अन्तिम समयवर्ती सवेदी स्त्रीवेदी क्षपकके होती है।

* पुरुषवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?

* समयाधिक आवलिके उदीरणाविषयक अन्तिम समयवर्ती सवेदी पुरुषवेदी क्षपकके होती है।

* नपुंसकवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?

* समयाधिक आवलिके उदीरणाविषयक अन्तिम समयवर्ती सवेदी नपुंसकवेदी क्षपकके होती है।

§ १४६. ये सूत्र सुगम हैं, क्योंकि अपने-अपने उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुए समयाधिक आवलिके उदीरणाविषयक अन्तिम समयवर्ती सवेद भावको छोड़कर अन्यत्र इनकी उदीरणाका जघन्यपना नहीं उपलब्ध होता।

*** छण्णोकसायाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ?**

§ १४७. सुगमं ।

*** खवगस्स चरिमसमयअपुव्वकरणे वट्टमाणस्स ।**

§ १४८. कुदो ? तत्थेदेसिमपुव्वकरणचरिमविसोहीए हेट्ठिमासेसविसोहीहिंतो अणंतगुणाए उदीरिज्जमाणाणुभागस्स सुट्ठु जहण्णभावोवलद्धीदो ।

एवमोघेण जहण्णसामित्तं समत्तं ।

§ १४९. संपहि आदेसपरूवणट्ठमेत्थुच्चारणाणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा—जहण्णए पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छत्त-अणंताणु०४ जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० संजमाहिमुहस्स सव्वविसुद्धस्स चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स । सम्म० जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहस्स । सम्मामि० जह० कस्स ? अण्णद० सम्मत्ताहिमुहस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । अपच्चक्खाण०४ जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० संजमाहिमुहस्स चरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । एवं पच्चक्खाण०४ । णवरि चरिमसमयसंजदासंजदस्स । कोहसंजल० जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० खवगस्स चरिमसमयउदीरेमाणगस्स । एवं माण-माया-लोभसंजलणाणं ।

---

*** छह नोकषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ?**

§ १४७. यह सूत्र सुगम है ।

*** अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें विद्यमान क्षपकके होती है ।**

§ १४८. क्योंकि अधस्तन समस्त विशुद्धियोंसे अनन्तगुणी अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें पाई जानेवाली विशुद्धिके कारण वहाँपर इन कर्मोंके उदीर्यमाण अनुभागका अत्यन्त जघन्यपना पाया जाता है ।

इस प्रकार ओघसे जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

§ १४९. अब आदेशका कथन करनेके लिए यहाँ उच्चारणानुगमको बतलाते हैं । यथा—जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? संयमके अभिमुख हुए सर्व विशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है । सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? समयाधिक आवलिक उदीरणासम्बन्धी अन्तिम समयवर्ती अक्षीण दर्शनमोही अन्यतर सम्यग्दृष्टिके होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अन्यतर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है । अप्रत्याख्यानकषायचतुष्ककी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अन्यतर असंयतसम्यग्दृष्टिके होती है । इसी प्रकार प्रत्याख्यान कषायचतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके कहनी चाहिए । क्रोधसंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्तिम समयमें उदीरणा करनेवाले अन्यतर क्षपकके होती है । इसी प्रकार मान,

पुरिसवेद० जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० खवगस्स समयाहियावलियपढमट्ठिदि-मुदीरेमाणस्स । एवमित्थिवेद-णवुंस० । छण्णोक० जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० चरिमसमयअपुव्वकरणखवगस्स सव्वविसुद्धस्स । एवं मणुसतिए । णवरि वेदा जाणियव्वा ।

§ १५०. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० जह० कस्स ? अण्णद० पढमसम्मत्ताहि-मुहस्स समयाहियावलियचरिमसमयमुदीरेमाणगस्स । एवमणंताणु० । णवरि चरिम-समयमुदीरेमाणगस्स । सम्म०-सम्मामि० ओघं । बारसक०-सत्तणोक० जह० अणु-भागुदी० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । एवं पढमाए । विदियादि जाव सत्तमा त्ति एवं चेव । णवरि सम्म० जह० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ।

§ १५१. तिरिक्खेसु मिच्छ०-अणंताणु०४ जह० कस्स ? अण्णद० संजमा-सजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । सम्म०-सम्मामि० ओघं । अपच्च-क्खाण०४ जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णदरस्स संजमासंजमाहिमुहचरिमसमयवेदग-सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । अट्ठक०-णवणोक० जह० अणुभागुदी०[1] कस्स ?

माया और लोभसंज्वलनकी अपेक्षा जानना चाहिए। पुरुषवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? समयाधिक आवलि कालवाली प्रथम स्थितिकी उदीरणा करनेवाले अन्यतर क्षपकके होती है । इसी प्रकार स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । छह नो-कषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध अन्यतर अपूर्वकरण क्षपकके होती है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जिसके जो वेद हो उसे जान लेना चाहिए ।

§ १५०. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? समयाधिक आवलिके उदीरणासम्बन्धी अन्तिम समयमें उदीरणा करनेवाले प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्यतर नारकीके होती है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अन्तिम समयमें उदीरणा करनेवालेके कहना चाहिए। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। बारह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्वविशुद्ध सम्यग्दृष्टिके होती है। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्वविशुद्ध सम्यग्दृष्टिके होती है।

§ १५१. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? संयमासंयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध अन्यतर मिथ्या-दृष्टिके होती है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। अप्रत्याख्यान-कषायचतुष्ककी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? संयमासंयमके अभिमुख हुए अन्तिम

[1] आ०प्रतौ णवणोक० अणुभागुदी० इति पाठः ।

अण्णद० संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिए । णवरि वेदा जाणियव्वा । जोणिणीसु सम्म० अट्ठकसायभंगो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुस-अपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० जह० अणुभागुदी० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गविसुद्धस्स ।

§ १५२. देवाणं णारयभंगो । णवरि इत्थवेद-पुरिसवेद० बारसकसायभंगो । णवुंस० णत्थि । एवं सोहम्मीसाण० । एवं सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । भवण०-वाणवें०-जोदिसि० देवोघं । णवरि सम्म० बारसकसाय-भंगो । अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो । एवं जाव० ।

*** एगजीवेण कालो ।**

§ १५३. सुगममेदं सुत्तं, अहियारसंभालणफलत्तादो ।

*** मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १५४. सुगमं ।

*** जहण्णेण एयसमओ ।**

§ १५५. तं जहा—अणुक्कस्साणुभागुदीरगो सण्णिमिच्छाइट्ठी एगसमयउक्कस्स-

---

समयवर्ती सर्वविशुद्ध अन्यतर वेदकसम्यग्दृष्टिके होती है। आठ कषाय और नौ नोकषायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? सर्वविशुद्ध अन्यतर संयतासंयतके होती है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। योनिनियोंमें सम्यक्त्वका भंग आठ कषायोंके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? अन्यतर तत्प्रायोग्य विशुद्धके होती है।

§ १५२. देवोंमें नारकियोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेद और पुरुष-वेदका भंग बारह कषायोंके समान है। देवोंमें नपुंसकवेद नहीं है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमारसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनतकल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

*** एक जीवकी अपेक्षा कालका अधिकार है।**

§ १५३. यह सूत्र सुगम है, क्योंकि इसका फल अधिकारकी सम्हाल करना है।

*** मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?**

§ १५४. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य काल एक समय है।**

§ १५५. यथा—अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव एक

संकिलेसेण परिणमिय उक्कस्साणुभागुदीरगो जादो विदियसमए उक्कस्ससंकिलेसक्खएणा-णुक्कस्सभावमुवगओ लद्धो तस्स मिच्छत्तुक्कस्साणुभागोदीरणजहण्णकालो एगसमयमेत्तो।

* उक्कस्सेण वे समया।

§ १५६. तं कथं ? अणुक्कस्साणुभागुदीरगो उक्कस्ससंतकम्मिओ उक्कस्ससंकिलेस-मावूरिय दोसु समएसु मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगो जादो। तदो से काले संकिलेसपरिक्खएणाणुक्कस्सभावे णिवदिदो लद्धो मिच्छत्तुक्कस्साणुभागुदीरगस्स उक्कस्स-कालो विसमयमेत्तो, तत्तो परमुक्कस्ससंकिलेसस्सावट्ठाणाभावादो।

* अणुक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?

§ १५७. मिच्छत्तस्से त्ति अहियारसंबंधो। सुगममण्णं।

* जहण्णेण एगसमओ।

§ १५८. तं जहा—उक्कस्सट्ठिदिबंधकारणुक्कस्सज्झवसाणस्सासंखेज्जलोगमेत्ताणि अणुभागबंधपाओग्गज्झवसाणट्ठाणाणि होंति। पुणो तत्थुक्कस्साणुभागबंधपाओग्गुक्कस्स-संकिलेसेण परिणमिय उक्कस्साणुभागमुदीरेमाणो परिणामवसेणेगसमयमणुक्कस्साणुभाग-मुदीरिय पुणो वि से काले उक्कस्ससंकिलेसपडिलंभेणुक्कस्साणुभागुदीरगो जादो। लद्धो

समयके लिए उत्कृष्ट संक्लेश परिणामसे परिणमकर उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक हो गया तथा दूसरे समयमें उत्कृष्ट संक्लेशके क्षयसे अनुत्कृष्टभावको प्राप्त हो गया इस प्रकार मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त हो गया।

* उत्कृष्ट काल दो समय है।

§ १५६. शंका—वह कैसे ?

समाधान—अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक उत्कृष्ट सत्कर्मवाला जीव उत्कृष्ट संक्लेशको पूरित कर दो समय तक मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक हो गया। इसके बाद तद-नन्तर समयमें संक्लेशका क्षय होनेसे अनुत्कृष्टभावको प्राप्त हुआ। इस प्रकार मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट काल दो समय प्राप्त हो गया, क्योंकि उसके आगे उत्कृष्ट संक्लेशके अवस्थानका अभाव है।

* अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?

§ १५७. 'मिथ्यात्वके' इस प्रकार अधिकारका सम्बन्ध है। अन्य कथन सुगम है।

* जघन्य काल एक समय है।

§ १५८. यथा—उत्कृष्ट स्थितिबन्धके कारणभूत उत्कृष्ट अध्यवसानके असंख्यात लोकप्रमाण अनुभागबन्धप्रायोग्य अध्यवसानस्थान होते हैं। पुनः वहाँ उत्कृष्ट अनुभागबन्ध-प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशसे परिणमकर उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला परिणामवश एक समयके लिए अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा कर फिर भी तदनन्तर समयमें उत्कृष्ट संक्लेशकी प्राप्ति होनेसे उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक हो गया। इस प्रकार मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके

मिच्छत्ताणुक्कस्साणुभागुदीरगस्स जहण्णकालो एगसमयमेत्तो। कथमुक्कस्ससंकिलेसादो पडिभग्गस्स अंतोमुहुत्तेण विणा एगसमयेणेव पुणो उक्कस्ससंकिलेसावूरणसंभवो त्ति णेहासंकणिज्जं, अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणेसु तहाविहणियमाणब्भुवगमादो।

*** उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।**

§ १५९. कुदो ? पंचिंदिएहिंतो एइंदिएसु पइट्ठस्स उक्कस्ससंकिलेसपडिलभेण विणा आवलि० असंखे०भागमेत्तपोग्गलपरियट्टेसु परिब्भमणदसणादो।

*** सम्मत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १६०. सुगमं।

*** जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ।**

§ १६१. कुदो ? मिच्छत्ताहिमुहसव्वसंकिलिट्ठासंजदसम्मादिट्ठिचरिमसमयं मोत्तूणण्णत्थ सम्मत्तुक्कस्साणुभागुदीरणाए संभवाणुवलंभादो।

*** अणुक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १६२. सुगमं।

*** जहण्णेण अंतोमुहुत्तं।**

---

उदीरकका जघन्य काल एक समय प्राप्त हो गया।

**शंका**—उत्कृष्ट संक्लेशसे च्युत हुए जीवके अन्मुर्हूर्त हुए बिना एक समयके बाद ही पुनः उत्कृष्ट संक्लेशकी आपूर्ति कैसे सम्भव है ?

**समाधान**—यहाँ ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंमें उस प्रकारका नियम नहीं स्वीकार किया गया है।

*** उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है।**

§ १५९. क्योंकि पञ्चेन्द्रियोंमेंसे एकेन्द्रियोमें प्रविष्ट हुए जीवके उत्कृष्ट संक्लेशकी प्राप्ति हुए बिना आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुद्गल परिवर्तनोंमें परिभ्रमण देखा जाता है।

*** सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?**

§ १६०. यह सूत्र सुगम है।

**जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है।**

§ १६१. क्योंकि मिथ्यात्वके अभिमुख हुए सर्व संक्लेश परिणामवाले असंयतसम्यग्दृष्टिके अन्तिम समयको छोड़कर अन्यत्र सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा सम्भव नहीं है।

*** अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?**

§ १६२. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है।**

§ १६३. कुदो ? वेदगसम्मत्तं घेत्तूण सव्वजहण्णंतोमुहुत्तेण कालेण मिच्छत्तं पडिवण्णम्मि अणुक्कस्सजहण्णकालस्स तप्पमाणत्तोवलंभादो ।

*** उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि ।**

§ १६४. कुदो ? वेदगसम्मत्तउक्कस्सकालस्सावलियूणस्स पयदुक्कस्सकालत्तेणावलंबियत्तादो । कुदो आवलियूणत्तमिदि चे[1] ? छावट्ठिसागरोवमाणमवसाणे अंतोमुहुत्तसेसे दंसणमोहणीयं खवेंतस्स सम्मत्तपढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए सम्मत्तुदीरणाए पज्जवसाणं होइ, तेणावलियूणत्तमेत्थ दट्ठव्वमिदि ।

*** सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १६५. सुगमं ।

*** जहण्णुक्कस्सेण एयसमयो ।**

§ १६६. किं कारणं ? सव्वुक्कस्ससंकिलेसेण मिच्छत्तं पडिवज्जमाणसम्मामिच्छाइट्ठिचरिमसमए चेव सम्मामिच्छत्तुक्कस्साणुभागुदीरणादंसणादो ।

*** अणुक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

---

§ १६३. क्योंकि वेदक सम्यक्त्वको ग्रहणकर सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा मिथ्यात्वको प्राप्त होनेपर अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल तत्प्रमाण उपलब्ध होता है ।

*** उत्कृष्ट काल एक आवलिकम छयासठ सागरोपम है ।**

§ १६४. क्योंकि वेदकसम्यक्त्वके एक आवलिकम उत्कृष्ट कालका प्रकृत उत्कृष्ट कालरूपसे अवलम्बन लिया है ।

**शंका**—एक आवलि कम कैसे ?

**समाधान**—छयासठ सागरोपमके अन्तमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवके सम्यक्त्वकी प्रथम स्थितिके समयाधिक आवलिमात्र शेष रहनेपर सम्यक्त्वकी उदीरणाका पर्यवसान होता है, इसलिए एक आवलिप्रमाण न्यूनता यहाँपर जानना चाहिए ।

*** सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?**

§ १६५. यह सूत्र सुगम है ।

*** जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।**

§ १६६. क्योंकि सर्वोत्कृष्ट संक्लेशसे मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमें ही सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा देखी जाती है ।

*** अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?**

---

१. आ०प्रतौ वे इति पाठः, त०प्रतौ वे ( चे ) इति पाठः ।

§ १६७. सुगमं ।

*** जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।**

§ १६८. कुदो ? जहण्णुक्कस्ससम्मामिच्छत्तगुणकालस्स तप्पमाणत्तादो ।

*** सेसाणं कम्माणं मिच्छत्तभंगो ।**

§ १६९. जहा मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुक्कस्साणुभागुदीरगजहण्णुक्कस्सकालपरूवणा कदा तहा सोलसकसाय-णवणोकसायाणं पि कायव्वा, विसेसाभावादो । णवरि एदेसिं कम्माणमणुक्कस्साणुभागुदीरगउक्कस्सकालगओ विसेसो अत्थि त्ति तप्पदुप्पायणट्ठमाह—

*** णवरि अणुक्कस्साणुभागुदीरगउक्कस्सकालो पयडिकालो कादव्वो ।**

§ १७०. एदेसिं कम्माणं पयडिउदीरणाए जो उक्कस्सकालो सो चेव एत्थाणुक्कस्साणुभागुदीरगस्स णिरवसेसेण कायव्वो त्ति भणिदं होइ ।

§ १७१. संपहि एदेण सुत्तेण सूचिदत्थस्स विवरणट्ठमादेसपरूवणट्ठं च उच्चारणाणुगममेत्थ कस्सामो । तं जहा—

§ १७२. कालो दुविहो—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-णवुंस० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० बे

---

§ १६७. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ।**

§ १६८. क्योंकि जघन्य और उत्कृष्ट सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानका काल तत्प्रमाण होता है।

*** शेष कर्मोंका भंग मिथ्यात्वके समान है ।**

§ १६९. जिस प्रकार मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवके जघन्य और उत्कृष्ट कालका कथन किया है उसी प्रकार सोलह कषाय और नौ नोकषायोंका भी करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता है कि इन कर्मोंके अनुकृष्ट अनुभागके उदीरककी उत्कृष्ट कालगत विशेषता है, इसलिए उसके कथन करनेके लिए कहते हैं—

*** इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट काल प्रकृति उदीरणाके उत्कृष्ट कालके समान करना चाहिए ।**

§ १७०. इन प्रकृतियोंकी प्रकृति उदीरणाका जो उत्कृष्ट काल है वही यहाँपर अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरकका निरवशेषरूपसे करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ १७१. अब इस सूत्रके द्वारा सूचित हुए अर्थका विवरण करनेके लिए और आदेशका कथन करनेके लिए यहाँ पर उच्चारणाका अनुगम करते हैं। यथा—

§ १७२. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकार का है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका

**समया। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एवं सोलसक०–भय-दुगुंछ०। णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। एवं हस्स–रदि–अरदि–सोग०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि। एवमित्थिवेद–पुरिसवेद०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं सागरोवमसदपुधत्तं। सम्म० उक्क० अणुभागुदी० जह० उक्क० एयस०। अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० छावट्ठिसागरो० आवलियूणाणि। सम्मामि० उक्क० जह० उक्क० एगस०। अणुक्क० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं।**

**§ १७३. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–णवुंस०–अरदि–सोग० उक्क० जह० एयस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि। एवं[1] सोलसक०–चदुणोक०। णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं। सम्म० उक्क० जह० उक्क० एयस०। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि।**

जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है। इसी प्रकार सोलह कषाय, भय और जुगुप्साके विषयमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार हास्य, रति, अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल हास्य और रतिका छह महीना तथा अरति और शोकका साधिक तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे सौ पल्योपमपृथक्त्वप्रमाण और सौ सागरोपम पृथक्त्वप्रमाण है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल एक आवलि कम छयासठ सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकके जघन्य और उत्कृष्ट कालका स्पष्टीकरण चूर्णिसूत्रोंमें किया ही है, इसलिए अलगसे खुलासा नहीं कर रहे हैं। आगे चारों गतियों सम्बन्धी उक्त कालका खुलासा भी सुगम है। इसलिए यदि कहीं किसी प्रकारका विशेष स्पष्टीकरण आवश्यक होगा तो मात्र उसका अलगसे निर्देश करेंगे।

§ १७३. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, अरति और शोकके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार सोलह कषाय और चार नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अनुकृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। सम्क्त्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट

१. ता०प्रतौ सागरोवमाणि देसूणणि। एव इति पाठः।

सम्मामि० ओघं। एवं सत्तमाए। णवरि सम्म० अणुक्क० जह० अंतोमु०। एवं पढमादि जाव छट्ठि त्ति। णवरि सगट्ठिदीओ। अरदि-सोगं हस्सभंगो। पढमाए सम्म० अणुक्क० जह० एगस०।

§ १७४. तिरिक्खेसु मिच्छ०-णवुंस०-सम्मामि० ओघं। सम्म० उक्क० जह० उक्क० एगस०[1]। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। सोलसक०-छण्णोक० पढमपुढविभंगो। इत्थिवेद-पुरिसवेद० उक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडि-पुधत्तेणब्भहियाणि। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि मिच्छ० इत्थिवेदभंगो। णवुंस० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। सम्म० अणुक्क०[2] जह० अंतोमु०।

अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार पहली पृथिवीसे लेकर छटी पृथिवी तक जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। अरति और शोकका भंग हास्यके समान है। तथा पहली पृथिवीमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है।

**विशेषार्थ**—मात्र सातवीं पृथिवीमें अरति और शोककी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा किसी नारकीके अपने पर्याय तक निरन्तर होती रहती है, इसलिए वहाँ इनकी अनुत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाका उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम कहा है। अन्य पृथिवियोंमें तो यह काल हास्य और रतिके समान ही प्राप्त होता है, इसलिए वहाँ उसे हास्य और रतिके समान जाननेकी सूचना की है। शेष कथन सुगम है।

§ १७४. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्योपम है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग पहली पृथिवीके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटि-पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है मिथ्यात्वका भंग स्त्रीवेदके समान है। नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है और योनियोंमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—भोगभूमिमें नपुंसकवेदी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च नहीं होते यह उक्त कालप्ररूपणासे सूचित होता है। यही कारण है कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट

१. आ०ता०प्रत्योः जह० एगस० इति पाठः।

२. ता०प्रतौ सम्म० उक्क० अणुक्क० इति पाठः।

§ १७५. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० सव्वपय० उक्क० जह० एयस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्ख-तियभंगो। णवरि सम्म० अणुक्क० जह० अंतोमु०। पज्जत्त० जह० एगस०।

§ १७६. देवेसु मिच्छ० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० बे समया। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोव०। एवं पुरिसवेद०। णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि। एवमित्थिवेद०। णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पणवण्णं पलिदोवमाणि। सम्मामि०–हस्स–रदि० ओघं। सोलसक०–अरदि–सोग– भय–दुगुंछा० पढमाए भंगो। सम्म० उक्क० जहण्णुक्क० एगसमओ। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि। एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि सगट्ठिदी। हस्स–रदि० अरदि–सोगभंगो। णवरि भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सम्म०

---

अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण कहा है। मनुष्य पर्याप्तकोंमें भी नपुंसकवेदकी अपेक्षा इसी प्रकार जान लेना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ १७५. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्यत्रिकमें पञ्चन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है तथा मनुष्यपर्याप्तकोंमें जघन्य काल एक समय है।

विशेषार्थ—मनुष्यपर्याप्तकोंमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय कैसे घटित होता है इसका स्पष्टीकरण इसी प्रसंगसे प्रकृति उदीरणा अनुयोगद्वारमें किया है, इसलिए उसे वहाँसे जान लेना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ १७६. देवोंमें मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागरोपम है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार स्त्रीवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पचवन पल्योपम है। सम्यग्मिथ्यात्व, हास्य और रतिका भंग ओघके समान है। सोलह कषाय, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका भंग पहली पृथिवीके समान है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयकतकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। हास्य और रतिका भंग अरति और शोकके समान है। इतनी विशेषता है कि भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य

अणुक्क० जह० अंतोमु० । इत्थिवेद० अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पलिदो० सादिरे० पलिदो० सादिरे० । सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं । उवरि इत्थिवेदो णत्थि । सहस्सारे हस्स-रदी० ओघं ।

§ १७७. अणुद्दिसादि० सव्वट्ठा त्ति सम्म०-पुरिसवे० उक्क० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० बे समया । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी । बारसक०-छण्णोक० उक्क० जह० एगस०, उक्क० बे समया । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । एवं जाव० ।

*** एत्तो जहण्णगो कालो ।**

§ १७८. अहियारसंभालणवक्कमेदं ।

*** सव्वासिं पयडीणं जहण्णाणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १७९. सुगमं ।

*** जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।**

§ १८०. तं जहा—मिच्छत्तस्स सम्मत्तविसुद्धसंजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिम्मि जहण्णसामित्तं जादं । एवं सम्मामिच्छादीणं पि णेदव्वं । तदो चरिमविसोहीए पडिलद्धजहण्णसामित्ताणमेदेसिं जहण्णाणुभागुदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेणेगसमयमेत्तो चेवे त्ति

---

काल अन्तर्मुहूर्त है । स्त्रीवेदके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है । सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है । आगेके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है । सहस्रारकल्पमें हास्य और रतिका भंग सामान्य देवोंके समान है ।

§ १७७. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है । बारह कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

*** इससे आगे जघन्य कालका अधिकार है ।**

§ १७८. अधिकारकी सम्हाल करनेवाला यह सूत्रवचन है ।

*** सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका कितना काल है ?**

§ १७९. यह सूत्र सुगम है ।

*** जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।**

§ १८०. यथा—सम्यक्त्वविशुद्ध संयमके अभिमुख अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वका जघन्य स्वामित्व है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्व आदिका भी जानना चाहिए । इसलिए अन्तिम विशुद्धिसे जिन्होंने जघन्य स्वामित्व प्राप्त किया है ऐसी इन कृतियोंके जघन्य अनुभागकी उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समयमात्र ही होता है यह सिद्ध हुआ ।

सिद्धं । संपहि सव्वेसिमजहण्णाणुभागुदीरणाए जहण्णुक्कस्सकालपमाणावहारणट्ठमुत्तर-सुत्तमाह—

*** अजहण्णाणुभागुदीरणा पयडिउदीरणाभंगो ।**

§ १८१. पयडिउदीरणाकालादो एदेसिमजहण्णाणुभागुदीरणाकालस्स भेदाभावादो । तदो सुत्तसमप्पिदत्थविसए सुहावगमुप्पायणट्ठमादेसपरूवणट्ठं च उच्चाणाणुगममेत्थ कस्सामो । तं जहा—जहण्णए पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ० जह० अणुभागुदी० जह० उक्क० एयस० । अजह० तिण्णि भंगा । जो सो सादि० सपज्जव० तस्स जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सोलसक०—भय-दुगुंछ० जह० जहण्णुक्क० एगस० । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं । इत्थिवे०—पुरिसवे०—णवुंस० जह० जहण्णुक्क० एगस० । अजह० जह० एगस० अंतोमु० एगस०, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं सागरोवमसदपुधत्तं अणंतकालमसंखे०पो०परि० । हस्स-रदि-अरदि-सोग० जह० जहण्णुक्क० एगस० । अजह० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि । सम्म०—सम्मामि० जह० अजह० उक्कस्साणुक्कस्सभंगो ।

---

अब सब प्रकृतियोंके अजघन्य अनुभागकी उदीरणाके जघन्य और उत्कृष्ट कालके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** अजघन्य अनुभाग उदीरणाकी कालविषयक प्ररूपणा प्रकृति उदीरणाके समान है ।**

§ १८१. क्योंकि प्रकृति उदीरणाके कालसे इनके अजघन्य अनुभागउदीरणाके कालमें कोई अन्तर नहीं है । यतः सूत्र द्वारा प्राप्त अर्थके विषयमें सुखपूर्वक ज्ञान होजाय अतः और आदेशका कथन करनेके लिए यहाँ पर उच्चारणाका अनुगम करते हैं । यथा—जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दोप्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य अनुभागके उदीरकके तीन भंग हैं । उनमें जो सादि- सान्त भंग है उसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । सोलह कषाय, भय और जुगुप्साके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल क्रमसे एक समय, अन्तर्मुहूर्त और एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे सौ पल्योपम पृथक्त्वप्रमाण, सौ सागरोपम पृथक्त्वप्रमाण और अनन्त काल है, यह अनन्त काल असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है । हास्य, रति, अरति और शोकके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कष्ट काल क्रमसे छह महीना और साधिक तेतीस सागरोपम है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकके कालका भंग उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टके समान है ।

§ १८२. आदेसेण णेरइय० णवुंस०–अरदि-सोग० जह० जह० एगस०, उक्क० वे समया। अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो०। एवं बारसक०–हस्स-रदि-भय-दुगुंछा०। णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। सम्म० जह० जह० उक्क० एगस०। अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। सम्मामि०–अणंताणु०४ ओघं। मिच्छ० जह० जहण्णुक्क० एगस०। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोव०। एवं सत्तमाए। णवरि सम्म० जह० जह० एगस०, उक्क० वे समया। एवं पढमादि जाव छट्टि त्ति। णवरि सगट्ठिदीओ। अरदि-सोगं हस्स-रदिभंगो। णवरि पढमाए सम्म० जह० जहण्णुक्क० एगस०।

§ १८३. तिरिक्खेसु मिच्छ० जह० अणुभागुदी० जह० उक्क० एयस०। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। सम्म० जह० जहण्णुक्क० एगस०। अजह० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि। सम्मामि०–अट्ठकसाय० ओघं। अट्ठक०–छण्णोक० पढमपुढविभंगो। इत्थिवे०–पुरिसवे०–णवुंस०

§ १८२ आदेशसे नारकियोंमें नपुंसकवेद, अरति और शोकके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार बारह कषाय, हास्य, रति, भय और जगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेपता है कि इनके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। मिथ्यात्व के जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके जघन्य अनुभाग के उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। इसी प्रकार पहली से लेकर छटी पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। अरति और शोकका भंग हास्य और रतिके समान है। इतनी विशेषता है कि पहली पृथिवीमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है।

§ १८३. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्योपम है। सम्यग्मिथ्यात्व और आठ कषायोंका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और छह नोकषायोंका भंग पहली पृथिवीके समान है। स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसक वेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक

**जह० जह० एगस०, उक्क० बे समया। अजह० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुध० अणंतकालमसंखेज्जा०। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि मिच्छ० सगट्ठिदी। णवुंस० उक्क० पुव्वकोडिपुध०। वेदा जाणियव्वा। जोणिणीसु सम्म० जह० एगस०, उक्क० वेसमया। सेसं तं चेव। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० सव्वपयडी० जह० जह० एगस०, उक्क० वे समया। अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०।**

**§ १८४. मणुसतिए पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो। णवरि सव्वपयडी० जह० जहण्णुक्क० एगस०। सम्म० अजह० जह० अंतोमु०, पज्ज० एगस०।**

**§ १८५. देवेसु मिच्छ० जह० जहण्णुक्क० एयस०। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोमाणि। सम्म० जह० जहण्णुक्क० एगस०। अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो०। सम्मामि०-सोलसक०-छण्णोक० पढमाए भंगो। णवरि हस्स-रदि० अज० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं। इत्थिवेद-पुरिसवेद० जह० जह० एगस०, उक्क० वे समया। अजह० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णं पलिदो०**

---

समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो वेदोंका पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम है और नपुंसकवेदका अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च त्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अजघन्य अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। नपुंसकवेदके अजघन्य अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। जिसके जो वेद है उसे जान लेना चाहिए। योनिनियोंमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। शेष काल वही है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तमुर्हूर्त है।

§ १८४. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। सम्यक्त्वके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तमुर्हूर्त है। मनुष्यपर्याप्तकोंमें एक समय है।

§ १८५. देवोंमें मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल अन्तमुर्हूर्त है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागरोपम है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग पहली पृथिवीके समान है। इतनी विशेषता है कि हास्य और रतिके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छह महीना है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। अजघन्य

तेत्तीसं सागरो० । एवं भवणादि णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदीओ । हस्स–रदि० अरदि–सोगभंगो । सहस्सारे हस्स–रदि० देवोघं । भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सम्म० जह० जह० एयस०, उक्क० वे समया । अजह० जह० एयसमओ, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा । इत्थिवे० अजह० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पलिदो० सादिरेयाणि प० सा० । सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं । उवरि इत्थिवेदो णत्थि । अणुदिसादि जाव सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० आणदभंगो । णवरि सगट्ठिदी० । एवं जाव० ।

* अंतरं ।

§ १८६. एगजीवविसयमंतरमेत्तो भणिस्सामो त्ति अहियारपरामरसवक्कमेदं ।

* मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

§ १८७. सुगममेदं पुच्छावक्कं ।

* जहण्णेण एगसमओ ।

§ १८८. कुदो ? उक्कस्सादो अणुक्कस्सभावं गंतूणेगसमयमंतरिय पुणो वि विदियसमए उक्कस्सभावमुवगयम्मि तदुवलंभादो ।

---

अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे पचवन पल्योपम और तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपनी–अपनी स्थिति कहनी चाहिए । हास्य और रतिका भंग अरति और शोकके समान जानना चाहिए। मात्र सहस्रारकल्पमें हास्य और रतिका भंग सामान्य देवोंके समान जानना चाहिए। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्टकाल कुछ कम अपनी–अपनी स्थितिप्रमाण है । स्त्रीवेदके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्टकाल क्रमसे तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है । सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है । आगेके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है । इतनी विशेषता है कि अपनी–अपनी स्थिति कहनी चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

* अन्तरकालका अधिकार है ।

§ १८६. यहाँसे एक जीवविषयक अन्तरकालको कहेंगे । इस प्रकार अधिकारका परामर्श करनेवाला यह सूत्रवचन है ।

* मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना अन्तरकाल है ?

§ १८७ यह पृच्छावाक्य सुगम है ।

* जघन्य अन्तरकाल एक समय है ।

§ १८८. क्योंकि उत्कृष्टसे अनुत्कृष्टपनेको प्राप्त होकर तथा एक समयके लिए अन्तर करके फिर भी दूसरे समयमें उत्कृष्टभावके प्राप्त होने पर एक समयप्रमाण उक्त अन्तरकाल प्राप्त होता है।

*** उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।**

§ १८९. कुदो ? सण्णिपंचिंदिएसुक्कस्ससंकिलेसेणुक्कस्साणुभागुदीरणाए[1] आदिं कादूणंतरिय एइंदिएसु पविसिय तदुक्कस्सट्ठिदिमेत्तमुक्कस्संतरमणुपालिय पुणो वि पडिणियत्तिय तसेसु आगंतूण पडिवण्णतब्भावम्मि तदुवलंभादो ।

*** अणुक्कस्साणुभागुदीरगंतरं केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १९०. सुगमं ।

*** जहण्णेण एगसमओ ।**

§ १९१. अणुक्कस्सादो उक्कस्सभावं गंतूणेगसमयमंतरिय पुणो वि तदणंतरसमये अणुक्कस्सभावेण परिणदम्मि तदुवलद्धीदो ।

*** उक्कस्सेण वे छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।**

§ १९२. त जहा—मिच्छत्ताणुक्कस्साणुभागुदीरेमाणो पढमसम्मत्ताहिमुहो होदूण मिच्छत्तपढमट्ठिदीए आवलियमेत्तसेसाए अणुदीरगभावेणंतरिय तदो सम्मत्तमुप्पाइय सव्वुक्कस्समुवसमसम्मत्तकालं वोलाविय वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय पढमछावट्ठिमंतोमुहुत्तूणमणुपालिय तदवसाणे सम्मामिच्छत्तेणंतोमुहुत्तमंतरिदा पुणो वि वेदगसम्मत्तं पडिलंभेण विदियछावट्ठिं परिभमिय तदवसाणे अंतोमुहुत्तमेत्तसेसे मिच्छत्तं गंतूण मिच्छा-

* उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है ।

§ १८९. क्योंकि संज्ञी पञ्चेन्द्रियोंमें उत्कृष्ट संक्लेशवश उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाका प्रारम्भ कर तथा उसे अन्तरितकर और एकेन्द्रियोंमें प्रवेश कर एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण काल तक उत्कृष्ट अन्तरका अनुपालनकर फिर भी प्रतिनिवृत्त होकर त्रसोंमें आकर उत्कृष्ट संक्लेशपूर्वक उत्कृष्ट उदीरणाके प्राप्त होने पर उक्त अन्तरकाल प्राप्त होता है ।

* अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल कितना है ?

§ १९० यह सूत्र सुगम है ।

* जघन्य अन्तरकाल एक समय है ।

§ १९१. अनुत्कृष्टसे उत्कृष्टभावको प्राप्त होकर एक समयके लिए अन्तरित कर फिर भी तदनन्तर समयमें अनुत्कृष्टभावसे परिणत होने पर उक्त अन्तरकाल प्राप्त होता है ।

* उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम है ।

§ १९२. यथा—मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख होकर मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिमें आवलिमात्र शेष रहने पर अनुदीरकभावसे अन्तरकर तदनन्तर सम्यक्त्वको उत्पन्न कर सबसे उत्कृष्ट उपशमसम्यक्त्वके कालको विताकर वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त कर तथा अन्तर्मुहूर्तकम प्रथम छयासठसागर काल तक उसका पालन कर उसके अन्तमें सम्यग्मिथ्यात्वके द्वारा अन्तर्मुहूर्त काल तक वेदकसम्यक्त्वको अन्तरित कर फिर भी वेदकसम्यक्त्वकी प्राप्तिद्वारा द्वितीय छयासठ सागर काल तक परिभ्रमण कर

१ आ०प्रतौ -णुक्कस्सादो भागुदीरणाए इति पाठः, ता०प्रतौ -णुक्कस्सादो'' भागुदीरणाए इति पाठः ।

इट्ठिपढमसमए मिच्छत्ताणुक्कस्साणुभागुदीरगो जादो, लद्धमंतरं। संपहि सेसाणं पि कम्माण-मेसा चेव परूवणा थोवयरविसेसाणुविद्धा कायव्वा त्ति पदुप्पायणट्ठमप्पणासुत्तमाह—

*** एवं सेसाणं कम्माणं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तवज्जाणं।**

§ १९३. एत्थ सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं किमट्ठं परिवज्जणं कीरदे ? ण, तेसिमुक्क-स्साणुक्कस्साणुभागुदीरगंतरस्स मिच्छंतरपरूवणादो अइविलक्खणत्तेण साहम्मिया-भावादो। तदो ताणि मोत्तूण सेसाणं कम्माणं मिच्छत्तस्सेव पयदंतरपरूवणा कायव्वा, भेदाभावादो। णवरि अणुक्कस्साणुभागुदीरगस्स उक्कस्संतरगओ विसेसो अत्थि त्ति तप्पदुप्पायणट्ठमाह—

*** णवरि अणुक्कस्साणुभागुदीरगंतरं पयडिअंतरं कादव्वं ?**

§ १९४. एदेसिमणुक्कस्साणुभागुदीरगस्स उक्कस्सं जहा पयडिउदीरणाए उक्कस्संतरं परूविदं तहा परूवेयव्वमविसेसादो त्ति भणिदं होदि।

*** सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुक्कस्साणुभागुदीरगंतरं केवचिरं कालादो होदि ?**

---

उसके अन्तमें अन्तर्मुहूर्तमात्र शेष रहने पर मिथ्यात्वमें जाकर मिथ्यादृष्टि गुणास्थानके प्रथम समयमें मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक हो गया। इसप्रकार उत्कृष्ट अन्तरकाल प्राप्त हुआ। अब शेष कर्मोंकी भी स्तोक विशेषतासे युक्त यही प्ररूपणा करनी चाहिए इस बातका कथन करनेके लिए अर्पणा सूत्रको कहते हैं—

*** सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर इसी प्रकार शेष कर्मोंकी अपेक्षा जानना चाहिए।**

§ १९३. **शंका**—यहाँ पर सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका निषेध किसलिए किया जाता है ?

**समाधान**—नहीं, क्योंकि उनके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकके अन्तर-कालकी मिथ्यात्वकी अन्तरप्ररूपणाके साथ अत्यन्त विलक्षणता होनेसे साम्य नहीं पाया जाता, इसलिए उन्हें छोड़कर शेष कर्मोंके प्रकृत अन्तरकालकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान करनी चाहिए, क्योंकि इनकी प्ररूपणामें कोई भेद नहीं है। इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकके उत्कृष्ट अन्तरकालगत विशेष है, इसलिए उसका कथन करनेके लिए कहते हैं—

*** इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल प्रकृति उदीरणाके अन्तरकालके समान करना चाहिए।**

§ १९४. जिस प्रकार प्रकृति उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल कहा है उसी प्रकार इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कहना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई भेद नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

*** सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका कितना अन्तरकाल है ?**

§ १९५. सुगमं।

*** जहण्णेण अंतोमुहुत्तं।**

*** उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं।**

§ १९६. एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि। संपहि सुत्तसूचिदत्थविसये णिण्णय-जणणट्ठमुच्चारणाणुगमं कस्सामो। तं जहा—

§ १९७. अंतरं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-अणंताणु०४ उक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० वेछावट्ठिसागरो० सादिरेयाणि। एवमट्ठकसाय०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। एवं चदुसंजलण-भय-दुगुंछ०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। एवं हस्स-रदि०। णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि। एवमरदि-सोग०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० छम्मासा। एवं णवुंस०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। इत्थिवेद-

---

§ १९५. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।**

*** उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है।**

§ १९६. ये दोनों ही सूत्र सुगम है। अब चूर्णिसूत्रके द्वारा सूचित हुए अर्थके विषयमें निर्णय उत्पन्न करनेके लिए उच्चारणाका अनुगम करेंगे। यथा—

§ १९७. अन्तरकाल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनके बराबर है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम है। इसी प्रकार आठ कषायोंकी अपेक्षा जान लेना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। इसी प्रकार चार संज्वलन, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। इसी प्रकार हास्य और रतिकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीनाप्रमाण है। इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण है। स्त्रीवेद और

**पुरिसवेद० उक्क० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। सम्म०–सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं।**

**§ १९८. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–अणंताणु०४–हस्स-रदि० उक्क० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। सम्म०-सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। बारसक०–अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छत्तभंगो। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। एवं**

पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनके बराबर है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—संयतासंयत और संयतका उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है, इसीलिए यहाँ मध्यकी आठ कषायोंके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण कहा है, क्योंकि संयतासंयत अप्रत्याख्यान कषायचतुष्कके और संयत जीव प्रत्याख्यानकषायचतुष्कके अनुदीरक होते हैं। चार संज्वलन और भय-जुगुप्साकी उपशमश्रेणिमें अपनी-अपनी उदीरणाव्युच्छित्तिके बाद लौट कर वहाँ आनेतक उदीरणा नहीं होती। यतः इस कालका योग अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। सातवें नरकमें तथा वहाँ जानेके पूर्व और आनेके बाद अन्तर्मुहूर्त तक हास्य-रतिकी उदीरणा न हो यह सम्भव है, इसलिए इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम कहा है। सहस्रार कल्पमें छह महीना तक अरति-शोककी उदीरणा न हो यह सम्भव है, इसलिए इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल छह माहप्रमाण कहा है। सौ सागरपृथक्त्व काल तक कोई जीव नपुंसकवेदी न हो ऐसा कालप्ररूपणासे ज्ञात होता है, इसलिए नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरपृथक्त्वप्रमाण कहा है। जीवके नपुंसकवेदी रहते हुए स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणा नहीं होती, अतः उस कालको जानकर स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तर काल अनन्त कालप्रमाण कहा है, जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है। एक बार सम्यग्दृष्टि होनेके बाद यह जीव उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण काल तक मिथ्यादृष्टि बना रह सकता है, इसलिए सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्त कालप्रमाण कहा है। शेष स्पष्टीकरण चूर्णिसूत्रोंसे ही हो जाता है। आगे गतिमार्गणाके उत्तर भेदोंमें भी जहाँ जो अन्तरकाल कहा है उसे इसी न्यायसे घटित कर लेना चाहिए। कहीं कोई विशेष वक्तव्य होगा तो उसका स्पष्टीकरण अवश्य करेंगे।

§ १९८. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धीचतुष्क, हास्य और रतिके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। बारह कषाय, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका भंग मिथ्यात्वके समान है। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल

णवुंस० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० वे समया । एवं सत्तमाए । एवं पढमाए जाव छट्ठि त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । हस्स-रदि० अरदि-सोगभंगो ।

§ १९९. तिरिक्खेसु ओघं । णवरि मिच्छ०-अणंताणु०४ अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि । अट्ठक०-छण्णोक० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । णवुंस० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।

§ २००. पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ०-सोलसक०-छण्णोक० उक्क० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । अणुक्क० तिरिक्खोघं । सम्म०-सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । तिण्णिवेद० उक्क० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुध० । वेदा जाणियव्वा । णवरि जोणिणीसु इत्थिवेद० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० वेसमया ।

§ २०१. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-णवुंस० उक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० वेसमया । सोलस-

---

एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जान लेना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है । इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार पहलीसे लेकर छटी पृथिवीतक जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिए । इन पृथिवियोंमें हास्य और रतिका भंग अरति और शोकके समान है ।

§ १९९. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है । आठ कषाय और छह नोकषायोंके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है ।

§ २००. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम है । तीन वेदोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । किसके कौन वेद है यह जान लेना चाहिए । इतनी विशेषता है कि योनिनी तिर्यञ्चोंमें स्त्रीवेदके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है ।

§ २०१. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल

**क०–छण्णोक० उक्क० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० ।**

**§ २०२. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो । णवरि पच्चक्खाण०४ अणुक्क० ओघं । मणुसिणीसु इत्थिवेद० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० ।**

**§ २०३. देवेसु मिच्छ०–अणंताणु०४ उक्क० जह० एगस०, उक्क० अट्ठारस सागरो० सादिरेयाणि । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसू णाणि । एवं बारसक०–छण्णोक० । णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । अरदि-सोग० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं । एवं पुरिसवेद० । णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० वेसमया । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसूणाणि । इत्थिवेद० उक्क० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णपलिदो० देसूणाणि । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० वेसमया । एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । अरदि-सोग० हस्स-रदिभंगो ।**

अन्तर्मुहूर्त है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है । सोलह कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

§ २०२. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि प्रत्याख्यानचतुष्कके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका भंग ओघके समान है । मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

§ २०३. देवोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागरोपम है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है । इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । तथा अरति और शोकके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है । इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है । स्त्रीवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पचवन पल्योपम है । अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिए । अरति और शोकका भंग हास्य और रतिके समान है । सहस्रारकल्पमें अरति और शोकका भंग सामान्य देवोंके समान है । इतनी

**सहस्सारे अरदि-सोग० देवोघं। णवरि भवण०-वाणवें०-जोदिसि०-सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० उक्क० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि पलिदो० सादिरे० प० सा० पणवण्णं पलिदो० देसूणाणि। उवरि इत्थिवेदो णत्थि।**

**§ २०४. अणुद्दिसादि० सव्वट्ठा त्ति सम्म०-पुरिसवेद० उक्क० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० वे समया। एवं बारसक०-छण्णोक०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। एवं जाव०।**

*** जहण्णाणुभागुदीरगंतरं केसिंचि अत्थि, केसिंचि णत्थि।**

**§ २०५. कुदो ? खवगसेढीए दंसणमोहक्खवणाए च लद्धजहण्णसामित्ताणमंतराभावणियमदंसणादो सेसाणमंतरसंभवोवलंभादो। संपहि एदस्स विवरणमुच्चारणामुहेण वत्तइस्सामो। तं जहा—**

**§ २०६. जह० पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-अणंताणु०४ जह० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० बेछावट्ठिसागरो० सादिरेयाणि। णवरि अणंताणु०४ अजह० जह० एगस०।**

विशेषता है कि भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म-ऐशान कल्पके देवोंमें स्त्रीवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल क्रमसे कुछ कम तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और कुछ कम पचवन पल्योपम है। ऊपर स्त्रीवेद नहीं है।

§ २०४. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

*** जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल किन्हींके होता है और किन्हींका नहीं होता।**

§ २०५. क्योंकि क्षपकश्रेणिमें और दर्शनमोहनीयकी क्षपणामें जिनका जघन्य स्वामित्व प्राप्त हुआ है उनके अन्तराभावका नियम देखा जाता है। शेषके अन्तरकालका सम्भव उपलब्ध होता है। अब इस सूत्रका विवरण उच्चारणाके अनुसार करते हैं। यथा—

§ २०६. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम है। इतनी विशेषता है कि अनन्तानुबन्धीचतुष्कके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है। इसीप्रकार आठ कषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता

एवमट्ठकसाय० । णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । सम्मामि० जह० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । एवं सम्म० । णवरि जह० णत्थि अंतरं । चदुसंजल०–भय–दुगुंछ० जह० णत्थि अंतरं । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । हस्स–रदि–अरदि–सोग० जह० णत्थि अंतरं । अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि छम्मासं । इत्थिवे०– पुरिसवे०–णवुंस० जह० णत्थि अंतरं । अजह० जह० अंतोमु०, पुरिसवेद० एगसमओ; उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, णवुंस० सागरोवमसदपुधत्तं ।

§ २०७. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० अणंताणु०४ जह० अजह० जह० पलिदो० असंखे०भागो अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । सम्मामि० जह० अजह०

है कि इनके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । चार संज्वलन, भय और जुगुप्साके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । हास्य, रति, अरति और शोकके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल क्रमसे साधिक तेतीस सागरोपम और छह महीना है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल दोका अन्तर्मुहूर्त और पुरुषवेदका एक समय है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल दोका अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है और नपुंसकवेदका सौ सागरोपमपृथक्त्वप्रमाण है ।

विशेषार्थ—मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य अनुभाग उदीरणा संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टिके होती है, अतः संयमके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ उक्त प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण कहा है । तथा मिथ्यात्वके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ उक्त प्रकृतियोंके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम कहा है । मात्र मिथ्यादृष्टिके अनन्तानुबन्धीचतुष्कमेंसे किसी एक प्रकृतिकी एक समयके अन्तरसे उदीरणा सम्भव है, इसलिए इनके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय कहा है । इसी प्रकार आगे भी अपने-अपने स्वामित्व आदिको जानकर सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए । विशेष वक्तव्य न होनेसे अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया है ।

§ २०७. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण और अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । सम्यग्मिथ्यात्वके

जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एवं सम्म० । णवरि जह० णत्थि अंतरं । बारसक०-चदुणोक० जह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । एवं णवुंस० । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० बे समया । हस्स-रदि० जह० अजह० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एवं सत्तमाए । णवरि सम्म० हस्स-रदिभंगो । एवं पढमादि जाव छट्ठि त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । हस्स-रदि० अरदि-सोगभंगो । पढमाए सम्म० जह० णत्थि अंतरं । अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० सागरो० देसूणं ।

§ २०८. तिरिक्खेसु मिच्छ०-अणंताणु०४ ओघं । णवरि अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि । सम्म०-सम्मामि० ओघं । अपच्चक्खाण०४ जह० ओघं । अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० एयपुव्वकोडी देसूणा । अट्ठक०-छण्णोक०

---

जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । बारह कषाय और चार नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है । हास्य और रतिके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि यहाँ सम्यक्त्वका भंग हास्य और रतिके समान है । इसी प्रकार पहलीसे लेकर छटी पृथिवी तक जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । यहाँ हास्य और रतिका भंग अरति और शोकके समान है । पहली पृथिवीमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक सागरोपम है ।

**विशेषार्थ**—मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य अनुभाग उदीरणा प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध जीवके यथासमयमें होती है, यतः प्रथम सम्यक्त्वका जघन्य अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए इनके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । शेष कथन सुगम है जो अपने अपने स्वामित्वको जानकर ले आना चाहिए ।

§ २०८. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । अप्रत्याख्यानचतुष्कके जघन्य अनुभागके उदीरकका भंग ओघके समान है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट

जह० जह० एगस०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एवमित्थिवेद–पुरिसवेद० । णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवं णवुंस० । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।

§ २०९. पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ०–अट्ठक० जह० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । णवरि अजह० तिरिक्खोघं । सम्मामि० जह० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा । एवं सम्म० । णवरि जह० णत्थि अंतरं । अट्ठक०–छण्णोक० जह० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं । तिण्णिवेद० जह० अजह० जह० एगस०,[1] उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।

अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । आठ कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है ।

**विशेषार्थ**—तिर्यञ्चोंमें आठ कषाय और नौ नोकषायोंके जघन्य अनुभागकी उदीरणा सर्वविशुद्ध संयतासंयतके होती है । यह एक समयके अन्तरसे भी सम्भव है, इसलिए इन सबके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय कहा है । तथा संयमासंयमगुणके उत्कृष्ट अन्तरको ख्यालमें रख कर इन सबके अजघन्य अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण कहा है । शेष कथन सुगम है ।

§ २०९. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व और आठ कषायोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । इतनी विशेषता है कि अजघन्य अनुभागके उदीरकका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी अपनी स्थितिप्रमाण है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । आठ कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । तीन वेदोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । इतनी विशेषता है कि तिर्यञ्च-पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है । तथा स्त्रीवेद-

१. आ०-ता०प्रत्योः अजह० एगस० इति पाठः ।

**णवरि पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिसवेद-णवुंसयवेद० णत्थि। इत्थिवेद० अजह० जह० एगस०, उक्क० बे समया। सम्म० जह० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुध०। अजह० जह० एग०, उक्क० सगट्ठिदी०।**

**§ २१०. पंचिं०तिरिक्खअप०-मणुसअप० मिच्छ०-णवुंसय० जह० जह० एग०, उक्क० अंतो०। अजह० जह० एग०, उक्क० बे समया। सोलसक०-छण्णोक० जह० अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०।**

**§ २११. मणुसतिए मिच्छ०-अणंताणु०४-सम्म०-सम्मामि० पंचिंदियतिरिक्ख-भंगो। अट्ठक० जह० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। चदुसंजल०-छण्णोक० जह० णत्थि अंतरं। अजह० जह० उक्क० अंतोमु०। तिण्णिवेद० जह० णत्थि अंतरं। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। मणुसिणीसु पुरिसवे०-णवुंस०**

के अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—योनिनी तिर्यञ्चोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मरकर उत्पन्न नहीं होते, इसलिए उनमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण बन जानेसे वह उक्त कालप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २१०. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

§ २११. मनुष्यत्रिकमें मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धीचतुष्क, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है। आठ कषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। चार संज्वलन और छह नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। तीन वेदोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेदके अजघन्य अनुभागके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

**णत्थि । इत्थिवेद० अजह०[1] उक्क० अंतोमु० ।**

**§ २१२. देवेसु मिच्छ०–अणंताणु०४ जह० अजह० जह० पलिदो० असंखे०-भागो अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसूणाणि । सम्मामि० जह० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एवं सम्म० । णवरि जह० णत्थि अंतरं । बारसक०–छण्णोक० जह० जह०[2] एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । णवरि अरदि-सोग० अजह० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं । एवं पुरिसवे० । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० वे समया । इत्थिवे० जह० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णं पलिदो० देसूणाणि । अजह० जह० एगस०, उक्क० वे समया । एवं भवण०–वाणवें०–जोदिसियादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । अरदि-सोग० हस्स-रदिभंगो । सहस्सारे**

**विशेषार्थ**—मनुष्यिनी द्रव्यपुरुषके स्त्रीवेदके उदयसे क्षपकश्रेणि पर चढ़ने पर जब सवेदभागमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष बचता है तब स्त्रीवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा होती है ऐसा स्वामित्वसूत्रसे स्पष्ट ज्ञात होता है, इसलिए मनुष्यिनीके स्त्रीवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणाका अन्तरकाल नहीं बनता यह स्पष्ट ही है। शेष कथन सुगम है।

§ २१२. देवोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण और अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है। इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके जघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। बारह कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इतनी विशेषता है कि अरति और शोकके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पचवन पल्योपम है। अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है। इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इनमें अरति और शोकका भंग हास्य और रतिके समान है। सहस्रार कल्पमें अरति और शोकके अजघन्य अनुभागके उदीरकका

१. आ०-ता०प्रत्योः इत्थिवेद० जह० अजह० इति पाठः।
२. आ०-ता०प्रत्योः जह० अजह० इति पाठः।

अरदि-सोग० अजह० देवोघं । णवरि भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सम्म० अजह० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा । इत्थिवेद० जह० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि पलिदो० सादिरे० पलिदो० सादिरे० । सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं । उवरि इत्थिवेदो णत्थि ।

§ २१३. अणुदिसादि जाव सव्वट्ठा त्ति सम्म० जह० अजह० णत्थि अंतरं । बारसक०–सत्तणोक० जह० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा । अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । णवरि पुरिसवेद० अजह० जह० एगस०, उक्क० वे समया । एवं जाव० ।

*** णाणाजीवेहि भंगविचओ भागाभागो परिमाणं खेत्तं फोसणं कालो अंतरं सण्णियासो च एदाणि कादव्वाणि ।**

§ २१४ एवमेदाणि अणियोगद्दाराणि एत्थुद्देसे सवित्थरं परूवेयव्वाणि त्ति भणिदं होइ । संपहि एदेण बीजपदेण समप्पिदाणमेदेसिमणियोगद्दाराणमुच्चारणाइरियोवएस-बलेण परूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा—

§ २१५. णाणाजीवेहि भंगविचओ[1] दुविहो—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं ।

---

भंग सामान्य देवोंके समान है । इतनी विशेषता है कि भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है । स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल क्रमसे कुछ कम तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है । सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है । ऊपर देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है ।

§ २१३. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें सम्यक्त्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । बारह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है । अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि पुरुषवेदके अजघन्य अनुभागके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल दो समय है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

*** नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और सन्निकर्ष इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ।**

§ २१४. इस प्रकार ये अनुयोगद्वार इस स्थलपर विस्तारके साथ कहने चाहिए यह उक्त सूत्रका तात्पर्य है । अब इस बीजपदके अनुसार मुख्यताको प्राप्त हुए इन अनुयोगद्वारोंका उच्चारणाचार्यके उपदेशानुसार प्ररूपण करेंगे । यथा—

§ २१५. नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकारका है—जघन्यय और उत्कृष्ट ।

1. ता०प्रतौ भंगविचयाणुगमेण इति पाठः ।

**दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सम्म०-णवणोक० उक्क० अणुभागुदीरणाए सिया सव्वे अणुदीरगा, सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च। एवमणुक्क०। णवरि उदीरगा पुव्वं वत्तव्वं[1]। सम्मामि० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० अट्ठ भंगा। सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-मणुसतिय-सव्वदेवा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। मणुसअपज्ज० सव्वपयडी० उक्क० अणुक्क० अट्ठ भंगा। एवं जाव०। एवं जहण्णयं पि णेदव्वं।**

**§ २१६. भागाभागाणु० दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० उक्क० सव्वजी० केव०? अणंतभागो। अणुक्क० अणंता भागा। सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवे०-पुरिसवे० उक्क० सव्वजी० केव०? असंखे०भागो। अणुक्क० असंखेज्जा भागा। एवं तिरिक्खा०।**

**§ २१७. सव्वणिरय०-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा जाव अवराजिदा त्ति सव्वपय० उक्क० अणुभागुदी० असंखे०भागो। अणुक्क० असंखे०भागा।**

---

उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय, सम्यक्त्व और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाके कदाचित् सब जीव अनुदीरक हैं, कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और एक जीव उदीरक है, कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और नाना जीव उदीरक हैं। इसी प्रकार अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाकी अपेक्षा कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पहले उदीरक हैं ऐसा कहना चाहिए। सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंके आठ भंग हैं। सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्यत्रिक और सब देव जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा करते हैं उनका भंग ओघके समान है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंके आठ भंग हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए। इसी प्रकार जघन्यको भी जानना चाहिए।

§ २१६, भागाभागानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं? अनन्तवें भागप्रमाण हैं। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव अनन्त बहुभागप्रमाण हैं। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ २१७. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं।

१. आ०प्रतौ पुव्वं व वत्तव्वं इति पाठः। ता०प्रतौ पुव्व [ व ] वत्तव्वं इति पाठः।

§ २१८. मणुसेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० अणुभागु० असंखे०-भागो। अणुक्क० असंखे०भागा। सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवेद० उक्क० अणु०-भागु० संखे०भागो। अणुक्क० संखेज्जा भागा। मणुसपज्ज०–मणुसिणी०–सव्वट्ठदेवा० सव्वपय० उक्क० अणुभागुदी० सव्वजी० संखे०भागो। अणुक्क० संखे०भागा। एवं जाव०। एवं जहण्णयं पि णेदव्वं।

§ २१९. परिमाणाणु० दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०–ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० अणुभागुदी० केत्तिया? असंखेज्जा। अणुक्क० केत्तिया? अणंता। सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवेद० उक्क० अणुक्क० के०? असंखेज्जा। एवं तिरिक्खा०।

§ २२०. सव्वणिरय०–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवरा-जिदा त्ति सव्वपय० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदीर० केत्तिया? असंखेज्जा। मणुसेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० के०? संखेज्जा। अणुक्क० के०? असंखेज्जा। सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवे०–पुरिस० उक्क० अणुक्क० के०? संखेज्जा। मणुसपज्ज०–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० सव्वपय० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० के०? संखेज्जा।

§ २१८. मनुष्योंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं तथा अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव असंख्यात बहुभागप्रमाण है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनु-भागके उदीरक जीव सब जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण है तथा अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव संख्यात बहुभागप्रमाण है। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव सब जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण है तथा अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव संख्यात बहुभागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार जघन्यको भी जानना चाहिए।

§ २१९. परिमाण दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने है? अनन्त है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने है? असंख्यात है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ २२०. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात है। मनुष्योंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने है? संख्यात हैं। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने है? असंख्यात हैं। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीव

**एवं जाव० ।**

**§ २२१. जह० पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० जह० अणुभागु० के० ? संखेज्जा । अजह० के० ? अणंता । सम्म०–इत्थिवेद–पुरिस० जह० अणुभागु० के० ? संखेज्जा । अजह० के० ? असंखेज्जा । सम्मामि० जह० अजह० अणुभागु० के० ? असंखेज्जा ।**

**§ २२२. आदेसेण णेरइय० सम्म० ओघं । सेसाणं जह० अजह० केत्ति० ? असंखेज्जा । एवं पढमाए । विदियादि सत्तमा त्ति पंचिं०तिरिक्खजोणिणी–पंचिं०तिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज०–भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सव्वपय० जह० अजह० के० ? असंखेज्जा । तिरिक्खेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० जह० केत्ति० ? असंखेज्जा । अजह० के० ? अणंता । सम्म० ओघ । सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवे० जह० अजह० के० ? असंखेज्जा । पंचिं०तिरिक्खदुगे सम्म० ओघं । सेसपय० जह० अजह० के० ? असंखेज्जा ।**

**§ २२३. मणुसेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० जह० संखेज्जा । अजह० असंखेज्जा । सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवे०–पुरिसवे० जह० अजह० के० ? संखेज्जा ।**

---

कितने हैं ? संख्यात हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ २२१. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं ।

§ २२२. आदेशसे नारकियोंमें सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है । शेष प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए । दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकी, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है । सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चद्विकमें सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है । शेष प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं ।

§ २२३. मनुष्योंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरक जीव संख्यात हैं । अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव असंख्यात हैं । सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ?

मणुसपज्ज०-मणुसिणी०-सव्वट्ठदेवा सव्वपय० जह० अजह० केत्ति० ? संखेज्जा। देवा सोहम्मीसाणादि अवराजिदा त्ति सम्म० ओघं। सेसपय० जह० अजह० के० ? असंखेज्जा। एवं जाव०।

§ २२४. खेत्तं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० उक्क० अणुभागुदी० लोग० असंखे०भागे। अणुक्क० सव्वलोगे। सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिसवे० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागे। एवं तिरिक्खा०। सेसगदीसु सव्वपय० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागे। एवं जाव०।

§ २२५. जह० पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० जह० लोग० असंखे०भागे। अजह० सव्वलोगे। सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिस० जह० अजह० लोग० असंखे०भागे। एवं तिरिक्खा०। सेसगदीसु सव्वपय० जह० अजह० लोग० असंखे०भागे। एवं जाव०।

§ २२६. पोसणं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक० उक्क० अणुभागुदी० लोग० असंखे०भागो

संख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। देव और सौधर्म-ऐशान कल्पके देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २२४. क्षेत्र दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र सर्वलोकप्रमाण है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। शेष गतियोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २२५. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र सर्वलोकप्रमाण है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। शेष गतियोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २२६. स्पर्शन दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और सोलह कषायोंके उत्कृष्ट

**अट्ठ तेरह चोद्दस० भागा वा देसूणा। अणुक्क० सव्वलोगो। सम्म०–सम्मामि० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। इत्थिवेद–पुरिसवेद० उक्क० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस०। अणुक्क० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। णवुंस०– अरदि-सोग-भय-दुगुंछ० उक्क० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। अणुक्क० सव्वलोगो। हस्स-रदि० उक्क० अणुभागुदी० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। अणुक्क० सव्वलोगो।**

अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग, त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम तेरह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। हास्य और रतिके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**विशेषार्थ**—मिथ्यात्व और सोलह कषायोंके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले जीवोंके होती है। इनका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भाग विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग तथा मारणान्तिक समुद्घातकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम तेरह भागप्रमाण है। यहाँ ६ राजु नीचे और ७ राजु ऊपर इस प्रकार त्रसनालीका कुल कुछ कम तेरह राजु क्षेत्र लिया है। इसीलिए यहाँ उक्त प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उक्त क्षेत्रप्रमाण स्पर्शन कहा है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका सर्व लोकप्रमाण स्पर्शन है यह स्पष्ट ही है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा वेदक सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपने-अपने स्वामित्वके समय होती है। यतः इन जीवोंका इनकी उदीरणाके समय वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण ही बनता है, अतः यह स्पर्शन उक्त क्षेत्रप्रमाण कहा है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंके स्वामित्वको देखते हुए उनका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण बननेसे यह उक्त क्षेत्रप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन सर्वलोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा के उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक सर्वोत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले सातवीं पृथिवीके नारकी

**§ २२७. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। सम्म०–सम्मामि० खेत्तं। एवं विदियादि सत्तमा त्ति। णवरि सगपोसणं। पढमाए खेत्तं।**

**§ २२८. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। अणुक्क० सव्वलोगो। सम्म० उक्क० अणुभागु० खेत्तं। अणुक्क० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। सम्मामि० उक्क० अणुक्क० खेत्तं। इत्थिवेद–पुरिस० ओघं। पंचिंदियतिरिक्खतिये सम्म०–सम्मामि० तिरिक्खोघं। सेसपयडि० उक्क० लोग० असखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। अणुक्क० लोग० असंखे०भागो**

होते हैं, अतः उनके वर्तमान और अतीत स्पर्शनको ध्यानमें रखकर उक्त प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन सर्वलोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। हास्य और रतिके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरक सर्व संक्लेश परिणामवाले शतार-सहस्रार कल्पके देव हैं, अतः इनके वर्तमान और अतीत स्पर्शनको ध्यानमें रखकर इन प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। आगे गति मार्गणाके उत्तर भेदोंमें अपने-अपने स्वमित्व और मार्गणाओंके स्पर्शनको ध्यानमे रखकर उक्त न्यायसे प्रकृत स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए। विशेष वक्तव्य न होनेसे अलगसे स्पष्टीकरण नही करेंगे।

§ २२७. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है। इसी प्रकार दूसरीसे लेकर सातवी पृथिवी तक जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन जानना चाहिए। पहली पृथिवीमे क्षेत्रके समान स्पर्शन है।

§ २२८. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। इसके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा भंग ओघके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और त्रसनालीके चौदह भागोमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और

**सव्वलोगो वा। पंचिं०तिरिक्ख०अपज्ज०-मणुसअपज्ज० सव्वपयडि० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा।**

**§ २२९. मणुसतिये सम्म०-सम्मामि० खेत्तं। सेसपय० उक्क० लोग० असंखे०भागो। अणुक्क० लोग० असं०भागो सव्वलोगो वा।**

**§ २३०. देवेसु सम्म०-सम्मामि० ओघं। मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा। णवरि हस्स-रदीणं उक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा।**

**§ २३१. भवण०-वाणवें-जोदिसि० मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा। सम्म०-सम्मामि० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस० देसूणा।**

**§ २३२. सोहम्मीसाण० मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस भागा वा देसूणा। सम्म०-सम्मामि० ओघं।**

---

सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २२९. मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा स्पर्शन क्षेत्रके समान है। शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २३०. देवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा भंग ओघके समान है। मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि हास्य और रतिके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २३१. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग और कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २३२. सौधर्म और ऐसान कल्पमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा भंग ओघके समान है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्रारकल्प

सणक्कुमारादि जाव सहस्सार त्ति सव्वपय० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। आणदादि जाव अचुदा त्ति सव्वपय० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। उवरि खेत्तं। एवं जाव०।

§ २३३. जह० पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०—सोलसक०—सत्तणोक० जह० लोग० असंखे०भागो। अजह० सव्वलोगो। सम्म० जह० खेत्तं। अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। सम्मामि० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। इत्थिवे०—पुरिसवे० जह० खेत्तं। अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा सव्वलोगो वा।

§ २३४ आदेसेण णेरइय० मिच्छ०—सोलसक०—सत्तणोक० जह० खेत्तं।

तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभाग के उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग-प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। ऊपर क्षेत्रके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २३३. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग, त्रस नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**विशेषार्थ**—मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषाय इनमें से कितनी ही प्रकृतियों की जघन्य अनुभाग उदीरणा अपनी अपनी क्षपणाके समय स्वयोग्य स्थान पर होती है और कितनी ही प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणा संयमके अभिमुख हुए यथायोग्य गुणस्थानमें होती है, जिस सबका विशेष ज्ञान जघन्य स्वामित्वसे कर लेना चाहिए। यतः ऐसे जीवोंका स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है, अतः इन प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन उक्त क्षेत्रप्रमाण कहा है। सम्यक्त्वप्रकृतिकी जघन्य अनुभाग उदीरणा भी क्षपणामें एक समय अधिक एक आवलिकाल रहने पर होती है, यतः ऐसे जीवोंका स्पर्शन भी लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है, अतः इसकी अपेक्षा भी जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उक्त क्षेत्रप्रमाण स्पर्शन कहा है। शेष कथन सुगम है। गति मार्गणाके अवान्तर भेदोंमें भी अपना-अपना स्वामित्व और उस उस मार्गणाका स्पर्शन जानकर प्रकृत स्पर्शन समझ लेना चाहिए।

§ २३४. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके

**अजह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा । सम्म०–सम्मामि० जह० अजह० खेत्तं । एवं विदियादि जाव सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तं ।**

**§ २३५. तिरिक्खेसु मिच्छ०–अट्ठक० जह० खेत्तं । अजह० सव्वलोगो । सम्म० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा । सम्मामि० जह० अजह० खेत्तं । अट्ठक०–सत्तणोक० जह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अजह० सव्वलोगो । इत्थिवेद–पुरिसवेद० जह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा । अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।**

**§ २३६. पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ०–अट्ठक० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । सम्म०–सम्मामि० तिरिक्खोघं । सेसपय० जह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । णवरि जोणिणीसु सम्म० जह० अजह० लोग० असखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा ।**

---

असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। इसी प्रकार दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है।

§ २३५. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और आठ कषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भाग-प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकों का स्पर्शन क्षेत्रके समान है। आठ कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनाली-के चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २३६. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व और आठ कषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि योनिनियोंमें सम्यक्त्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग-प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २३७. पंचिं०तिरि०अपज्ज०-मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।

§ २३८. मणुसतिये सम्म०-सम्मामि० खेत्तं । सेसपय० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।

§ २३९. देवेसु मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० जह लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा । अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा । सम्म० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा । सम्मामि० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा । एवं सोहम्मीसाण० ।

§ २४०. भवण०-वाणवें०-जोदिसि० मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० जह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस० देसूणा, अजह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस० । सम्म०-सम्मामि० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस० देसूणा ।

§ २३७. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

§ २३८. मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है । शेष प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

§ २३९. देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग, त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए ।

§ २४०. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग और आठ भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग और कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**§ २४१. सणक्कुमारादि जाव सहस्सारा त्ति सम्म० जह० खेत्तं। अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। सेसपय० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ० चोद्दस० देसूणा।**

**§ २४२. आणदादि जाव अच्चुदा त्ति सम्म० जह० खेत्तं। अजह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। सेसपय० जह० अजह० लोग० असं०भागो छ चोद्दस० देसूणा। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव०।**

**§ २४३. कालाणु० दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सम्म०-सोलसक०-णवणोक० उक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० सव्वद्धा। सम्मामि० उक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पलिदो० असं०भागो।**

---

§ २४१. सनत्कुमार कल्पसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ २४२. आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्पतकके देवोंमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। ऊपरके देवोंमें क्षेत्रके समान भंग है। इसीप्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए।

§ २४३. कालानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—यहाँ सभी प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है सो उसका आशय ही इतना है कि यदि नाना जीव निरन्तर उक्त सभी प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करते रहें तो उस सब कालका योग आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होगा, इससे अधिक नहीं। तथा सम्यग्मिथ्यात्वके

**§ २४४. आदेसेण सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। मणुसतिये सव्वपय० उक्क० अणुभागुदी० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। अणुक्क० सव्वद्धा। णवरि सम्मामि० अणुक्क० जहण्णुक्क० अंतोमु०। मणुसअपज्ज० सव्वपयडी० उक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०-भागो। सव्वट्ठे सव्वपय० उक्क० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। अणुक्क० सव्वद्धा। एवं जाव०।**

**§ २४५. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपय० जह० अणुभागुदी० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया। अजह० सव्वद्धा।**

अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल भी अन्तर्मुहूर्त है, अब यदि नाना जीव सन्तानके त्रुटित हुए बिना सम्यग्मिथ्यात्व गुणको प्राप्त होते रहें तो उस कालका योग पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है, अतः यहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है। आगे गतिमार्गणाके अवान्तर भेदोंमें भी अपनी अपनी विशेषता जान कर काल घटित कर लेना चाहिए।

§ २४४. आदेशसे सब नारकी, सब तिर्यञ्च, देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा होती है उनका भंग ओघके समान है। मनुष्यत्रिकमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सर्वार्थसिद्धिमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिक और सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी संख्या संख्यात है, इसलिए इनमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल संख्यात समय तथा सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए इनमें इसके उत्कृष्ट कालको ध्यानमें रख कर यहाँ सब प्रकृतियोंके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २४५. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल

**णवरि सम्मामि० जह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो।**

§ २४६. **आदेसेण णेरइय० सम्म०–सम्मामि० ओघं। सेसपय० जह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अजह० सव्वद्धा। एवं पढमाए तिरिक्ख–पंचिंदियतिरिक्खदुग–देवा सोहम्मादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि अप्पप्पणो पयडीओ णादव्वाओ। विदियादि सत्तमा त्ति जोणिणी०–भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सम्मामि० ओघं। सेसपय० जह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अजह० सव्वद्धा। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज० सव्वपय० जह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असं०भागो। अज० सव्वद्धा।**

---

आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवे भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—ओघसे सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका काल एक समय है यह स्पष्ट ही है। यदि नाना जीव सन्तानके त्रुटित हुए बिना इनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा करें तो सब कालका योग सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़ कर संख्यात समय ही होगा, इसलिए यहाँ उनके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है। मात्र सम्यग्मिथ्यात्व-की अपेक्षा यह काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जाता है, इसलिए इसके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २४६. आदेशसे नारकियोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार पहली पृथिवी, सामान्य तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चद्विक, सामान्य देव और सौधर्म कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी अपनी प्रकृतियाँ जाननी चाहिए। दूसरीसे लेकर सातवी पृथिवी तकके नारकी, योनिनीतिर्यञ्च, भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है।

**विशेषार्थ**—प्रथम पृथिवी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चद्विक, सामान्य देव और सौधर्म कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मरकर उत्पन्न होते हैं, इसलिए इनमें सम्यक्त्वका भंग ओघके समान बन जाता है। परन्तु पूर्वोक्त शेष मार्गणाओंमें कृत-कृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मर कर उत्पन्न नहीं होते, इसलिए इनमें सम्यक्त्वकी अपेक्षा काल-प्ररूपणा अन्य प्रकृतियोंके समान बननेसे उस प्रकारसे कही है। शेष कथन सुगम है।

**§ २४७. मणुसतिए ओघं। णवरि सम्मामि० जह० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया। अजह० जहण्णुक्क० अंतोमु०। मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अजह० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो।**

**§ २४८. अणुदिसादि अवराजिदा त्ति सम्म०—बारसक०—सत्तणोक० आणदभंगो। सव्वट्ठे सव्वपय० जह० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया। अजह० सव्वद्धा। एवं जाव०।**

**§ २४९. अंतरं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपयडी० उक्क० अणुभागुदी० अंतरं जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अंतरं। णवरि सम्मामि० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो।**

---

§ २४७. मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिकका प्रमाण संख्यात होनेसे यहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल संख्यात समय तथा अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेप कथन सुगम है।

§ २४८. अनुदिशसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। सर्वार्थसिद्धिमें सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २४९. अन्तर दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणाके योग्य परिणाम कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण कालके अन्तरसे होते हैं, इसलिए यहाँ सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है यह स्पष्ट ही है। मात्र सम्यग्मिथ्यात्व गुण यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए

**§ २५०. आदेसेण सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–सव्वमणुस–सव्वदेवा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। णवरि मणुसअपज्ज० सव्वपयडी० उक्क० अणुभागुदी० अंतरं जह एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एवं जाव०।**

**§ २५१. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–बारसक०–छण्णोक० जह० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अजह० णत्थि अंतरं। सम्मामि० जह० जह० एयस०, उक्क० असंखे०लोगा। अजह० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। सम्म०–लोभसंजल० जह० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं। अजह० णत्थि अंतरं। इत्थिवे०–णवुंस० जह० जह० एयस०, उक्क० वासपुधत्तं। अजह० णत्थि अंतरं। तिण्णिसंजल०–पुरिसवे० जह० जह० एगस०, उक्क० वासं सादिरेयं। अजह० णत्थि अंतरं। एवं मणुसतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा। मणुसिणी० खवगपय० वासपुधत्तं।**

---

उसके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है।

§ २५०. आदेशसे सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा होती है उनका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २५१. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, बारह कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्व और लोभ संज्वलनके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। तीन संज्वलन और पुरुषवेदके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक एक वर्ष है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। तथा मनुष्यिनियोंमें क्षपक प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है।

**§ २५२. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-अणंताणु०४ जह० जह० एगस०, उक्क० सत्त रादिंदियाणि। अजह० णत्थि अंतरं। सम्म० जह० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं। अजह० णत्थि अंतरं। सम्मामि० ओघं। बारसक०-सत्तणोक० जह० जह० एयस०, उक्क० असंखे०लोगा। अजह० णत्थि अंतरं। एवं पढमाए। विदियादि सत्तमा त्ति एवं चेव। णवरि सम्म०[1] कसायभंगो।**

**§ २५३. तिरिक्खेसु सम्म०-सम्मामि० णारयभंगो। सेसपय० जह० जह०**

---

**विशेषार्थ**—दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयकी क्षपणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना होनेसे सम्यक्त्व और संज्वलन लोभके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना कहा है। यह जीव पुरुषवेद और शेष तीन संज्वलनोंके उदयके साथ कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक साधिक एक वर्षके अन्तरसे क्षपकश्रेणिपर चढ़ता है, इसलिए पुरुषवेद और शेष तीन संज्वलनोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक एक वर्ष कहा है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदयसे यह जीव कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक वर्षपृथक्त्वके अन्तरसे क्षपकश्रेणिपर चढता है, इसलिए इन दोनों वेदोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २५२. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात दिन-रात है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। बारह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमे इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग कषायोंके समान है।

**विशेषार्थ**—नरकमें प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्तिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात दिन-रात कहा है। तथा कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि द्वितीयादि पृथिवियोंमें कृतकृत्यवेदकसम्यग्दृष्टि जीव मरकर नहीं उत्पन्न होते, इसलिए उनमें सम्यक्त्वका भंग कषायोंके समान बन जानेसे उनके समान कहा है।

§ २५३. तिर्यञ्चोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग नारकियोंके समान है। शेष

१. आ०-ता०प्रत्योः सम्मामि० इति पाठः।

**एयस०, उक्क० असंखे० लोगा । अजह० णत्थि अंतरं । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिए । णवरि वेदा जाणियव्वा । जोणिणीसु सम्म० कसायभंगो ।**

**§ २५४. पंचिं०तिरिक्खअपज्ज० सव्वपय० जह० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अजह० णत्थि अंतरं । एवं मणुसअपज्ज० । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क पलिदो० असं०भागो ।**

**§ २५५. देवेसु दंसणतिय-अणंताणु०४ णारयभंगो । सेसपयडी० जह० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अजह० णत्थि अंतरं । एवं सोहम्मीसाण० । एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवे० णत्थि । भवण०-वाणवें-जोदिसि० देवोघं । णवरि सम्म० कसायभंगो ।**

**§ २५६. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० जह० जह० एगस०, उक्क० वास-**

---

प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। योनिनी तिर्यञ्चोंमें सम्यक्त्वका भंग कषायोंके समान है।

**विशेषार्थ**—यद्यपि तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य अनुभाग उदीरणाका स्वामित्व संयमासंयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि संज्ञी पञ्चेन्द्रियके मिथ्यात्वके अन्तिम समयमें होता है तथापि ऐसी विशुद्धिवाला उक्त जीव कमसे कम एक समयके अन्तरसे हो यह भी सम्भव है और अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण कालके अन्तरसे हो यह भी सम्भव है। इसी तथ्यको ध्यानमें रखकर यहाँ इन प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २५४. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्तकोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ २५५. देवोंमें दर्शनमोहनीय तीन और अनन्तानुबन्धी चारका भंग नारकियोंके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वका भंग कषायके समान है।

§ २५६. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनुदिशमें वर्षपृथक्त्व

पुधत्तं पलिदो० संखे०भागो। बारसक०–सत्तणोक० जह० जह० एगस०, उक्क० असंखे० लोगा। अजह० णत्थि अंतरं। एवं जाव०।

§ २५७. सण्णियासो दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छत्तस्स उक्क० अणुभागमुदीरेंतो सोलसक०–णवणोक० सिया उदी० सिया अणुदी०। जदि उदी० उक्कस्सं वा अणुक्कस्सं वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सं छट्ठाणपदिदमुदीरेदि। सम्म० उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो बारसक०–णवणोक० सिया उदी० सिया अणुदी०। जदि उदीरगो णिय० अणुक्क० अणंतगुणहीणं। एवं सम्मामि०।

§ २५८. अणंताणु०कोध० उक्क० उदी० मिच्छ० तिण्हं कोहाणं णिय० उदी०, उक्क० अणुक्क०। उक्कस्सादो अणुक्क० छट्ठाणपदिदं। णवणोक० सिया० तं तु छट्ठाणपदिदं। एवं पण्णारसक०।

§ २५९. इत्थिवेद० उक्क० अणुभागमुदीरे०[1] मिच्छ० णिय० तं तु छट्ठाणपदिदं।

और सर्वार्थसिद्धिमें पल्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण है। बारह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २५७. सन्निकर्ष दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक सोलह कषाय और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टसे षट्स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो नियमसे अनन्त गुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिको मुख्य कर सन्निकर्ष कहना चाहिए।

§ २५८. अनन्तानुबन्धी क्रोधके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व और तीन क्रोधोंकी नियमसे उदीरणा करता है, जो उनके उत्कृष्टका उदीरक है या अनुत्कृष्टका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्टका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थान पतित अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है। नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टका उदीरक है या अनुत्कृष्टका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्टका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पन्द्रह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष कहना चाहिए।

§ २५९. स्त्रीवेदके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है जो उत्कृष्टका उदीरक है या अनुत्कृष्टका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्टका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषायोंका कदाचित् उदीरक

१. ता०प्रतौ उक्क० अणुक्कमुदीरे० इति पाठः।

**सोलसक० सिया० तं तु छट्ठाणपदिदं । छण्णोक० सिया० अणंतगुणहीणं । एवं पुरिसवेद० ।**

**§ २६०. णवुंस० उक्क० अणुभागमुदीरेंतो मिच्छ० णिय० तं तु छट्ठाणपदिदं । सोलसक०–चदुणोक० सिया० तं तु छट्ठाणपदिदं । हस्स-रदि० सिया० अणंतगुणहीणं ।**

**§ २६१. हस्सस्स उक्क० अणुभागमुदीरेंतो मिच्छ-रदि० णिय० तं तु छट्ठाणपदिदं । सोलसक० सिया० तं तु छट्ठाणपदिदं । भय-दुगुंछ० सिया० अणंतगुणहीणं । पुरिसवे० णिय० अणंतगुणहीणं । एवं रदीए ।**

**§ २६२. अरदि० उक्क० अणुभागमुदीरेंतो मिच्छ०–णवुंस०–सोग० णिय० तं तु छट्ठाणपदिदं । सोलसक०–भय-दुगुंछ० सिया० तं तु छट्ठाणपदिदं । एवं सोग० ।**

है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टका उदीरक है या अनुत्कृष्टका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्टका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पुरुषवेदको मुख्य कर सन्निकर्ष कहना चाहिए।

§ २६०. नपुंसकवेदके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्टका उदीरक है या अनुत्कृष्टका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्टका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और चार नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टका उदीरक है या अनुत्कृष्टका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्टका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। हास्य और रतिका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो अनन्त गुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २६१. हास्यके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व और रतिका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुकृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टसे छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। पुरुषवेदका नियमसे उदीरक होकर अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष कहना चाहिए।

§ २६२. अरतिके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और शोकका नियमसे उदीरक है जो इनके उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट

§ २६३. भय० उक्क० उदी० मिच्छ०–णवुंस० णि० तं तु छट्ठा०प० । सोलसक०–अरदि-सोग०–दुगुंछ० सिया० तं तु छट्ठा०प० । हस्स–रदि० सिया० अणंतगुणहीणं । एवं दुगुंछाए ।

§ २६४. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० उक्क० अणुभागमुदीरेंतो सोलसक०–छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । णवुंस णि० तं तु छट्ठाणप० ।

§ २६५. सम्म० उक्क० अणुभागमुदीरेंतो बारसक०–छण्णोक० सिया अणंतगुणहीणं । णवुंस० णि० अणंतगुणहीणं । एवं सम्मामि० ।

§ २६६. अणंताणु०कोध० उक्क० उदीरेंतो मिच्छ० तिण्हं कोधाणं णवुंस०

---

अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २६३. भयके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय, अरति, शोक और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। हास्य और रतिका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २६४. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टको अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २६५. सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है जो अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २६६. अनन्तानुबन्धी क्रोधके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, तीन क्रोध और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक

णि० तं तु छट्ठाणपदिदं० । छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० । एवं पण्णारसक० ।

§ २६७. णवुंस० उक्क० उदीरेंतो मिच्छ० णिय० तं तु छट्ठाणपदि० । सोलसक०–छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० ।

§ २६८. हस्स० उक्क० अणुभागमुदीरे० मिच्छ०–णवुंस०–रदि० णिय० तं तु छट्ठाणप० । सोलसक०–भय-दुगुंछ० सिया० तं तु छट्ठाणप० । एवं रदीए । एवमरदि-सोगाणं ।

§ २६९. भय० उक्क० अणुभागमुदी० मिच्छ–णवुंस० णि० तं तु छट्ठाणप० । सोलसक०–पंचणोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० । एवं दुगुंछाए । एवं सव्वणेरइय० ।

---

है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थान पतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पन्द्रह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २६७. नपुंसकवेदके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २६८. हास्यके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और रतिका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति ओर शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २६९. भयके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ २७०. तिरिक्खेसु मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-सोलसक० ओघं। इत्थिवेद० उक्क० अणुभागुदी० मिच्छ० णि० तं तु छट्ठाणप०। सोलसक०-छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप०। एवं पुरिसवे०-णवुंस०।

§ २७१. हस्सस्स उक्क० अणुभागमुदी० मिच्छ-रदि० णिय० तं तु छट्ठाणप०। सोलसक०-तिण्णिवेद-भय-दुगुछ० सिया तं तु छट्ठाणप०। एवं रदीए। एवमरदि-सोगाणं।

§ २७२. भय० उक्क० अणुभागमुदी० मिच्छ० णि० तं तु छट्ठाणप०। सोलसक०-अट्ठणोक० सिया० तं तु छट्ठाणप०। एवं दुगुंछाए। पंचिंदियतिरिक्खतिये एवं चेव। णवरि पज्ज० इत्थिवे० णत्थि। जोणिणीसु इत्थिवेदो धुवो कायव्वो।

---

§ २७०. तिर्यञ्चोंमे मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सोलह कषायोंका भंग ओघके समान है। स्त्रीवेदके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पुरुषवेद और नपुंसकवेदको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २७१. हास्यके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व और रतिका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २७२. भयके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है और योनिनियोंमें स्त्रीवेद ध्रुव करना चाहिए।

§ २७३. पंचिं०तिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० मिच्छ० उक्क० अणुभागमुदी० सोलसक०–छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । णवुंस० णि० तं तु छट्ठाणप० ।

§ २७४. अणंताणु०कोध० उक्क० अणुभागमुदी० मिच्छ० णवुंस० तिण्हं कोधाणं णिय० तं तु छट्ठाणप० । छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० । एवं पण्णारसक० ।

§ २७५. णवुंस० उक्क० उदी० मिच्छ० णिय० तं तु छट्ठाणप० । सोलसक०–छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० ।

§ २७६. हस्सस्स उक्क० अणुभागमुदी० मिच्छ०–णवुंस०–रदि० णि० तं तु छट्ठाणपदिदं । सोलसक०–भय-दुगुंछ० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवं रदीए ।

---

§ २७३. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थान पतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २७४. अनन्तानुबन्धी क्रोधके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व नपुंसकवेद और तीन क्रोधोंका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पन्द्रह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २७५. नपुंसकवेदके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २७६. हास्यके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और रतिका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है और अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषाय और भय-जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना

**एवमरदि-सोगाणं ।**

**§ २७७. भय० उक्क० उदीरेंतो० मिच्छ०–णवुंस० णि० तं तु छट्ठाणप० । सोलसक०–पंचणोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० । एवं दुगुंछाए ।**

**§ २७८. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो । देवेसु तिरिक्खोघं । णवरि णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद० उक्क० अणुभागमुदी० मिच्छ० णि० तं तु छट्ठाणप० । सोलसक०–चदुणोक० सिया० छट्ठाणप० । हस्स-रदि० सिया० अणंतगुणहीणं ।**

**§ २७९. हस्सस्स उक्क० उदी० मिच्छ०–पुरिसवे०-रदि० णि० तं तु छट्ठाणप० । सोलसक०–भय-दुगुंछ० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवं रदीए ।**

**§ २८०. भवण०–वाणवें०–जोदिसि०–सोहम्मीसाण० तिरिक्खोघं । णवरि**

---

चाहिए । तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २७७. भयके उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक जीव मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है । जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । सोलह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २७८. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है । देवोंमें सामान्य तिर्यञ्चों-के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है । स्त्रीवेदके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है । जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । सोलह कषाय और चार नोकषायों-का कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । हास्य और रतिका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा अनन्तगुणहीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है ।

§ २७९. हास्यके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, पुरुषवेद और रतिका नियमसे उदीरक है । जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । सोलह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २८०. भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी तथा सौधर्म-ऐशान कल्पके देवोंमें सामान्य तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है । सनत्कुमार

**णवुंस० णत्थि। सणकुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति एवं चेव। णवरि पुरिसवेदो धुवो कायव्वो।**

**§ २८१. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० उक्क० उदी० बारसक०-छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप०। पुरिसवेद० णि० तं तु छट्ठाणप०। एवं पुरिसवेद०।**

**§ २८२. अपच्चक्खाणकोध० उक्क० उदी० सम्म० दोण्हं कोधाणं पुरिसवे० णि० तं तु छट्ठाणपदिदं०। छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप०। एवमेक्कारसक०।**

**§ २८३. हस्सस्स उक्क० उदी० सम्म०-पुरिसवेद-रदि० णि० तं तु छट्ठाणप०। बारसक०-भय-दुगुंछ० सिया तं तु छट्ठाणप०। एवं रदीए। एवमरदि-सोगाणं।**

**§ २८४. भय० उक्क० उदीरेंतो सम्म०-पुरिसवे० णि० तं तु छट्ठाणप०।**

---

कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि इनमें पुरुषवेद ध्रुव करना चाहिए।

§ २८१. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। पुरुषवेदका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पुरुषवेदको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २८२. अप्रत्याख्यान क्रोधके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व, दो क्रोध और पुरुषवेदका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार ग्यारह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २८३. हास्यके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व, पुरुषवेद और रतिका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्टअनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। बारह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २८४. भयके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और पुरुषवेदका

**बारसक०-पंचणोक० सिया० तं तु छट्ठाणपदिदा० । एवं दुगुंछा० । एवं जाव० ।**

**§ २८५. जह० पयदं । दुविहो णि०-ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ० जह० उदीरेंतो अणंताणु०४ सिया० तं तु छट्ठाणप० । बारसक०-णवणोक० सिया० अणंतगुणब्भहिया० ।**

**§ २८६. सम्म० जह० उदीरेंतो बारसक०-णवणोक० सिया० अणंतगुणब्भ० । एवं सम्मामि० ।**

**§ २८७. अणंताणु०कोध० जह० उदीरेंतो० णि० तं तु छट्ठाणप० । तिण्हं कोधाणं णिय० अणंतगुणब्भ० । णवणोक० सिया अणंतगुणब्भ० । एवं तिण्हं कसायाणं ।**

---

नियमसे उदीरक है । जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । बारह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है या अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा छह स्थानपतित अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ २८५ जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अनन्तानुबन्धी चतुष्कका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभाग उदीरक है । यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । बारह कषाय और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है ।

§ २८६. सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव बारह कषाय और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २८७. अनन्तानुबन्धी क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है । जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है । यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । तीन क्रोधोंका नियमसे उदीरक है । जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । इसी प्रकार तीन क्रोधोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

---

१. आ०प्रतौ अणंतगुणहीणं इति पाठः ।

**§ २८८. अपच्चक्खाणकोध० जह० उदी० सम्म०-णवणोक० सिया० अणंतगुणब्भ० । दोण्हं कोधाणं णि० अणंतगुणब्भ० । एवं तिण्हं कसायाणं ।**

**§ २८९. पच्चक्खाणकोध० जह० उदी० सम्म०-णवणोक० सिया० अणंतगुणब्भहिया० । कोधसंजल० णिय० अणंतगुणब्भ० । एवं तिण्हं क० ।**

**§ २९०. कोधसंजलण० जह० अणुभागमुदी० सेमाणमणुदीरगो। एवं तिण्हं संजलणाणं ।**

**§ २९१. इत्थिवेद० जह० उदी० चदुसंजल० सिया० अणंतगुणब्भ० । एवं दोण्हं वेदाणं ।**

**§ २९२. हस्सस्स जह० उदी० इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुंसवे०-चदुसंजल० सिया० अणंतगुणब्भ० । रदि० णिय० तं तु छट्ठाणप० । भय-दुगुंछ० सिया० तं तु**

---

§ २८८. अप्रत्याख्यान क्रोधके जघन्य अनुभागको उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। दो क्रोधोंका नियमसे उदीरक है, जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार अप्रत्याख्यान मानादि तीनको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २८९. प्रत्याख्यान क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। क्रोधसंज्वलनका नियमसे उदीरक है जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार प्रत्याख्यान मानादि तीन कपायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २९०. क्रोधसंज्वलनके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष सब प्रकृतियोंका अनुदीरक है। इसी प्रकार तीनों संज्वलनोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २९१. स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चार सञ्ज्वलनका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार दो वेदोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २९२. हास्यके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद और चार संज्वलनका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। रतिका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

छट्ठाणप० । एवं रदिए। एवमरदि-सोगाणं ।

§ २९३. भय० जह० उदी० पंचणोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० । चदुसंजल०-तिण्णिवे० सिया अणंतगुणब्भ० । एवं दुगुंछा० ।

§ २९४. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० जह० उदी० सोलसक०-छण्णोक० सिया अणंतगुणब्भ० । णवुंस० णिय० अणंतगुणब्भ० ।

§ २९५. सम्म० जह० उदी० बारसक०-छण्णोक० सिया अणंतगुणब्भ० । णवुंस० णिय० अणंतगुणब्भ० । एवं सम्मामि० ।

§ २९६. अणंताणु०कोध० जह० उदी० तिण्हं कोधाणं णवुंस० णिय० अणंतगुणब्भ० । छण्णोक० सिया अणंतगुणब्भ० । एवं तिण्हं क० ।

§ २९७. अपच्चक्खाणकोध० जह० उदी० सम्म० सिया० अणंतगुणब्भ० ।

---

तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २९३. भयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। चार संज्वलन और तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २९४. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २९५. सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २९६. अनन्तानुबन्धी क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला तीन क्रोध और नपसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान आदि तीन कषायों को मुख्यकर सन्निकर्ष जान लेना चाहिए।

§ २९७. अप्रत्याख्यान क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा

**दोण्हं कोधाणं णवुंस० णिय० तं तु छट्ठाणप० । छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवमेक्कारसक० ।**

**§ २९८. णवुंस० जह० उदी० सम्म० सिया अणंतगुणब्भ० । बारसक०– छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० ।**

**§ २९९. हस्सस्स जह० उदी० सम्म० णवुंस०भंगो । बारसक०–भय-दुगुंछ० सिया तं तु छट्ठाणप० । णवुंस०–रदि० णिय० तं तु छट्ठाणप० । एवं रदीए । एवमरदि-सोगाणं ।**

**§ ३००. भय० जह० उदी० सम्म०–णवुंस० हस्सभंगो । बारसक०–पंचणोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवं दुगुंछाए । एवं पढमाए । विदियादि सत्तमा त्ति एवं**

---

अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। दो क्रोध और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभाग-की उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार ग्यारह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २९८. नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक 'अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ २९९. हास्यके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके सम्यक्त्वका भंग नपुंसकवेद के जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके समान है। वह बारह कषाय, भय और जुगुप्सा-का कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। नपुंसकवेद और रतिका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदी-रक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३००. भयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके सम्यक्त्व और नपुंसकवेदका भंग हास्यके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके समान है। वह बारह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्यकी अनुभागका

चेव । णवरि बारसक०–सत्तणोक० जह० उदी० सम्म० सिया तं तु छट्ठाणप० ।

§ ३०१. सम्म० जह० उदी० बारसक०–छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । णवुंस० णिय० तं तु छट्ठाणप० ।

§ ३०२. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सम्मामि०–अट्ठक० ओघं । सम्म० जह० उदी० बारसक०–छण्णोक० सिया अणंतगुणब्भ० । पुरिस० णिय० अणंतगुणब्भ० ।

§ ३०३. पच्चक्खाणकोध० जह० उदी० सम्म० सिया अणंतगुणब्भ० । कोधसंजल० णिय० तं तु छट्ठाणप० । णवणोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवं सत्तक० ।

---

उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरीसे लेकर सातवीं तक इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें बारह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ ३०१. सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ ३०२. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और आठ कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्षका भंग ओघके समान है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। पुरुषवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

§ ३०३. प्रत्याख्यान क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। क्रोधसंज्वलनका नियमसे उदीरक है जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार सात कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

**§ ३०४. इत्थिवेद० जह० अणुभागुदी० सम्म० सिया अणंतगुणब्भ०। अट्ठक०[1]-छण्णोक०सिया तं तु[2] छट्ठाणप०। एवं दोण्हं वेदाणं।**

**§ ३०५. हस्सस्स जह० उदी० सम्म० इत्थिवेदभंगो। अट्ठक०-तिण्णिवेद-भय-दुगुंछा० सिया तं तु छट्ठाणप०। रदि० णि० तं तु छट्ठाणप०। एवं रदीए। एवमरदि-सोगाणं।**

**§ ३०६. भय० जह० उदीरेंतो सम्म० इत्थिवेदभंगो। अट्ठक०-अट्ठणोक० सिया तं तु छट्ठाणप०। एवं दुगुंछाए।**

**§ ३०७. एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि पज्ज० इत्थिवे० णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। इत्थिवेदो धुवो कायव्वो। अट्ठक०-सत्तणोक० जह०**

§ ३०४. स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। आठ कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार दो वेदोंको मुख्यकर सनिकर्ष जानना चाहिए।

§ ३०५. हास्यके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके सम्यक्त्वका भंग स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके समान है। आठ कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। रतिका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३०६. भयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके सम्यक्त्वका भंग स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवालेके समान है। आठ कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३०७. इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है। योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नही है। इनमें स्त्रीवेद ध्रुव

१. ता०प्रतौ अणतगुणब्भ०। कोधसंजलण० णिय० तं तु छट्ठा०। अट्ठक० इति पाठः।

२. आ०प्रतौ छण्णोक० त तु इति पाठः।

उदी० सम्म० सिया० तं तु छट्ठाणप० ।

§ ३०८. सम्म० जह० उदी० अट्ठक०-छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप० । इत्थिवे० णि० तं तु छट्ठाणप० ।

§ ३०९. पंचिं०तिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ० जह० उदी० सोलसक०-छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । णवुंस० णि० तं तु छट्ठाणप० ।

§ ३१०. अणंताणुकोध० जह० उदी० मिच्छ० तिण्हं कोधाणं णवुंस० णि० तं तु छट्ठाणप० । छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवं पण्णारसक० ।

---

करना चाहिए । तथा इनमें आठ कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है । यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है ।

§ ३०८. सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला उक्त जीव आठ कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। स्त्रीवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है ।

§ ३०९. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा षट् स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है।

§ ३१०. अनन्तानुबन्धी क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव मिथ्यात्व, तीन क्रोध और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार पन्द्रह कषायोंकी मुख्यतासे सन्निकर्ष कहना चाहिए ।

**§ ३११. णवुंस० जह० उदी० मिच्छ० णिय० तं तु छट्ठाण०। सोलसक०-छण्णोक० सिया० तं तु छट्ठाणप०।**

**§ ३१२. हस्सस्स जह० अणुभा० उदी० मिच्छ०-णवुंस०-रदि० णिय० तं तु छट्ठाणप०। सोलसक०-भय-दुगुंछ० सिया० तं तु छट्ठाणप०। एवं रदिए। एवमरदि-सोग०।**

**§ ३१३. भय० जह० अणुभा० उदी० मिच्छ०-णवुंस० णि० तं तु छट्ठाणप०। सोलसक०-पंचणोक० सिया तं तु छट्ठाणप०। एवं दुगुंछाए।**

**§ ३१४. मणुसतिए ओघं। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। मणुसिणीसु इत्थिवेदो धुवो कायव्वो।**

---

§ ३११. नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागका उदीरक जीव मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है।

§ ३१२. हास्यके जघन्य अनुभागका उदीरक जीव मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और रतिका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। सोलह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचिन् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार रतिकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोककी मुख्यतासे सन्निनर्ष जानना चाहिए।

§ ३१३. भयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। सोलह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार जुगुप्साकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३१४. मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि मनुष्य पर्याप्तकों में स्त्रीवेद नहीं है तथा मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेद ध्रुव करना चाहिए।

**§ ३१५. देवेसु मिच्छ० जह० अणुभा० उदी० सोलसक०–अट्ठणोक० सिया अणंतगुणब्भ० । एवं सम्मामि० । णवरि अणंताणु०४ णत्थि ।**

**§ ३१६. सम्म० जह० अणुभा० उदी० बारसक०–छण्णोक० सिया अणंतगुणब्भ० । एवं पुरिसवे० । णवरि णिय० उदी० अणंतगुणब्भ० ।**

**§ ३१७. अणंताणु०कोध० जह० अणुभा० उदी० तिण्हं कोधाणं णिय० अणंतगुणब्भ० । अट्ठणोक० सिया अणंतगुणब्भ० । एवं तिण्हं कसायाणं ।**

**§ ३१८. अपच्चक्खाणकोह० जह० उदी० सम्म० सिया[1] अणंतगुणब्भ० । दोण्हं कोधाणं णिय० तं तु छट्ठाणप० । अट्ठणोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवमेक्कारसक० ।**

---

§ ३१५. देवोंमें मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव सोलह कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी उदीरणा नहीं होती।

§ ३१६. सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव बारह कषाय और छह नोकषायोका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वह नियमसे उदीरक है जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागका उदीरक है।

§ ३१७. अनन्तानुबन्धी क्रोधके जघन्य अनुभागका उदीरक जीव तीन क्रोधोंका नियमसे उदीरक है। जो जघन्यकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इसी प्रकार तीन कषायोकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३१८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोधके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव सम्यकक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य-की अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। दो क्रोधोंका नियम-से उदीरक है जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है, या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार ग्यारह कषायोंकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए।

---

१. ता॰प्रतौ उदी० सिया इति पाठः।

**§ ३१९. इत्थिवे० जह० उदी सम्म० सिया० अणंतगुणब्भ० । बारसक०-छण्णोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । एवं पुरिस० ।**

**§ ३२०. हस्सस्स जह० अणुभा० उदी० सम्म० इत्थिवेदभंगो । बारसक०-इत्थिवेद-पुरिसवेद-भय-दुगुंछ० सिया तं तु छट्ठाणप० । रदि० णिय० तं तु छट्ठाणप० । एवं रदीए । एवमरदि-सोगाणं ।**

**§ ३२१. भय० जह० उदी० बारसक-सत्तणोक० सिया तं तु छट्ठाणप० । सम्म० इत्थिवेदभंगो । एवं दुगुंछ० । एवं सोहम्मीसाण० । सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति एवं चेव । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । पुरिसवेदो धुवो कायव्वो ।**

**§ ३२२. भवण०-वाणवें०-जोदिसि० देवोघं । णवरि बारसक०-अट्ठणोक०**

---

§ ३१९. स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जीव सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्यको अपेक्षा अनन्तगुणे अधिक अजघन्य अनुभागका उदीरक है। बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३२०. हास्यके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाले जीवके सम्यक्त्वका भंग स्त्रीवेदके समान है। बारह कषाय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। रतिका नियमसे उदीरक है जो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। इसी प्रकार रतिकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोककी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ ३२१. भयके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और सात नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। सम्यक्त्व-का भंग स्त्रीवेदके समान है। इसी प्रकार जुगुप्साकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। इनमें पुरुषवेद ध्रुव करना चाहिए।

§ ३२२. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि बारह कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करने-वाला सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो

जह० उदी० सम्म० सिया० तं तु छट्ठाणप० । सम्म० जह० अणुभा० उदी० बारसक०-अट्ठणोक० सिया तं तु छट्ठाणप० ।

§ ३२३. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो । एवं जाव० ।

§ ३२४. भावाणु० सव्वत्थ ओदइओ भावो ।

*** अप्पाबहुअं ।**

§ ३२५. सुगममेदमहियारसंभालणसुत्तं । तं च दुविहमप्पाबहुअं—जहण्णमुक्कस्सं च । एत्थुक्कस्सए ताव पयदं । तस्स दुविहो णिद्देसो—ओघादेसभेदेण । तत्थोघपरूवणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

*** सव्वतिव्वाणुभागा मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा ।**

§ ३२६. सव्वेहिंतो तिव्वो अणुभागो जिस्से सा सव्वतिव्वाणुभागा सव्वतिव्वसत्तिसंजुत्ता त्ति वुत्तं होदि । का सा ? मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा । कुदो ? सव्वदव्वविसयसद्दहणगुणपडिबंधित्तादो ।

---

जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है। सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला बारह कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो जघन्य अनुभागका उदीरक है या अजघन्य अनुभागका उदीरक है। यदि अजघन्य अनुभागका उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा छह स्थानपतित अजघन्य अनुभागका उदीरक है।

§ ३२३. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३२४. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है।

*** अल्पबहुत्वका अधिकार है ।**

§ ३२५. अधिकारकी सम्हाल करनेवाला यह सूत्र सुगम है। वह अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। यहाँ सर्व प्रथम उत्कृष्टका प्रकरण है। ओघ और आदेशके भेदसे उसका निर्देश दो प्रकारका है। उनमेंसे ओघका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र प्रबन्ध है—

*** मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अणुभाग उदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है ।**

§ ३२६. सबसे तीव्र अनुभाग है जिसका वह सबसे तीव्र अनुभागवाली कहलाती है। सबसे तीव्र शक्तिसे संयुक्त है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

**शंका**—वह कौन है ?

**समाधान**—मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा, क्योंकि वह सर्व द्रव्यविषयक श्रद्धान गुणका प्रतिबन्ध करती है।

*** अणंताणुबंधीणमण्णदरा उक्कस्साणुभागुदीरणा तुल्ला अणंतगुणहीणा ।**

§ ३२७. कुदो ? मिच्छत्तुक्कस्साणुभागादो एदेसिमुक्कस्साणुभागस्स अणंतगुणहीणसरूवेणावट्ठाणदंसणादो । एत्थ अणंताणुबंधिमाणादीणमणुभागुदीरणा सत्थाणे समाणा त्ति जं भणिदं तण्ण घडदे । किं कारणं ? विसेसाहियसरूवेणेदेसिमणुभागसंतकम्मस्सावट्ठाणदंसणादो ? ण एस दोसो, विसेसाहियसंतकम्मादो विसेसहीणसंतकम्मादो च समाणपरिणामणिबंधणा उदीरणा सरिसी होदि त्ति अब्भुवगमादो । एसो अत्थो उवरि संजलणादिकसाएसु वि जोजेयव्वो ।

*** संजलणाणमण्णदरा उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।**

§ ३२८. कुदो ? दंसण-चारित्तपडिबंधिअणंताणुबंधीणमुक्कस्साणुभागुदीरणादो चारित्तमेत्तपडिबंधीणं संजलणाणमुक्कस्साणुभागुदीरणाए अणंतगुणहीणत्तं पडि विरोहाभावादो ।

*** पच्चक्खाणावरणीयाणमुक्कस्साणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणहीणा ।**

---

*** उससे अनन्तानुबन्धियोंकी अन्यतर उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा परस्पर समान होकर अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३२७. क्योंकि मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागसे इनका उत्कृष्ट अनुभाग अनन्तगुणे हीनरूपसे अवस्थित देखा जाता है ।

**शंका**—यहाँ पर अनन्तानुबन्धी मान आदिकी अनुभाग उदीरणा स्वस्थानमें समान है ऐसा जो कहा है वह घटित नहीं होता, क्योंकि इनके अनुभाग सत्कर्मका विशेष अधिकरूपसे अवस्थान देखा जाता है ?

**समाधान**—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि विशेष अधिक सत्कर्मसे और विशेष हीन सत्कर्मसे समान परिणामनिमित्तक उदीरणा सदृश होती है ऐसा स्वीकार किया है। यह अर्थ ऊपर संज्वलन कषाय आदिके विषयमें भी लगा लेना चाहिए ।

*** उससे संज्वलनोंकी अन्यतर उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३२८. क्योंकि दर्शन और चारित्रका प्रतिबन्ध करनेवाली अनन्तानुबन्धियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणासे मात्र चारित्रका प्रतिबन्ध करनेवाले संज्वलनोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणाके अनन्तगुणे हीन होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

*** उससे प्रत्याख्यानावरणीय कर्मोंकी अन्यतर उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३२९. कुदो ? जहाक्खादसंजमविरोहिसंजलणाणुभागं पेक्खियूण खयोवसमिय-संजमं पडिबंधिपच्चक्खाणकसायस्साणुभागस्साणंतगुणहीणत्तसिद्धीए णाइयत्तादो ।

*** अपच्चक्खाणावरणीयाणमुक्कस्साणुभागमुदीरणा अण्णदरा अणंत-गुणहीणा ।**

§ ३३०. किं कारणं ? सयलसंजमघादिपच्चक्खाणकसायाणुभागादो देससंजम-विरोहि-अपच्चक्खाणाणुभागस्साणंतगुणहीणसरूवेणावट्ठाणदंसणादो ।

*** णवुंसयवेदस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।**

§ ३३१. कुदो ? कसायाणुभागादो णोकसायाणुभागस्साणंतगुणहीणत्तसिद्धीए णाइयत्तादो ।

*** अरदीए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।**

§ ३३२. कुदो ? अरदिमेत्तकारणत्तादो । णवुंसयवेदाणुभागो पुण इट्टवागग्गि-समाणो त्ति ।

*** सोगस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।**

§ ३३३. कुदो ? अरदिपुरंगमत्तादो ।

*** भए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।**

---

§ ३२९. क्योंकि यथाख्यातसंयमके विरोधी संज्वलनोंके अनुभागको देखते हुए क्षायोप-शमिक संयमका प्रतिबन्ध करनेवाले प्रत्याख्यान कषायका अनुभाग अनन्तगुणा हीन सिद्ध होता है यह न्याय्य है ।

*** उससे अप्रत्याख्यानावरणीय कर्मोंकी अन्यतर उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३३०. क्योंकि सकल संयमका घात करनेवाले प्रत्याख्यान कषायके अनुभागसे देश-संयमके विरोधी अप्रत्याख्यान कषायके अनुभागका अनन्तगुणे हीनरूपसे अवस्थान देखा जाता है ।

*** उससे नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३३१. क्योंकि कषायोंके अनुभागसे नोकषायोंका अनुभाग अनन्तगुणा हीन सिद्ध होता है यह न्याय्य है ।

*** उससे अरतिकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३३२. क्योंकि वह अरतिमात्रकी कारण है, परन्तु नपुंसकवेदका अनुभाग इष्टपाककी अग्निके समान है ।

*** उससे शोककी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३३३. क्योंकि वह अरतिपूर्वक होती है ।

*** उससे भयकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।**

§ ३३४. कुदो ? सोगोदयस्सेव भयोदयस्स बहुकालपडिवद्धदुक्खुप्पायणसत्तीए अभावादो ।

* दुगुंछाए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३३५. कुदो ? भयोदएणेव दुगुंछोदएण मरणाणुवलंभादो ।

* इत्थिवेदस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३३६. कुदो ? पुव्विल्लं पेक्खिऊणेदस्स पसत्थभावोवलंभादो ।

* पुरिसवेदस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३३७. कुदो ? इत्थिवेदो कारिसग्गिसमाणो । पुरिसवेदो पुण पलालग्गिसमाणो । तेणाणंतगुणहीणो जादो ।

* रदीए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३३८. कुदो ? पुंवेदोदयस्सेव रदिकम्मोदयस्स संतावजणणसत्तीए अभावादो ।

* हस्से उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३३९. कुदो ? रदिपुरंगमत्तादो ।

* सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३४०. कुदो ? विट्ठाणियत्तादो ।

---

§ ३३४. क्योंकि जिस प्रकार शोकका उदय बहुत काल तक दुःखोत्पादनकी शक्तिसे युक्त है उस प्रकार भयके उदयमें बहुत कालसे प्रतिबद्ध दुःखके उत्पादनकी शक्तिका अभाव है।

* उससे जुगुप्साकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३३५. क्योंकि भयके उदयके समान जुगुप्साके उदयसे मरण नहीं पाया जाता है।

* उससे स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३३६. क्योंकि पूर्वके अनुभागको देखते हुए इसमें प्रशस्तभाव पाया जाता है।

* उससे पुरुषवेदकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३३७. क्योंकि स्त्रीवेद कंडेकी अग्निके समान है, परन्तु पुरुषवेद पलालकी अग्निके समान है । इसलिए यह उससे अनन्तगुणा हीन है ।

* उससे रतिकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३३८ क्योंकि पुरुषवेदके उदयके समान रतिकर्मके उदयमें सन्तापको उत्पन्न करनेकी शक्तिका अभाव है ।

* उससे हास्यकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३३९. क्योंकि यह रतिपूर्वक होती है ।

* उससे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३४०. क्योंकि यह द्विस्थानीयस्वरूप है ।

* सम्मत्ते उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा ।

§ ३४१. कुदो ? देसघादिविट्ठाणियसरूवत्तादो ।

एवमोघेण उक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं ।

३४२. संपहि आदेसेण सव्वगइमग्गणासु अप्पप्पणो उदीरिज्जमाणपयडीणमेवं चेव णेदव्वं, विसेसाभावादो । एवं जाव अणाहारि त्ति ।

* जहण्णाणुभागुदीरणा ।

३४३. एत्तो जहण्णाणुभागुदीरणा अप्पाबहुअविसेसिदा कायव्वा त्ति पयद-संभालणसुत्तमेदं । तदो जहण्णए पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघादेसभेदेण । तत्थोघपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* सव्वमंदाणुभागा लोभसंजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा ।

३४४. कुदो ? सुहुमकिट्टीए अंतोमुहुत्तमणुसमयोवट्टणाए सुट्ठु जहण्णभावं पत्ताए पडिलद्धजहण्णभावत्तादो ।

* मायासंजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा अणंतगुणा ।

३४५. कुदो ? बादरकिट्टिसरूवेण चरिमसमयमायावेदगम्मि पडिलद्धजहण्ण-भावत्तादो ।

---

* उससे सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

§ ३४१. क्योंकि यह देशघाति द्विस्थानीयस्वरूप है ।

इस प्रकार ओघसे उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

§ ३४२ अब आदेशसे सब गति मार्गणाओंमें अपनी-अपनी उदीर्यमाण प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व इसी प्रकार जानना चाहिए, क्योंकि ओघप्ररूपणासे इसमें कोई विशेषता नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

* जघन्य अनुभाग उदीरणाका प्रकरण है ।

§ ३४३. आगे अल्पबहुत्वसे विशेषित जघन्य अनुभाग उदीरणाका कथन करना चाहिए इस प्रकार प्रकृतकी सम्हाल करनेवाला यह सूत्र है। इसलिए जघन्यका प्रकरण है। ओघ और आदेशके भेदसे निर्देश दो प्रकारका है। उनमेंसे ओघका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* लोभसंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा सबसे स्तोक है ।

§ ३४४. क्योंकि अन्तर्मुहूर्तकाल तक प्रति समय अपवर्तनाके द्वारा अच्छी तरह जघन्य-भावको प्राप्त हुई सूक्ष्मकृष्टिका जघन्यपना पाया जाता है ।

* उससे मायासंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३४५. क्योंकि जो जीव ( क्षपकश्रेणिमें ) माया कषायका वेदन कर रहा है उसके अन्तिम समयमें बादरकृष्टिरूपसे जघन्यपना पाया जाता है ।

*** माणसंजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

३४६. कुदो ? पुव्विल्लसामित्तविसयादो अंतोमुहुत्तमोसरिदूण द्विदचरिमसमय-माणवेदगम्मि पुव्विल्लकिट्टिअणुभागादो अणंतगुणमाणतदियसंगहकिट्टिअणुभागं घेत्तूण जहण्णसामित्तविहाणादो ।

*** कोहसंजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

३४७. एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

*** सम्मत्ते जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

३४८. किं कारणं ? किट्टिअणुभागादो अणंतगुणफद्दयगदाणुभागमेयट्ठाणियं घेत्तूण समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयम्मि जहण्णसामित्तपडिलंभादो ।

*** पुरिसवेदे जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

३४९. तं जहा—चरिमसमयसवेदएण बद्धपुरिसवेदणवकबंधाणुभागो समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणीयस्स सम्मत्तजहण्णाणुभागसंकमादो अणंतगुणो होदि त्ति संकमे भणिदं । एदम्हादो पुण चरिमसमयणवकबंधादो तत्थेव पुरिसवेदस्स जहण्णाणुभागोदयो अणंतगुणो । पुणो एदम्हादो वि उदयादो समयाहियावलियचरिमसमय-सवेदस्स पुरिसवेदजहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा । कुदो एदं णव्वदे ? खवगसेढीए

---

*** उससे मानसंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ३४६. क्योंकि पिछले स्वामित्वके विषयसे अन्तर्मुहूर्त पीछे जाकर जो मानका वेदन करनेवाला जीव मानवेदनकालके अन्तिम समयमें स्थित है उसके पूर्वके कृष्टिगत अनुभागसे अनन्तगुणे मानसंज्वलनके तृतीय संग्रहकृष्टिगत अनुभागको ग्रहण कर जघन्य स्वामित्वका विधान किया गया है ।

*** उससे क्रोधसंज्वलनकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ३४७. यहाँ पर भी कारणका कथन पूर्वके समान करना चाहिए ।

*** उससे सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ३४८. क्योंकि जिस जीवके दर्शनमोहनीयकी क्षपणा होनेमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष है उसके पूर्वोक्त कृष्टिगत अनुभागसे स्पर्धकगत एकस्थानीय अनुभाग अनन्तगुणा पाया जाता है जो प्रकृतमें जघन्य स्वामित्वरूपसे स्वीकार किया गया है ।

*** उससे पुरुषवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ३४९. यथा—सवेदक जीवके द्वारा सवेदभागके अन्तिम समयमें बन्धको प्राप्त हुए पुरुषवेदके नवकबन्धका अनुभाग एक समय अधिक एक आवलि कालके शेष रहनेपर दर्शन-मोहनीयकी क्षपणा करनेवाले जीवके सम्यक्त्वके जघन्य अनुभागके संक्रमसे अनन्तगुणा होता है ऐसा संक्रममें कहा है । पुनः इस अन्तिम समयके नवकबन्धसे वहीं पर पुरुषवेदके जघन्य अनुभागका उदय अनन्तगुणा है । पुनः इस उदयसे भी समयाधिक एक आवलिके उदीरणाविषयक अन्तिम समयमें स्थित सवेद जीवके पुरुषवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

बंधोदयाणमुवरिमभणिस्समाणअप्पाबहुअसुत्तादो। तत्थ जदि सम्मत्तजहण्णाणुभागुदीरणादो पुरिसवेदचरिमसमयजहण्णबंधस्स वि अणंतगुणत्तसंभवो तो तत्तो अणंतगुणपुरिसवेदजहण्णाणुभागुदीरणा णिच्छयेणाणंतगुणा होदि त्ति णत्थि एत्थ संदेहो।

* इत्थिवेदे जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा।

३५०. किं कारणं ? पुरिसवेदजहण्णसामित्तविसयादो हेट्ठा अंतोमुहुत्तमोदरियूण समयाहियावलियचरिमसमयइत्थिवेदखवगम्मि जहण्णसामित्तपडिलंभादो।

* णवुंसयवेदे जहण्णाणुभागउदीरणा अणंतगुणा।

§ ३५१. जइ वि दोण्हमेदेसिं सामित्तविसयो समाणो एगट्ठाणिया च, दोण्हमणुभागुदीरणा पडिसमयमणंतगुणहाणीए पडिलद्धजहण्णभावा तो वि पुव्विल्लादो एदस्स पयडिमाहप्पेणाणंतगुणत्तमविरुद्धं दट्ठव्वं।

* हस्से जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा।

§ ३५२. किं कारणं ? अणियट्टिपरिणामादो अणंतगुणहीणचरिमसमयापुव्वकरणविसोहीए देसघादिविट्ठाणियसरूवेण हस्साणुभागुदीरणाए जहण्णभावोवलंभादो।

* रदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा।

---

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्षपकश्रेणिमें बन्ध और उदयके आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है। वहाँ यदि सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणासे पुरुषवेदके अन्तिम समयवर्ती जघन्य बन्धका भी अनन्तगुणापना सम्भव है तो उससे अनन्तगुणे पुरुषवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा निश्चयसे अनन्तगुणी होती है इसमें सन्देह नहीं है।

* उससे स्त्रीवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है।

§ ३५०. क्योंकि पुरुषवेदके जघन्य स्वामित्वके विषयसे नीचे अन्तर्मुहूर्त उतर कर एक समय अधिक एक आवलिके अन्तिम समयमें स्थित स्त्री वेद क्षपकके जघन्य स्वामित्व उपलब्ध होता है।

* उससे नपुंसकवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है।

§ ३५१. यद्यपि इन दोनोंका स्वामित्वका विषय समान है और इन दोनोंकी एकस्थानीय अनुभाग उदीरणा प्रति समय अनन्तगुणी हानिद्वारा जघन्यभावको प्राप्त हुई है तो भी पूर्वोक्त प्रकृतिसे इसका प्रकृतिके माहात्म्यवश अनन्तगुणापना अविरुद्ध जानना चाहिए।

* उससे हास्यकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है।

§ ३५२. क्योंकि अनिवृत्तिपरिणामसे अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरणकी अनन्तगुणी हीन विशुद्धिसे होनेवाली हास्यकी अनुभाग उदीरणाका देशघाति द्विस्थानीयरूपसे जघन्यपना उपलब्ध होता है।

* उससे रतिकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है।

* दुगुंछाए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* भये जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* सोगस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* अरदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

§ ३५३. एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि, पुव्वं परूविदकारणत्तादो ।

* पच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।

§ ३५४. तं जहा—छण्णोकसायाणमणुभागुदीरणा अपुव्वकरणपरिणामेहिं बहुअं घादं पावेदूण चरिमसमयापुव्वकरणविसोहीए देसघादिसरूवेण जहण्णभावं पत्ता । पच्चक्खाणावरणीयाणं पुण अपुव्वकरणविसोहीदो अणंतगुणहीणसंजदासंजदचरिमविसोहीए जहण्णसामित्तं जादं । सव्वघादिसरूवा च एदेसिं जहण्णाणुभागुदीरणा तदो अणंतगुणा जादा ।

* अपच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।

§ ३५५. कुदो ? संजमाहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिविसोहीए पुव्विल्लविसोहीदो अणंतगुणहीणसरूवाए पत्तजहण्णभावत्तादो ।

* सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

---

* उससे जुगुप्साकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे भयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे शोककी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे अरतिकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३५३. ये सूत्र सुगम है, क्योंकि पहले कारणका निर्देश कर आये हैं ।

* उससे प्रत्याख्यानावरणकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३५४. यथा—छह नोकषायोंकी अनुभाग उदीरणा अपूर्वकरणसम्बन्धी परिणामोंके द्वारा बहुत घातको प्राप्त होकर अपूर्वकरणकी अन्तिम समयवर्ती विशुद्धि द्वारा देशघातिरूपसे जघन्यपनेको प्राप्त हुई है । किन्तु प्रत्याख्यानावरणीय कर्मोंका तो अपूर्वकरणकी विशुद्धिसे अनन्तगुणी हीन संयतासंयतकी अन्तिम विशुद्धिसे जघन्य स्वामित्व प्राप्त हुआ है, इसलिए इनकी सर्वघातिस्वरूप जघन्य अनुभाग उदीरणा छह नोकषायोंकी जघन्य अनुभाग उदीरणासे अनन्तगुणी प्राप्त होती है ।

* उससे अप्रत्याख्यानावरणकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३५५. क्योंकि पूर्वकी विशुद्धिसे संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टिकी विशुद्धिद्वारा इन प्रकृतियोंका जघन्यपना प्राप्त होता है ।

* उससे सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अणुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३५६. कुदो ? सव्वघादिविट्ठाणियत्ताविसेसे वि पुव्विल्लादो एदस्स विसोहिपाहम्मेणाणंतगुणत्तसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो ।

*** अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।**

§ ३५७. कुदो ? सव्वविसुद्धसंजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिम्मि पत्तजहण्णभावत्तादो ।

*** मिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

§ ३५८. किं कारणं ? उहयत्थ सामित्तविसेसाभावे[1] वि पयडिविसेसेणेवाणंताणुबंधीणमणुभागादो मिच्छत्ताणुभागस्स सव्वकालमणंतगुणाहियसरूवेणावट्ठाणदंसणादो ।

*** एवमोघजहण्णओ समत्तो ।**

§ ३५९. सुगममेदं पयदत्थोवसंहारवक्कं । संपहि आदेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तपबंधमाह—

*** णिरयगदीए सव्वमंदाणुभागा सम्मत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा ।**

§ ३६०. कुदो ? एगट्ठाणियसरूवत्तादो ।

*** हस्सस्स जहण्णाणुभागउदीरणा अणंतगुणा ।**

---

§ ३५६. क्योंकि अप्रत्याख्यनावरणीय और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणामें सर्वघाति द्विस्थानीयपने की अपेक्षा यद्यपि कोई विशेषता नहीं है तो भी पूर्वकी अपेक्षा विशुद्धिके प्राधान्यवश इसके अनन्तगुणेपनेकी सिद्धि निर्बाधरूपसे पाई जाती है ।

*** उससे अनन्तानुबन्धियोंकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ३५७. क्योंकि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टिके इसका जघन्यपना प्राप्त होता है ।

*** उससे मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ३५८. क्योंकि उभयत्र स्वामित्व विशेषका अभाव होने पर भी प्रकृतिविशेषके कारण ही अनन्तानुबन्धियोंके अनुभागसे मिथ्यात्वका अनुभाग सर्वकाल अनन्तगुणे अधिकरूपसे अवस्थित देखा जाता है ।

*** इस प्रकार ओघसे जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।**

§ ३५९. प्रकृत अर्थका उपसंहार करनेवाला यह सूत्रवचन सुगम है । अब आदेशका कथन करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध कहते हैं—

*** नरकगतिमें सम्यक्त्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा सबसे अधिक मन्द अनुभागवाली है ।**

§ ३६०. क्योंकि वह एक स्थानीयस्वरूप होती है ।

*** उससे हास्यकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

१. आ०प्रतौ उहयत्थ विसेसाभावे इति पाठः ।

§ ३६१. कुदो ? देसघादिविट्ठाणियसरूवत्तादो ।

* रदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* दुगुंछाए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* भयस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* सोगस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

* अरदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

§ ३६२. एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि, बहुसो परूविदकारणत्तादो ।

* णवुंसयवेदे जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।

§ ३६३. एत्थ वि कारणोवण्णासो सुगमो, असइं परूविदत्तादो ।

* संजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।

§ ३६४. कुदो ? देसघादिविट्ठाणियत्ताविसेसे सामित्तविसयभेदाभावे च कसायाणुभागमाहप्पेण पुव्विल्लादो एदिस्से अणंतगुणत्तसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो ।

* अपच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।

§ ३६५. किं कारणं ? सामित्तभेदाभावे वि सव्वघादिमाहप्पेण पुव्विल्लादो एदिस्से तहाभावोवलद्धीदो ।

---

§ ३६१. क्योंकि वह देशघाति द्विस्थानीयस्वरूप है ।

* उससे रतिकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे जुगुप्साकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे भयकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे शोककी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

* उससे अरतिकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६२. ये सूत्र सुगम हैं, क्योंकि इनके कारणोंका बहुतबार प्ररूपण किया है ।

* उससे नपुंसकवेदकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६३. यहाँ पर भी कारणका उपन्यास सुगम है, क्योंकि उसका कथन अनेक बार कर आये हैं ।

* उससे संज्वलनोंकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६४. क्योंकि देशघाति द्विस्थानीयपनेकी अपेक्षा विशेषता न होनेपर और स्वामित्वकी अपेक्षा विषयमें भेदका अभाव होने पर कषायोंके अनुभागके माहात्म्यवश पूर्वकी अपेक्षा इसके अनन्तगुणेपनेकी सिद्धि निर्बाधरूपसे पाई जाती है ।

* उससे अप्रत्याख्यानावरण कर्मोंकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६५. क्योंकि स्वामित्वविषयक भेदका अभाव होनेपर भी सर्वघातिपनेके माहात्म्यवश पूर्वकी अपेक्षा इसकी अनन्तगुणे अनुभाग उदीरणारूपसे उपलब्धि होती है ।

*** पच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागउदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।**

§ ३६६. कुदो ? दोण्हमेदेसिं सामित्तभेदाभावे वि देस-सयलसंजमपडिबंधित्त-मस्सियूण तहाभावसिद्धीए णिप्पडिबंधमुवलंभादो ।

*** सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

§ ३६७. कुदो ? सव्वघादिविट्ठाणियत्ताविसेसे वि सम्माइट्ठिविसोहीदो सम्मा-मिच्छाइट्ठिविसोहीए अणंतगुणहीणत्तमस्सियूण तहाभावोवलंभादो ।

*** अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागउदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा ।**

§ ३६८. कुदो ? सम्मामिच्छाइट्ठिविसोहीदो अणंतगुणहीणमिच्छाइट्ठिविसोहीए जहण्णसामित्तपडिलंभादो ।

*** मिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

§ ३६९. सुगममेदं । एवं णिरयोघो समत्तो ।

§ ३७०. एवं पढमाए । विदियादि सत्तमि त्ति एवं चेव, विसेसाभावादो । तिरिक्खेसु पंचिंदियतिरिक्खतिए एसो चेव जहण्णप्पाबहुआलावो कायव्वो । णवरि अप्पप्पणो उदीरणापयडीओ जाणियव्वाओ । अण्णं च अपच्चक्खाणादो हेट्ठा

---

* उससे प्रत्याख्यानावरण कर्मोंकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्त-गुणी है ।

§ ३६६. क्योंकि इन दोनोंके स्वामित्वमें भेद नहीं होनेपर भी ये क्रमसे देशसंयम और सकलसंयमका प्रतिबन्ध करते हैं, इसलिए इनके उक्त प्रकारसे अल्पबहुत्वकी सिद्धि निःप्रति-वन्धरूपसे पाई जाती है ।

* उससे सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६७. क्योंकि सर्वघाति द्विस्थानीयपनेकी अपेक्षा विशेषता न होनेपर भी सम्यग्दृष्टि-की विशुद्धिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिकी विशुद्धिके अनन्तगुणे हीनपनेका आलम्बन लेकर प्रत्या-ख्यानावरणकी अन्यतर प्रकृतिकी जघन्य अनुभाग उदीरणासे सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनु-भाग उदीरणा अनन्तगुणी उपलब्ध होती है ।

* उससे अनन्तानुबन्धियोंकी अन्यतर जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६८. क्योंकि सम्यग्मिथ्यादृष्टिकी विशुद्धिसे अनन्तगुणी हीन मिथ्यादृष्टिकी विशुद्धि-द्वारा इसका जघन्य स्वमित्व उपलब्ध होता है ।

* उससे मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ ३६९. यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार नरकगतिकी अपेक्षा ओघ अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

§ ३७०. इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक इसी प्रकार अल्पबहुत्व है, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है । तिर्यञ्चोंमें और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें यही जघन्य अल्पबहुत्व आलाप करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी उदीरणा प्रकृतियाँ जाननी चाहिए। अन्य विशेषता यह है कि अप्रत्या-

**पच्चक्खाणजहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा होदूण णिवददि, संजदासंजदविसोहि-पाहम्मादो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त–मणुसअपज्जत्तएसु णारयभंगो। णवरि सम्मत्त०–सम्मामि० णत्थि। मणुसतिये ओघभंगो। णवरि वेदविसेसो जाणियव्वो।**

**§ ३७१. संपहि देवगदीए वि एसो चेव णिरयोघप्पाबहुआलावो किं चि विसेसाणुविद्धो अणुगंतव्वो त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणइ—**

*** एवं देवगदीए वि।**

**§ ३७२. सुगममेदमप्पणासुत्तं, विसेसाभावणिबंधणत्तादो। णवरि देवोघप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धि त्ति अप्पप्पणो पयडीओ जाणियव्वाओ। एवं जाव अणाहारि त्ति।**

**एवमप्पाबहुए समत्ते उत्तरपयडिअणुभागउदीरणाए**
**चउवीसमणियोगद्दाराणि समत्ताणि।**

**§ ३७३. संपहि एत्थ भुजगारादिपरूवणा पत्तावसर त्ति तप्परूवणट्ठमुवरिम-सुत्तमाह—**

*** भुजगार-उदीरणा उवरिमगाहाए परूविहिदि, पदणिक्खेवो वि तत्थेव, वड्ढी वि तत्थेव।**

---

ख्यानसे पहले संयतासंयत गुणस्थानमें प्राप्त होनेवाली विशुद्धिकी प्रधानतावश प्रत्याख्यानकी जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी हीन होकर निपतित होती है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें नारकियोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतियोंकी उदीरणा नहीं है। मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि वेदविशेष जान लेने चाहिए।

§ ३७१. अब देवगतिमें भी यही नारक ओघ अल्पबहुत्वालाप कुछ विशेषताको लिये हुए जान लेना चाहिए ऐसा कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** इसी प्रकार देवगतिमें भी जानना चाहिए।**

§ ३७२. यह अर्पणासूत्र सुगम है, क्योंकि नारक सामान्यकी अपेक्षा कहे गये अल्प-बहुत्वसे इस अल्पबहुत्वमें कारणसम्बन्धी अन्य कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता है कि सामान्य देवोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियाँ जान लेनी चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर उत्तरप्रकृति अनुभाग
उदीरणासम्बन्धी चौबीस अनुयोगद्वार समाप्त हुए।

§ ३७३. अब यहाँपर भुजगारादि प्ररूपणा अवसर प्राप्त है, इसलिए उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** भुजगार-अनुभाग उदीरणाकी उपरिम गाथा द्वारा प्ररूपणा करेंगे, पदनिक्षेप की भी वहीं पर प्ररूपणा करेंगे और वृद्धिकी भी वहीं पर प्ररूपणा करेंगे।**

---

१. आ०प्रतौ –तिरिक्खमणुस–

§ ३७४. एदेणाणुभागुदीरणाविसयभुजगारादिअणियोगद्दाराणमेत्थुद्देसे परूवणा-जोग्गाणं सुत्तणिबद्धत्तं परूविदं, उवरिमगाहासुत्तपडिबद्धत्तेण तेसिं परूवणावलंबणादो। का सा उवरिमगाहा णाम ? वुच्चदे—'बहुदरगं बहुदरगं से काले को णु थोवदरगं वा' त्ति एसा सा उवरिमगाहा। संपहि एदेण चुण्णिसुत्तावयवेण उवरिमगाहासुत्तावेक्खेण समप्पिदभुजगारादिअणियोगद्दाराणमुच्चारणाइरियोवदेसबलेण पयासणमिह कस्सामो। तं जहा—

§ ३७५. भुजगारउदीरणाए तत्थेमाणि तेरस अणियोगद्दाराणि--समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुए त्ति। समुक्कित्तणाए दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपय० अत्थि भुज०—अप्प—अवट्ठि—अवत्त०। आदेसेण णेरइय० मिच्छ—सम्म०—सम्मामि०—सोलसक०—छण्णोक० ओघं। णवुंस० ओघं। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं सव्वणिरय०।

§ ३७६. तिरिक्खेसु ओघं। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा। जोणिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०—मणुसअपज्ज० मिच्छ—णवुंस० ओघं। णवरि अवत्त० णत्थि। सोलसक०—छण्णोक० ओघं। मणुसतिये ओघं। णवरि वेदा जाणियव्वा।

---

§ ३७४. इस सूत्र द्वारा इस स्थानपर प्ररूपणा योग्य अनुभाग उदीरणाविषयक भुजगार आदि अनुयोगद्वार सूत्रनिबद्ध हैं यह प्रतिपादित किया है, क्योंकि उपरिम गाथासूत्रसे प्रतिबद्ध होनेके कारण उनकी प्ररूपणाका यहाँपर अवलम्बन लिया है। वह उपरिम गाथा कौनसी है ? कहते हैं—बहुदरगं बहुदरगं से काले को णु थोवदरगं वा।' यह वह उपरिम गाथा है। अब उपरिम गाथासूत्रकी अपेक्षा रखनेवाले चूर्णिसूत्रके अवयवरूप इस वचन द्वारा समर्पित भुजगारादि अनुयोगद्वारोंका उच्चारणाचार्यके उपदेशके बलसे यहाँपर प्रकाशन करेंगे। यथा—

§ ३७५. भुजगार अनुभाग उदीरणाका प्रकरण है। उसमें ये तेरह अनुयोगद्वार होते हैं—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक। समुत्कीर्तनाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंकी भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा है। आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग ओघके समान है। नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ ३७६. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें है। इतनी विशेषता है कि इनमें अपने-अपने वेद जान लेने चाहिए। योनिनियोंमें स्त्रीवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। सोलह कषायों और छह नोकषायोंका भंग ओघके समान है। मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि अपने-अपने वेद जान लेने चाहिए।

§ ३७७. देवाणमोघं । णवरि णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद-पुरिसवेद० अवत्त० णत्थि । एवं भवण०–वाणवें०–जोदिसि०–सोहम्मीसाण० । एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० ओघं । णवरि पुरिस० अवत्त० णत्थि । एवं जाव० ।

§ ३७८. सामित्ताणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ० अणंताणु०४ सव्वपदा कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठि० । सम्म० सव्वपदा कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठि० । सम्मामिच्छ० सव्वपदा कस्स ? अण्ण० सम्मामि० । बारसक०–णवणोक० सव्वपदा कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स वा मिच्छाइट्ठिस्स वा ।

§ ३७९. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–सत्तणोक० ओघं । णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि । एवं सव्वणिरय० । तिरिक्खेसु ओघं । णवरि तिण्णवेद० अवत्त० मिच्छाइट्ठि० । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि वेदा

---

§ ३७७. देवोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है । इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म-ऐशान कल्पके देवोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि इनमें पुरुषवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—आगे भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धि अनुयोगद्वारोंमें जहाँ भुजगारादि पदोंका उल्लेख करते समय मूलमें और उसके अनुवादमें 'अनुभाग उदीरणा' पदका निर्देश नहीं किया गया है वहाँ वह प्रकरणसे समझ लेना चाहिए ।

§ ३७८. स्वामित्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके सब पद किसके होते हैं ? अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होते हैं । सम्यक्त्वके सब पद किसके होते हैं ? अन्यतर सम्यग्दृष्टिके होते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद किसके होते हैं ? अन्यतर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होते है । बारह कषाय और नौ नोकषायोंके अनुभाग उदीरणासम्बन्धी सब पद किसके होते हैं ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि या मिथ्यादृष्टिके होते है ।

§ ३७९. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए । तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि तीन वेदोंका अवक्तव्य पद मिथ्यादृष्टिके होता है । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपने-अपने वेद जान लेने चाहिए । योनिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य

**जाणियव्वा । जोणिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज०-अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपय० सव्वपदा कस्स ? अण्णद० ।**

**§ ३८०. मणुसतिये ओघं । णवरि वेदा जाणियव्वा । मणुसिणी० इत्थिवेद० अवत्त० सम्माइट्ठि० । देवेसु ओघं । णवरि णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद-पुरिसवेद० अवत्त० णत्थि । एवं भवण०-वाणवें०-जोदिसि०-सोहम्मीसाणे त्ति । एवं सणक्कुमारादिणवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । एवं जाव० ।**

**§ ३८१. कालाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपय० भुज०-अप्प० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । अवत्त० जहण्णुक्क० एगस० । सव्वासु गदीसु अप्पप्पणो पयडीणं जाणि पदाणि तेसिमोघं । एवं जाव० ।**

---

अपर्याप्त और अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके अनुभाग उदीरणा-सम्बन्धी सब पद किसके होते हैं ? अन्यतरके होते हैं ।

§ ३८०. मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि अपने अपने वेद जान लेने चाहिए । मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद सम्यग्दृष्टियोंके होता है । देवोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अवक्तव्य उदीरणा अनुभाग नहीं है । इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म-ऐशान कल्पके देवोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ३८१. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर अनुभाग उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित अनुभागके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । अवक्तव्य अनुभागके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । सब गतियोंमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंके जो पद हैं उनका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—आगे वृद्धि अनुयोगद्वारमें सब प्रकृतियोंकी अनन्तगुणवृद्धि और अनन्त गुणहानिका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त बतलाया है । तथा अवस्थित पदका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट काल सात-आठ समय बतलाया है । तदनुसार यहाँ सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त तथा अवस्थित पदके उदीरकका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्टकाल संख्यात समय बन जानेसे वह उक्त कालप्रमाण कहा है । ओघसे सब प्रकृतियोंके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है यह स्पष्ट ही है । सब गतियोंमें जहाँ जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा हो वहाँ उन उन प्रकृतियोंके अपने-अपने पदोंका यह काल इसी प्रकार घटित हो जाता है, इसलिए उसे ओघके समान जाननेकी सूचना की है ।

§ ३८२. अंतराणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ० भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० बेछावट्ठिसागरो० सादिरेयाणि। अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। एवमणंताणु०४। णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० बेछावट्ठि० सागरोवमाणि सादिरेयाणि। अट्ठक० अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा० लोगा। भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगसमओ, अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। चदुसंजल०–भय–दुगुंछ० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगस०–अंतोमु०, उक्क० अंतोमु०। अवट्ठि० मिच्छत्तभंगो। इत्थिवेद–पुरिसवेद तिण्णिपदा० जह० एयस०, अवत्त० जह० अंतोमु०; उक्क० सव्वेसिमणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवुंस० भुज०–अप्प० जह० एयस०, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। अवत्त० इत्थिवेदभंगो। अवट्ठि० मिच्छत्तभंगो। हस्स-रदि० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठि० मिच्छत्तभंगो। अरदि-सोग० भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क०

§ ३८२. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपमप्रमाण है। अवस्थित पदके अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अवक्तव्य पदके अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके, प्रवक्तव्य उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपमप्रमाण है। आठ कषायोंके अवस्थित अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे दोका एक समय और और अन्तिमका अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। चार संज्वलन, भय और जुगुप्साके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे दोका एक समय और अन्तिमका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित उदीरकका भंग मिथ्यात्वके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके तीन पदरूप अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सब उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है। नपुंसकवेदके भुजगार और अल्पतर अनुभाग उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरोपम पृथक्त्वप्रमाण है। इसके अवक्तव्यका भंग स्त्रीवेदके समान है। अवस्थित भंग मिथ्यात्वके समान है। हास्य और रतिके भुजगार अल्पतर उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे दोका एक समय और अन्तिमका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम है। अवस्थित भंग मिथ्यात्वके समान है। अरति और शोकके भुजगार और अल्पतर उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। अवक्तव्य और अवस्थित

**छम्मासं । अवत्त०–अवट्ठि० हस्सभंगो । सम्म०–सम्मामि० भुज०–अप्प०–अवट्ठि० अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।**

पदका भंग हास्यके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य पदका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे तीनका एक समय और अन्तिमका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—यद्यपि मिथ्यादृष्टिका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपम कहा है, परन्तु जो मिथ्यादृष्टि जीव सम्यक्त्वको प्राप्त करता है उसके मिथ्यात्व छूटनेके अन्तिम अन्तर्मुहूर्त कालमें नियमसे मिथ्यात्वकी अल्पतर उदीरणा होती है और जो जीव सम्यक्त्वसे मिथ्यात्वमें आता है उसके मिथ्यात्वको प्राप्त करनेके प्रथम अन्तर्मुहूर्तमें नियमसे मिथ्यात्वकी भुजगार उदीरणा होती है। इस तथ्यको ध्यानमें रखकर यहाँ मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर पद के उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम कहा है। मिथ्यात्वका अवस्थित पद यह जीव अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण काल तक नहीं करता, इसलिए यहाँ मिथ्यात्वके इस पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। मिथ्यात्वमें दो बार आकर दो बार अवक्तव्य उदीरणा करनेके मध्य जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है इसलिए तो यहाँ इसके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। तथा जिस जीवने संसारका अर्ध पुद्गल परिवर्तन काल शेष रहनेपर सम्यक्त्व प्राप्त किया, पुनः अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यादृष्टि होकर उसने अवक्तव्य पद किया। पुनः अन्तमें जब संसारमें रहनेका अपने योग्य स्वल्पकाल शेष रह जाय तब पुनः सम्यक्त्वको प्राप्तकर अन्तर्मुहूर्तके बाद पुनः मिथ्यादृष्टि होकर उसने अवक्तव्य पद किया। इस प्रकार मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तन प्रमाण प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण कहा है। अनन्तानुबन्धी चतुष्कका अन्य सब भंग तो मिथ्यात्वके समान है। मात्र इसके अवक्तव्य पदके उदीरकके उत्कृष्ट अन्तरकालमें फरक है। बात है कि मिथ्यात्वका जो उत्कृष्ट अन्तरकाल है उसे अन्तर्मुहूर्त अधिक करनेपर अनन्तानुबन्धीचतुष्कके अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल प्राप्त होता है, क्योंकि तीसरे और चौथे गुणस्थानमें मिथ्यात्वका उदय-उदीरणा नहीं होती। यही कारण है कि यहाँपर इसके अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम कहा है। यहाँपर भी प्रारम्भमें और अन्तमें दो बार अवक्तव्य पद प्राप्तकर यह अन्तरकाल लाना चाहिए। संयमासंयम और संयमका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटि प्रमाण होनेसे यहाँ मध्यकी आठ कषायोंके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण कहा है। उपशम श्रेणिका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है, इसे ध्यानमें रखकर यहाँ चार संज्वलन, भय और जुगुप्साके भुजगार अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। स्त्रीवेदी और पुरुषवेदीके उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ स्त्रीवेद और पुरुषवेदके तीन पदोंके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल प्रमाण कहा है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके कालके बराबर है। नपुंसकवेदीका उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरोपम पृथक्त्वप्रमाण है, इसलिए यहाँ नपुंसकवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्तकाल प्रमाण कहा है। इसका अवक्तव्य पद पञ्चेन्द्रिय जीवके ही सम्भव है और ऐसे जीवका उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है, इसलिए इसके अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल स्त्रीवेदके समान कहा है। हास्य और रतिकी उदीरणा तथा उदय सातवें

§ ३८३. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–अणंताणु०४–हस्सरदि० तिण्णिपदा० जह० एयस०, अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। एवमरदि-सोग० णवरि भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। एवं बारसक०–भय-दुगुंछ०। णवरि अवत्त० जह० उक्क० अंतोमु०। एवं सत्तमाए। एवं पढमादि जाव छट्ठि त्ति। णवरि सगट्ठिदी देसूणा। हस्स-रदि-अरदि–सोग० बारसकसायभंगो।

§ ३८४. तिरिक्खेसु मिच्छ० ओघं। णवरि भुज०–अप्प० जह० एगस, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि। एवमणंताणु०४। णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि। अपच्चक्खाणचउक्क० सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–

---

नरकमें जीवन भर तथा वहाँ जानेके पूर्व और निकलनेके बाद अन्तर्मुहूर्तकाल तक न हो यह सम्भव है, इसलिए इनके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम कहा है। शतार-सहस्रार कल्पमें अधिकसे अधिक छह माह तक अरति और शोकका उदय-उदीरणा नहीं होती है, इसलिए इनके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना कहा है। शेष कथन सुगम है। यहाँ सर्वत्र प्रत्येक प्रकृतिके विवक्षित पदके उदीरकका अन्तरकाल लाते समय जहाँ जिस प्रकार बने उस प्रकार उस उस पदको अन्तरकालके प्रारम्भ होनेके पूर्व एक बार और अन्तरकालके समाप्त होनेपर एक बार कराकर अन्तरकाल लाना चाहिए। सर्वत्र सोलह कषायोंके अवक्तव्य पदके उदीरकका जो जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है सो विचार कर जान लेना चाहिए। तात्पर्य यह है कि चारों क्रोधोंका मरणसे तथा शेष कषायोंका व्याघात और मरणसे यद्यपि एक समय अन्तरकाल बन जाता है, पर इनके अवक्तव्य पदके दो बार प्राप्त होनेमें कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल लगनेसे इनके अवक्तव्य पदकर जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है। आगे गति मार्गणाके भेद प्रभेदोंमें भी इसी न्यायसे अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए।

§ ३८३. आदेश से नारकियों में मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धीचतुष्क, हास्य और रतिके तीन पदों के उदीरक का जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य पद के उदीरक का जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागर है। इसी प्रकार अरति और शोक की अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार और अल्पतर पद के उदीरक का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार बारह कषाय, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पद के उदीरक का जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवी में जानना चाहिए। पहली पृथिवी से लेकर छठी पृथिवी तक के नारकियों में इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इनमें हास्य, रति, अरति, शोक का भंग बारह कषायों के समान है।

§ ३८४. तिर्यञ्चों में मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके भुजगार और अल्पतर पद के उदीरक का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्क की अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्य पद के उदीरक का जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है

**पुरिसवेद० ओघं। अट्ठक०—छण्णोक० भुज०—अप्प०—अवत्त० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। अवट्ठि० ओघं। णवुंस० भुज०— अप्प० जह० एगस, उक्क० पुव्वकोडिपुध०। अवट्ठि०—अवत्त० ओघं।**

**§ ३८५. पंचिंदियतिरिक्खतिए मिच्छ० तिरिक्खोघं। णवरि अवट्ठि—अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। एवमणंताणु०४। णवरि अवत्त० तिरिक्खोघं। एवं बारसक०—छण्णोक०। णवरि भुज०—अप्प०—अवत्त० तिरिक्खोघं। सम्म०—सम्मामि० भुज०—अप्प०—अवट्ठि०—अवत्त० जह० एयस० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। इत्थिवेद—पुरिसवेद० भुज०—अप्प०—अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी। णवुंस० तिण्णि-पदा० जह० एयस०, अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिसवे०—णवुंस० णत्थि। भुज०—अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। इत्थिवेदस्स अवत्त० णत्थि।**

और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है। अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और छह नोकषायोंके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित पदका भंग ओघके समान है। नपुंसकवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण है। अवस्थित और अवक्तव्य पदका भंग ओघके समान है।

§ ३८५. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्वका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके अवस्थित और अवक्तव्यपदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे एक समय और अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्यपदका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्यपदके उदीरकका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्यपदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल तीन का एक समय और अवक्तव्यपदका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल दो का एक समय और अवक्तव्यपदका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण है। अवस्थितपदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। नपुंसकवेदके तीन पदोंके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और अवक्तव्य पदका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनियोंमें भुजगार और अल्पतरपदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इनमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है।

§ ३८६. पंचिंदियतिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० मिच्छ०–णवुंस० तिण्णिपदा० जह० एगस, उक्क० अंतोमु० । एवं सोलसक०–छण्णोक० । णवरि अवत्त० जह० उक्क० अंतोमु० ।

§ ३८७. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो । णवरि पच्चक्खाणचउक्क० भुज०अप्प०–अवत्त० ओघं । मणुसिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।

§ ३८८. देवेसु मिच्छ०–सम्मामि०–अणंताणु०४ तिण्णि पदा जह० एगसमओ अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एवं सम्म० । णवरि अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । बारसक०–छण्णोक० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० सम्मत्तभंगो णवरि अरदि-सोग० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगस० अंतोमु० हस्स-रदि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० सव्वेसिं छम्मासं । पुरिसवेद० तिण्णिपदा० बारसकसायभंगो । इत्थिवेद० भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णं पलिदो० वेसूणाणि । एवं

§ ३८६. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके तीन पदोंके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार सोलह कषाय और छह नोकषायों की अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

§ ३८७. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें प्रत्याख्यान चतुष्कके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका भंग ओघके समान है । मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण हैं ।

§ ३८८. देवों में मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी के तीन पदों के उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अवस्थित पदके उदीरक का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । बारह कषाय और छह नोकषायों के भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे दो का एक समय और अवक्तव्य पदके उदीरकका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित पदका भंग सम्यक्त्वके समान है । इतनी विशेषता है कि अरति और शोकके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे दो का एक समय और अन्तिमका अन्तर्मुहूर्त है तथा हास्य और रतिके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल सबका छह महीना है । पुरुषवेदके तीन पदोंके उदीरकका भंग बारह कषायोंके समान है । स्त्रीवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ

भवणादि णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं भय-दुगुंछभंगो । सहस्सारे चदुणोक० देवोघं । णवरि अवट्ठि० सगट्ठिदी देसूणा । भवण०-वाणवें०-जोदिसि०-सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० भुज०-अप्प० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एगस, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि पलिदो० सादिरे० प० सा० पणवण्णं पलिदो० देसूणाणि । उवरि इत्थिवेदो णत्थि ।

§ ३८९. अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० भुज०-अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठि० देवोघं । अवत्त० णत्थि अंतरं । एवं पुरिसवे० । णवरि अवत्त० णत्थि । एवं बारसक०-छण्णोक० । णवरि अवत्त० जहण्णुक्क० अंतोमु० । एवं जाव ।

§ ३९०. णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-णवुंस० भुज०-अप्प०-अवट्ठि० णियमा अत्थि, सिया एदे च अवत्तव्वगो च, सिया एदे च अवत्तव्वगा च । सम्म०-इत्थिवेद-पुरिसवेद० भुज०-

---

कम पचवन पल्योपम है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । हास्य, रति, अरति और शोकका भंग भय-जुगुप्साके समान है । सहस्रार कल्पमें चार नोकषायोंका भंग सामान्य देवोंके समान है । इतनी विशेषता है कि यहाँ इनके अवस्थित पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी स्थितिप्रमाण है । भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी तथा सौधर्म-ऐशान कल्पके देवों में स्त्रीवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य अन्तर-काल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल क्रमसे कुछ कम तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और कुछ कम पचवन पल्योपम है । ऊपरके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है ।

§ ३८९. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित पदके उदीरकका भंग सामान्य देवोंके समान है । अवक्तव्य पदके उदीरकका अन्तर-काल नहीं है । इसी प्रकार पुरुषवेदके उदीरककी अपेक्षा अन्तरकाल जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसका अवक्तव्य पद नहीं है । इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंके उदीरककी अपेक्षा अन्तरकाल जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ३९०. नाना जीवोंका आश्रय कर भंग विचयानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके भुजगार, अल्पतर और अव-स्थित पदके उदीरक जीव नियमसे हैं, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवक्तव्य पदका उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवक्तव्य पदके उदीरक जीव है । सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं, शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय है । सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरक जीव भजनीय

अप्प० णिय० अत्थि, सेसपद० भयणिज्जा। सम्मामि० सव्वपदा० भयणिज्जा। सोलसक०–छण्णोक० सव्वपदा० णिय० अत्थि। एवं तिरिक्खा०।

§ ३९१. आदेसेण णेरइय० मिच्छ–सम्म०–सोलसक०–छण्णोक० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि। सेसपदा० भयणिज्जा। सम्मामि० ओघं। णवुंस० भुज०–अप्पद० णिय० अत्थि, सिया एदे च अवट्ठिदो च, सिया एदे च अवट्ठिदा च। एवं सव्वणिरय०।

§ ३९२. पंचिंदियतिरिक्खतिये सम्मामि० ओघं। सेसपयडी० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि। सेसपदा० भयणिज्जा। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज० सव्वपय० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि, सेसपदा० भयणिज्जा।

§ ३९३. मणुसतिये सम्मामि० ओघं। सेसपय० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि। सेसपदा० भयणिज्जा। मणुसअपज्ज० सव्वपय० सव्वपदा० भयणिज्जा।

§ ३९४. देवा भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति सम्मामि० ओघं। सेससगपय० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि, सेसपदा० भयणिज्जा। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सगसव्वपय० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि। सेसपदा० भयणिज्जा। एवं जाव०।

हैं। सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पदोंके उदीरक जीव नियमसे है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ३९१. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे है। शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय हैं। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। नपुंसकवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवस्थित पदका उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवस्थित पदके उदीरक जीव हैं। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ ३९२. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं। शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय हैं। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं। शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय हैं।

§ ३९३. मनुष्यत्रिकमें सम्यग्मिथ्यात्वके उदीरकोंका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे है। शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरक जीव भजनीय हैं।

§ ३९४. सामान्य देव तथा भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके उदीरकोंका भंग ओघके समान है। शेष अपनी-अपनी प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं। शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय हैं। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें अपनी-अपनी सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं। शेष पदोंके उदीरक जीव भजनीय हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ ३९५. भागाभागाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–णवुंस० भुज० दुभागो सादि०। अप्प० दुभागो देसूणो। अवट्ठि० असंखे०भागो। अवत्त० अणंतभागो। एवं सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–णवणोक०। णवरि अवत्त० असंखे०भागो। एवं तिरिक्खा०।**

**§ ३९६. सव्वणिरय०–सव्व–पंचिंदियतिरिक्ख०–मणुसअपज्ज०–देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति सव्वपयडी० भुज० दुभागो सादिरे०। अप्प० दुभागो देसूणो। सेसपदा० असंखे०भागो। मणुसेसु पचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद-पुरिसवेद० अवट्ठि०–अवत्त० संखे०भागो। मणुसपज्ज०–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० सव्वपय० भुज० दुभागो सादिरेयो। अप्प० दुभागो देसूणो। सेसपदा० संखे०भागो। एवं जाव०।**

**§ ३९७. परिमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–णवुंस० तिण्णि पदा० अणंता। अवत्त० असंखेज्जा। सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवेद० सव्वपदा० केत्तिया? असंखेज्जा। सोलसक०–छण्णोक० सव्वपदा० के०? अणंता। एवं तिरिक्खा०।**

---

§ ३९५. भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके भुजगार पदके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अल्पतर पदके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। अवस्थित पदके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अवक्तव्य पदके उदीरक जीव अनन्तवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पदके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ३९६. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार पदके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अल्पतर पदके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण है। शेष पदोंके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण है। सामान्य मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थित और अवक्तव्य पदके उदीरक जीव संख्यातवें भागप्रमाण है। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार पदके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अल्पतर पदके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण है। शेष पदोंके उदीरक जीव संख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३९७. परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके तीन पदोंके उदीरक जीव अनन्त हैं। अवक्तव्य पदके उदीरक जीव असंख्यात हैं। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? अनन्त हैं। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

**§ ३९८. सव्वणिरय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति सव्वपय० सव्वपदा० केत्तिया ? असंखेज्जा । मणुसेसु पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि मिच्छ०-णवुंस० अवत्त० सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिसवेद० सव्वपदा० केत्तिया ? संखेज्जा । मणुसपज्ज० मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा० सव्वपय० सव्वपदा० केत्तिया ? संखेज्जा । अणुद्दिसादि अवराजिदा त्ति सव्वपय० सव्वपदा० असंखेज्जा । णवरि सम्म० अवत्त० संखेज्जा । एवं जाव० ।**

**§ ३९९. खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-णवुंस०-तिण्णिपदा० केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । अवत्त० लोग० असंखे०भागे । सोलसक०-छण्णोक० सव्वपदा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । सम्म-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिसवेद० सव्वपदा० केवडि खेत्ते ? लोग० असंखे०भागे । एवं तिरिक्खा० । सेसगदीसु सव्वपयडीणं सव्वपदा० खेत्त० लोग० असंखे०भागे । एवं जाव० ।**

**§ ४००. पोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छत्त० तिण्णिपद० के० पोसिदं ? सव्वलोगो । अवत्त० लोग० असंखे०भागो अट्ठ बारह**

§ ३९८. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । सामान्य मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य पदके उदीरक जीव तथा सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अनुदिशसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरक जीव असंख्यात हैं । इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वके अवक्तव्य पदके उदीरक जीव संख्यात हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ३९९. क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके तीन पदोंके उदीरकोंका कितना क्षेत्र है ? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । अवक्तव्य पदके उदीरकोंका लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंका कितना क्षेत्र है ? सर्वलोकप्रमाण क्षेत्र है । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदोंके उदीरकोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । शेष गतियोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४००. स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्वके तीन पदोंके उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अवक्तव्य पदके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार नपुंसकवेदके उदीरकोंकी अपेक्षा स्पर्शन जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि

**चोद्दस० । एवं णवुंस० । णवरि अवत्त० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । सम्म०-सम्मामि० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० । सोलसक०-छण्णोक० सव्वपदा० सव्वलोगो । इत्थिवेद-पुरिसवेद०-तिण्णिपदा० लोग० असंखे० भागो अट्ठ चोद्दस० सव्वलोगो वा । अवत्त० लोग० असंखेभागो सव्वलोगो वा ।**

§ ४०१. **आदेसेण णेरइय० सव्वपय० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । णवरि मिच्छ० अवत्त० लोग० असंखे०भागो पंच चोद्दस० । सम्म०-**

इसके अवक्तव्य पदके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सबपदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सोलहकषाय और छह नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके तीन पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग तथा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अवक्तव्य पदके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ—जो सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त कर प्रथम समयमें उसका अवक्तव्य पद करते हैं उनका विहारवत्स्वस्थान आदि की अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका तथा मारणान्तिक समुद्घात और उपपाद पदकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमें से नीचे पाँच और ऊपर सात इस प्रकार कुछ कम बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है, इसलिए यहाँ मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका उक्त क्षेत्र-प्रमाण भी स्पर्शन कहा है । नपुंसकवेदका अवक्तव्यपद अन्य वेदसे आकर अपने जन्मके प्रथम समयमें एकेन्द्रिय जीव भी करते हैं और वे अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकमें पाये जाते हैं, इसलिए इसके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका सर्व लोकप्रमाण भी स्पर्शन कहा है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व की उदीरणा यथायोग्य चारों गतियोंमें संभव है, किन्तु उन सबका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण ही बनता है । मात्र विहारवत्स्वस्थान आदिकी अपेक्षा अतीत स्पर्शन त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ भागप्रमाण भी बन जाता है, इसलिए इस अपेक्षासे उक्त प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंका स्पर्शन त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम आठ भागप्रमाण कहा है । मुख्यतासे जो एकेन्द्रिय जीव मर कर स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंमें उत्पन्न होते हैं उनका अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण बन जानेसे इनके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका सर्व लोकप्रमाण भी स्पर्शन कहा है । शेष कथन सुगम होनेसे यहाँ उसका स्पष्टीकरण नहीं किया है । इसी न्यायसे गतिमार्गणाके भेद-प्रभेदोंमें अपने-अपने स्पर्शनका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए ।

§ ४०१. आदेशसे नारकियोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम पाँच भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंका भंग क्षेत्रके समान है । इसी प्रकार दूसरी

**सम्मामि० खेत्तभंगो। एवं बिदियादि सत्तमा त्ति। णवरि सगपोसणं। सत्तमाए मिच्छ० अवत्त० खेत्तं। पढमाए खेत्तं।**

**§ ४०२. तिरिक्खेसु ओघं। णवरि मिच्छ० अवत्त० लोग० असंखे०भागो सत्त चोद्दस०। सम्म० तिण्णिपद० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस०। अवत्त० खेत्तं। सम्मामि० खेत्तं। इत्थिवे०-पुरिस० सव्वपद० लोग० असंखेभागो सव्वलोगो वा।**

**§ ४०३. पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ०-सोलसक०-णवणोक० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। णवरि मिच्छ० अवत्त० सत्तचोद्दस०। तिण्णिवेद० अवत्त० खेत्तं। सम्म०-सम्मामि० तिरिक्खोघं। णवरि वेदा जाणिदव्वा।**

**§ ४०४. पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्ज०-मणुसअपज्ज० सव्वपय० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो। णवरि सम्म० खेत्तं। मणुसिणी० इत्थिवेद० अवत्त० खेत्तं।**

**§ ४०५. देवेसु सव्वपयडी० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस०।**

---

पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। सातवी पृथिवीमें मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका भंग क्षेत्रके समान है। तथा पहली पृथिवी में सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंका भंग क्षेत्रके समान है।

§ ४०२. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम सात भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्वके तीन पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंके कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसके अवक्तव्य पदके उदीरकोका भंग क्षेत्रके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोका भंग क्षेत्रके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ४०३. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोने त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम सात भागप्रमाण क्षेत्रका अतीतकालमें स्पर्शन किमा है। तीन वेदोंके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका भंग क्षेत्रके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। इतनी विशेपता है कि अपने-अपने वेद जान लेने चाहिए।

§ ४०४. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके सब पदोंके उदीरकोंका भंग क्षेत्रके समान है। मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका भंग क्षेत्रके समान है।

§ ४०५. देवोमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन

**णवरि सम्म०-सम्म०-सम्मामि० सव्वपय० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस०। एवं सोहम्मीसाण०।**

**§ ४०६. भवण०-वाणवें०-जोदिसि० सव्वपय० सव्वपद० लोग० असंखे०-भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस०। णवरि सम्म०-सम्मामि० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस०।**

**§ ४०७. सणक्कुमारादि सहस्सारा त्ति सव्वपय० सव्वपदा० लोग० असंखे०-भागो अट्ठ चोद्दस०। आणदादि अच्चुदा त्ति सव्वपय० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस०। उवरि खेत्तं। एवं जाव०।**

**§ ४०८. कालणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-णवुंस० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। सेसपदा० सव्वद्धा। सम्म०-इत्थिवे०-पुरिसवे० भुज०-अप्प० सव्वद्धा। सेसपदा० जह० एगस, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं सम्मामि०। णवरि भुज०-अप्प० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। सोलसक०-छण्णोक० सव्वपदा० सव्वद्धा।**

किया है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए।

§ ४०६. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन, कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन और कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ४०७. सनत्कुमार कल्पसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमे सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आगेके देवोंमें स्पर्शन क्षेत्रके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४०८. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। शेष पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका काल सर्वदा है। शेष पदोंके उदीरकोंका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्टकाल आवलिके असंख्यातवे भाग-प्रमाण है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंका काल जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्यकाल एक समय है और

एवं तिरिक्खा० ।

**§ ४०९. सव्वणिरय०–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख० देवा भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति सम्मामि० ओघं । सेसपय० भुज०–अप्प० सव्वद्धा । सेसपदा० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो ।**

**§ ४१०. मणुसेसु पंचिं०तिरिक्खभंगो । णवरि मिच्छ–णवुंस० अवत्त० सम्म०–इत्थिवे०–पुरिसवे० अवट्ठि–अवत्त०जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । सम्मामि० भुज०–अप्पद० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । सेसपदा० जह० एगस, उक्क० संखेज्जा समया । मणुसपज्ज०–मणुसिणी० सम्मामि० मणुसोघं । सेसपयडी० भुज०–अप्प० सव्वद्धा । सेसपदा० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । मणुसअपज्ज०**

उत्कृष्टकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है । सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकों काल सर्वदा है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—एक जीवकी अपेक्षा मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अपने उपक्रम कालको देखते हुए ऐसे जीव यदि लगातार इन प्रकृतियोंकी अवक्तव्य उदीरणा करें तो कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही अवक्तव्य उदीरणा करते हैं, इसलिए इनके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्टकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । इनके शेष पदोंका काल सर्वदा है यह स्पष्ट ही है । सम्यक्त्व आदि चार प्रकृतियोंके अवस्थित और अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण तथा शेष दो पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा यथासम्भव उक्तप्रकारसे ही जान लेना चाहिए । सम्यग्मिथ्यात्व यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । शेष सब कथन स्पष्ट ही है । इसी न्यायसे गतिमार्गणाके भेद-प्रभेदोंमें कालका विचार कर लेना चाहिए ।

§ ४०९. सब नारकी सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंका भंग ओघके समान है । शेष प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका काल सर्वदा है । शेष पदोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

§ ४१०. मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका तथा सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थित और अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्यकाल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । शेष पदोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंका भंग सामान्य मनुष्योंके समान है । शेष प्रकृतियोंके भुजगार और उल्पतर पदके उदीरकोंका काल सर्वदा है । शेष पदोंके उदीरकोंका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्ट

**सव्वपय० भुज०–अप्पद० जह० एयसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। सेसपदा० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो।**

**§ ४११. अणुद्दिसादि[1] सव्वट्ठा त्ति सव्वपय० भुज०–अप्प० सव्वद्धा[2]। सेसपद्दा० जह० एगस, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। णवरि सम्म० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। णवरि सव्वट्ठे संखेज्जा समया। एवं जाव०।**

**§ ४१२. अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–सोलसकसाय–सत्तणोक० सव्वपदाणं णत्थि अंतरं। णवरि मिच्छ० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० सत्तरादिंदियाणि। णवुंसय० अवत्त० जह० एयस०, चउवीसमुहुत्त। सम्म० भुज०–अप्पद० णत्थि अतरं। अवट्ठि० जह० एगस०,उक्क० असंखेज्जा लोगा। अवत्त० मिच्छत्तभंगो। सम्मामि० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। अवट्ठि० सम्मत्तभंगो। इत्थिवेद–पुरिस० सम्मत्तभंगो।**

काल सर्वदा है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। शेष पदोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ४११. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका काल सर्वदा है। शेष पदोंके उदीरकोंका जघन्यकाल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इतनी विशेषता है कि सर्वार्थसिद्धिमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके स्थानमें संख्यात समय काल है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४१२. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात दिन-रात है। नपुंसकवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल चौबीस मुहूर्त है। सम्यक्त्वके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अवक्तव्य पदके उदीरकोंका भंग मिथ्यात्वके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अवस्थित पदके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग सम्यक्त्वके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदोंके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग सम्यक्त्वके समान

१. ता०प्रतौ भागो। णवरि अणद्दिसादि इति पाठः। २ आ०प्रतौ अप्प० जह० एगस० सव्वद्धा इति पाठः।

**णवरि अवत्त० णवुंस०भंगो । एवं तिरिक्खा० ।**

**§ ४१३. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० भुज०-अप्प० णत्थि० अंतरं । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अवत्त० ओघं । एवं सोलसक०-सत्तणोक० । णवरि अवत्त० जह० एयसमओ, उक्क० अंतोमु० । णवुंसय० अवत्त० णत्थि । सम्म०-सम्मामि० ओघं । एवं सव्वणेरइय० । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि णवुंस० अवत्त० ओघं । इत्थिवेदपुरिस० ओघं । णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि जोणिणीसु पुरिसवेद-णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि ।**

**§ ४१४. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० णारयभंगो । णवरि मिच्छ० अवत्त० णत्थि ।**

**§ ४१५. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो । मणुसिणीसु इत्थिवे० अवत्त०**

---

है । इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्य पदके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग नपुंसकवेदके समान है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—इस अन्तरकाल प्ररूपणासे मालूम होता है कि वेदक सम्यक्त्वसे च्युत होकर कोई जीव अधिकसे अधिक सात दिन-रात तक मिथ्यादृष्टि नहीं होता और मिथ्यात्व को त्यागकर अधिकसे अधिक सात दिन-रात तक कोई जीव वेदक सम्यग्दृष्टि नहीं होता । इसी प्रकार अन्य वेदवाला कोई जीव मरकर यदि नपुंसकवेदी, स्त्रीवेदी या पुरुषवेदियोंमें नहीं उत्पन्न हो तो अधिकसे अधिक चौबीस मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ ४१३. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अवक्तव्य पदके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंका अन्तरकाल जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पदोंके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकोंके अन्तरकाल का भंग ओघके समान है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदोंके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है और योनिनियोंमें स्त्रीवेद तथा पुरुषवेद नहीं है । तथा योनिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है ।

§ ४१४. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग नारकियोंके समान है । इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्वका अवक्तव्य पद नहीं है ।

§ ४१५. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और

जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं। मणुसअपज्ज० सव्वपय० सव्वपदा० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। णवरि अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा।

§ ४१६. देवा० पंचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद-पुरिसवेद० अवत्त० णत्थि। एवं भवण०-वाणवें-जोदिसि०-सोहम्मीसा०। एवं सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा[1] त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो। णवरि सम्म० अवत्त० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं पलिदो० संखे०भागो। एवं जाव०।

§ ४१७. भावाणुगमेण सव्वत्थ ओदइओ भावो।

§ ४१८. अप्पाबहुआणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण, मिच्छ०-णवुंस० सव्वत्थोवा अवत्त०अणुभागुदी०। अवट्ठि० अणंतगुणा। अप्प० असंखे०गुणा। भुज० विसेसाहिया। सम्म०-सम्मामि०-सोलसक०-अट्ठणोक०

---

उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है।

§ ४१६. देवोंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा इनमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी तथा सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंके सब पदोंके उदीरकोंके अन्तरकालका भंग आनत कल्पके समान है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल नौ अनुदिश तथा चार अनुत्तर विमानोंमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण तथा सर्वार्थसिद्धिमें पल्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४१७. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है।

§ ४१८. अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे अल्पतर अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे है। उनसे भुजगार अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अल्पतर

१. आ०प्रतौ सणक्कुमारादि णवगेवज्जा इति पाठः।

**सव्वत्थोवा अवट्ठि० । अवत्त० असंखे०गुणा । अप्प० असंखे०गुणा । भुज० विसे० । एवं तिरिक्खा० ।**

**§ ४१९. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० सव्वत्थोवा अवत्त० । अवट्ठि० असंखे०-गुणा । सेसमोघं । सम्म०-सम्मामि०-सोलसक०-सत्तणोक० ओघं । णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि । एवं सव्वणिरय० ।**

**§ ४२०. पंचिंदियतिरिक्खतिये ओघं । णवरि मिच्छ०-णवुंस० सव्वत्थोवा अवत्त० । अवट्ठि० असंखे०गुणा । सेसमोघं । णवरि पज्जत्तएसु इत्थिवेदो णत्थि । णवुंस० पुरिस०भंगो । जोणिणीसु पुरिसवेद-णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि ।**

**§ ४२१. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि मिच्छ०-णवुंस० अवत्त० णत्थि ।**

**§ ४२२. मणुसेसु मिच्छ-सोलसक०-सत्तणोक० पंचिं०तिरि०भंगो । सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिस० सव्वत्थोवा अवट्ठि० । अवत्त० संखे०गुणा । अप्प० संखे०गुणा । भुज० विसे० । एवं मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु । णवरि संखे०गुणा ।**

---

अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे भुजगार अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए ।

§ ४१९. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं । शेष भंग ओघके समान है । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव नहीं है । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए ।

§ ४२०. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक है । उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे है । शेष भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है । तथा इनमें नपुंसकवेदका भंग पुरुषवेदके समान है । योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नही है । तथा इनमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव नहीं है ।

§ ४२१. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव नहीं है ।

§ ४२२. मनुष्योंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे अल्पतर अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे भुजगार अनुभागके उदीरक

पज्जत्त० इत्थिवे० णत्थि। णवुंस० पुरिसवेदभंगो। मणुसिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० मिच्छत्तभंगो।

§ ४२३. देवेसु पंचि०तिरिक्खभंगो। णवरि णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद-पुरिसवेद० अवत्त० णत्थि। एवं भवण०-वाणवें०-जोदिसि० सोहम्मीसाण०। एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। अणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठा त्ति सम्म० सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० असंखे०गुणा। अप्प० असंखे०गुणा। भुज० विसे०। बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो। णवरि सव्वट्ठे संखेज्जगुणं कायव्वं। एवं जाव०।

एवं भुजगारो समत्तो।

§ ४२४. पदणिक्खेवे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि—समुक्कित्तणा सामित्तमप्पाबहुअं च। तत्थ समुक्कित्तणा दुविहा—जह० उक्क०। उक्क० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपयडी० अत्थि उक्क० वड्ढी हाणी अवट्ठा०। सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-सव्वमणुस-सव्वदेवा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। एवं जाव०। एवं जहण्णयं पि णेदव्वं।

---

जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि संख्यातगुणा करना चाहिए। पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है। इनमें नपुंसकवेदका भंग पुरुषवेदके समान है। मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। इनमें स्त्रीवेदका भंग मिथ्यात्वके समान है।

§ ४२३. देवोंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक नहीं है। इसी प्रकार भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी तथा सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक है। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे है। उनसे अल्पतर अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे भुजगार अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। इतनी विशेषता है कि सर्वार्थसिद्धिमें संख्यातगुणा करना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

इस प्रकार भुजगार समाप्त हुआ।

§ ४२४. पदनिक्षेपका प्रकरण है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार है—समुत्कीर्तना, स्वामित्व और अल्पबहुत्व। उनमेंसे समुत्कीर्तना दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि और अवस्थान अनुभाग उदीरणा है। सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देव जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा करते हैं उनका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए। इसी प्रकार जघन्यको भी जानना चाहिए।

**§ ४२५. सामित्तं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–सोलसक० उक्क० वड्डी कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स जो उक्कस्ससंतकम्मिगो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्क० वड्डी । उक्क० हाणी कस्स ? अण्णद० जो उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो मदो बादरेइंदिओ जादो तस्स उक्क० हाणी । उक्क० अवट्ठा० कस्स ? अण्णद० जो उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो तप्पाओग्गविसोहीए पदिदो तस्स से काले उक्क० अवट्ठाणं ।**

**§ ४२६. सम्म०– सम्मामि० उक्क० वड्डी कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स मिच्छत्ताहिमुहस्स चरिमसमये वट्टमाणस्स तस्स उक्क० वड्डी । उक्क० हाणी कस्स ? अण्णद० जो तप्पाओग्गउक्कस्साणुभागमुदीरेंतो तप्पाओग्गविसोहीए पदिदो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्क० अवट्ठाणं ।**

**§ ४२७. इत्थिवेद–पुरिसवेद० उक्क० वड्डी कस्स ? अण्णद० जो अट्ठवस्सिगो करहो तप्पाओग्गजहण्णमुदीरेंतो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्क० वड्डी । उक्क० हाणी० कस्स ? अण्णद० सो चेव उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो तप्पाओग्गविसोहीए पदिदो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्क० अवट्ठा० । एवं णवुंस०–अरदि-सोग-भय-**

---

§ ४२५. स्वामित्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट सत्कर्मवाला जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ ऐसे अन्यतर मिथ्यादृष्टिके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अन्यतर जीव मरा और बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हो गया उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अन्यतर जीव तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ उसके उनका तदनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

§ ४२६. सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाला मिथ्यात्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयमें विद्यमान जो अन्यतर जीव है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर जीव तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । तथा उसीके तदनन्तर समयमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

§ ४२७. स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तत्प्रायोग्य जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर आठ वर्षका करभ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर वही करभ तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । तथा उसीके तदनन्तर समयमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । इसी प्रकार नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है

दुगुंछ० । णवरि सत्तमपुढवीए णेरइयस्स भाणिदव्वं । एवं हस्स-रदीणं । णवरि सहस्सारे देवस्स भाणिदव्वं ।

§ ४२८. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० उक्क० वड्डी कस्स ? अण्णद० जो तप्पाओग्गजह०अणुभागमुदीरेंतो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्क० वड्डी । उक्क० हाणी कस्स ? अण्णद० जो उक्क० अणुभागमुदीरेंतो तप्पाओग्गविसोहिए पदिदो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्क० अवट्ठा० । णवरि णवुंस-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा० सत्तमाए णेरइयस्स भाणिदव्वं । सम्म०-सम्मामि० ओघं । एवं सव्वणेरइय० ।

§ ४२९. तिरिक्खेसु मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक०-सम्म०-सम्मामि० पढमाए भंगो । इत्थिवे०-पुरिसवेद० ओघं । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक० सत्तणोक० पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि तप्पाओग्गसंकिलेस-विसोही भाणियव्वा । मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो[1] । णवरि इत्थिवेद-पुरिसवेद० मिच्छत्तभंगो ।

§ ४३०. देवेसु मिच्छ०-सोलसक०-सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिसवेद-

कि सातवीं पृथिवीके नारकीके कहलाना चाहिए । इसी प्रकार हास्य और रतिकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सहस्रार कल्पके देवके कहलाना चाहिए ।

§ ४२८. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तत्प्रायोग्य जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर जीव तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । तथा उसीके तदनन्तर समयमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीके नारकीके कहलाना चाहिए । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए ।

§ ४२९. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय, सात नोकषाय, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग पहली पृथिवीके समान है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपना अपना वेद जान लेना चाहिए । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है । इतनी विशेषता है कि तत्प्रायोग्य संक्लेश और विशुद्धि कहलानी चाहिए । मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग मिथ्यात्वके समान है ।

§ ४३०. देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका भंग सामान्य मनुष्योंके समान है । हास्य और रतिका

[1] आ०प्रतौ -तिरिक्खभंगो इति पाठः ।

**अरदि-सोग-भय-दुगुंछा० मणुसभंगो। हस्स-रदि० ओघं। एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि हस्स-रदि० मिच्छत्तेण सह भाणिदव्वं। सणक्कुमारादि उवरिमित्थिवेदो णत्थि। आणदादि जाव णवगेवज्जा त्ति तप्पाओग्गसंकिलेस-विसोही भाणिदव्वा।**

**§ ४३१. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० उक्क० वड्ढी कस्स? अण्णद० वेदगसम्माइट्ठि० जो तप्पाओग्गउक्कस्साणुभागसंतकम्मिगो तप्पाओग्गउक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? अण्णद० तप्पाओग्गउक्कस्साणुभागमुदीरेंतो तप्पाओग्गविसोहीए पदिदो तस्स उक्क० हाणी। तस्सेव से काले उक्क० अवट्ठा०। एवं जाव०।**

**§ ४३२. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–अणंताणु०४ जह० वड्ढी कस्स? अण्णद० अधापवत्तमिच्छाइट्ठिस्स जो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो अणंतभागेण वड्ढिदो तस्स जह० वड्ढी। तस्सेव से काले जह० अवट्ठा०। जह० हाणी कस्स? अण्णद० चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति तस्स जह० हाणी।**

**§ ४३३. सम्म० जह० वड्ढी कस्स? अण्णद० अधापवत्तसम्माइट्ठिस्स जो अणंतभागेण वड्ढिदो तस्स जह० वड्ढी। तस्सेव से काले जह० अवट्ठा०। जह० हाणी**

---

भंग ओघके समान है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि हास्य और रतिको मिथ्यात्वके साथ कहलाना चाहिए। सनत्कुमार कल्पसे लेकर आगे स्त्रीवेद नहीं है। आनत कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें तत्प्रायोग्य संक्लेश और विशुद्धि कहलानी चाहिए।

§ ४३१. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मवाला जो अन्यतर वेदक सम्यग्दृष्टि जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जो अन्यतर जीव तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। तथा उसीके तदनन्तर समयमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४३२. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाला जीव अनन्तभागवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे अधःप्रवृत्त मिथ्यादृष्टिके उनकी जघन्य वृद्धि होती है। तथा उसीके तदनन्तर समयमें उनका जघन्य अवस्थान होता है। जघन्य हानि किसके होती है? जो तदनन्तर समयमें संयमको प्राप्त होगा ऐसे अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उनकी जघन्य हानि होती है।

§ ४३३. सम्यक्त्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो अनन्तभागवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। तथा उसीके तदनन्तर

**कस्स ? अण्णद० समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणीयस्स तस्स जह० हाणी ।**

**§ ४३४. सम्मामि० जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० अधापवत्तसम्मामिच्छा० जो अणंतभागेण वड्ढिदो तस्स जह० वड्ढी । तस्सेव से काले जह० अवट्ठा० । जह० हाणी कस्स ? अण्णद० चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्त पडिवज्जिहिदि त्ति तस्स जह० हाणी ।**

**§ ४३५. अपच्चक्खाण०४ जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० अधापवत्तसम्माइट्ठिस्स जो अणंतभागेण वड्ढिदो तस्स जह० वड्ढी । तस्सेव से काले जह० अवट्ठा० । जह० हाणी कस्स ? अण्णद० चरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स से काले संजम गाहिदि त्ति तस्स जह० हाणी । एवं पच्चक्खाण०४ । णवरि संजदासंजदस्स भाणिदव्वं ।**

**§ ४३६. चदुसंजल० जह० वड्ढी कस्स ? अण्णद० उवसमसेढीदो परिवदमाणगस्स विदियसमयउदीरगस्स तस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? अण्णद० समयाहिया-वलियचरिमसमयउदीरगस्स खवगस्स तस्स जह० हाणी । जह० अवट्ठा० कस्स ?**

समयमे जघन्य अवस्थान होता है । जघन्य हानि किसके होती है ? जिसने दर्शनमोहनीयकी क्षपणा पूरी नहीं की, उसमें अभी एक समय अधिक एक आवलि काल शेष है ऐसे अन्यतर कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि जीवके उसकी जघन्य हानि होती है ।

§ ४३४. सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अनन्तभागवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे अन्यतर अधःप्रवृत्त सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । तथा उसीके तदनन्तर समयमे जघन्य अवस्थान होता है । जघन्य हानि किसके होती है ? जो तदनन्तर समयमे सम्यक्त्वको प्राप्त करेगा ऐसे अन्तिम समयवर्ती अन्यतर सम्य-ग्मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य हानि होती है ।

§ ४३५. अप्रत्याख्यानावरण चतुष्ककी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अनन्तभाग-वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे अन्यतर अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । तथा उसीके तदनन्तर समयमें जघन्य अवस्थान होता है । जघन्य हानि किसके होती है ? जो अनन्तर समयमें संयमको प्राप्त करेगा ऐसे अन्तिम समयवर्ती अन्यतर असंयत सम्यग्दृष्टिके उसकी जघन्य हानि होती है । इसी प्रकार प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी अपेक्षा कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि संयतासंयतके कहलाना चाहिए ।

§ ४३६. चार संज्वलनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? उपशमश्रेणिसे गिर कर दूसरे समयमें उदीरणा करनेवाले अन्यतर जीवके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । जघन्य हानि किसके होती है ? क्षपणामें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर जो क्षपक उदीरणाके अन्तिम समयमें स्थित है ऐसे अन्यतर क्षपकके उसकी जघन्य हानि होती है । जघन्य अवस्थान किसके होता है ? जो अनन्तभागवृद्धि करके अवस्थित है ऐसे अन्यतर

१. ता०प्रतौ अण्णद० चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले समयाहियावलिय- इति पाठः ।

अण्णद० अधापवत्तसंजदस्स अणंतभागेण वड्ढिदूणावट्ठिस्स तस्स जह० अवट्ठा० । एवं तिण्णं वेदाणं ।

§ ४३७. छण्णोक० जह० वड्ढी कस्स ? अण्ण० उवसमसेढीदो परिवदमाणगस्स विदियसमयउदीरगस्स तस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? अण्ण० खवगस्स चरिमसमयअपुव्वकरणस्स तस्स जह० हाणी । जह० अवट्ठा० कस्स ? अण्ण० अधापवत्तसजदस्स अणंतभागेण वड्ढियूणावट्ठिदस्स[1] तस्स जह० अवट्ठा० । एवं मणुसतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा ।

§ ४३८. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–अणंताणु०४ ओघं । णवरि जह० हाणी चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति मिच्छ० समयाहियावलियचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स । सम्म०–सम्मामि० ओघं । बारसक०–सत्तणोक० जह० वड्ढी कस्स ? अण्ण० सम्माइट्ठिस्स अणंतभागेण वड्ढिदूण वड्ढी, हाइदूण हाणी, एगदरत्थावट्ठाणं । एवं सव्वणिरयेसु । णवरि विदियादि सत्तमा त्ति सम्म० बारसकसायभंगो ।

---

अधःप्रवृत्त संयतके उसका जघन्य अवस्थान होता है। इसी प्रकार तीन वेदोंकी अपेक्षा जानना चाहिए।

§ ४३७. छह नोकषायोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? उपशमश्रेणिसे गिरकर अपनी उदीरणाके दूसरे समयमें विद्यमान अन्यतर उदीरकके उनकी जघन्य वृद्धि होती है। जघन्य हानि किसके होती है ? अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें स्थित अन्यतर क्षपकके उनकी जघन्य हानि होती है। जघन्य अवस्थान किसके होता है ? अनन्तभागवृद्धि करके अवस्थित हुए अन्यतर अधःप्रवृत्त संयतके उनका जघन्य अवस्थान होता है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए।

§ ४३८. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि जो तदनन्तर समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त करेगा ऐसे अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी जघन्य हानि होती है तथा मिथ्यात्वके एक समय अधिक एक आवलि कालके शेष रहने पर जो उदीरणाके अन्तिम समयमें स्थित मिथ्यादृष्टि है उसके मिथ्यात्वकी जघन्य हानि होती है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। बारह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अनन्तभागवृद्धि करके वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे अन्यतर सम्यग्दृष्टिके उनकी जघन्य वृद्धि होती है, जो अनन्तभागहानि करके हानिको प्राप्त हुआ है ऐसे अन्यतर सम्यग्दृष्टिके उनकी जघन्य हानि होती है और इनमेंसे किसी एक जगह उनका जघन्य अवस्थान होता है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है।

१ ता०प्रतौ वड्ढियूण वड्ढिदस्स इति पाठः।

§ ४३९. तिरिक्खेसु मिच्छ०अणंताणु०४ ओघं। णवरि जह० हाणी चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले संजमासंजमं पडिवज्जिहिदि त्ति तस्स जह० हाणी। एवमपच्चक्खाण०४। णवरि सम्माइट्ठिस्स भाणिदव्वं। सम्म०-सम्मामि० ओघं। अट्ठक०-णवणोक० जह० वड्ढी कस्स? अण्णद० संजदासंजदस्स अणंतभागेण वड्ढिदूण वड्ढी, हाइदूण हाणी, एगदरत्थावट्ठाणं। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा। जोणिणीसु सम्म० अट्ठकसायभंगो।

§ ४४०. पंचिंदियतिरि०अपज्ज-मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० वड्ढी कस्स? अण्णद० अणंतभागेण वड्ढिदूण वड्ढी, हाइदूण हाणी, एगदरत्थावट्ठाणं।

§ ४४१. देवेसु मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-सोलसक०-छण्णोक० णारयभंगो। इत्थिवेद-पुरिसवेद० छण्णोकसायभंगो। एवं सोहम्मीसाण०। एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। भवण०-वाणवें०-जोदिसि० देवोघं। णवरि सम्म० बारसकसायभंगो। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो। एवं जाव०।

---

§ ४३९. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनकी जघन्य हानि किसके होती है? जो तदनन्तर समयमें संयमासंयमको प्राप्त करेगा ऐसे अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उनकी जघन्य हानि होती है। इसी प्रकार अप्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यग्दृष्टिके कहलाना चाहिए। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और नौ नोकषायोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो अनन्तभागवृद्धि करके वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे अन्यतर संयतासंयतके उनकी जघन्य वृद्धि होती है। जो अनन्तभागहानि करके हानि करता है ऐसे अन्यतर संयतासंयतके उनकी जघन्य हानि होती है तथा इनमेंसे किसी एक जगह उनका जघन्य अवस्थान होता है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जानना चाहिए। तथा योनिनियोंमें सम्यक्त्वका भंग आठ कषायोंके समान है।

§ ४४०. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? अनन्तभागवृद्धिसे युक्त अन्यतर जीवके उनकी जघन्य वृद्धि होती है। अनन्तभागहानिसे युक्त अन्यतर जीवके उनकी जघन्य हानि होती है और इनमेंसे किसी एक जगह उनका जघन्य अवस्थान होता है।

§ ४४१. देवोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग नारकियोंके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग छह नोकषायोंके समान है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें भंग सामान्य देवोंके समान है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४४२. अप्पाबहुअं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-सोलसक० सव्वत्थोवा उक्क० वड्ढी । अवट्ठा० विसे० । हाणी विसेसा० । सम्म०-सम्मामि० सव्वत्थोवा उक्क० हाणी । उक्क० अवट्ठा० तत्तियं चेव । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । णवणोक० सव्वत्थोवा उक्क० वड्ढी । हाणी अवट्ठा० विसे० । सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-सव्वमणुस-सव्वदेवा त्ति सम्म०-सम्मामि० ओघं । सेसपय० सव्वत्थोवा उक्क० वड्ढी । हाणी अवट्ठा० विसे० । एवं जाव० ।

§ ४४३. जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-बारसक० सव्वत्थोवा जह० हाणी । जह० वड्ढी अवट्ठा० अणंतगुणा । चदुसंजल०-णवणोक० सव्वत्थोवा जह० हाणी । जह० वड्ढी अणंतगुणा । जह० अवट्ठा० अणंतगुणा । एवं मणुसतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा ।

§ ४४४. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-अणंताणु०४-सम्म०-सम्मामि० ओघं । बारसक०-सत्तणोक० जह० वड्ढी हाणी अवट्ठा० तिण्णि वि सरिसाणि । एवं सव्वणेर० । णवरि विदियादि सत्तमा त्ति सम्म० जह० वड्ढी हाणी अवट्ठा० तिण्णि वि सारिसाणि ।

§ ४४२. अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है । उससे उत्कृष्ट अवस्थान विशेष अधिक है । उससे उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि सबसे स्तोक है । उत्कृष्ट अवस्थान उतना ही है । उससे उत्कृष्ट वृद्धि अनन्तगुणी है । नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है । उससे उत्कृष्ट हानि और उत्कृष्ट अवस्थान विशेष अधिक है । सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । शेप प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है । उससे उत्कृष्ट हानि और उत्कृष्ट अवस्थान विशेष अधिक है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४४३. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी जघन्य हानि सबसे स्तोक है । उससे जघन्य वृद्धि और जघन्य अवस्थान अनन्तगुणे है । चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी जघन्य हानि सबसे स्तोक है । उससे जघन्य वृद्धि अनन्तगुणी है । उससे जघन्य अवस्थान अनन्तगुणा है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जानना चाहिए ।

§ ४४४. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धीचतुष्क, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । बारह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही सदृश हैं । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें सम्यक्त्वकी जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही सदृश है ।

§ ४४५. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–अट्ठक० ओघं। अट्ठक०–णवणोक० तिण्णि वि पदाणि सरिसाणि। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि वेदा जाणिदव्वा। जोणिणीसु सम्म० तिण्णि वि सरिसाणि। पंचिंदियतिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० वड्डी हाणी अवट्ठा० तिण्णि वि सरिसाणि।

§ ४४६. देवेसु मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–अणंताणु०४ ओघं। बारसक०–अट्ठणोक० तिण्णि वि सरिसाणि। एवं भवणादि सोहम्मा त्ति। णवरि भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सम्म० तिण्णि वि सरिसाणि। सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति देवोघं। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० आणदभंगो। एवं जाव०।

एवं पदणिक्खेवो समत्तो।

§ ४४७. वड्डि त्ति तत्थ इमाणि तेरस अणियोगद्दाराणि—समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुगे त्ति। समुक्कित्तणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपय० अत्थि छवड्डि०–छहाणि–अवट्ठि०–अवत्त०। आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक०–सम्म०–सम्मामि० ओघं। णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि। एवं सव्वणिरय०।

§ ४४५. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और आठ कषायोंका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और नौ नोकषायोंके तीनों ही पद सदृश हैं। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। योनिनियोंमें सम्यक्त्वके तीनों ही पद सदृश है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही सदृश हैं।

§ ४४६. देवोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तनुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। बारह कषाय और आठ नोकषायोंके तीनों ही पद सदृश है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्प तक जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वके तीनों ही पद सदृश हैं। सनत्कुमारसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

§ ४४७. वृद्धिका प्रकरण है। उसमें ये तेरह अनुयोगद्वार है—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक। समुत्कीर्तनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके छह वृद्धि, छह हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद हैं। आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय, सात नोकषाय, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ ४४८. तिरिक्खाणमोघं। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०–णवुंस० णत्थि। इत्थिवे० अवत्त० णत्थि। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० मिच्छ–णवुंस० ओघं। णवरि अवत्त० णत्थि। सोलसक०–छण्णोक० ओघं।

§ ४४९. मणुसतिये ओघं। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। मणुसिणी० पुरिसवेद–णवुंस० णत्थि। देवेसु ओघं। णवरि णवुंस० णत्थि। इत्थिवे०–पुरिसवे० अवत्त० णत्थि। एवं भवणादि सोहम्मा त्ति। एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० आणदभंगो। एवं जाव०।

§ ४५०. सामित्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–अणंताणु०४ सव्वपदा कस्स? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स। सम्म० सव्वपदा कस्स? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स। सम्मामि० सव्वपदा कस्स? अण्णद० सम्मामिच्छाइट्ठिस्स। बारसक०–णवणोक० सव्वपदा कस्स? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स मिच्छाइट्ठि०।

§ ४४८. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि यहाँ इनका अवक्तव्य पद नहीं है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग ओघके समान है।

§ ४४९. मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। देवोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा इनमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४५०. स्वामित्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके सब पद किसके होते हैं? अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होते हैं। सम्यक्त्वके सब पद किसके होते है? अन्यतर सम्यग्दृष्टिके होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद किसके होते हैं? अन्यतर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होते है। बारह कषाय और नौ नोकषायोंके सब पद किसके होते हैं? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टिके होते हैं।

१. आ०प्रतौ अपज्ज० इति पाठः।

**§ ४५१. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक०–सम्म०–सम्मामि० ओघं। णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि। तिरिक्खेसु ओघं। णवरि तिण्णिवे० अवत्त० कस्स? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स। एवं पंचि०तिरिक्खतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा। जोणिणीसु इत्थिवे० अवत्त० णत्थि। पंचि०तिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपयडी० सव्वपदा० कस्स? अण्णद०।**

**§ ४५२. मणुसतिये ओघं। णवरि वेदा जाणियव्वा। मणुसिणीसु इत्थिवे० अवत्त० कस्स? अण्णद० सम्माइट्ठि०। देवेसु ओघं। णवरि णवुंस० णत्थि। इत्थिवे०–पुरिसवे० अवत्त० णत्थि। एव भवणादि सोहम्मा त्ति। एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। एवं जाव।**

**§ ४५३. कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपय० पंचवड्ढि–पंचहाणी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणंतगुणवड्ढि–हाणी० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० सत्तट्ठसमया। अवत्त० जह० उक्क० एगस०। सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–सव्वमणुस–सव्वदेवा त्ति**

---

§ ४५१. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय, सात नोकषाय, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि तीन वेदोंका अवक्तव्य पद किसके होता है? अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होता है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। योनिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें तथा नौ अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद किसके होते है? अन्यतरके होते हैं।

§ ४५२. मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद किसके होता है? अन्यतर सम्यग्दृष्टिके होता है। देवोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्प तकके देवोंमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमारसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४५३. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंकी पाँच वृद्धि और पाँच हानियोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित पदका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल सात-आठ समय है। अवक्तव्य पदका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देव जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा

जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिं जाणि पदाणि अत्थि तेसिमोघं । एवं जाव० ।

§ ४५४. अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-अणंताणु०४ पंचवड्ढि-पंचहाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणंतगुणवड्ढि-हाणी० जह० एयस०, उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अवत्त० भुजगारभंगो । सम्म०-सम्मामि० छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० जह० एयस०, अवत्त० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । अट्ठक० पंचवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणंतगुणवड्ढि-हाणि-अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । चदुसंजल०-भय-दुगंछ० एवं चेव । णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणि-अवत्त० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । एवं णवुंस० । णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणी० जह० एगस०, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं । अवत्त० भुजगारभंगो । एवं हस्स-रदि० । णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणि-अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०,

---

करते हैं और उनके जो पद हैं उनका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—पाँच वृद्धियों और पाँच हानियोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण तथा अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त होनेसे यहाँ सब प्रकृतियोंकी उक्त वृद्धियों और हानियोंका उक्त काल कहा है । सब प्रकृतियोंके अवस्थित पदका जघन्य काल समय और उत्कृष्ट काल सात-आठ समय बन जानेसे यह उक्तप्रमाण है । इनके अवक्तव्य पदका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय होनेसे उसे तत्प्रमाण बतलाया है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ ४५४. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थितपदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक दो छयासठ सागरोपम है । अवक्तव्यका भंग भुजगारके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य पदका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । आठ कषायोंकी पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थितपदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अनन्त गुणवृद्धि, अनन्तगुणहानि और अवक्तव्य पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय और अवक्तव्यपदका अन्तर्मुहूर्त है तथा सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । चार संज्वलन, भय और जुगुप्साका भंग इसी प्रकार है । इतनी विशेषता है कि इनकी अनन्तगुणवृद्धि, अनन्तगुणहानि और अवक्तव्यपदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इसीप्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसकी अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरोपमपृथक्त्वप्रमाण है । अवक्तव्य पदका भंग भुजगारके समान है । इसी प्रकार हास्य और रतिकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनकी अनन्तगुण-

उक्क० तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि । एवमरदि-सोग० । णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणि० जह० एयस०, उक्क० छम्मासं । इत्थिवेद-पुरिसवेद० छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० सव्वेसिमणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

§ ४५५. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-अणंताणु०४-हस्स-रदि० छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० जह० एगस०, अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० सव्वेसिं तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । एवमरदि-सोग० । णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणि० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । एवं बारसक०-भय-दुगुंछ० । णवरि अवत्त० जह० उक्क० अंतोमु० । एवं णवुंस० । णवरि अवत्त० णत्थि । एवं सत्तमाए । पढमादि जाव छट्ठि त्ति एवं चेव । णवरि[1] सगट्ठिदी देसूणा । हस्स-रदि-अरदि-सोग० भयभंगो ।

§ ४५६. तिरिक्खेसु मिच्छ०-अणंताणु०४ ओघं । णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणी० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि । अवत्त० भुज०भंगो । सम्म०-

वृद्धि अनन्तगुणहानि और अवक्तव्यपदका जघन्य अन्तरकाल दोका एक समय और अवक्तव्यपदका अन्तर्मुहूर्त है तथा सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनकी अनन्तगुण-वृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय और अवक्तव्य पदका अन्तर्मुहूर्त है और सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है।

**विशेषार्थ**—पहले भुजगार अनुयोगद्वारमें सब प्रकृतियोंके भुजगारादि पदोंके अन्तर-कालका स्पष्टीकरण कर आये हैं। उसे ध्यानमें रखकर यहाँ स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। समझमें आने लायक होनेसे यहाँ अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया है।

§ ४५५. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी-चतुष्क, हास्य और रतिकी छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य पदका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और सबका उत्कृष्ट अन्तर-काल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनकी अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार बारह कषाय, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पदका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ इसका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए। पहली पृथिवीसे लेकर छटी पृथिवी तक इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। तथा इनमें हास्य, रति, अरति और शोकका भंग भयके समान है।

§ ४५६. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय

१. आ०प्रतौ सत्तमाए। एव पढमादि जाव छट्ठि त्ति। णवरि इति पाठः।

सम्मामि०-अपच्चक्खाण०४-इत्थिवे०-पुरिसवे० ओघं। अट्ठक०-छण्णोक० ओघ-संजलणभंगो। णवुंस० ओघं। णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणी० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-सव्वमणुस-सव्वदेवा त्ति सव्वपयडी० पंचवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० भुज०अवट्ठिदभंगो। अणंतगुणवड्ढि-हाणी० भुजगारउदीरणाए भुज०अप०भंगो। अवत्त० भुजगारअवत्त०भंगो। एवं जाव०।

§ ४५७. णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-णवुंस० छवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० णिय० अत्थि। अवत्त० भयणिज्जं। सम्म०-इत्थिवे०-पुरिसवेद० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० णिय० अत्थि। सेसप० भयणिज्जा। सम्मामि० सव्वपदा भयणिज्जा। सोलसक०-छण्णोक० सव्वपदा णिय० अत्थि। एवं तिरिक्खा०।

§ ४५८. सव्वणिरय-पंचिंदियतिरिक्खतिय-मणुसतिय-देवा जाव णवगेवज्जा त्ति सम्मामि० ओघं। सेसपय० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० णिय० अत्थि। सेसपदा भयणिज्जा। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपय० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० णिय० अत्थि। सेसपदा भयणिज्जा। मणुसअपज्ज० सव्वपय० सव्वपदा

---

है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है। अवक्तव्यपदका भंग भुजगारके समान है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क, स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और छह नोकषायोंका भंग ओघ संज्वलनके समान है। नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसकी अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानिका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्व-प्रमाण है। सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें सब प्रकृतियोंकी पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित पदका भंग भुजगार अनुयोगद्वारके अवस्थित पदके समान है। अनन्तगुणवृद्धि औरअनन्तगुणहानिका भंग भुजगार उदीरणाके भुजगार और अल्पतर पदके समान है। अवक्तव्य पदका भंग भुजगारके अवक्तव्य पदके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४५७. नाना जीवोंका अवलम्बन लेकर भंगविचयानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकार है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदकी छह वृद्धि, छह हानि और अवस्थित पद नियमसे हैं। अवक्तव्य पद भजनीय है। सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि नियमसे है। शेष पद भजनीय है। सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद भजनीय हैं। सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पद नियमसे है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ४५८. सब नारकी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिक, मनुष्यत्रिक और सामान्य देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंकी अनन्तगुण-वृद्धि और अनन्तगुणहानि नियमसे है। शेष पद भजनीय है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त तथा अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी अनन्तगुणवृद्धि और अनन्त-गुणहानि नियमसे है। शेष पद भजनीय हैं। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद

**मयणिज्जा । सव्वत्थ भंगा जाणिय वत्तव्वा । एवं जाव० ।**

**§ ४५९. भागाभागाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–णवुंस० अणंतगुणवड्ढी० दुभागो सादिरेयो । हाणी० दुभागो देसूणो । अवत्त० अणंतभागो । सेसपदा० असंखे०भागो । एवं सोलसक०–अट्ठणोक०–सम्म०–सम्मामि० । णवरि अवत्त० केवडिओ भागो ? असंखे०भागो । एवं तिरिक्खा० ।**

**§ ४६०. सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति सव्वपय० अणंतगुणवड्ढी० दुभागो सादिरेगो । हाणी० दुभागो देसूणो । सेसपदा० असंखे०भागो । मणुसेसु मिच्छ०–सोलणक०–सत्तणोक० णारयभंगो । सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवेद० अणंतगुणवड्ढी० दुभागो सादिरेओ । हाणी० दुभागो देसूणो । सेसपदा० संखे०भागो । मणुसपज्ज०–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० सव्वपयडी० अणंतगुणवड्ढी० दुभागो सादिरे० । अणंतगुणहा० दुभागो देसू० । सेसपदा० संखे०भागो । एवं जाव० ।**

भजनीय है। सर्वत्र भंग जानकर कहना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४५९. भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदकी अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। उनसे अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव अनन्तवें भागप्रमाण हैं। शेष पदरूप अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातवे भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सोलह कषाय, आठ नोकषाय, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव कितने है ? असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ४६०. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण है। अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। शेष पदरूप अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातवे भागप्रमाण हैं। मनुष्योंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग नारकियोंके समान है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। शेष पदरूप अनुभागके उदीरक जीव संख्यातवे भागप्रमाण हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं। अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। शेष पदरूप अनुभागके उदीरक जीव संख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ ४६१. परिमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० सव्वपदा० केत्तिया? अणंता। णवरि मिच्छ०-णवुंस० अवत्त० केत्ति०? असंखेज्जा। सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवे०-पुरिसवे० सव्वपदा० केत्ति०? असंखेज्जा। एवं तिरिक्खा०।**

**§ ४६२. सव्वणिरय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा जाव णवगेवज्जा त्ति सव्वपयडी० सव्वपदा० केत्तिया? असंखेज्जा। मणुसाणं पंचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि मिच्छ०-णवुंस० अवत्त० इत्थिवे०-पुरिसवे०-सम्म०-सम्मामि० सव्वपदा० के०? संखेज्जा। मणुसपज्ज०-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा सव्वपय० सव्वपदा० केत्ति०? संखेज्जा। अणुदिसादि अवराजिदा त्ति सव्वपय० सव्वपदा० के०? असंखेज्जा। णवरि सम्म० अवत्त० केत्ति०? संखेज्जा। एवं जाव०।**

**§ ४६३. खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० सव्वपदा० सव्वलोगे। णवरि मिच्छ०-णवुंस० अवत्त० लोग० असंखे०भागे। सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिसवेद० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागे।**

---

§ ४६१. परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पदोंके अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं। अनन्त हैं। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पदरूप अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ४६२. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पदोंके अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव तथा स्त्रीवेद, पुरुषवेद, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद-अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। अनुदिशसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४६३. क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पद-अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र सर्व लोकप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पद-अनुभागके उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। शेष गतियोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके

एवं तिरिक्खा० । सेसगदीसु सव्वपयडी० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागे । एवं जाव० ।

§ ४६४. पोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०—णवुंस० सव्वपद० सव्वलोगो । णवरि मिच्छ० अवत्त० लोग० असंखे०भागो अट्ठ बारह चोद्दस० दे० । णवुंस० अवत्त० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । सम्म०— सम्मामि० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा । सोलसक०—छण्णोक० सव्वपद० सव्वलोगो । इत्थिवेद—पुरिसवेद० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० सव्वलोगो वा । णवरि अवत्त० णवुंस०भंगो ।

§ ४६५. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०—सोलसक०—सत्तणोक० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । णवरि मिच्छ० अवत्त० लोग० असंखेभागो पंच चोद्दस० । सम्म० सम्मामि० खेत्त । एवं विदियादि सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । णवरि

---

उदीरक जीवोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४६४. स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम बारह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तथा नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग, त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका भंग नपुंसकवेदके समान है ।

विशेषार्थ—स्वामित्व और भुजगार अनुयोगद्वारमें प्रतिपादित स्पर्शनके स्पष्टीकरणको ध्यानमें रख कर प्रकृतमें खुलासा कर लेना चाहिए । विशेष वक्तव्य न होनेसे यहाँ अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया । आगे भी इसी न्यायसे स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए ।

§ ४६५. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पद-उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व के अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम पाँच भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है । इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए ।

सत्तमाए मिच्छ० अवत्त० खेत्त०। पढमाए खेत्तभंगो।

§ ४६६. तिरिक्खेसु मिच्छ० सव्वपद० सव्वलोगो। णवरि अवत्त० सत्त चोद्दस०। सम्म० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस०। णवरि अवत्त० खेत्तं। सम्ममि० खेत्तं। सोलसक०–सत्तणोक० ओघं। इत्थिवेद–पुरिसवेद० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा।

§ ४६७. पंचिं०तिरि०तिये सम्म०–सम्मामि० तिरिक्खोघं। सेसपय० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। णवरि मिच्छ० अवत्त० सत्त चोद्दस०। तिण्णिवेद० अवत्त० खेत्तं। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०–णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० अवत्तव्वं च णत्थि।

§ ४६८. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० सव्वपयडीणं सव्वपद० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा। मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो। णवरि सम्म० खेत्तं। मणुसिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० खेत्तं।

---

इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। इतनी विशेषता और है कि सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। पहली पृथिवीमें भंग क्षेत्रके समान है।

§ ४६६. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्वके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम सात भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्वके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है। सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ४६७. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। शेष प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंने त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम सात भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन वेदोंके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनिनियोंमें स्त्रीवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा भी नहीं है।

§ ४६८. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग क्षेत्रके समान है। मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है।

§ ४६९. देवेसु सम्म०–सम्मामि० ओघं। सेसपयडीणं सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा। एवं सोहम्मीसाण०। भवण०– वाणवें०– जोदिसि० सम्म०–सम्मामि० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस०। सेसपयडी० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस०। सणक्कुमारादि जाव सहस्सार त्ति सव्वपय० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्द०। आणदादि जाव अच्चुदा त्ति सव्वपय० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस०। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव०।

४७०. कालाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसे० य। ओघेण मिच्छ०– सोलसक०–सत्तणोक० सव्वपदा० सव्वद्धा। णवरि मिच्छ०–णवुंस० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। सम्म०–इत्थिवे०–पुरिसवे० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० सव्वद्धा। सेसपदा० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असं०भागो। सम्मामि०

§ ४६९. देवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग और कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रस-नालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंने लोकके असं-ख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आगेके देवोमें क्षेत्रके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४७०. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पद-अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। शेष पद-अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है

एवं चेव । णवरि अणंतगुणवड्ढि–हाणी० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एवं तिरिक्खा० ।

४७१. सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-देवा जाव णवगेवज्जा त्ति सम्मामि० ओघं । सेसपय० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० सव्वद्धा । सेसपदा० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो ।

४७२. मणुसा० पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि मिच्छ०–णवुंस० अवत्त० सम्म०–इत्थिवे०–पुरिस० अवट्ठि०–अवत्त० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया । सम्मामि० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । पंचवड्ढि-हाणी० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अवट्ठि०–अवत्त० जह० एयस०, उक्क० सखे० समया । एवं मणुसपज्ज०–मणुसिणी० । णवरि मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० अवट्ठि०–अवत्त० जह० एगस०, उक्क० संखे० समया । णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि । मणुसिणीसु पुरिस०–णवुंस० णत्थि । मणुसअपज्ज० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । सेसपदा० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो ।

---

और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए ।

§ ४७१. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सामान्य देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। शेष पद-अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ४७२. मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका तथा सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थित और अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। सम्यग्मिथ्यात्वके अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। पाँच वृद्धि और पाँच हानि अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अवस्थित और अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके अवस्थित और अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। शेष पद-अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ४७३. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपय० अणंतगुणवड्ढि-हाणी० सव्वद्धा। सेसपदा० जह० एयस०,उक्क० आवलि० असं०भागो। णवरि सम्म० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। णवरि सव्वट्ठे सव्वपय० अवट्ठि०-अवत्त० जह० एयस०, उक्क संखेज्जा समया। एवं जाव०।

§४७४. अंतराणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० सव्वपदा० णत्थि अंतरं। णवरि मिच्छ० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० सत्त रादिंदियाणि। णवुंस० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० चउवीसमुहुत्तं। सम्म० पंचवड्ढि-हाणि०--अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अवत्त० जह० एगस०, उक्क० सत्त रादिंदियाणि। अणंतगुणवड्ढि-हाणी० णत्थि अंतरं। एवमित्थिवेद-पुरिसवेद०। णवरि अवत्त० जह० एगस०, उक्क० चउवीसमुहुत्तं। एवं सम्मामि०। णवरि अणंतगुणवड्ढि-हाणि-अवत्त० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो।

§ ४७५. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० पंचवड्ढि-हाणि-अवट्ठि० जह० एयस०,

---

§ ४७३. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका काल सर्वदा है। शेष पद-अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इतनी विशेषता है कि सर्वार्थसिद्धिमें सब प्रकृतियोंके अवस्थित और अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४७४. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पद अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात रात्रि-दिन है। नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल चौबीस मुहूर्त है। सम्यक्त्वके पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात रात्रि-दिन है। अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल चौबीस मुहूर्त है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अनन्तगुणवृद्धि, अनन्तगुणहानि और अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ४७५. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित अनु-

उक्क० असंखेज्जा लोगा। अवत्त० ओघं। सेसपदा० णत्थि अंतरं। एवं सोलसक०–सत्तणोक०। णवरि अवत्त० जह०[1] एयस०, उक्क० अंतोमु०। णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि। सम्म०–सम्मामि० ओघं। एवं सव्वणिरय०।

§ ४७६. तिरिक्खा० ओघं। पंचिं०तिरिक्खतिये मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–छण्णोक० णारयभंगो। तिण्णिवेदा० मिच्छत्तभंगो। णवरि अवत्त० ओघं। पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०–णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि। पंचिं०तिरिक्खअपज्ज० मिच्छ०–णवुंस० पंचवड्ढि–हाणि–अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। सेसपदाणं णत्थि अंतरं। एवं सोलसक०–छण्णोक०। णवरि अवत्त० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०।

§ ४७७. मणुसतिये पंचिं०तिरिक्खतियभंगो। णवरि मणुसिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं। मणुसअपज्ज० मिच्छ०–सोलसक०–

---

भागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोका भंग ओघके समान है। शेष पद-अनुभाग उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इतनी विशेषता और है कि इनमें नपुंसकवेदकी अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ ४७६. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग नारकियोंके समान है। तीन वेदोंका भंग मिथ्यात्वके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका भंग ओघके समान है। पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नही है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनिनियोंमें स्त्रीवेदकी अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। शेष पद-उदीरकोंका अन्तरकाल नही है। इसी प्रकार सोलह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

§ ४७७. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके पाँच वृद्धि, पाँच हानि और अवस्थित अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। शेष पद अनुभाग-

---

१ ता०प्रतौ णवरि जह० इति पाठः।

सत्तणोक० पंचवड्डि–हाणि–अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। सेसपदा० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो।

§ ४७८. देवाणं पंचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद–पुरिसवेद० अवत्त० णत्थि। एवं भवणादि सोहम्मा त्ति। एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० अवत्त० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं सव्वट्ठे पलिदो० संखे०भागो। अणंतगुणवड्डि–हाणी० णत्थि अंतरं। सेसपदा० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। एवं बारसक०–सत्तणोक०। णवरि अवत्त० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। पुरिसवे० अवत्त० णत्थि। एवं जाव०।

§ ४७९. भावाणु० सव्वत्थ ओदइओ भावो।

§ ४८०. अप्पाबहुआणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–णवुंस० सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० अणंतगुणा। अणंतभागवड्डि–हाणि० दो वि सरिसा असंखे०गुणा। असखे०भागवड्डि–हाणि० दो वि सरिसा असंखे०गुणा।

---

के उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ४७८. देवोंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्प तकके देवोंमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है तथा सर्वार्थसिद्धिमें पल्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण है। अनन्तगुणवृद्धि और अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। शेष पद-अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। इसी प्रकार बारह कषाय और सात नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य अनुभागके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। यहाँ पुरुषवेदकी अवक्तव्य अनुभाग-उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ४७९. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है।

§ ४८०. अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे अनन्तभागवृद्धि और अनन्त-भागहानि अनुभागके उदीरक जीव परस्पर दोनों ही सदृश होकर असंख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव परस्पर दोनों ही सदृश होकर असंख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि अनुभागके उदी-

संखे०भागवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा संखे०गुणा। संखे०गुणवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा संखे०गुणा। असंखे०गुणवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा असंखे०गुणा। अणंतगुणहाणि०[1] असंखे०गुणा। अणंतगुणवड्ढि० विसेसाहिया।

§ ४८१. सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–अट्ठणोक० सव्वत्थोवा अवट्ठि०। अणंतभागवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा असंखे०गुणा। असंखे०भागवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा असंखेज्जगुणा। संखे०भागवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा संखे०गुणा। संखे०गुणवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा संखे०गुणा। असंखे०गुणवड्ढि–हाणि० दो वि सरिसा असंखे०गुणा। अवत्त० असंखे०गुणा। अणंतगुणहाणि० असंखे०गुणा। अणंतगुणवड्ढि० विसेसाहिया। एवं तिरिक्खा०।

§ ४८२. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० असंखे०गुणा। उवरि ओघं। सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–सत्तणोक० ओघभंगो। णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि। एवं सव्वणिरए। पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ० णारयभंगो।

रक जीव परस्पर दोनों ही सदृश होकर संख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर संख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं।

§ ४८१. सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अनन्तभागवृद्धि और अनन्तभागहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर असंख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर असंख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर संख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर संख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव दोनों ही परस्पर सदृश होकर असंख्यातगुणे हैं। उनसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ४८२. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। इससे आगेका भंग ओघके समान है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। पञ्चन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्वका भंग नारकियों-

१. ता०प्रतौ असंखे०गुणा। [ अवत्त० असंखे०गुणा ] अणंतगुणहाणि० इति पाठः।

**सोलसक०–अट्ठणोक०–सम्म०–सम्मामि० ओघं। णवुंस० मिच्छत्तभंगो। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। णवुंस० पुरिसभंगो। जोणिणीसु पुरिसवेद–णवुंस० णत्थि। इत्थिवे० अवत्त० णत्थि।**

**§ ४८३. पंचिं०तिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० ओघं। णवरि मिच्छ०–णवुंस० अवत्तव्वं णत्थि। मणुसा० पंचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवे०–पुरिसवेद० संखे०गुणं कादव्वं। एवं पज्जत्त-मणुसिणीसु। णवरि संखे०गुणं कादव्वं। पज्जत्तेसु इत्थिवेदो णत्थि। णवुंस० पुरिसवेदभंगो। मणुसिणी० पुरिसवे०–णवुंस० णत्थि। इत्थिवे० सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० संखे०-गुणा। उवरि मणुस्सोघं।**

**§ ४८४. देवाणं पचिंदियतिरिक्खभंगो। णवरि णवुंस० णत्थि। इत्थिवे०–पुरिसवे० अवत्त० णत्थि। एवं भवणादि सोहम्मा त्ति। एवं सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि।**

**§ ४८५. अणुदिसादि जाव अवराजिदा त्ति सम्म० सव्वत्थोवा अवत्त०।**

के समान है। सोलह कषाय, आठ नोकषाय, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। नपुंसकवेदका भंग मिथ्यात्वके समान है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है। इनमें नपुंसकवेदका भंग पुरुषवेदके समान है। योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। इनमें स्त्रीवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है।

§ ४८३. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहते समय असंख्यातगुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें असंख्यातगुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए। मनुष्य पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है। इनमें नपुंसकवेदका भंग पुरुषवेदके भंगके समान है। मनुष्यनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। इनमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं। इससे आगे सामान्य मनुष्योंके समान भंग है।

§ ४८४. देवोंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्प तकके देवोंमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है।

§ ४८५. अनुदिशसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सम्यक्त्व अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तभागवृद्धि और अनन्तभागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं।

**अवट्ठि० असंखे०गुणा। अणंतभागवड्ढि--हाणि० असंखे०गुणा। असंखे०भागवड्ढि--हाणि० असंखे०गुणा। संखे०भागवड्ढि--हाणि० संखे०गुणा। संखे०गुणवड्ढि--हाणि० संखे०गुणा। असंखे०गुणवड्ढि--हाणि० असंखे०गुणा। अणंतगुणहाणि० असंखे०गुणा। अणंतगुणवड्ढि० विसेसाहिया। बारसक०--छण्णोक० सव्वत्थोवा अवट्ठि०। अणंतभागवड्ढि--हाणि० असंखे०गुणा। असंखे०भागवड्ढि--हाणि० असंखे०गुणा। संखे०भागवड्ढि--हाणि० संखे०गुणा। संखे०गुणवड्ढि--हाणि० संखे०गुणा। असंखे०गुणवड्ढि--हाणि० असंखे०गुणा। अवत्तव्व० असंखेज्जगुणा। अणंतगुणहाणि० असंखे०गुणा। अणतगुणवड्ढि० विसेसा०। एवं पुरिसवेद०। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं सव्वट्ठे। णवरि संखेज्जगुणं कादव्वं। एवं जाव०।**

**एवमप्पाबहुअं समत्तं। तदो वड्ढि समत्ता।**

**§ ४८६. एत्थ ट्ठाणपरूवणे कीरमाणे अट्ठावीसंपयडीणमुत्तरपयडिअणुभागविहत्तिभंगो। तदो 'को व के'य अणुभागे' त्ति पदस्स अत्थो समत्तो।**

उनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। बारह कषाय और छह नोकषायोंके अवस्थित अनुभागके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अनन्तभागवृद्धि और अनन्तभागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अवक्तव्य अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणहानि अनुभागके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अनन्तगुणवृद्धि अनुभागके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसकी अवक्तव्य अनुभाग उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि असंख्यातगुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त होनेपर वृद्धि समाप्त हुई।

§ ४८६. यहाँ पर स्थानोंका कथन करनेपर अट्ठाईस प्रकृतियों सम्बन्धी उत्तर प्रकृति अनुभागविभक्तिके समान भंग है। इस प्रकार 'को व के य अणुभागे' इस पदका अर्थ समाप्त हुआ।

*** पदेसुदीरणा दुविहा—मूलपयडिपदेसुदीरणा उत्तरपयडिपदेसुदीरणा च ।**

§ १. अणुभागुदीरणाविहासणाणंतरमेत्तो गाहासुत्तसूचिदा पदेसुदीरणा विहासियव्वा । सा पुण मूलुत्तरपयडिपदेसुदीरणाभेदेण दुविहा चेव होइ, तत्तो वदिरित्तपदेसुदीरणाणुवलंभादो । एवं च दुवियप्पा पदेसुदीरणा एत्थाहिकया त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो । संपहि 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायमवलंबिय मूलपयडिपदेसुदीरणा चेव ताव समुक्कित्तणादि-अप्पाबहुअपज्जंतेहि अणियोगद्दारेहिं विहासियव्वा त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरं सुत्तमाह—

*** मूलपयडिपदेसुदीरणं मग्गियूण ।**

§ २. एदेण सुत्तावयवेण समप्पिदमूलपयडिपदेसुदीरणमुच्चारणाइरियोवदेसबलेण पवंचयिस्सामो[1] । तं जहा—मूलपयडिपदेसुदीरणाए तत्थेमाणि तेवीसमणिओगद्दाराणि—समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुए त्ति भुज०-पदणिक्खेव-वड्ढिउदीरणा चेदि ।

§ ३. समुक्कित्तणा दुविहा—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोहणी० अत्थि उक्कस्सिया पदेसुदीरणा । एवं चदुगदीसु । एवं जाव ।

* प्रदेश-उदीरणा दो प्रकारकी है—मूल प्रकृति प्रदेश-उदीरणा और उत्तर प्रकृति प्रदेश-उदीरणा ।

§ १. अनुभाग उदीरणाके विशेष व्याख्यानके अनन्तर आगे गाथासूत्रके द्वारा सूचित हुई प्रदेश उदीरणाका व्याख्यान करना चाहिए। किन्तु वह मूल प्रकृति प्रदेश-उदीरणा और उत्तर प्रकृति प्रदेश-उदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी ही होती है, क्योंकि उनसे अतिरिक्त प्रदेश-उदीरणा नहीं पाई जाती है । इस प्रकार दो प्रकारकी प्रदेश-उदीरणा यहाँपर अधिकृत है इस प्रकार यह इस सूत्रका भावार्थ है । अब 'जिस प्रकारका उद्देश्य हो उस प्रकारका निर्देश किया जाता है' इस न्यायका अवलम्बन लेकर सर्व प्रथम समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व पर्यन्त अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे मूल प्रकृति प्रदेश-उदीरणाका ही व्याख्यान करना चाहिए यह कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* मूल प्रकृति प्रदेश-उदीरणाका अनुमार्गण कर ।

§ २. इस सूत्रावयवके द्वारा समर्पित मूल प्रकृति प्रदेश-उदीरणाका उच्चारणाचार्यके उपदेशके बलसे व्याख्यान करेंगे । यथा—मूल प्रकृति प्रदेश-उदीरणामें वहाँ ये तेईस अनुयोगद्वार होते हैं—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक तथा भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धि उदीरणा ।

§ ३. समुत्कीर्तना दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा है । इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

[1] आ०प्रतौ पवंचयं वत्तयिस्सामो इति पाठः ।

**§ ४. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० अत्थि जह० पदेसुदीरणा। एवं चदुगदीसु। एवं जाव०।**

**§ ५. सव्वुदीरणा-णोसव्वुदीरणा० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वं पदेसग्गमुदीरेमाणस्स सव्वुदीरणा। तदूणं णोसव्वुदीरणा। एवं जाव०।**

**§ ६. उक्क०-अणुक्क० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वुक्कस्सय पदेसग्गमुदीरेमाणस्स उक्क०पदेसुदीरणा। तदूणमणुक्कस्सपदेसुदीर०। एवं जाव०।**

**§ ७. जह०- अजह० दुवि० णिद्दे०—ओघ० आदेसे०। ओघे० सव्वजहण्णयं पदेसग्गमुदीरेमा० जह०पदेसुदी०। तदुवरिमजह०पदेसुदीर०। एवं जाव०।**

**§ ८. सादि-अणादि-धुव-अद्धुवाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० जह० अजह० किं सादि०४? सादि-अद्धुवा। अणुक्क० किं सादि०४? सादि-अणादि-धुव-अद्धुवा०। आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुक्क०**

§ ४. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश-उदीरणा है। इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक कथन करना चाहिए।

§ ५. सर्व प्रदेश-उदीरणा और नोसर्व प्रदेश-उदीरणाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सर्वप्रदेशाग्रकी उदीरणा करनेवालेके सर्व प्रदेश-उदीरणा होती है और उससे कम प्रदेशाग्रकी उदीरणा करनेवालेके नोसर्व प्रदेश-उदीरणा होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६. उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा और अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सबसे उत्कृष्ट प्रदेशाग्रकी उदीरणा करनेवालेके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा होती है तथा उससे कम प्रदेशाग्रकी उदीरणा करनेवालेकी अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ७. जघन्य प्रदेश-उदीरणा और अजघन्य प्रदेश-उदीरणा ओघ और आदेशके भेदसे दो प्रकारकी है। ओघसे सबसे जघन्य प्रदेशाग्रकी उदीरणा करनेवालेके जघन्य प्रदेश-उदीरणा होती है और उससे अधिक प्रदेशाग्रकी उदीरणा करनेवालेके अजघन्य प्रदेश-उदीरणा होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ८. सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुवानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणा क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है? सादि और अध्रुव है। अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है? सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव है। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेश-उदीरणा क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है? सादि

**जह० अजह० पदे० किं सादि०४ ? सादि-अद्धुवा। एवं चदुगदीसु। एवं जाव०।**

**§ ९. सामित्तं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० सुहुमसांपराइयखवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयउदीरेमाणगस्स। एवं मणुसतिए।**

**§ १०. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० असंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स। एवं सव्वणेरइय०–सव्वदेवा त्ति। तिरिक्खेसु मोह० उक्क० पदे० कस्स ? अण्णद० संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स। एवं पंचिंदियतिरिक्ख-**

---

और अध्रुव है। इसी प्रकार चारों गतियोंमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक कथन करना चाहिए।

**विशेषार्थ**—मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके अपने कालमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर होती है, इसलिए इसे सादि कहा है। तथा ऐसी उदीरणा भव्योंके ही होती है, इसलिए इस अपेक्षासे इसे अध्रुव कहा है। शेष दो भंग ( अनादि ध्रुव ) इसके सम्भव नहीं है। तथा जो भव्य जीव इसके पूर्व मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा निरन्तर करता आ रहा है उसकी अपेक्षा तो अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके अनादि और अध्रुव ये दो भंग बनते हैं और जो जीव उपशमश्रेणि पर आरोहण कर और इस प्रकार मोहनीय कर्मका अनुदीरक होकर पुन: उपशमश्रेणिसे उतरकर उसकी उदीरणा करने लगता है उसके इस अपेक्षासे मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाका सादि भंग बन जाता है, इसलिए इसे सादि कहा है। तथा अभव्योंकी अपेक्षा इसे ध्रुव कहा है। इस प्रकार मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा चारों प्रकारकी बन जाती है। मोहनीयकी जघन्य प्रदेश-उदीरणा सर्व संक्लेश परिणामवाले या तत्प्रायोग्य संक्लेशपरिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है। यतः यह कादाचित्क है, इसलिए मोहनीयकी जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणा सादि और अध्रुव कही है, क्योंकि जब कि जघन्य प्रदेश उदीरणा कादाचित्क है तो अजघन्य प्रदेश उदीरणा कादाचित्क होनेमें कोई बाधा नहीं आती। यह तो ओघ प्ररूपणाका तात्पर्य है। आदेशसे चारों गतियोंमें विचार करनेपर चारों ही गतियाँ कादाचित्क हैं, इसलिए इनमें उत्कृष्ट आदि चारों प्रकारकी प्रदेश उदीरणा स्वभावतः सादि और अध्रुव ही प्राप्त होती है। इसी प्रकार अन्य मार्गणाओंमें भी विचार कर लेना चाहिए।

§ ९. स्वामित्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा किसके होती है ? एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर अन्तिम समयकी उदीरणा करनेवाले सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होती है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए।

§ १०. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा किसके होती है ? सर्व विशुद्ध अन्यतर असंयत सम्यग्दृष्टिके होती है। इसी प्रकार सब नारकी और सब देवोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा किसके होती है ? सर्वविशुद्ध अन्यतर संयतासंयतके होती है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा

तिये। पंचिं०तिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० पदे० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गविसुद्धस्स। एवं जाव०।

§ ११. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जह० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स वा। एव सव्वणिरय०–सव्वतिरिक्ख०–सव्वमणुस–देवा जाव सहस्सारा त्ति। णवरि पंचिदियतिरि०अपज्ज–मणुसअपज्ज० मोह० जह० पदे० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। आणदादि जाव णवगेवज्जा त्ति मोह० जह० पदे० कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति मोह० जह० पदे कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गसकिलिट्ठस्स। एवं जाव०।

§ १२. कालो दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० पदेसुदी० केव० ? जह० उक्क० एगस०। अणुक्क० पदे० तिण्णि भंगा। जो सो सादि० सपज्जव० तस्स इमो णिद्देसो—जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपो०परियट्ट।

---

किसके होती है ? तत्प्रायोग्य विशुद्ध अन्यतरके होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ११. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्व संक्लिष्ट या तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट मिथ्यादृष्टिके होती है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सामान्य देवोंसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट अन्यतरके होती है। आनत कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट अन्यतरके होती है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ १२. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाका कितना काल है ? जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाके तीन भंग है। उनमें जो सादि-सान्त भंग है उसका यह निर्देश है—जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा क्षपकश्रेणिके दशवें गुणस्थानमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर एक समय तक होती है, इसलिए इसका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय कहा है। तथा जो अर्ध पुद्गल परिवर्तन नामवाले कालके आदिमें सम्यग्दर्शन प्राप्तकर क्रमसे उपशमश्रेणि पर आरोहण करके मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका प्रारम्भ करता है और उक्त कालके अन्तमें क्षपकश्रेणि पर आरोहण कर

§ १३. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी। एवं सत्तसु पुढवीसु। णवरि अणुक्क० अप्पप्पणो सगट्ठिदी।

§ १४. तिरिक्खेसु मोह० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। पंचिंदियतिरिक्खतिये मोह० उक्क० पदे० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०-भागो। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी। पंचिं०तिरिक्खअपज्ज०—मणुस-अपज्ज० मोह० उक्क० पदे० जह० एगम०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क०

---

अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाका अन्त करता है उसके मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट काल उपार्ध पुद्‌गल परिवर्तन प्रमाण प्राप्त होनेसे वह उक्त प्रमाण कहा है। इसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त भी इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए। अर्थात् जो अन्तर्मुहूर्तके भीतर दूसरी बार श्रेणि पर आरोहण करता है उसके मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होनेसे वह उक्त प्रमाण कहा है।

§ १३. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है। इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणाका उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है।

विशेषार्थ—जो असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी एक समय तक सर्व विशुद्धिको प्राप्त कर मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा करता है उसके मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त होता है और जो उक्त प्रकारका नारकी जीव लगातार उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता रहता है वह आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा कर सकता है, क्योंकि एक जीवकी अपेक्षा इसका उत्कृष्ट काल ही इतना है। यही कारण है कि यहाँ मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। यहाँ इसकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। शेष कथन सुगम है।

§ १४. तिर्यञ्चोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्‌गल परिवर्तनोंके बराबर है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्यत्रिकमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश

**जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । मणुसतिये मोह० उक्क० जह० उक्क० एगस०, अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी । देवेसु णारयभंगो । एवं भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति । णवरि सगट्ठिदी भाणिदव्वा । एवं जाव० ।**

**§ १५. जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो —ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । अजह० जह० एगस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा० । एवं तिरिक्खोघं ।**

**§ १६. आदेसेण णेरइय० मोह० जह० ओघं । अजह० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी । एवं सव्वणेरइय० । णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० अप्पप्पणो समट्ठिदी । पंचिंदियतिरिक्खचउक्क-मणुसचउक्क-देवा भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति एवं**

---

उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है तथा अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। देवोंमें नारकियोंके समान भंग है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिये। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिकमेंसे जो मनुष्य क्षपकश्रेणि पर आरोहण कर सूक्ष्मसाम्पराय होकर उसके कालमें एक समय अधिक आवलिकाल शेष रहने पर मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है उसके मात्र एक समय तक मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती है, इसलिए इसका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय कहा है। तथा जो मनुष्य उपशमश्रेणिसे उतर कर तथा एक समयके लिए सूक्ष्मसाम्पराय होकर मर कर द्वितीय समयमें देव हो जाता है उसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त होनेसे वह उक्त काल प्रमाण कहा है। शेष सब कथन सुगम है।

§ १५. जघन्य प्रदेश उदीरणाका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश-उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सर्व संक्लिष्ट या तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट जीवके होती है और इसका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए यहाँ ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १६. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट काल ओघके समान है। अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी स्थितिप्रमाण है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चचतुष्क, मनुष्यचतुष्क, सामान्य देव और भवनवासियोंसे

चेव। णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० अप्पप्पणो समट्ठिदी। एवं जाव०।

§ १७. अंतरं दुविहं—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० णत्थि अंतरं। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०।

§ १८. आदेसेण णेरय० मोह० उक्क० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं सत्तसु पुढवीसु। णवरि सगट्ठिदी।

---

लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—ओघ प्ररूपणाके स्पष्टीकरणको ध्यानमें रखकर यहाँ खुलासा कर लेना चाहिए।

§ १७. अन्तर दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका अन्तरकाल नहीं है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—क्षपकसूक्ष्मसाम्परायिक जीवके उक्त गुणस्थानमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती है, इसलिए इसके अन्तरकालका निषेध किया है। तथा जो सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमश्रेणिका जीव एक समयके लिए अनुदीरक होकर और दूसरे समयमें मरकर देव हो जाता है उसकी अपेक्षा मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय कहा है। तथा उपशान्तमोहका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त होनेके कारण मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है।

§ १८. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए।

**विशेषार्थ**—किसी नारकीके मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके योग्य परिणाम एक समयके अन्तरसे हो और किसी जीवके यथायोग्य भवके प्रारम्भ और अन्तमें हो यह दोनों सम्भव है। यही कारण है कि यहाँ मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी स्थितिप्रमाण कहा है। तथा उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जो जघन्य और उत्कृष्ट काल है वही यहाँ अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल है, इसलिए वह उक्त काल प्रमाण कहा है। सातों पृथिवियोंमें अपनी-अपनी स्थितिको जानकर मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल ले आना चाहिए। इसके सिवाय अन्य कोई विशेषता नहीं है।

**§ १९. तिरिक्खेसु मोह० उक्क० जह० एयस०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। पंचिंदियतिरिक्खतिये मोह० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। पंचिं०तिरि०अपज्ज० मोह० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं मणुसअपज्ज०।**

**§ २०. मणुसतिये मोह० उक्क० णत्थि अंतरं। अणुक्क० जहण्णुक्क० अंतोमु०। देवाणं णेरइयभंगो। एवं भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति। णवरि अप्पप्पणो सगट्ठिदी जाणियव्वा। एवं जाव०।**

---

§ १९. तिर्यञ्चोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्तकोंमें जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—सामान्य तिर्यञ्चोंकी कायस्थिति अनन्त कालप्रमाण है। परन्तु इनमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा संयतासंयत तिर्यञ्च ही करता है। यतः ऐसा जीव तिर्यञ्च पर्यायमें अधिकसे अधिक उपार्ध पुद्गल परिवर्तन काल तक ही रह सकता है। उसके बाद वह यथायोग्य मनुष्य पर्याय पाकर नियमसे मोक्षका अधिकारी होता है। इसलिए यहाँ मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण प्राप्त होनेसे वह उक्त कालप्रमाण कहा है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिककी उत्कृष्ट कायस्थिति पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है, इसलिए इनमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है। तथा तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट कायस्थिति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। इसलिए इनमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। यहाँ सर्वत्र अपनी-अपनी उक्त स्थितिके प्रारम्भमें और अन्तमें यथायोग्य मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करा कर यह अन्तरकाल ले आना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ २०. मनुष्यत्रिकमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका अन्तरकाल नहीं है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। देवोंमें नारकियोंके समान भंग है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति जाननी चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २१. जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा० । अज० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० ।

§ २२. आदेसेण णेरइय० मोह० जह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं सत्तसु पुढवीसु । णवरि अप्पप्पणो सगट्ठिदी देसूणा ।

§ २३. तिरिक्खेसु ओघं । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०-भागो । पंचिं०तिरिक्खतिये मोह० जह० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।

---

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिकमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिकके उसके कालमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर ही होती है। यतः यह दूसरी बार प्राप्त नहीं हो सकती, इसलिए इसके अन्तरकालका निषेध किया है। तथा उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योंके उपशान्तमोह होनेके पूर्व और यथास्थान बादमें मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती है, उपशान्तमोहमें अनुदीरक रहता है और उपशान्तमोहका काल अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए यहाँ मोहनीयकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट 'अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २१. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर-काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है। अजघन्य प्रदेश उदीरणा-का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

**विशेषार्थ**—ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सर्व संक्लिष्ट या तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट मिथ्यादृष्टि जीवके होती है। यतः ऐसे परिणाम कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक पूर्वोक्त अनन्त कालके अन्तरसे हो सकते है, इसीसे यहाँ मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल कहा है। तथा अजघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला जो जीव एक समयके लिए जघन्य प्रदेश उदीरणा करके पुनः अजघन्य प्रदेश उदीरणा करने लगता है उसके अजघन्य प्रदेश उदीरणा-का जघन्य अन्तरकाल एक समय प्राप्त होनेसे वह उक्त कालप्रमाण कहा है। तथा उपशान्त-मोहका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त होनेके कारण अजघन्य प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है, क्योंकि सूक्ष्मसाम्परायकी अन्तिम आवलिमें और उपशान्तमोह गुण-स्थानमें मोहनीयकी उदीरणा नहीं होती।

§ २२. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। अजघन्य प्रदेश उदीरणा-का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है। इसी प्रकार सातों पृथिवियोमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी अपनी स्थिति जाननी चाहिए।

§ २३. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि अजघन्य प्रदेश उदी-रणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल

अजह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं मणुसतिये। णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०।

§ २४. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज० मोह० जह० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। अजह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं मणुसअपज्ज०।

§ २५. देवेसु मोह० जह० जह० एगस०, उक्क० अट्ठारस सागरो० सादिरेयाणि। अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति। णवरि सगट्ठिदी देसूणा भाणियव्वा। एवं जाव०।

§ २६. णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण तत्थ इममट्ठपदं—जे उक्कस्सपदेसस्स उदीरगा त्ति अणुक्कस्सपदेसस्स अणुदीरगा। जे अणुक्कस्सपदेसस्स उदीरगा ते उक्कस्सपदेसस्स अणुदीरगा। एदेण अट्ठपदेण मोह० उक्कस्सपदेसस्स सिया सव्वे अणुदीरगा,

एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—यहाँ मनुष्यत्रिकमें उपशमश्रेणि सम्भव है, इसलिए इनमें मोहनीयकी अजघन्य प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २४. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त जीवोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्तकोंमें जानना चाहिए।

§ २५. देवोंमें मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागरोपम है। अजघन्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—देवोंमें सबसे जघन्य प्रदेश उदीरणाके योग्य उत्कृष्ट या तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेश परिणाम सहस्रार कल्प तकके देवोंमें ही सम्भव हैं, इसलिए यहाँ मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागरोपम कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २६. नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे वहाँ यह अर्थपद है—जो उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक हैं वे अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके अनुदीरक हैं। जो अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक हैं वे उत्कृष्ट प्रदेशोंके अनुदीरक हैं। इस अर्थपदके अनुसार मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके

सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च। अणुक्कस्सपदेसस्स सिया सव्वे उदीरगा, सिया उदीरगा च अणुदीरगो च, सिया[2] उदीरगा च अणुदीरगा च। एवं सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-मणुसतिय-देवा भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति। मणुसअपज्ज० उक्क० अणुक्क० पदेस० अट्ठ भंगा। एवं जाव०।

§ २७. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो। तं चेव अट्ठपदं। ओघेण मोह० जह० पदेस० सिया सव्वे अणुदीरगा, सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च। अजह० पदे० सिया सव्वे उदीरगा, सिया उदीगा च अणुदीरगो च, सिया उदीरगा च अणुदीरगा च। एवं सव्वणेरइय-सव्वतिरिक्ख-मणुसतिय-देवा भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति। मणुसअपज्ज० मोह० जह० अजह० पदे० अट्ठ भंगा। एवं जाव०।

§ २८. भागाभागाणु० दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० उक्क० पदे० सव्वजी० केव० ? अणंतभागो। अणुक्क० के० ? अणंता भागा। एवं तिरिक्खोघं। आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० पदे०

कदाचित् सब जीव अनुदीरक हैं। कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और एक जीव उदीरक है। कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और नाना जीव उदीरक हैं। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके कदाचित् सब जीव उदीरक हैं। कदाचित् नाना जीव उदीरक हैं और एक जीव अनुदीरक है। कदाचित् नाना जीव उदीरक हैं और नाना जीव अनुदीरक हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्यत्रिक, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंके आठ भंग हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २७. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है। वही अर्थ पद है। ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके कदाचित् सब जीव अनुदीरक हैं। कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और एक जीव उदीरक है। कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और नाना जीव उदीरक हैं। अजघन्य प्रदेशोंके कदाचित् सब जीव उदीरक हैं। कदाचित् नाना जीव उदीरक हैं और एक जीव अनुदीरक है। कदाचित् नाना जीव उदीरक हैं और नाना जीव अनुदीरक हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्यत्रिक, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंके आठ भंग हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २८. भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्त बहुभाग प्रमाण है। इसी

१. आ०प्रतौ ते उक्कस्सपदेसस्स ········ सिया इति पाठः।

२. आ०प्रतौ सिया सव्वे उदीरगा ········ सिया इति पाठः।

सव्वजी० केव० ? असंखे०भागो । अणुक्क० असंखेज्जा भागा । एवं सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुस–मणुसअपज्ज०–देवा० भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसपज्जत्त–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० मोह० उक्क० केव० ? संखे०भागो । अणुक्क० संखेज्जा भागा । एवं जाव० । एवं जहण्णए वि । णवरि जह० अजहण्णे त्ति भाणिदव्वं । एवं जाव० ।

§ २९. परिमाणाणु० दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० पदे० केत्तिया ? संखेज्जा[1] । अणुक्क० केत्तिया ? अणंता । आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुक्क० के० ? असंखेज्जा । एवं सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । तिरिक्खेसु मोह० उक्क० पदे० केत्ति० ? असंखेज्जा । अणुक्क० केत्ति० ? अणंता । मणुसेसु मोह० उक्क० के० ? संखेज्जा । अणुक्क० पदेस० के० ? असंखेज्जा । मणुसपज्ज०–मणुसिणी० मोह० उक्क० अणुक्क० के० ? संखेज्जा । एवं सव्वट्ठे । एवं जाव० ।

प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवे भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव असंख्यात बहुभागप्रमाण है। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सामान्य मनुष्य, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं? संख्यातवें भागप्रमाण हैं। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव संख्यात बहुभागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार जघन्यके विषयमें भी जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टके स्थानमें जघन्य और अजघन्य ऐसा कहलाना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २९. परिमाणानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं? अनन्त हैं। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है? अनन्त है। मनुष्योंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है? संख्यात है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है? असंख्यात हैं। मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

१. ता०प्रतौ [ अ ] संखेज्जा इति पाठः।

§ ३०. जह० पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० पदे० के० ? असंखेज्जा । अजह० के० ? अणंता । एवं तिरिक्खा० । आदेसेण णेरइय० मोह० जह० अजह० पदे० के० ? असंखेज्जा । एवं सव्वणिरय०–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसेसु मोह० जह० के० ? संखेज्जा । अजह० के० ? असंखेज्जा । मणुसपज्ज०–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० मोह० जह० अज० पदे० के० ? संखेज्जा । एवं जाव० ।

§ ३१. खेत्तं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० केवडि खेत्ते ? लोग० असंखे०भागे । अणुक्क० सव्वलोगे । एवं तिरिक्खोघं । आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० अणुक्क० के० खेत्ते ? लोग० असखे०भागे । एव सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–सव्वमणुस–सव्वदेवा त्ति । एवं जाव० ।

§ ३२. जह० पयद । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० के० खेत्ते ? लोग० असंखे०भागे । अजह० सव्वलोगे । एवं तिरिक्खोघं । आदेसेण

§ ३०. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है ? अनन्त हैं। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात है। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमे जानना चाहिए। सामान्य मनुष्योंमे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है ? संख्यात है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है ? असंख्यात है। मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरक जीव कितने है ? संख्यात हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३१. क्षेत्र दो प्रकार है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोका क्षेत्र कितना है ? लोकका असंख्यातवाँ भाग क्षेत्र है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोका सब लोक क्षेत्र है। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकका असंख्यातवाँ भाग क्षेत्र है। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३२. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकार है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका कितना क्षेत्र है ? लोकका असंख्यानवाँ भाग क्षेत्र है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका सर्व लोक क्षेत्र है। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका कितना

**णेरइय० मोह० जह० अजह० के० खेत्ते ? लोग० असखे०भागे । एवं सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–सव्वमणुस–सव्वदेवा० त्ति । एवं जाव० ।**

**§ ३३. पोसणाणु० दुविहो—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० के० पोसिदं ? लोग० असंखे०भागो । अणुक्क० सव्वलोगो ।**

**§ ३४. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० पदे० केव० पोसिदं ? लोग० असंखे०-भागो । अणुक्क० के० पो० ? लो० असंखे०भागो छ चोद्दस भागा वा । एवं विदियादि सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तं ।**

**§३५. तिरिक्खेसु मोह० उक्क० पदे० केव० पोसि० ? लोग० असखे०भागो छ चोद्दस० । अणुक्क० सव्वलोगो । पंचिंदियतिरिक्खतिये मोह० उक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अणुक्क० के० पोसिद ? लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । पंचिंदियतिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० खेत्तं । अणुक्क० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । मणुसतिये मोह० उक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो ।**

क्षेत्र है ? लोकका असंख्यातवाँ भाग क्षेत्र है। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३३. स्पर्शनानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ३४. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है।

§ ३५. तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने सर्व लोक क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट

**अणु० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा।**

**§ ३६. देवेसु मोह० उक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस०। अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस०। भवण०–वाणवें०–जोदिसि० मोह० उक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो अद्धट्ठा वा अट्ठ चोद्दस०। अणुक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस०।**

**§ ३७. सोहम्मीसाण० देवोघं। सणक्कुमारादि सहस्सारा त्ति मोह० उक्क० अणुक्क० केव० पोसि० ? लोग० असं०भागो अट्ठ चोद्दस०। आणदादि जाव अच्चुदा त्ति मोह० उक्क० अणुक्क० लोग० असं०भागो छ चोद्दस०। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव०।**

**§ ३८. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० जह० पदे० लोग० असंखे०भागो अट्ठ तेरह चोद्दस०। अजह० सव्वलोगो।**

---

प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**विशेषार्थ**— पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकका मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंकी उदीरणा करते समय ऊपर आनत कल्प तकके देवोंमें मारणान्तिक समुद्घात करना बन जाता है, इसलिए यहाँ सामान्य तिर्यञ्चोंमें और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण स्पर्शन भी कहा है। शेष कथन सुगम है। उसे अपने-अपने स्पर्शन और स्वामित्वको जानकर सर्वत्र जान लेना चाहिए।

§ ३६. देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग, त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग और कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग, त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ३७. सौधर्म और ऐशान कल्पमें सामान्य देवोंके समान स्पर्शन है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनतसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। ऊपर क्षेत्रके समान स्पर्शन है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३८. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम तेरह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ३९. आदेसेण णेरइय० मोह० जह० अजह० पदे० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस भागा देसूणा । एवं विदियादि सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तभंगो ।

§ ४०. तिरिक्खेसु मोह० जह० पदे० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अजह० सव्वलोगो । पंचिं०तिरिक्खतिये मोह० जह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अजह० लोग० असं०भागो सव्वलोगो वा । पंचिं०तिरि०अपज्ज०–मणुसअपज्ज० मोह० जह० अजह० पदे० लोग० असं०भागो सव्वलोगो वा ।

§ ४१. मणुसतिये मोह० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असं०भागो सव्वलोगो वा । देवेसु मोह० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० । भवण०–वाणवेंतर–जोदिसि० मोह० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव

**विशेषार्थ**—ओघसे मोहनीयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सर्व संक्लिष्ट और तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट जीवके होती है, ऐसे जीव देव भी होते हैं और मनुष्य या तिर्यञ्च भी हो सकते हैं। देवोंमें विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण स्पर्शन बन जाता है। तथा तिर्यञ्च या मनुष्योंमें मारणान्तिक समुद्धातकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम तेरह भागप्रमाण स्पर्शन बन जाता है। इनका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। यह ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका स्पष्टीकरण है।

§ ३९. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान स्पर्शन है।

§ ४०. तिर्यञ्चोंमें मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

§ ४१. मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंके स्पर्शनका भंग क्षेत्रके समान है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। देवोंमें मोहनीयके जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें मोहनीयके जघन्य और

**चोद्दस० । सोहम्मीसाण० देवोघं । सणक्कुमारादि जाव सव्वट्ठा त्ति उक्कस्सपोसणभंगो । एवं जाव० ।**

**§ ४२. कालो दुविहो—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । अणुक्क० सव्वद्धा । एवं मणुसतिये सव्वट्ठे च ।**

**§ ४३. आदेसेण णेरइय० मोह० उक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असं०-भागो । अणुक्क० सव्वद्धा । एवं सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० जह० एगस०, उक्क० आव० असंखे०-भागो । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एवं जाव० ।**

---

अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्पर्शनका भंग सामान्य देवोंके समान है। सनत्कुमार-से लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें उत्कृष्ट स्पर्शनके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—नरक आदि चारों गतियों और उनके अवान्तर भेदोंमें अपने-अपने स्वामित्व और स्पर्शनको जानकर प्रकृत स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए। विशेष व्याख्यान न होनेसे यहाँ पृथक् पृथक् स्पष्टीकरण नहीं किया है।

§ ४२. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिक और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—ओघसे क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिक जीव अपने कालमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंकी उदीरणा करते हैं। ऐसे जीव लगातार उक्त उदीरणा करें तो उसका उत्कृष्ट काल संख्यात समय ही होगा। इसीसे यहाँ नाना जीवोंकी अपेक्षा उक्त उदीरणाका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ४३. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकों-का काल सर्वदा है। इसी प्रकार सब नारकी सब तिर्यञ्च, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असं-ख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ ४४. जह० पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० जह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अजह० सव्वद्धा । एवं सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-सव्वदेवा त्ति । मणुसतिये एवं चेव । मणुसअपज्ज० मोह० जह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अजह० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो । एवं जाव० ।**

**§ ४५. अंतरं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० उक्क० पदे० जह० एयस०, उक्क० छम्मासं । अणुक्क० णत्थि अंतरं । एवं मणुसतिये । णवरि मणुसिणीसु वासपुधत्तं । आदेसेण णेरइय०**

**विशेषार्थ**—इन मार्गणाओंमें मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले जीवोंका उत्कृष्ट प्रमाण असंख्यात है, इसलिए अत्र्स्यत् सन्तानकी अपेक्षा मोहनीयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जाता है। शेष कथन सुगम है।

§ ४४. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्यत्रिकमें इसी प्रकार कालप्ररूपणा है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—पहले एक जीवकी अपेक्षा कालका निर्देश करते हुए मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बतला आये हैं, वह काल यहाँ भी उसी प्रकार बन जाता है। कारण कि नाना जीव मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंकी उदीरणा एक समयमें करके दूसरे समयमें अजघन्य प्रदेशोंकी उदीरणा करने लगें और कोई अन्य जीव जघन्य प्रदेशोंकी उदीरणा न करे यह भी सम्भव है और अत्रुस्यत् सन्तानरूपसे निरन्तर आवलिके असंख्यातवें भाग काल तक क्रमसे नाना जीव मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंकी उदीरणा करे यह भी सम्भव है। इस प्रकार विचार करने पर मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही प्राप्त होता है, इसलिए वह उतना कहा है। शेष कथन सुगम है। यहाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागोंका योग भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होगा इतना विशेष जानना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ ४५. अन्तर दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मनुष्यिनियोंमें वर्षपृथक्त्व है। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका

**मोह० उक्क० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अंतरं। एवं सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–सव्वदेवा त्ति। मणुसअपज्ज० मोह० उक्क० णिरयभंगो। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो। एवं जाव०।**

**§ ४६. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघे० मोह० जह० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अजह० णत्थि अंतरं। एवं सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–मणुसतिय–सव्वदेवा त्ति। मणुसअपज्ज० मोह० जह० जह० एगस०, उक्क० असखे० लोगा। अजह० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो। एवं जाव०।**

जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका भंग नारकियोंके समान है। अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—यहाँ क्षपकश्रेणिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर ओघसे और मनुष्यत्रिकमें उक्त अन्तरकाल कहा है। मात्र मनुष्यिनियोंमें क्षपकश्रेणिका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है, इसलिए इनमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहा है। शेष गतियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंकी उदीरणाके योग्य परिणामोंके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ४६. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्यत्रिक और सब देवोंमें जानना चाहिए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—यहाँ मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंकी उदीरणाके योग्य परिणामोंके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर सर्वत्र ओघसे और चारों गतियोंमें मोहनीयके जघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ४७. भावाणु० मोह० उक्क० अणुक्क० जह० अजह० पदेसुदी० ओदइओ भावो। एवं जाव० ।

§ ४८. अप्पाबहुअं दुविहं—जह० उक्क० । उक्क० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० सव्वत्थो० उक्क० पदेसुदी० । अणुक्क० पदे० अणंतगुणा। एवं तिरिक्खोघं । आदेसेण णेरइय० मोह० सव्वत्थोवा उक्क० पदे० । अणुक्क० असंखे०गुणा । एवं सव्वणिरय-सव्वपंचिं०तिरिक्ख-मणुस-मणुसअपज्ज०-देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति । मणुसपज्जत्त-मणुसिणी-सव्वट्ठदेवा० सव्वत्थो० मोह० उक्क० पदे० । अणुक्क० पदे० संखे०गुणा । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं । णवरि जह० अजह० भाणिदव्वं । एवं जाव० ।

§ ४९. एत्तो भुजगारपदेसुदीरणाए तत्थ इमाणि तेरस अणिओगद्दाराणि—समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुए त्ति । समुक्कित्तणाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० अत्थि भुज०-अप्प०-अवट्ठि०-अवत्त०पदे०उदीरणा । एवं मणुसतिये । आदेसेण णेरइय० मोह० अत्थि भुज०-अप्प०-अवट्ठि० । एवं सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख[१]-मणुसपज्ज० सव्वदेवा-त्ति । एवं जाव० ।

§ ४७. भावानुगमकी अपेक्षा मोहनीयके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेशोंके उदीरकोंका औदयिक भाव है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४८. अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सबसे स्तोक है । उनसे अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव अनन्तगुणे है । इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सबसे स्तोक है । उनसे अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव असंख्यातगुणे है । इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सामान्य मनुष्य, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें मोहनीयके उत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सबसे स्तोक है । उनसे अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार जघन्य अल्पबहुत्व भी जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टके स्थान पर जघन्य और अजघन्य कहना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ४९. आगे भुजगार प्रदेश उदीरणाका प्रकरण है । वहाँ ये तेरह अनुयोगद्वार हैं—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक । समुत्कीर्तनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयकी भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य प्रदेश उदीरणा है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरणा है । इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

१. आ०प्रतौ -णिरयतिरिक्ख इति पाठः ।

§ ५०. सामित्ताणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० भुज०–अप्प०–अवट्ठि० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स वा मिच्छाइट्ठि०। अवत्त० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स। एवं मणुसतिये। आदेसेण णेरइय० मोह० भुज०–अप्प०–अवट्ठि० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठि० मिच्छाइट्ठि०। एवं सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–देवा भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि पंचिं०तिरि०अपज्ज० मोह० भुज०–अप्प०–अवट्ठि० कस्स? अण्ण०। एवं मणुसअपज्ज०–अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति। एवं जाव०।

§ ५१. कालाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अवत्त० जह० उक्क० एगस०। एवं मणुसतिये। एवं सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–सव्वदेवा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं जाव०।

§ ५०. स्वामित्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयकी भुजगार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टिके होती है। अवक्तव्य उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टिके होती है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयकी भुजगार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टिके होती है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें मोहनीयकी भुजगार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणा किसके होती है ? अन्यतरके होती है। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त और अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५१. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके भुजगार और अल्पतर उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित प्रदेशोंके उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अवक्तव्यपदके उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—भुजगार और अल्पतर प्रदेशोंकी उदीरणाके योग्य परिणामोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त होनेके कारण यहाँ मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। अवस्थित उदीरणा कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक बननेके कारण इसके उदीरकका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। अवक्तव्यपद उपशमश्रेणिसे उतरते समय

§ ५२. अंतराणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० भुज०-अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपो०परियट्टं । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि ।

§ ५३. आदेसेण णेरइय० मोह० भुज०-अप्प० ओघं । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एवं सव्वणिरय० । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । पंचिंदियतिरिक्खतिये मोह० भुज०-अप्प० ओघं । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क०

---

या मोहनीय अनुदीरकके मरकर देव होने पर एक समयके लिए होता है, इसलिए इसका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय कहा है । मनुष्यत्रिकमें यह काल प्ररूपणा इसी प्रकार बन जानेसे उसे ओघके समान जाननेकी सूचना की है । शेष गतियोंमें अवक्तव्य पद नहीं है । शेष प्ररूपणा वहाँ भी ओघके समान बन जानेसे उसे भी ओघके समान जाननेकी सूचना की है ।

§ ५२. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य अन्तर काल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है ।

**विशेषार्थ**—भुजगार और अल्पतर प्रदेशोंकी उदीरणाके योग्य परिणामोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त होनेके कारण यहाँ भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है । अवस्थित पदके योग्य परिणाम कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण कालके अन्तरसे हों यह सम्भव है, इसलिए ओघसे अवस्थित पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है । एक जीवके उपशमश्रेणिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको देख कर अवक्तव्य पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण कहा है । तिर्यञ्चोंमें मोहनीयका अवक्तव्य पद नहीं होता, इसके सिवाय अन्य सब प्ररूपणा सामान्य तिर्यञ्चोंमें ओघके समान बन जानेसे उनमें उसे ओघके समान जाननेकी सूचना की है ।

§ ५३. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतरपदका भंग ओघके समान है । अवस्थित पदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदका भंग ओघके समान है । अवस्थितपदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदके उदीरकका

सगट्ठिदी देसूणा । एवं मणुसतिये । णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । पंचिं०तिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मोह० भुज०-अप्प०-अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । देवाणं णारयभंगो । एवं भवणादि जाव सव्वट्ठा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । एवं जाव० ।

§ ५४. णाणाजीवेहि भंगविचयाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० भुज०-अप्प०-अवट्ठि० णिय० अत्थि, सिया एदे च अवत्तव्वगो च, सिया एदे च अवत्तव्वगा च । आदेसेण णेरइय० मोह० भुज०-अप्प० णिय० अत्थि, सिया एदे च अवट्ठिदउदीरगो च, सिया एदे च अवट्ठिदउदीरगा च । एवं सव्वणिरय-सव्वपंचिं०तिरि०-सव्वदेवा त्ति । तिरिक्खेसु सव्वपदा णियमा अत्थि । मणुसतिये मोह० भुज०-अप्प० णिय० अत्थि । सेसपदा भयणिज्जा । मणुसअपज्ज० सव्वपदा भयणिज्जा। भंगा सव्वत्थ वत्तव्वा । एवं जाव० ।

---

जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पदके उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। सामान्य देवोंमें नारकियोंके समान भंग है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवस्थित पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण कहना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

विशेषार्थ—नारकियों और देवोंमें अपनी-अपनी भवस्थिति तक ही उस उस पर्यायमें रहना बनता है। किन्तु तिर्यञ्चों और मनुष्योंमें अपनी-अपनी कायस्थिति तक पुनः पुनः वही-वही पर्याय प्राप्त होनेसे उस उस पर्यायमें निरन्तर रहना बन जाता है। यही कारण है कि यहाँ सर्वत्र अवस्थित पदके उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ५४. नाना जीवोंका अवलम्बन लेकर भंगविचयानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पदोंके उदीरक जीव नियमसे हैं, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवक्तव्य पदका उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवक्तव्य पदके उदीरक जीव हैं। आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरक जीव नियमसे हैं, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवस्थित पदका उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और नाना अवस्थित पदके उदीरक जीव हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सब देवोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें सब पदोंके उदीरक जीव नियमसे हैं। मनुष्यत्रिकमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदोंके उदीरक जीव नियमसे हैं। शेष पद भजनीय हैं। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब पद भजनीय हैं। भंग सर्वत्र कहने चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५५. भागाभागाणु० दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० भुज० दुभागो देसूणो। अप्प० दुभागो सादिरेओ। अवट्ठि० असंखे०भागो। अवत्त० अणंतभागो। एवं सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा भवणादि जाव अवराजिदा त्ति। णवरि अवत्त० णत्थि। मणुसेसु ओघं। णवरि अवत्त० असंखे०भागो। एवं मणुसपज्ज०–मणुसिणी०। णवरि अवट्ठि०–अवत्त० संखे०भागो। सव्वट्ठे देवोघं। णवरि अवट्ठि० संखे०भागो। एवं जाव०।

§ ५६. परिमाणाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० अवत्त० केत्तिया? संखेज्जा। सेसपदा के०? अणंता। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। सव्वणिरय–सव्वपंचिं०तिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति मोह० सव्वपदा के०? असंखेज्जा। एवं मणुसा०। णवरि अवत्त० केत्ति०? संखेज्जा। मणुस-

विशेषार्थ—मनुष्यत्रिकमें चार पद होते हैं। उनमेंसे भुजगार और अल्पतर ये दो पद ध्रुव हैं तथा अवस्थित और अवक्तव्य ये दो पद भजनीय है। ध्रुव पदके साथ इन दोनों भजनीय पदोंके एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा कुल आठ भंग होते है तथा इनके सिवा एक ध्रुव भंग और होता है, जो अवस्थित और अवक्तव्य पदके अभावमें भी पाया जाता है। अतएव मनुष्यत्रिकमें कुल नौ भंग हुए। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें भुजगार, अल्पतर और अवस्थित ये तीन पद हैं जो सभी भजनीय है, अतः इनमें एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा कुल छब्बीस भंग होते हैं। मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए इसमें सभी पद भजनीय कहे है। शेष कथन सुगम है।

§ ५५. भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके भुजगार पदके उदीरक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण है। अल्पतर पदके उदीरक जीव साधिक द्वितीय भागप्रमाण है। अवस्थित पदके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और अवक्तव्य पदके उदीरक जीव अनन्तवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमे अवक्तव्य पद नहीं है। मनुष्योंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदके उदीरक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवस्थित और अवक्तव्य पदके उदीरक जीव संख्यातवें भागप्रमाण हैं। सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें अवस्थित पदके उदीरक जीव संख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ५६. परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके अवक्तव्य पदके उदीरक जीव कितने हैं? संख्यात हैं। शेष पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? अनन्त है। इसी प्रकार तिर्यञ्चों में जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें मोहनीयके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं? असंख्यात हैं। इसी प्रकार सामान्य मनुष्योंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें

पज्ज०–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० मोह० सव्वपदा के० ? संखेज्जा । एवं जाव० ।

§ ५७. खेत्ताणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० अवत्त० केव० ? लो० असंखे०भागे[1] । सेसपदा० सव्वलोगे । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि । सेसगदीसु मोह० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागे[2] । एवं जाव० ।

§ ५८. पोसणाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० अवत्त० लोग० असंखे०भागो । सेसपदा० सव्वलोगो । एवं तिरिक्खा० । णवरि अवत्त० णत्थि ।

§ ५९. आदेसेण णेरइय० मोह० सव्वपदा० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । एवं विदियादि जाव सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तं । सव्वपंचिंदिय-तिरिक्ख०–मणुसअपज्ज० सव्वपदा० लोगस्स असंखे०भागो सव्वलोगो वा । एवं मणुसतिये । णवरि अवत्त० खेत्तं । देवेसु मोह० सव्वपद० लोग० असंखे०भागो अट्ठ णव चोद्दस० ।

अवक्तव्य पदके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात है । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमे मोहनीयके सब पदोंके उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ५७. क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका क्षेत्र कितना है ? लोकके असख्यातवे भागप्रमाण है । शेष पदोंके उदीरकोंका क्षेत्र सर्व लोकप्रमाण है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नही है । शेष गतियोंमें मोहनीयके सब पदोंके उदीरकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ५८. स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मोहनीयके अवक्तव्य पदके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । शेष पदोंके उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नही है ।

§ ५९. आदेशसे नारकियोंमें मोहनीयके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए । पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है । सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदका भंग क्षेत्रके समान है । सामान्य देवोंमें मोहनीयके सब पदोंके उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग तथा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार

१. आ०प्रतौ असखे०भागो इति पाठ ।

२. आ०प्रतौ असंखे०भागो इति पाठः ।

एवं भवणादि जाव अच्चुदा त्ति। णवरि सगपोसणं। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव०।

§ ६०. कालाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० अवत्त० जह० एयसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सेसपदा० सव्वद्धा। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। सव्वणिरय-सव्वपंचिंदियतिरिक्ख-देवा जाव अवराजिदा त्ति मोह० भुज०-अप्प० सव्वद्धा। अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०-भागो। एवं मणुसा०। णवरि अवत्त० ओघं। एवं पज्जत्त-मणुसिणीसु। एवं सव्वट्ठे। णवरि अवत्त० णत्थि। मणुसअपज्ज० मोह० भुज०-अप्प० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो।

§ ६१. अंतराणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मोह० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० वासपुधत्तं। सेसपदाणं णत्थि अंतरं। एवं तिरिक्खा०। णवरि अवत्त० णत्थि। सव्वणिरय-सव्वपंचिं०तिरिक्ख-सव्वदेवा त्ति भुज०-अप्प०

---

भवनवासियोंसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए। ऊपर क्षेत्रके समान स्पर्शन है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

विशेषार्थ—स्वामित्व और स्पर्शनको ध्यानमें रखकर प्रकृतमें ओघ और चारों गतियों तथा उनके अवान्तर भेदोंकी अपेक्षा स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए। अन्य कोई विशेषता न होनेसे यहाँ खुलासा नहीं किया।

§ ६०. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। शेष पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्योंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पदका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदोंके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ६१. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके अवक्तव्य पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। शेष पदोंके उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और सब देवोंमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका

णत्थि अंतरं । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं मणुसतिये । णवरि अवत्त० ओघं । मणुसअपज्ज० मोह० भुज०-अप्प० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं जाव० ।

§ ६२. भावाणु० सव्वत्थ ओदइओ भावो ।

§ ६३. अप्पाबहुआणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मोह० सव्वत्थोवा अवत्त० । अवट्ठि० अणंतगुणा । भुज० असंखे०गुणा । अप्प० विसेसाहिया । एवं सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-मणुसअपज्ज०-देवा जाव अवराजिदा त्ति । णवरि अवत्त० णत्थि । मणुसेसु ओघं । णवरि अवट्ठि० असंखेज्जगुणा । एवं मणुसपज्ज०- मणुसिणीसु। णवरि संखेज्जगुणं कायव्वं । एवं सव्वट्ठे । णवरि अवत्त० णत्थि । एवं जाव० ।

एवं भुजगारो समत्तो ।

---

अन्तरकाल नहीं है। अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेपता है कि इनमें अवक्तव्य पदका भंग ओघके समान है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मोहनीयके भुजगार और अल्पतर पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अवस्थित पदके उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ६२. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है।

§ ६३. अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मोहनीयके अवक्तव्य पदके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित पदके उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे भुजगार पदके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अल्पतर पदके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेपता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है। सामान्य मनुष्योंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेपता है इनमें अवस्थित पदके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें असंख्यातगुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्यपद नहीं है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सब देवोंमें अवक्तव्य पदके सिवाय तीन ही पद होते हैं। इसलिए मूलमें निर्दिष्ट सब नारकी आदि जिन मार्गणाओंमें एवं कह कर ओघके समान जाननेकी सूचना की है वहाँ उस कथनका यह आशय समझना चाहिए कि उक्त मार्गणाओंमें अवस्थित पदके उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे भुजगार पदके उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं और उनसे अल्पतर पदके उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। शेष कथन सुगम है।

इस प्रकार भुजगार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

§ ६४. पदणिक्खेवो वड्डी वि जाणिऊण भाणियव्वा ।

एवं मूलपयडिपदेसुदीरणा समत्ता ।

*** तदो उत्तरपयडिपदेसुदीरणा च समुक्कित्तणादि अप्पाबहुअंतेहि अणिओगद्दारेहि मग्गियव्वा ।**

§ ६५. तदो मूलपयडिपदेसुदीरणविहासणादो अणंतरमिदाणिमुत्तरपयडिपदेसुदीरणा समुक्कित्तणादि अप्पाबहुअपज्जंतेहि अणिओगद्दारेहि विहासियव्वा त्ति भणिदं होइ । एत्थ ताव सामित्तादो हेट्ठिमाणमणियोगद्दाराणं सुगमत्तादो चुण्णिसुत्तयारेण मुत्तकंठमपरूविदाणमुच्चारणामुहेण विवरणं कस्सामो । तं जहा—

§ ६६. समुक्कित्तणा दुविहा—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण अट्ठावीसं पयडीणं अत्थि उक्क० पदेसुदीरणा । सव्वणिरय–सव्वतिरिक्ख–सव्वमणुस–सव्वदेवा त्ति अप्पप्पणो पयडी० अत्थि उक्क० पदेसुदीरणा । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं । एवं जाव ।

§ ६४. पदनिक्षेप और वृद्धिका भी जान कर कथन कराना चाहिए ।

इस प्रकार मूल प्रकृति पदेश उदीरणा समाप्त हुई ।

*** इसके बाद समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तकके अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे उत्तरप्रकृतिप्रदेश उदीरणाका विशेष व्याख्यान करना चाहिए ।**

§ ६५. 'तदो' अर्थात् मूलप्रकृतिप्रदेश उदीरणाके व्याख्यानके बाद इस समय उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणाका समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तकके अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे विशेष व्याख्यान करना चाहिए यह उक्त सूत्रवचनका तात्पर्य है । यहाँ स्वामित्वसे पूर्वके अनुयोगद्वार सुगम होनेसे सूत्रकारके द्वारा मुक्तकण्ठ होकर नहीं गये है, इसलिए उच्चारणा द्वारा उनका व्याख्यान करेंगे । यथा—

§ ६६. समुत्कीर्तना दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे अट्ठाईस प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा है । सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देव इनमें अपनी-अपनी प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । इसी प्रकार जघन्य समुत्कीर्तना भी जाननी चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—नारकियोंमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदय-उदीरणा सम्भव नहीं । तिर्यञ्च अपर्याप्तकों और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदय-उदीरणा नहीं होती । ऐशान कल्प तकके देवोंमें नपुंसकवेदकी उदय-उदीरणा नहीं होती । आगे नौवे ग्रैवेयक तकके देवोंमें स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उदय-उदीरणा नहीं होती तथा नौ अनुदिश और पाँच अनुत्तर विमानवासी देवोंमें मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उदय-उदीरणा नहीं होती । इनके सिवाय जहाँ जितनी प्रकृतियाँ

§ ६७. सव्वुदीर० णोसव्वुदीर० उक्कस्सउदीर० अणुक्क०उदीर० जहण्णुदी० अजहण्णुदी० अणुभागुदीरणाए भंगो ।

§ ६८. सादि०—अणादि०—धुव-अद्धुवाणु० दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ० उक्क० जह० अजह० किं सादि०४ ? सादि० अद्धुवा । अणुक्क० सादि० अणादि० धुवा अद्धुवा वा । सेसपयडी० उक्क० अणुक्क० जह० अजह० सादि० अद्धुवा । चदुगदीसु उक्क० अणुक्क० जह० अजह० सव्वपयडि० सादि० अद्धुवा । एवं जाव० ।

* तत्थ सामित्तं ।

---

उदय-उदीरणा योग्य हैं वहाँ उनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

§ ६७. सर्व उदीरणा, नोसर्व उदीरणा, उत्कृष्ट उदीरणा, अनुत्कृष्ट उदीरणा, जघन्य उदीरणा और अजघन्य उदीरणाका भंग अनुभागउदीरणाके समान जानना चाहिए ।

§ ६८. सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुवानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणा क्या सादि है, अनादि है, ध्रुव है या अध्रुव है ? सादि और अध्रुव है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव है । शेष प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणा सादि और अध्रुव है । चारों गतियोंमें सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणा सादि और अध्रुव है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—मोहनीयकी २८ प्रकृतियोंमें एक मिथ्यात्व प्रकृति ही ऐसी है जिसका मिथ्यात्व गुणस्थानमें निरन्तर उदय बना रहता है । शेष सब प्रकृतियाँ ऐसी नहीं हैं । इसलिए यहाँ मिथ्यात्वको छोड़ कर शेष सब प्रकृतियोकी उत्कृष्टादि चारों प्रकारकी प्रदेश उदीरणा सादि और अध्रुव कही है । अब शेष रही मिथ्यात्व प्रकृति सो इसकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा ऐसे जीवके होती है जो संयमके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि है । यही कारण है कि इसके पूर्व इसकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती रहती है, इसलिए वह अनादि है और सम्यग्दृष्टि या संयमी जीवके पुनः मिथ्यादृष्टि होने पर जो अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती है वह सादि है । तथा भव्योंकी अपेक्षा वह अध्रुव है और अभव्योंकी अपेक्षा ध्रुव है । इसकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सादि और अध्रुव है यह पूर्वोक्त स्वामित्व विचारसे ही स्पष्ट है । इसकी जघन्य प्रदेश उदीरणा उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले या ईषत् मध्यम परिणामवाले संज्ञी मिथ्यादृष्टिके होती है, इसलिए उक्त स्वामित्वके अनुसार कादाचित्क होनेसे यह भी सादि और अध्रुव है । तथा अजघन्य प्रदेश उदीरणा जघन्य प्रदेश उदीरणा पूर्वक होनेके कारण सादि और अध्रुव है यह स्पष्ट ही है । चारों गतियाँ और उनके अवान्तर भेद कादाचित्क होनेसे इनमें सभी प्रकृतियोंकी चारों प्रकारकी उदीरणा सादि और अध्रुव है यह स्पष्ट ही है ।

* प्रकृतमें स्वामित्वका अधिकार है ।

§ ६९. तत्थ उत्तरपयडिपदेसुदीरणाए चउवीसअणिओगद्दारेसु एगजीवेण सामित्त-मिदाणिं वत्तइस्सामो त्ति पइण्णावक्कमेदं । तं पुण सामित्तं दुविहं जहण्णुक्कस्सभेदेण । तत्थुक्कस्ससामित्तमोघेण परूवेमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भइण—

*** मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ ७०. सुगमं ।

*** संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जमाणगस्स ।**

§ ७१. जो मिच्छाइट्ठी अण्णदरकम्मंसिओ वेदगसम्मत्तपाओग्गो अधापवत्तापुव्व-करणाणि कादूण संजमाहिमुहो जादो तस्स अंतोमुहुत्तमणंतगुणाए विसोहिए विसुज्झि-दूण चरिमसमयमिच्छाइट्ठिभावेणावट्ठिदस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होइ, से काले सम्मत्तेण सह संजमं पडिवज्जमाणस्स तस्स सव्वुक्कस्सविसोहिदंसणादो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स समुदायत्थो । एत्थ पदेसुदीरणा बहुत्तमिच्छिय गुणिदकम्मंसियत्तं किण्ण इच्छिज्जदे ? ण, परिणामतारतम्माणुविहाइणीए उदीरणाए दव्वविसेसाणवेक्खित्तादो । जइ पदेसु-दीरणाए परिणामविसेसो चेव कारणं तो उवसमसम्मत्तेण सह संजमं पडिवज्जमाणमिच्छा-

§ ६९. 'तत्थ' अर्थात् उत्तर प्रकृति प्रदेश उदीरणाके चौबीस अनुयोगद्वारोंमें इस समय एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वको बतलाते हैं इस प्रकार यह प्रतिज्ञावाक्य है । जघन्य और उत्कृष्टके भेदसे वह स्वामित्व दो प्रकारका है । उनमेंसे ओघसे उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

*** मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ७०. यह सूत्र सुगम है ।

*** जो अनन्तर समयमें सम्यक्त्व और संयमको प्राप्त होनेवाला है ऐसे संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है ।**

§ ७१. अन्यतर कर्मांशिक वेदक सम्यक्त्वप्रायोग्य जो मिथ्यादृष्टि जीव अधःकरण और अपूर्वकरण करके संयमके अभिमुख हुआ, अन्तर्मुहूर्त काल तक अनन्तगुणी विशुद्धिसे विशुद्ध होकर मिथ्यादृष्टि भावसे अवस्थित हुए उसके अन्तिम समयमें प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता हैं, क्योंकि तदनन्तर समयमें सम्यक्त्वके साथ संयमको प्राप्त होनेवाले उसके सबसे उत्कृष्ट विशुद्धि देखी जाती है यह इस सूत्रका समुच्चय अर्थ है ।

**शंका**—प्रकृतमें प्रदेश उदीरणाके बहुत्वकी इच्छासे गुणितकर्मांशिकता क्यों नहीं स्वीकार की गई ?

**समाधान**—नहीं, क्योंकि परिणामोंके तारतम्यका अनुविधान करनेवाली उदीरणा द्रव्यविशेषोंकी अपेक्षासे रहित होती है ।

**शंका**—यदि प्रदेश उदीरणामें परिणामविशेष ही कारण है तो हम उपशम सम्यक्त्वके

इट्ठिस्स मिच्छत्तपढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए पयदुक्कस्ससामित्तं गेण्हामो, पुव्विल्लसंजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स अपुव्वकरणुक्कस्सविसोहीदो एत्थतणविसोहीए अणियट्टिकरणमाहप्पेणाणंतगुणत्तदंसणादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—एदम्हादो पुव्विल्लो चेव अपुव्वकरणपरिणामो विसुद्धयरो, संजमपच्चासत्तिबलेण समुवलद्धमाहप्पत्तादो। तदो विसयंतरपरिहारेण सुत्तुद्दिट्ठविसये चेव पयदुक्कस्ससामित्तमवहारेयव्वं।

§ ७२. संपहि सम्मत्तस्स पयदुक्कस्ससामित्तविसयावहारणट्ठमुत्तरसुत्तं भणइ—

*** सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ ७३. सुगमं ।

*** समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।**

§ ७४. जो दंसणमोहणीयक्खवगो अण्णदरकम्मंसिओ अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणमाढविय मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणि जहाकमं खविय तदो सम्मत्तं खवेमाणो अणियट्टिकरणचरिमसमये सम्मत्तचरिमफालिं णिवादिय कदकरणिज्जो होदूणंतोमुहुत्तं समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणीयभावे-

---

साथ संयमको प्राप्त होनेवाले मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिमात्र शेष रहने पर प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वको स्वीकार करते हैं, क्योंकि पहलेके संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके अपूर्वकरणसम्बन्धी उत्कृष्ट विशुद्धिसे यहाँ की विशुद्धि अनिवृत्तिकरणके माहात्म्यसे अनन्तगुणी देखी जाती है ?

**समाधान**—अब यहाँ इस शंकाके परिहारका कथन करते हैं—इस परिणामसे पहलेका ही अपूर्वकरण परिणामविशुद्धतर है, क्योंकि वह संयमकी प्रत्यासत्तिके बलसे माहात्म्यको लिये हुए है। इसलिए विषयान्तरका परिहार कर सूत्र कथित अधिकारीके ही प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व निश्चित करना चाहिए।

§ ७२. अब सम्यक्त्वके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वके अधिकारीका निश्चय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ७३. यह सूत्र सुगम है।

*** एक समय अधिक एक आवलि कालसे युक्त अक्षीण दर्शनमोही कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके होती है।**

§ ७४. अन्यतर कर्मांशिक जो दर्शनमोहनीयका क्षपक जीव अनिवृत्तिकरणके कालमें संख्यात बहुभाग जाने पर असंख्यात समयप्रबद्धोंकी उदीरणाका आरम्भकर तथा मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्वका क्रमसे क्षयकर तदनन्तर सम्यक्त्वका क्षय करता हुआ अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमें सम्यक्त्वको अन्तिम फालिका पतन कर तथा कृतकृत्य होकर अन्तर्मुहूर्तके बाद जब एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण कालसे युक्त अक्षीण दर्शनमोहनीयरूपसे अवस्थित हो जाता है तब उसके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, क्योंकि उसके एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण गुणश्रेणि गोपुच्छाएं अन्तिम स्थितिमेंसे उदीर्यमाण असंख्यात

णावट्ठिदो तस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होइ। कुदो ? तस्स समयाहियावलियमेत्तगुणसेढिगोवुच्छाणं चरिमट्ठिदीदो उदीरिज्जमाणाणमसंखेज्जाणं समयपबद्धाणं हेट्ठिमासेसपदेसुदीरणाहिंतो असंखेज्जगुणत्तदंसणादो। समयाहियावलियअक्खीदंसणमोहणीयं मोत्तूण हेट्ठा अणियट्टिकरणचरिमसमए पयदुक्कस्ससामित्तं दाहामो, तत्थतणाणियट्टिपरिणामस्स कदकरणिज्जुक्कस्सविसोहीदो वि अणंतगुणत्तदंसणादो। एत्थ परिहारो वुच्चदे—सच्चमेदं-मणियट्टिचरिमपरिणामो बहुओ त्ति। किंतु एसो कदकरणिज्जो संकिलिस्सदु विसुज्झदु वा तो वि अंतोमुहुत्तमेत्तसगकालब्भंतरे असंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिदूण समयं पडि उदीरेदि। तम्हा विसयंतरपरिहारेणेत्थेव पयदसामित्तमवहारेयव्वमिदि।

§ ७५. संपहि सम्मामिच्छत्तस्स पयदुक्कस्ससामित्तविसयावहारणट्ठमाह—

*** सम्मामिच्छत्तस्स उक्कसिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ ७६. सुगमं।

*** सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स।**

§ ७७. जो सम्मत्ताहिमुहो चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठी सव्वविसुद्धो तस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होइ। किं कारणं ? उक्कस्सविसोहिपरिणामेण विणा पदेसुदीरणाए उक्कस्सभावाणुववत्तीदो।

---

समयप्रबद्धोंकी अधस्तन अशेष प्रदेश उदीरणासे असंख्यातगुणी देखी जाती हैं।

**शंका**—हम एक समय अधिक एक आवलि कालसे युक्त अक्षीण दर्शनमोहीको छोड़ कर इसके पूर्व अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमें प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व देते है, क्योंकि वहाँका अनिवृत्तिकरण परिणाम कृतकृत्यकी उत्कृष्ट विशुद्धिसे भी अनन्तगुणा देखा जाता है ?

**समाधान**—यहाँ उक्त शंकाके परिहारका कथन करते है—यह सत्य है कि अनिवृत्तिकरणसम्बन्धी अन्तिम परिणाम विशुद्धिकी अपेक्षा बहुत है। किन्तु यह कृतकृत्य जीव संक्लिष्ट होओ अथवा विशुद्ध होओ तो भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अपने कालके भीतर असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण कर प्रत्येक समयमे उसकी उदीरणा करता है, इसलिए विषयान्तरका परिहार कर यहाँ ही प्रकृत स्वामित्वका निश्चय करना चाहिए।

७५. अब सम्यग्मिथ्यात्वके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वके स्थानका निश्चय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ७६. यह सूत्र सुगम है।

*** सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सर्व विशुद्ध सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है।**

§ ७७. जो सम्यक्त्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सर्व विशुद्ध सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव है उसके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, क्योंकि उत्कृष्ट विशुद्धिरूप परिणामके बिना प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्टपना नहीं बन सकता।

*** अणंताणुबंधीणं उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ ७८. सुगमं ।

*** संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ।**

§ ७९. एदस्स सुत्तस्स मिच्छत्तसामित्तसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं, सामित्तविसयभेदाभावादो ।

*** अपच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसउदीरणा कस्स ?**

§ ८०. सुगमं ।

*** संजमाहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा ।**

§ ८१. जो असंजदसम्माइट्ठी अण्णदरकम्मंसिओ संजमाहिमुहो होदूण अणंतगुणाए विसोहीए अंतोमुहुत्तकालं विसुद्धो तस्स चरिमसमये वट्टमाणगस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होइ, एत्तो अण्णत्थापच्चक्खाणपदेसुदीरणापाओग्गुक्कस्सविसोहीए अणुवलंभादो । तस्स पुण विसेसणंतरमेदं सव्वविसुद्धस्से त्ति हेट्ठिमासेसविसोहीहिंतो अणंतगुणाए चरिमुक्कस्सविसोहीए परिणदस्से त्ति भणिदं होदि । ण केवलमेसो एयवियप्पो चेव परिणामो उक्कस्सपदेसुदीरणाए कारणं, किंतु अण्णो वि परिणामवियप्पो अत्थि त्ति पदुप्पायणट्ठमाह—ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा । एतदुक्तं भवति—संजमाहिमुहचरिमसमय-

---

*** अनन्तानुबन्धियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ७८. यह सूत्र सुगम है ।

*** संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टिके होती है ।**

§ ७९. इस सूत्रका मिथ्यात्वके स्वामित्व विषयक सूत्रके समान ही व्याख्यान करना चाहिए, क्योंकि इन दोनोंमें स्वामित्वविषयक भेद नहीं पाया जाता ।

*** अप्रत्याख्यानावरण कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ८०. यह सूत्र सुगम है ।

*** सर्वविशुद्ध अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टिके होती है ।**

§ ८१. जो असंयतसम्यग्दृष्टि अन्यतर कर्मांशिक जीव संयमके अभिमुख होकर अन्तर्मुहूर्त काल तक अनन्तगुणी विशुद्धिसे विशुद्ध हुआ है उसके अन्तिम समयमें प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, क्योंकि इसके सिवाय अन्यत्र अप्रत्याख्यानावरण कषायोंकी प्रदेश उदीरणाके योग्य उत्कृष्ट विशुद्धि नहीं पाई जाती । तथा उसका दूसरा विशेषण यह है—सव्वविसुद्धस्स—'अधस्तन समस्त विशुद्धियोंसे अनन्तगुणी अन्तिम उत्कृष्ट विशुद्धिसे परिणत हुए जीवके' यह उक्त कथनका तात्पर्य है । केवल यह एक प्रकारका ही परिणाम उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका कारण नहीं है, किन्तु अन्य भी परिणाम विकल्प है इस बातका कथन करनेके लिए सूत्रमें कहा है—ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा । इसका यह तात्पर्य है कि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती

असंजदसम्माइट्ठिस्स असंखेज्जलोगमेत्ताणि विसोहिट्ठाणाणि जहण्णट्ठाणप्पहुडि छवड्ढि-सरूवेणावट्ठिदाणि अत्थि, तेसिमायामे आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तभागहारेण खंडिदे तत्थ चरिमखंडसव्वपरिणामेहिं असंखेज्जलोगमेयभिण्णेहिं उक्कस्सिया पदेसुदीरणा ण विरुज्झदि त्ति। तक्खंडचरिमपरिणामो सव्वविसुद्धपरिणामो णाम। तत्थेव जहण्णपरि-णामो ईसिपरिणामो णाम। सेसासेसपरिणामा मज्झिमपरिणामा त्ति भणंते। कथमेदेहिं भिण्णपरिणामेहिं उक्कस्सपदेसुदीरणलक्खणकज्जस्साभिण्णसरूवस्स सिद्धी ण विरुज्झदि त्ति णासंकणिज्जं, कत्थ वि भिण्णकारणेहिंतो वि अभिण्णकज्जुप्पत्तीए बाहाणुवलंभादो। तदो सव्वविसुद्धस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा संजमाहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्मा-इट्ठिस्स पयदुक्कस्ससामित्तमिदि ण किंचि विरुद्धं।

* पच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?

§ ८२. सुगमं।

* संजमाहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स ईसिमज्झिम परिणामस्स वा।

§ ८३. एदस्स सुत्तस्स अत्थो अणंतरादीदसामित्तसुत्तस्सेव वक्खाणेयव्वो, विसे-साभावादो। णवरि तत्थ संजमाहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स उक्कस्ससामित्तं

---

असंयतसम्यग्दृष्टिके जघन्य स्थानसे लेकर छह वृद्धिरूपसे अवस्थित असंख्यात लोकप्रमाण विशुद्धिस्थान हैं। उनके आयाममें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहारका भाग देने पर वहाँ जो अन्तिम खण्डके परिणाम प्राप्त हों, असंख्यात लोकप्रमाण भेदरूप उन सब अन्तिम खण्डके परिणामोंके द्वारा उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विरोधको प्राप्त नहीं होती है। उस खण्डका जो अन्तिम परिणाम है वह सर्वविशुद्ध परिणाम संज्ञावाला है और उसी खण्डमें जघन्य परिणाम है, उसकी ईषत् परिणाम संज्ञा है। उनके सिवाय शेष अशेष परिणाम मध्यम परिणाम कहलाते हैं।

**शंका**—इन भिन्न परिणामोंसे अभिन्नस्वरूप उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा लक्षण कार्यकी सिद्धि कैसे विरोधको प्राप्त नहीं होती ?

**समाधान**—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कहीं भी भिन्न कारणोंसे भी अभिन्न कार्योंकी उत्पत्ति होनेमें बाधा नहीं पाई जाती। इसलिए सर्वविशुद्ध अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, इसमें कुछ भी विरुद्ध नहीं है।

* प्रत्याख्यानावरण कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?

§ ८२. यह सूत्र सुगम है।

* सर्व विशुद्ध अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके होती है।

§ ८३. अनन्तर अतीत हुए स्वामित्व सूत्रके समान इस सूत्रके अर्थका व्याख्यान करना चाहिए, क्योंकि उसके व्याख्यानसे इसके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता

जादं। एत्थ पुण तव्विसोहीदो अणंतगुणसंजमाहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदविसोहीए उक्कस्ससामित्तमिदि एत्तियो भेदो सुत्तणिद्दिट्ठो दट्ठव्वो।

*** कोहसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स।**

§ ८४. सुगमं।

*** खवगस्स चरिमसमयकोधवेदगस्स।**

§ ८५. एत्थ खवगणिद्देसो अक्खवगपडिसेहफलो। किमट्ठं तप्पडिसेहो कीरदे? ण, हेट्ठिमासेसविसोहीओ पेक्खियूणाणंतगुणाए खवगविसोहीए असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणं[1] घेत्तूण पयदसामित्तविहाणट्ठं तप्पडिसेहकरणादो। दुचरिमादिसमयकोहवेदगपडिसेहट्ठं चरिसमयकोहवेदगस्से त्ति णिद्देसो। तदो अण्णदरकम्मंसियलक्खणेणागंतूणण्णदरवेद-कोहसंजलणाणमुदएण खवगसेढिमारुहिय कोहसंजलणपढमट्ठिदिं पढम-विदिय-तदियसंगहकिट्टिवेदगकालाणुसंधाणेण[2] लद्धमाहप्पं थोवावसेसं गालिय जाधे समयाहियावलियमेत्तपढमट्ठिदीए चरिमसमयकोहवेदगभावेणावट्ठिदो ताधे तस्स पढमट्ठिदिचरिमगुणसेढिगोवुच्छादो उदीरिज्जमाणासंखेज्जसमयपबद्धे घेत्तूण पयदसामित्तसंबंधो

है कि वहाँ संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टिके उत्कृष्ट स्वामित्व प्राप्त हुआ है, किन्तु यहाँ उस विशुद्धिकी अपेक्षा संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतकी अनन्तगुणी विशुद्धिसे उत्कृष्ट स्वामित्व प्राप्त हुआ है इस प्रकार सूत्रमें निर्दिष्ट किया गया इतना ही भेद जानना चाहिए।

*** क्रोधसंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है।**

§ ८४. यह सूत्र सुगम है।

*** अन्तिम समयवर्ती क्रोधवेदक क्षपकके होती है।**

§ ८५. यहाँ सूत्रमें क्षपक पदके निर्देशका फल अक्षपकका निषेध करना है।

**शंका**—उसका निषेध किसलिए करते हैं?

**समाधान**—नहीं, क्योंकि नीचेकी समस्त विशुद्धियोंको देखते हुए उनसे अनन्तगुणी क्षपकसम्बन्धी विशुद्धिसे असंख्यात समयप्रबद्धोंकी उदीरणाको ग्रहण कर प्रकृत स्वामित्वका विधान करनेके लिए उसका प्रतिषेध किया है। तथा द्विचरम आदि समयवर्ती क्रोधवेदकका प्रतिषेध करनेके लिए 'चरमसमयकोहवेदगस्स' इस पदका निर्देश किया है। इसलिए अन्यतर कर्मांशिक लक्षणसे आकर, अन्यतर वेद और क्रोधसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरोहण कर तथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय संग्रहकृष्टिके वेदककालके अनुसन्धान द्वारा जिसने माहात्म्य प्राप्त किया है ऐसी क्रोधसंज्वलनसम्बन्धी प्रथम स्थितिके कुछ भागको छोड़कर शेष सब भागको गलाकर जब एक समय अधिक एक आवलिमात्र प्रथम स्थितिके अन्तिम समयमें क्रोधवेदकभावसे अवस्थित होता है तब उसके प्रथम स्थिति सम्बन्धी अन्तिम गुणश्रेणि

१. ता०प्रतौ -मुदीरणं च घेत्तूण इति पाठः।
२. आ०प्रतौ -विदियसंगह- इति पाठः।

कायव्वो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स समुदायत्थो ।

* एवं माण-मायासंजलणाणं ।

§ ८६. सुगममेदमप्पणासुत्तं । णवरि कोध-माणाणमुदएण खवगसेढिं चढिदस्स चरिमसमयमाणवेदगस्स माणसंजलणविसयमुक्कस्ससामित्तं कायव्वं । कोह-माण-मायाणमुदएण सेढिमारूढस्स चरिमसमयमायावेदयस्स मायासंजलणपदेसुदीरणाविसयमुक्कस्ससामित्तं होदि त्ति एसो[1] विसेसो एत्थ दट्ठव्वो ।

* लोहसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?

§ ८७. सुगममेदं पुच्छावक्कं ।

* खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स ।

§ ८८. जो खवगो अण्णदरकम्मंसियलक्खणेणागदो अण्णदरवेद-संजलणाणमुदएण सेढिमारुहिय जहाकममपुव्वाणियट्टिकरणगुणट्ठाणाणि बोलिय सुहुमसांपराइयो होदूण तत्थ समयाहियावलियसकसायभावेणवट्ठिदो तक्कालोदीरिज्जमाणासंखेज्जसमयपबद्धे घेत्तूण पयदुक्कस्ससामित्तसंबंधो कायव्वो, हेट्ठिमासेसपदेसुदीरणाहिंतो एत्थतणपदेसुदीरणाए

गोपुच्छामेंसे उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धोंको ग्रहण कर प्रकृत स्वामित्वका सम्बन्ध करना चाहिए, यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है ।

* इसी प्रकार मानसंज्वलन और मायासंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका स्वामित्व जानना चाहिए ।

§ ८६. यह अर्पणासूत्र सुगम है । इतनी विशेषता है कि क्रोध और मानके उदयसे क्षपकश्रेणि पर चढ़े हुए अन्तिम समयवर्ती मानवेदकके मानसंज्वलन सम्बन्धी उत्कृष्ट स्वामित्व करना चाहिए । तथा क्रोध, मान और माया संज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणि पर चढ़े हुए अन्तिम समयवर्ती मायावेदकके मायासंज्वलनसम्बन्धी प्रदेश उदीरणाविषयक उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, इस प्रकार यह विशेष यहाँ पर जानना चाहिए ।

* लोभसंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ।

§ ८७. यह पृच्छावाक्य सुगम है ।

* जो एक समय अधिक एक आवलि कालके अन्तिम समय तक सकषायभावसे अवस्थित है उस क्षपकके होती है ।

§ ८८. अन्यतर कर्मांशिक लक्षणसे आया हुआ जो क्षपक अन्यतर वेद और अन्यतर संज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणि पर आरोहण कर, क्रमसे अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंको विताकर तथा सूक्ष्मसाम्परायिक होकर जो एक समय अधिक एक आवलि काल तक सकषायभावसे अवस्थित है उसके उस कालमें उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धोंको ग्रहण कर प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वका सम्बन्ध करना चाहिए, क्योंकि नीचेकी समस्त प्रदेश

१. आ०प्रतौ होदि एसो इति पाठः ।

विसोहिपाहम्मेणासंखेज्जगुणत्तदंसणादो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स समुच्चयत्थो ।

*** इत्थिवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ ८९. सुगमं ।

*** खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयइत्थिवेदगस्स ।**

§ ९०. जो खवगो अण्णदरकम्मंसियलक्खणेणागंतूणित्थिवेदोदएण खवगसेढिं चढिय अंतरकरणाणंतरं णवुंसयवेदमंतोमुहुत्तेण खविय तदो इत्थिवेदं खवेमाणो समयाहियावलियचरिमसमयइत्थिवेदगभावेणावट्ठिदो तस्स तक्कालोदीरिज्जमाणासंखेज्जसमयपबद्धे घेत्तूण पयदुक्कस्ससामित्तं होइ त्ति सुत्तत्थसंबंधो ।

*** पुरिसवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरिणा कस्स ?**

§ ९१. सुगमं ।

*** खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयपुरिसवेदगस्स ।**

९२. एत्थ वि पुव्वं व सुत्तस्स संबंधो कायव्वो । सुगममण्णं ।

*** णवुंसयवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

९३. सुगमं ।

---

उदीरणाओंसे यहाँकी प्रदेश उदीरणा विशुद्धिके माहात्म्यवश असंख्यातगुणी देखी जाती है इस प्रकार यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है ।

*** स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ८९ यह सूत्र सुगम है ।

*** जो एक समय अधिक एक आवलि कालके अन्तिम समय तक स्त्रीवेदी है उस क्षपकके होती है ।**

§ ९०. जो क्षपक अन्यतर कर्मांशिकलक्षणसे आकर और स्त्रीवेदके उदयसे क्षपकश्रेणि पर चढकर अन्तरकरणके बाद नपुंसकवेदका अन्तर्मुहूर्तमें क्षपण कर उसके बाद स्त्रीवेदका क्षपण करता हुआ समयाधिक आवलि काल शेष रहने पर उदीरणाके अन्तिम समयमें स्त्रीवेदके भावसे अवस्थित है उसके तत्काल उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धोंको ग्रहण कर प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है, ऐसा इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है ।

*** पुरुषवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ९१. यह सूत्र सुगम है ।

*** जो समयाधिक एक आवलि कालके अन्तिम समय तक पुरुषवेदी है उस क्षपकके होती है ।**

§ ९२. यहाँ भी पहलेके समान सूत्रका सम्बन्ध करना चाहिए । अन्य कथन सुगम है ।

*** नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ९३. यह सूत्र सुगम है ।

*** खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयणवुंसयवेदगस्स ।**

९४. समयाहियावलियमेत्तकालेण जो चरिमसमयणवुंसयवेदो भविस्सदि सो समयाहियावलियचरिमसमयणवुंसयवेदो त्ति भण्णदे । तस्स खवगविसेसणविसिट्ठस्स पयदुक्कस्ससामित्ताहिसंबंधो होइ, हेट्ठिमासेसपदेसुदीरणाणमेत्तो असंखेज्जगुणहीणत्तदंसणादो ।

*** छण्णोकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

९५. सुगमं ।

*** खवगस्स चरिमसमयअपुव्वकरणे वट्टमाणगस्स ।**

९६. जो खवगो अण्णदरकम्मंसिओ तस्स चरिमसमयअपुव्वकरणे वट्टमाणगस्स पयदुक्कस्ससामित्तं होदि त्ति सुत्तत्थसमुच्चयो ।

एवमोघेणुक्कस्ससामित्तं समत्तं ।

§ ९७. संपहि आदेसपरूवणट्ठमुच्चारणाणुगमे कीरमाणे ओघपुरस्सरं वत्तइस्सामो । तं जहा—सामित्तं दुविहं–जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णि०—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–अणंताणु०४ उक्कस्सपदेसुदीरणा कस्स ? अण्णद० सव्वविसुद्धस्स संजमाहिमुहस्स चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स । सम्म० उक्क० पदेसुदी०

*** जो समयाधिक एक आवलिकालके अन्तिम समय तक नपुंसकवेदी है उस क्षपकके होती है ।**

§ ९४. समयाधिक आवलिमात्र कालके द्वारा जो अन्तिम समयवर्ती नपुंसकवेदी होगा वह समयाधिक आवलि-अन्तिम समयवर्ती नपुंसकवेदी कहलाता है । क्षपक विशेषण विशिष्ट उस क्षपकके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वका अभिसम्बन्ध होता है, क्योंकि नीचेकी अशेष प्रदेश उदीरणाएं इससे असंख्यातगुणी हीन देखी जाती हैं ।

*** छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ ९५. यह सूत्र सुगम है ।

*** अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें विद्यमान क्षपकके होती है ।**

§ ९६. अन्यतर कर्मांशिक जो क्षपक है, अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें विद्यमान उस क्षपकके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्व होता है यह सूत्रार्थसमुच्चय है ।

इस प्रकार ओघसे उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

§ ९७. अब आदेशका कथन करनेके लिए उच्चारणाका अनुगम करने पर ओघ पूर्वक बतलाते हैं । यथा—स्वामित्व दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चारकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्व विशुद्ध संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? जो समयाधिक एक आवलि काल तक अक्षीण-दर्शनमोही है ऐसे अन्यतर कृतकृत्यवेदकके होती

**कस्स ? अण्णद० समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहस्स। सम्मामि० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० सम्मत्ताहिमुहस्स सव्वविसुद्धस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स। अपच्चक्खाण०४ उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० संजमाहिमुहस्स सव्वविसुद्धस्स चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स। एवं पच्चक्खाण०४। णवरि चरिमसमयसंजदासंजदस्स। चदुसंजलण-तिण्णिवेद० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० खवगस्स समयाहिया-वलियचरिमसमयउदीरगस्स। छण्णोक० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० चरिमसमय-अपुव्वकरणस्स सव्वविसुद्धस्स। एवं मणुसतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा।**

**§ ९८. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० पढम-सम्मत्ताहिमुहस्स समयाहियावलियचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स तस्स उक्क० पदेसुदी०। अणंताणु०४ उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० पढमसम्मत्ताहिमुहस्स चरिमसमय-मिच्छाइट्ठिस्स। सम्म०-सम्मामि० ओघं। बारसक०-सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा। एवं पढमाए। विदियादि सत्तमा त्ति एवं चेव। णवरि सम्म० बारसक०भंगो।**

**§ ९९. तिरिक्खेसु मिच्छत्त-अणंताणु०४ उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद०**

होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अन्यतर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है। अप्रत्याख्यानावरण चार कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर संयमके अभिमुख हुए सर्व-विशुद्ध अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके होती है। इसी प्रकार प्रत्याख्यानावरण चार कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका स्वामित्व जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके कहना चाहिए। चार संज्वलन और तीन वेदोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? समयाधिक आवलिके शेष रहने पर अन्तिम समयवर्ती उदीरक अन्यतर क्षपकके होती है। छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें विद्यमान अन्यतर सर्वविशुद्ध क्षपकके होती है। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए।

§ ९८. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? जो प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख है, मिथ्यात्वके एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर जो अन्तिम समयवर्ती उदीरक है उस अन्यतर मिथ्यादृष्टिके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती है। अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरणा किसके होती है ? प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख अन्यतर अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। बारह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्व विशुद्ध अथवा तत्प्रायोग्य विशुद्ध सम्यग्दृष्टिके होती है। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है।

§ ९९. तिर्यञ्चोंमे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चार कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? संयमासंयमके अभिमुख हुए सर्व विशुद्ध अन्यतर अन्तिम समयवर्ती

संजमासंजमाहिमुहस्स चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । एवमपच्चक्खाण०४ । णवरि चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । सम्म०–सम्मामि० ओघं । अट्ठक०–णवणोक० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स तप्पाओग्ग-विसुद्धस्स वा । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा । जोणिणीसु सम्म० अट्ठकसायभंगो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० सव्वविसुद्धस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा ।

§ १००. देवेसु मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–छण्णोक० णारयभंगो । इत्थिवेद–पुरिसवेद० बारसकसायभंगो । एवं सोहम्मीसाण० । एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । भवण०–वाणवें०–जोदिसि० देवोघं । णवरि सम्म० बारसक०भंगो । अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० आणदभंगो । एवं जाव० ।

* जहण्णसामित्तं ।

§ १०१. उक्कस्ससामित्ताणंतरमेत्तो जहण्णसामित्तमहिकयं दट्ठव्वमिदि अहियार-परामरसवक्कमेदं ।

मिथ्यादृष्टिके होती है । इसी प्रकार अप्रत्याख्यानावरण चार कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा-का स्वामित्व जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सर्वविशुद्धअन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके यह उत्कृष्ट स्वामित्व होता है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्वविशुद्ध अथवा तत्प्रायोग्य विशुद्ध संयतासंयतके होती है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए। योनिनियोंमें सम्यक्त्व-का भंग आठ कषायोंके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर सर्वविशुद्ध अथवा तत्प्रायोग्य विशुद्धके होती है।

§ १००. देवोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नो-कषायोंका भंग नारकियोंके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग बारह कषायोंके समान है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमारसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ स्त्रीवेद नहीं है। भवन-वासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनतकल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

* जघन्य स्वामित्वका अधिकार है ।

§ १०१. उत्कृष्ट स्वामित्वके अनन्तर यहाँ से जघन्य स्वामित्व अधिकृत जानना चाहिए इस प्रकार अधिकारका परामर्श करनेवाला यह वाक्य है।

*** मिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ १०२. सुगमं ।

*** सण्णिमिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा ।**

§ १०३. एत्थ सण्णिणिद्देसो असण्णिपडिसेहफलो । तत्थ जहण्णपदेसुदीरणाणिबंधणसंकिलेसबहुत्ताणुवलंभादो । ण च संकिलेसबहुत्तेण विणा पदेसुदीरणाए जहण्णभावो होदि, विप्पडिसेहादो । अदो चेव मिच्छाइट्ठिविसेसणं सुसंबद्धं, सेसगुणट्ठाणसंकिलेसादो मिच्छाइट्ठिसंकिलेसस्साणंतगुणत्तदंसणादो । तस्सेव संकिलेसबहुत्तस्स विसेसियूण परूवणट्ठमिदमाह—'**उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा**' त्ति । एतदुक्तं भवति—सामित्तसमए मिच्छाइट्ठिस्स असंखेज्जलोगमेत्ताणि संकिलेसट्ठाणाणि उक्कस्सट्ठिदिबंधपाओग्गाणि अत्थि, तेसु आवलि० असंख०भागमेत्तखंडीकयेसु जो चरिमखंडो असंखेज्जलोगमेत्तपरिणामट्ठाणवूरिदो, तत्थतणसव्वपरिणामेहिं जहण्णिया पदेसुदीरणा ण विरुज्झदि त्ति । एत्थ चरिमखंडपमाणागमणट्ठमावलि० असंखे०भागमेत्तो भागहारो होदि त्ति कत्तो णव्वदे ? सुत्ताविरुद्धपुव्वाइरियवक्खाणादो ।

*** सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

*** मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ।**

§ १०२. यह सूत्र सुगम है ।

*** उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणामवाले अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले संज्ञी मिथ्यादृष्टिके होती है ।**

§ १०३. यहाँ संज्ञी पदका निर्देश असंज्ञियोंका निषेध करनेके लिए किया है, क्योंकि असंज्ञियोंमें जघन्य प्रदेश उदीरणाके कारणभूत संक्लेशबहुत्वका अभाव है । और संक्लेश बहुत्वके बिना प्रदेश उदीरणाका जघन्यपना बनता नहीं, क्योंकि इसका विप्रतिषेध है । और इसीलिए मिथ्यादृष्टि यह विशेषण सुसम्बद्ध है, क्योंकि शेष गुणस्थानोंके संक्लेशसे मिथ्यादृष्टिका संक्लेश अनन्तगुणा देखा जाता है । उसी संक्लेशबहुत्वकी विशेषताका कथन करनेके लिए यह कहा है—'उत्कृष्ट संक्लेशवालेके अथवा ईषत् मध्यम परिणामवालेके ?' उक्त कथनका यह तात्पर्य है कि स्वामित्वके समय मिथ्यादृष्टिके असंख्यात लोकप्रमाण संक्लेशस्थान उत्कृष्ट स्थितिके बन्धके योग्य होते हैं । उनके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण खण्ड करनेपर असंख्यात लोकप्रमाण परिणामोंसे आपूरित जो अन्तिम खण्ड प्राप्त होता है उसमेंके सब परिणामोंसे जघन्यप्रदेश उदीरणा विरोधको नहीं प्राप्त होती ।

**शंका**—यहाँ अन्तिम खण्डके लानेके लिए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहार है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

**समाधान**—सूत्रके अविरुद्ध कथन करनेवाले पूर्वाचार्योंके व्याख्यानसे जाना जाता है ।

*** सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ १०४. सुगमं।

*** मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसम्माइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा।**

§ १०५. एत्थ मिच्छत्ताहिमुहणिद्देसो सत्थाणसम्माइट्ठिपडिसेहफलो। चरिमसमयसम्माइट्ठिणिद्देसो दुचरिमादिहेट्ठिमसमयसम्माइट्ठिपडिसेहट्ठो, तत्थ सव्वुक्कस्ससंकिलेसाभावादो। सव्वसंकिलिट्ठस्से त्ति णिद्देसो सव्वुक्कस्ससंकिलेसाणुविद्धपडिवादट्ठाणगहणट्ठो, उक्कस्ससंकिलेससंबंधेण विणा पदेसुदीरणाए जहण्णभावाणुववत्तीदो। णवरि तप्पाओग्गाणुक्कस्सपडिवादट्ठाणेहि मि जहण्णसामित्तमविरुद्धं ति जाणावणट्ठमीसिमज्झिमपरिणामस्स वा त्ति णिद्देसो कओ। सेसं सुगमं।

*** सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा कस्स ?**

§ १०६. सुगमं।

*** मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा।**

§ १०७. एयं पि सुत्तं सुगमं, अणंतरसामित्तसुत्तेण समाणवक्खाणत्तादो।

*** सोलसकसाय-णवणोकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा मिच्छत्तभंगो।**

---

§ १०४. यह सूत्र सुगम है।

*** सर्व संक्लेश परिणामवाले अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके होती है।**

§ १०५. स्वस्थान सम्यग्दृष्टिका प्रतिषेध करनेके लिए यहाँ सूत्रमें 'मिथ्यात्वके अभिमुख हुए' पदका निर्देश किया है। द्विचरम आदि अधस्तन समयवर्ती सम्यग्दृष्टिका निषेध करनेके लिए 'अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि' पदका निर्देश किया है, क्योंकि सम्यग्दृष्टिके द्विचरम आदि समयोंमें सबसे उत्कृष्ट संक्लेशका अभाव है। सबसे उत्कृष्ट संक्लेशसे अनुविद्ध प्रतिपातस्थानके ग्रहण करनेके लिए 'सबसे उत्कृष्ट संक्लेशवालेके' पदका निर्देश किया है, क्योंकि उत्कृष्ट संक्लेशके सम्बन्धके बिना प्रदेश उदीरणाका जघन्यपना नहीं बन सकता। किन्तु इतनी विशेषता है कि तत्प्रायोग्य अनुत्कृष्ट प्रतिपात स्थानोंके द्वारा भी जघन्य स्वामित्व अविरुद्ध है इसका ज्ञान करानेके लिए 'ईषत् मध्यम परिणामवालेके' यह निर्देश किया है। शेष कथन सुगम है।

*** सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ?**

§ १०६. यह सूत्र सुगम है।

*** सर्व संक्लेश परिणामवाले अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है।**

§ १०७. यह भी सूत्र सुगम है, क्योंकि अनन्तर पूर्व सूत्रके समान इसका व्याख्यान है।

*** सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणाके स्वामित्वका भंग मिथ्यात्वके समान है।**

§ १०८. जहा मिच्छत्तस्स जहण्णपदेसुदीरणासामित्तं कदं तहा एदेसिं पि कम्माणं कायव्वं, विसेसाभावादो।

एवमोघो समत्तो।

§ १०९. संपहि आदेसपरूवणट्ठमुच्चारणाणुगममिह कस्सामो। तं जहा—जहण्णए पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–णवणोक० जह० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स वा। सम्मामि० जह० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० मिच्छत्ताहिमुहस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स। एवं सम्मत्तस्स। णवरि चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स। सव्वणिरय-तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खतिय-मणुसतिय-देवा जाव सहस्सारे त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज०–अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपयडी० जह० पदेसुदी० कस्स ? अण्णद० तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। आणदादि जाव णवगेवज्जा त्ति सणक्कुमारभंगो। एवं जाव।

* एयजीवेण कालो।

§ ११०. सुगममेदमहियारसंभालणसुत्तं।

---

§ १०८. जिस प्रकार मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका स्वामित्व किया है उसी प्रकार इन कर्मोंकी भी जघन्य प्रदेश उदीरणका स्वामित्व करना चाहिए, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

इस प्रकार ओघ स्वामित्व समाप्त हुआ।

§ १०९. अब आदेशका कथन करनेके लिए उच्चारणाका अनुगम यहाँ पर करेंगे। यथा—जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले या तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाले अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? मिथ्यात्वके अभिमुख हुए तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाले अन्तिम समयवर्ती अन्यतर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है। इसी प्रकार सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका स्वामित्व जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके कहना चाहिए। सब नारकी, सामान्य तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिक, मनुष्यत्रिक और सामान्य देवोंसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा होती है उनका भंग ओघके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त और अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा किसके होती है ? अन्यतर तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवालेके होती है। आनत कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सनत्कुमार कल्पके समान भंग है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

*** एक जीवकी अपेक्षा कालका अधिकार है।**

§ ११०. अधिकारकी सम्हाल करनेवाला यह सूत्र सुगम है।

*** मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १११. सुगममेदं पुच्छावक्कं ।

*** जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ ।**

§ ११२. कुदो ? संजमाहिमुहमिच्छाइट्ठिचरिमसमए चेव तदुवलंभादो ।

*** अणुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ ११३. सुगमं ।

*** एत्थ तिण्णि भंगा ।**

§ ११४. एत्थाणुक्कस्सपदेसुदीरगकालणिद्देसावसरे तिण्णि भंगा दट्ठव्वा— अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो त्ति । तत्थादिल्लदुगं सुगमं । संपहि तदियवियप्पस्स जहण्णुक्कस्सकालावहारणट्ठमाह—

*** जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ।**

§ ११५. कुदो ? सम्मत्तादो मिच्छत्तमुवगंतूण सव्वजहण्णंतोमुहुत्तेण पडिणियत्तम्मि तदुवलद्धीदो ।

*** उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।**

§ ११६. कुदो ? अद्धपोग्गलपरियट्टादिसमये पढमसम्मत्तमुप्पाइय सव्वलहुं

---

*** मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?**

§ १११. यह पृच्छावाक्य सुगम है ।

*** जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।**

§ ११२. क्योंकि संयमके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमें ही उसकी उपलब्धि होती है ।

*** अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?**

§ ११३. यह सूत्र सुगम है ।

*** इस विषयमें तीन भंग हैं ।**

§ ११४. यहाँ अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकके कालका निर्देश करनेके विषयमें तीन भंग जानना चाहिए—अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित । उनमेसे आदिके दो भंग सुगम हैं । अब तीसरे विकल्पके जघन्य और उत्कृष्ट कालका निश्चय करनेके लिए कहते हैं—

*** जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ।**

§ ११५. क्योंकि सम्यक्त्वसे मिथ्यात्वको प्राप्त होकर सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा प्रतिनिवृत्त होनेपर उसकी उपलब्धि होती है ।

*** उत्कृष्ट काल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है ।**

§ ११६. क्योंकि अर्धपुद्गल परिवर्तनप्रमाण कालके प्रथम समयमें प्रथम सम्यक्त्वको

मिच्छत्तमुवणमिय तत्थ पयदकालस्सादिं कादूण पुणो देसूणद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय सव्वजहण्णंतोमुहुत्तमेत्तसेसे सिज्झदव्वए त्ति पडिवण्णसम्मत्तपज्जायम्मि तदुवलंभादो ।

*** सेसाणं कम्माणमुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ ११७. सुगमं ।

*** जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ ।**

§ ११८. कुदो ? सव्वेसिमप्पप्पणो सामित्तविसये चरिमविसोहिए समुवलद्धजहण्णभावत्तादो ।

*** अणुक्कस्सपदेसुदीरगो पयडिउदीरणाभंगो ।**

§ ११९. जहा पयडिउदीरणाए जहण्णुक्कस्सकालणिद्देसो एदेसिं कम्माणं कओ तहा एत्थ वि अणुक्कस्सपदेसुदीरणाए कायव्वो, विसेसाभावादो त्ति भणिदं होदि । संपहि आदेसपरूवणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमणुसरामो—

*** णिरयगदीए मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणंताणुबंधीणमुक्कस्स पदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १२०. सुगमं ।

*** जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ ।**

---

उत्पन्न कर और अतिशीघ्र मिथ्यात्वको प्राप्त होकर वहाँ प्रकृत कालका प्रारम्भ कर पुनः कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण काल तक परिभ्रमण कर सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्तमात्र कालके शेष रहने पर सिद्ध होगा, इसलिए सम्यक्त्व पर्यायके प्राप्त करने पर उक्त कालकी उपलब्धि होती है ।

*** शेष कर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका कितना काल है ?**

§ ११७. यह सूत्र सुगम है ।

*** जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।**

§ ११८. क्योंकि सभीके अपनी-अपनी स्वामित्व विषयक अन्तिम विशुद्धिका जघन्यपना अर्थात् मात्र एक समय काल तक अस्तित्व पाया जाता है ।

*** अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका भंग प्रकृति उदीरणाके समान है ।**

§ ११९. इन कर्मोंकी प्रकृति उदीरणाके जघन्य और उत्कृष्ट कालका निर्देश जिस प्रकार किया है उसी प्रकार यहाँ भी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब आदेशका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धका अनुसरण करते हैं—

*** नरकगतिमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?**

§ १२०. यह सूत्र सुगम है ।

**जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।**

१२१. कुदो ? मिच्छत्ताणंताणुबंधीणमुवसमसम्मत्ताहिमुहमिच्छाइट्ठिस्स समयाहियावलियचरिमसमए दुचरिमसमए च जहाकमेणुक्कस्ससामित्तपडिलंभादो । सम्मत्तस्स कदकरणिज्जसमयाहियावलियाए सम्मामिच्छत्तस्स वि सम्मत्ताहिमुहसम्मामिच्छाइट्ठिचरिमविसोहीए विसयंतरपरिहारेणुक्कस्ससामित्तदंसणादो । संपहि एदेसिमणुक्कस्सपदेसुदीरगजहण्णुक्कस्सकालावहारणट्ठमाह—

*** अणुक्कस्सपदेसुदीरगो पयडिउदीरणाभंगो ।**

§ १२२. एदेसिं कम्माणमणुक्कस्सपदेसुदीरगस्स जहण्णुक्कस्सकाला पयडिउदीरणाभंगेणाणुगंतव्वा, तत्थतण[2]जहण्णुक्कस्सकालेहिंतो भेदाभावादो । संपहि वुत्तसेसाणं कम्माणमुक्कस्साणुक्कस्सपदेसुदीरगजहण्णुक्कस्सकालगवेसणट्ठमाह—

*** सेसाणं कम्माणमित्थि-पुरिसवेदवज्जाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १२३. एत्थित्थि-पुरिसवेदाणं परिवज्जणं, णिरयगईए तेसिमुदीरणाभावादो त्ति घेत्तव्वं । अवसेसं सुगमं ।

---

§ १२१. क्योंकि उपशमसम्यक्त्वके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके एक समय अधिक एक आवलि कालके शेष रहने पर उदीरणा विषयक अन्तिम समयमें और द्विचरम समयमें क्रमसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका उत्कृष्ट स्वामित्व प्राप्त होता है। तथा सम्यक्त्वका कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर और सम्यग्मिथ्यात्वका भी सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिकी अन्तिम विशुद्धिके प्राप्त होने पर अन्य स्थानको छोड़कर उक्त स्थानों पर उत्कृष्ट स्वामित्व देखा जाता है। अब इनके अनुत्कृष्ट प्रदेशोंकी उदीरणा करनेवालेके जघन्य और उत्कृष्ट कालका निश्चय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका भंग प्रकृति उदीरणाके समान है ।**

§ १२२. इन कर्मोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल प्रकृति उदीरणाके कालके समान जानना चाहिए, क्योंकि वहाँके जघन्य और उत्कृष्ट कालसे प्रकृत कालमें कोई भेद नहीं पाया जाता। अब उक्त कर्मोंसे बाकी बचे हुए कर्मोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवालेके जघन्य और उत्कृष्ट कालका विचार करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** स्त्रीवेद और पुरुषवेदको छोड़कर शेष कर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका कितना काल है ?**

§ १२३. नरकगतिमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणा नहीं होती, इसलिए यहाँ स्त्रीवेद और पुरुषवेदका निषेध किया है ऐसा यहाँ जानना चाहिये। शेष कथन सुगम है।

---

१. ता०प्रतौ चरिमसमए जहाकमेण इति पाठः।

२. ता०प्रतौ एत्थतण- इति पाठः।

* जहण्णेण एगसमओ ।

§ १२४. कुदो ? सत्थाणसम्माइट्ठिस्स सव्वुक्कस्सविसोहीए ईसिमज्झिमपरिणामेण वा एगसमयं परिणमिय बिदियसमये परिणामंतरं गदस्स तदुवलंभादो ।

* उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

§ १२५. कुदो ? उक्कस्सपदेसुदीरणापाओग्गचरिमखंडज्झवसाणट्ठाणेसु असंखेज्ज-लोगमेत्तेसु अवट्ठाणकालस्स उक्कस्सेण तप्पमाणत्तोवएसादो ।

* अणुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?

§ १२६. सुगमं ।

* जहण्णेण एगसमओ ।

§ १२७. कुदो ? उक्कस्सादो अणुक्कस्सभावं गंतूण एगसमएण पुणो वि परिणाम-वसेणुक्कस्सभावेण परिणदम्मि सव्वेसिमेगसमयमेत्ताणुक्कस्सजहण्णकालोवलंभादो ।

* उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

§ १२८. कुदो ? कसाय-णोकसायाणं पयडिउदीरणाए उक्कस्सकालस्स तप्पमाण-त्तोवलंभादो । एदेण सामण्णणिद्देसेण णवुंसयवेदारइ-सोगाणं पि अंतोमुहुत्तमेत्तुक्कस्स-कालाइप्पसगे तप्पडिसेहमुहेण तत्तो बहुअकालपरूवणट्ठमाह—

---

* जघन्य काल एक समय है ।

§ १२४. क्योंकि स्वस्थान सम्यग्दृष्टिके सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिरूपसे या ईषत् मध्यम परिणामरूपसे एक समय तक परिणम कर दूसरे समयमें दूसरे परिणामको प्राप्त होने पर एक समयप्रमाण जघन्य काल प्राप्त होता है ।

* उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

§ १२५. क्योंकि उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके योग्य अन्तिम खण्डसम्बन्धी असंख्यात लोक-प्रमाण अध्यवसानस्थानोंमें ठहरनेके कालका उपदेश उत्कृष्टरूपसे तत्प्रमाण ही पाया जाता है ।

* अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?

§ १२६. यह सूत्र सुगम है ।

* जघन्य काल एक समय है ।

§ १२७. क्योंकि उत्कृष्टसे अनुत्कृष्टपनेको प्राप्त कर एक समयके बाद फिर भी परिणाम-वश उत्कृष्टपनेके प्राप्त होने पर सभीकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय पाया जाता है ।

* उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ।

§ १२८. क्योंकि कषाय और नोकषायोंकी प्रकृति उदीरणाका उत्कृष्ट काल तत्प्रमाण पाया जाता है । इस सामान्य निर्देशसे नपुंसकवेद, अरति और शोकका भी उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ऐसा अतिप्रसंग प्राप्त होने पर उसके प्रतिषेधद्वारा उससे बहुत कालके कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** णवरि णवुंसयवेद-अरइ-सोगाणमुदीरगो उक्कस्सादो तेत्तीसं सागरोवमाणि।**

§ १२९. कुदो ? एदेसिं कम्माणं पयडिउदीरणुक्कस्सकालस्स णिरयगईए तप्पमाणत्तोवलंभादो। एवं णिरयोघो समत्तो। संपहि एदेणाणुमाणेण सेसासु वि गदीसु उक्कस्साणुक्कस्सपदेसुदीरगकालो साहेयव्वो त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणइ—

*** एवं सेसासु गदीसु उदीरगो साहेयव्वो।**

§ १३०. सुगममेदमत्थसमप्पणासुत्तं। णवरि उदीरगो साहेयव्वो त्ति वुत्ते पदेसुदीरगकालो साहेयव्वो त्ति पयरणवसेणाहिसंबंधो कायव्वो। संपहि एदेण सुत्तपबंधेण सूचिदत्थविसये सुहावगमुप्पायणट्ठमोघादेसेहिं विसेसियूण उच्चारणाणुगममिह कस्सामो। तं जहा—

§ १३१. कालो दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ० उक्क० पदेसुदी० जहण्णुक्क० एगस०। अणुक्क० तिण्णि भंगा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो, तस्स जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सम्म० उक्क० पदेसुदी० जहण्णुक्क० एयस०। अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० छावट्ठिसागरो० देसूणाणि। सम्मामि० उक्क० पदेसुदी० जहण्णुक्क० एगस०।

*** इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेद, अरति और शोकके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है।**

§ १२९. क्योंकि नरकगतिमें इन कर्मोंकी प्रकृति उदीरणाका उत्कृष्ट काल तत्प्रमाण पाया जाता है। इस प्रकार सामान्य नारकियोंके प्रदेश उदीरणाका काल समाप्त हुआ। अब इस विधिसे शेष गतियोंमें भी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरकका काल साध लेना चाहिए इस बातका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** इसी प्रकार शेष गतियोंमें भी उदीरकको साध लेना चाहिए।**

§ १३०. अर्थका समर्पण करनेवाला यह सूत्र सुगम है। इतनी विशेषता है कि 'उदीरगो साहेयव्वो' ऐसा कहनेपर प्रदेश-उदीरकका काल साध लेना चाहिए ऐसा प्रकरणवश सम्बन्ध कर लेना चाहिए। अब इस सूत्रप्रबन्ध द्वारा सूचित किये गये अर्थका सुखपूर्वक ज्ञान करानेके लिए ओघ और आदेश सहित उच्चारणाका अनुगम यहाँ पर करेंगे। यथा—

§ १३१. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकके तीन भंग हैं। उनमेंसे जो सादि-सान्त भंग है उसकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम छयासठ

अणुक्क० जहण्णुक्क० अंतोमु०[1] । एवं सोलसक०–भय-दुगुंछ० । णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । तिण्हं वेदाणं उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एयसमओ । अणुक्क० जह० एगस०, पुरिसवेद० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं सागरोवमसदपुधत्तं अणतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । हस्स-रदि–अरदि-सोग० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० छम्मासं तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि ।

§ १३२. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि । सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । सम्मामि० ओघं । अणंताणु०४ उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । एवं बारसक०–हस्स-रदि-भय–दुगुंछाणं । णवरि उक्क० पदेसुदी०

सागरोपम है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार सोलह कषाय, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । तीन वेदोंके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका एक समय है, पुरुषवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट काल क्रमसे सौ पल्योपमपृथक्त्वप्रमाण, सौ सागरोपमपृथक्त्व-प्रमाण और अनन्तकाल है जो अनन्तकाल असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनोंके बराबर है । हास्य, रति, अरति और शोकके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल हास्य-रतिका छह महीना तथा अरति-शोकका साधिक तेतीस सागरोपम है ।

विशेषार्थ—ओघसे सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल मूल चूर्णिसूत्रोंमें ही बतलाया है, इसलिए यहाँ अलगसे स्पष्टीकरण नहीं किया है । इसी न्यायसे गतिमार्गणाके अवान्तर भेदोंमें भी जान लेना चाहिए । मूल चूर्णि-सूत्रोंमें इसका भी निर्देश किया है । जो नहीं कहा है वह उक्त कथनसे ही ज्ञात हो जाता है ।

§ १३२. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है । सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है । अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार बारह कषाय, हास्य, रति, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके उत्कृष्ट प्रदेश-उदी-

१ ता०प्रतौ अणुक्क० जह० एगस० [ उक्क० ] अंतोमु० इति पाठः ।

जह० एयम०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं णवुंस०-अरदि-सोग० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि । एवं सत्तमाए । णवरि सम्म० उक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं पढमादि जाव छट्ठि त्ति । णवरि सगट्ठिदी । अरदि-सोगाणं हस्स-रदिभंगो । णवरि पढमाए सम्म० उक्क० पदेसुदी० जहण्णुक्क० एयस० ।

§ १३३. तिरिक्खेसु मिच्छ० उक्क०पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एयस० । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि । सम्मामि०-अट्ठक० ओघं । अट्ठक०-छण्णोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । एवमित्थिवेद-पुरिसवेद० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुधत्तं । एवं णवुंस० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि मिच्छ०

---

रकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार नपुंसकवेद, अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि यहाँ सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार पहली पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । इन पृथिवियोंमें अरति और शोकका भंग हास्य और रतिके समान है । इतनी और विशेषता है कि पहली पृथिवीमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

§ १३३. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है । सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्योपम है । सम्यग्मिथ्यात्व और आठ कषायोंका भंग ओघके समान है । आठ कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम है । इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनोंके बराबर है । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी

अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी। णवुंस० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। णवरि पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो।

§ १३४. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० सव्वपयडी० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०।

§ १३५. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो[1]। णवरि सव्वपयडी० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस०। सम्म० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। सम्म० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० तं चेव। मणुसिणीसु पुरिसवेद-णवुंस० णत्थि।

§ १३६. देवेसु मिच्छ० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस०। अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि। सम्मामि०-अणंताणु०४ ओघं। सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस०। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क०

विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्व कोटिपृथक्त्वप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। योनिनियोंमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ १३४. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

§ १३५. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। सम्यक्त्व-के अनुत्कृष्ट प्रदेशउदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्यो-पम है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है। तथा इनमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल वही है। मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है।

§ १३६. देवोंमें मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश

१. आ०प्रतौ तिरिक्खभंगो इति पाठः।

**तेत्तीसं सागरोवमाणि । एवं पुरिसवेद० । णवरि उक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं बारसक०-छण्णोक० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । हस्स-रदि० अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासं । एव-मित्थिवेद० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पणवण्णं पलिदोवमं । एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदी । हस्स-रदि० अरदि-सोगभंगो । सहस्सारे हस्स-रदि० देवोघं । भवण०-वाणवें०-जोदिसि० सम्म० पुरिसवेदभंगो । इत्थिवेद० अणुक्क०जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पलिदो० सादिरेय० प० सा० । सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं । उवरि इत्थिवेदो णत्थि । अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो । णवरि सगट्ठिदी । एवं जाव० ।**

उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार पुरुष-वेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके उत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण है । इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । हास्य और रतिके अनुत्कृष्ट प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छह महीना है । इसी प्रकार स्त्रीवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पचवन पल्योपम है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । इनमें हास्य और रतिका भंग अरति और शोकके समान है । तथा सहस्रार कल्पमें हास्य और रतिका भंग सामान्य देवोंके समान है । भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वका भंग पुरुषवेदके समान है । स्त्रीवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है । सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है । आगेके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनतकल्पके समान है । इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—गति मार्गणाके अवान्तर भेदोंमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय दो प्रकारसे प्राप्त होता है । एक तो मनुष्य गतिको छोड़ कर गति मार्गणाके अन्य जिन अवान्तर भेदोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मर कर उत्पन्न होता है उनमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय बन जाता है । यथा—सामान्य नारकी, प्रथम पृथिवीके नारकी, सामान्य तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त, सामान्य देव और सौधर्मादि कल्पके देव । दूसरे जिन मार्गणाओंमें सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका स्वामी बारह या आठ कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके स्वामीके समान है उनमें जो जीव सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक होकर अगले समयमें एक समय तक अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक हो जाता है और उससे अगले समयमें परिणाम प्रत्ययवश पुनः उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक हो जाता

*** एत्तो जहण्णपदेसुदीरगाणं कालो ।**

§ १३७. सुगममेदमहियारसंभालणसुत्तं [1] । तस्स दुविहो णिद्देसो ओघादेसभेदेण । तत्थोघपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

*** सव्वकम्माणं जहण्णपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १३८. सुगमं ।

*** जहण्णेण एगसमओ ।**

§ १३९. तं कथं ? सण्णिमिच्छाइट्ठी उक्कस्ससंकिलेसेण परिणमिय एगसमयजहण्णपदेसुदीरगो जादो । पुणो विदियसमए अजहण्णभावेण परिणदो । लद्धो सव्वेसिं कम्माणं जहण्णपदेसुदीरगकालो जहण्णेणेयसमयमेत्तो ।

*** उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।**

---

है उसकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय बन जाता है। यथा द्वितीयादि नरकोंके नारकी, योनिनी तिर्यञ्च तथा भवनत्रिक देव। मात्र मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके जघन्य कालमें कुछ विशेषता है। बात यह है कि दर्शनमोहनीयकी क्षपणाका प्रारम्भ मनुष्यगतिमें ही होता है, इसलिए तो सामान्य मनुष्य और मनुष्यिनियोंमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्तसे कम नहीं बनता, अतः इनमें वह उक्तप्रमाण कहा है। अब रहे मनुष्य पर्याप्त सो जो मनुष्यिनी जीव सम्यक्त्वकी उदीरणामें दो समय काल शेष रहने पर कृतकृत्यवेदक सम्यक्त्वके साथ उत्तम भोगभूमिके मनुष्य पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होता है उसकी अपेक्षा मनुष्य पर्याप्तकोंमें सम्यक्त्वकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका जघन्य काल एक समय बन जानेसे वह उक्तप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

*** इससे आगे जघन्य प्रदेश उदीरकोंके कालका अधिकार है।**

§ १३७. अधिकारकी सम्हाल करने वाला यह सूत्र सुगम है। उसका निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। उनमेंसे ओघका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** सब कर्मोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?**

§ १३८. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य काल एक समय है।**

§ १३९. वह कैसे ? संज्ञी मिथ्यादृष्टि उत्कृष्ट संक्लेशरूपसे परिणम कर एक समय तक जघन्य प्रदेश उदीरक हो गया। पुनः दूसरे समयमें अजघन्य रूपसे परिणत हुआ। इस प्रकार सब कर्मोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समयमात्र प्राप्त हुआ।

*** उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।**

१. आ०-ता०प्रत्योः -सुत्तमेदं इति पाठः ।

§ १४०. कुदो ? जहण्णपदेसुदीरणकारणपरिणामेसु असंखेज्जलोगमेत्तेसु उक्कस्सेणवट्ठाणकालस्स एगजीवविसयस्स तप्पमाणत्तोवलंभादो ।

* अजहण्णपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?

§ १४१. सुगमं ।

*** जहण्णेण एयसमओ ?**

§ १४२. कुदो ? जहण्णपदेसुदीरणादो एगसमयमजहण्णभावमुवणमिय पुणो विदियसमये जहण्णभावेण परिणदम्मि सव्वेसिमेगसमयमेत्तजहण्णकालोपलंभादो ।

*** उक्कस्सेण पयडिउदीरणाभंगो ।**

§ १४३. कुदो ? मिच्छत्त-णवुंसयवेदाणमजहण्णपदेसुदी० उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा इच्चादिणा भेदाभावादो । संपहि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं वि एदम्मि जहण्णाजहण्णपदेसुदीरगकालणिद्देसे अविसेसेण पसत्ते तत्थ विसेसपरूवणट्ठमाह—

*** णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ?**

§ १४४. सुगमं ।

---

§ १४०. क्योंकि जघन्य प्रदेश उदीरणाके कारणभूत असंख्यात लोकप्रमाण परिणामोंमें एक जीव विषयक उत्कृष्ट अवस्थान काल तत्प्रमाण उपलब्ध होता है।

*** अजघन्य प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?**

§ १४१. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य काल एक समय है ।**

§ १४२. क्योंकि जघन्य प्रदेश उदीरणाके बाद एक समय तक अजघन्य भावको प्राप्त होकर पुनः दूसरे समयमें जघन्यभावसे परिणत होने पर सभी कर्मोंका जघन्य काल एक समयमात्र उपलब्ध होता है।

*** उत्कृष्ट कालका भंग प्रकृति उदीरणाके समान है ।**

§ १४३. क्योंकि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदकी अजघन्य प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनोंके बराबर है इत्यादिरूपसे प्रकृति उदीरणाके उत्कृष्ट कालसे प्रकृत उत्कृष्ट कालमें कोई भेद नहीं है। अब सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भी इस जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणाके कालके कथनके बिना भेदके प्राप्त होने पर उनके कालमें जो विशेषता है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका कितना काल है ?**

§ १४४. यह सूत्र सुगम है।

*** जहण्णुक्कस्सेण एयसमयो ।**

§ १४५. कुदो ? सम्माइट्ठि–सम्मामिच्छाइट्ठीणं मिच्छत्ताहिमुहाणं चरिमसमय-संकिलेसेण लद्धजहण्णभावत्तादो ।

*** अजहण्णपदेसुदीरगो जहा पयडिउदीरणाभंगो ।**

§ १४६. कुदो ? सम्मत्तस्स जह० अंतोमु०, उक्क० छावट्ठिसागरो० देसूणाणि । सम्मामि० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तमिच्चेदेण भेदाभावादो । एवमोघेण सव्वेसिं कम्माणं जहण्णाजहण्णपदेसुदीरगकालणुगमो समत्तो ।

§ १४७. संपहि एत्थेव णिण्णयजणणट्ठमादेसपरूवणट्ठं च उच्चारणाणुगममेत्थ कस्सामो तं जहा—जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–णवुंस० जह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अजह० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालममंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवं सोलसक०–भय-दुगुंछ० । णवरि अजह० जह० एयम०, उक्क० अंतोमु० । एवमित्थिवेद–पुरिसवेद० । णवरि अजह० जह० एयम०, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं सागरोवमसदपुधत्तं । एवं हस्स-रदि–अरदि-सोगाणं । णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० छम्मासं तेत्तीसं सागरो०

---

*** जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।**

§ १४५. क्योंकि मिथ्यात्वके अभिमुख हुए सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमें संक्लेशवश उक्त कर्मोकी जघन्य प्रदेश उदीरणा पाई जाती है ।

*** अजघन्य प्रदेश उदीरकका भंग प्रकृति उदीरणाके समान है ।**

§ १४६. क्योंकि सम्यक्त्वका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम छयासठ सागरोपम है तथा सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है इससे विवक्षित कालमें कोई भेद नहीं है । इस प्रकार ओघसे सब कर्मोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकके कालका अनुगम समाप्त हुआ ।

§ १४७. अब यहीं पर निर्णय उत्पन्न करनेके लिए तथा आदेशका कथन करनेके लिए यहाँ उच्चारणाका अनुगम करेंगे । यथा—जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है । इसी प्रकार सोलह कषाय, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे सौ पल्योपमपृथक्त्वप्रमाण और सौ सागरोपमपृथक्त्वप्रमाण है । इसी प्रकार हास्य, रति, अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अज-

सादिरेयाणि । सम्म० जह० पदेसुदी० जह उक्क० एयस० । अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० छावट्ठिसागरो० देसूणाणि । सम्मामि० जह० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अजह० जह० उक्क० अंतोमु० ।

§ १४८. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–णवुंस०–अरदि-सोग० जह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि ! एवं सोलसक०–हस्स-रदि-भय-दुगुंछ० । णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । सम्म० जह० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । सम्मामि० ओघं । एवं सत्तमाए । णवरि सम्म० अजह० जह० अंतोमु० । एव पढमादि जाव छट्ठि त्ति । णवरि अरदि–सोग० हस्सभंगो । पढमाए सम्म० अजह० जह० एयम० ।

§ १४९. तिरिक्खेसु मिच्छ०–णवुंस० ओघं । सम्म० जह० पदेसुदी० जह० उक्क० एगस० । अजह० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि । सम्मामि०–सोलसक०–छण्णोक० पढमपुढविभंगो । इत्थिवेद–पुरिसवेद० जह०

घन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल हास्य और रतिका छह महीना तथा अरति और शोकका साधिक तेतीस सागरोपम है। सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तमुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम छयासठ सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है तथा अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त है।

§ १४८. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, अरति और शोकके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार सोलह कषाय, हास्य, रति, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जान लेना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त है। सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार पहली पृथिवीसे लेकर छटी पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशषता है कि अरति और शोकका भंग हास्यके समान है। पहली पृथिवीमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है।

§ १४९. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य प्रदेश-उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्योपम है। सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग पहली पृथिवीके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके

**पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अजह० जह० एगस०, उक्स० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि णवुंस० अजह० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुध०। मिच्छ० अजह० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिसवेद-णवुंस० णत्थि। सम्म० अजह० जह० अंतोमु०।**

**§ १५०. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुससअपज्ज० सव्वपय० जह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असखे०भागो। अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०।**

**§ १५१. मणुसतिये पचिंदियतिरिक्खभगो। णवरि सम्म० अजह० जह० अंतोमु०। पज्जत्तएसु इत्थिवेदो णत्थि। सम्म० अजह० जह० एगस०। मणुसिणीसु पुरिसवेद–णवुंस० णत्थि।**

---

जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेपता है कि नपुंसकवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। मिथ्यात्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नही है और योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नही है। तथा योनिनियोमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मर कर तिर्यञ्च योनिनियोंमें नही उत्पन्न होते, इसलिए इनमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय न होकर अन्तर्मुहूर्त कहा है। दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवी तकके नारकियोंमे भी सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए। आगे मनुष्यिनियोंमें, भवनत्रिक देवोंमें तथा सौधर्म-ऐशान कल्पकी देवियोंमे भी सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त इसी प्रकार जानना चाहिए। अन्य सब कथन सुगम होनेसे उसका स्पष्टीकरण नहीं किया है।

§ १५०. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

§ १५१. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है। तथा पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है। तथा इनमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है। मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है।

**विशेषार्थ**—यहाँ पर सामान्य मनुष्योमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त कहा है सो उसका कारण यह है कि क्षायिक सम्यक्त्वकी उत्पत्तिका

§ १५२. देवेसु मिच्छ० जह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो०। अजह० जह० एयस०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि। एवं पुरिस०। णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो०। एवं सम्म०। णवरि जह० जहण्णुक्क० एगस०। सम्मामि०–सोलसक०–छण्णोक० पढमाए भंगो। णवरि हस्स-रदि० अजह० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं। इत्थिवेद० ओघं। णवरि अज० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णं पलिदोवमाणि। एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि सगट्टिदी। हस्स-रदि० अरदिभंगो। सहस्सारे हस्स-रदि० देवोघं। भवण०–वाणवें०–जोदिसि० सम्म० अजह० जह० अंतोमु०, इत्थिवेद० अजह० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० पलिदो० सादिरेयं प० सा० सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं।

प्रारम्भ मनुष्यगतिमें ही होता है। अब यदि कोई मनुष्य मनुष्यायुका बन्ध करनेके बाद जीवनके अन्तमें सम्यग्दृष्टि होकर अन्तर्मुहूर्तके भीतर क्षायिक सम्यक्त्वको उत्पन्न करता हुआ कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि होकर और मर कर उत्तम भोगभूमिके मनुष्योंमें उत्पन्न होता है तो भी उसके सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त ही प्राप्त होता है, इससे कम नहीं, इसलिए यहाँ सामान्य मनुष्योंमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। परन्तु कोई मनुष्यिनी (भावसे स्त्रीवेदी और द्रव्यसे पुरुषवेदी मनुष्य) कृतकृत्यवेदक सम्यक्त्वके कालमें एक समय शेष रहने पर मर कर उत्तम भोगभूमिके मनुष्य पर्याप्तकोंमें (द्रव्य-भावसे पुरुषवेदी मनुष्योंमें) जन्म लेता है तो मनुष्य पर्याप्तकोंमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय बन जाता है। यही कारण है कि यहाँ मनुष्य पर्याप्तकोंमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय विशेषरूपसे कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १५२. देवोंमें मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागरोपम है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग प्रथम पृथिवीके समान है। इतनी विशेषता है कि हास्य और रतिके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छह महीना है। स्त्रीवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पचवन पल्योपम है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। तथा इनमें हास्य और रतिका भंग अरतिके समान है। मात्र सहस्रार कल्पमें हास्य और रतिका भंग सामान्य देवोंके समान है। तथा भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है। स्त्रीवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है। सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है। आगेके देवोंमें स्त्रीवेद

उवरि इत्थिवेदो णत्थि। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–पुरिसवे० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अजह० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी। बारसक०–छण्णोक० आणदभंगो। एवं जाव०।

*** एगजीवेण अंतरं।**

§ १५३. सुगममेदमहियारपरामरसवक्कं।

*** मिच्छत्त उक्कस्सपदेसुदीरगंतरं केविचरं कालादो होदि ?**

§ १५४. सुगमं।

*** जहण्णेण अंतोमुहुत्तं।**

§ १५५. तं कथं ? अण्णदरकम्मंमियलक्खणेणागदसंजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिणा उक्कस्सविसोहिपरिणदेणुक्कस्सपदेसुदरीणाए कदाए आदी दिट्ठा। तदो संजमं गंतूणंतरिय सव्वजहण्णंतोमुहुत्तेण पुणो मिच्छत्तं पडिवज्जिय जहण्णंतराविरोहेण विसोहिमावूरिय संजमाहिमुहो होदूण मिच्छाइट्ठिचरिमसमये उक्कस्सपदेसुदीरगो जादो।

नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व और पुरुषवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। बारह कषाय और छह नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिये।

विशेषार्थ—अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देव नियमसे सम्यग्दृष्टि होते हैं, इसलिए इनमें सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जाता है। कारण कि यहाँ पर सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणाके कारणभूत जो असंख्यात लोकप्रमाण परिणाम है उनमें एक जीवका अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक अवस्थान बन जाता है। शेष कथन सुगम है।

*** एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकालका अधिकार है।**

§ १५३. अधिकारका परामर्श करानेवाला यह सूत्रवाक्य सुगम है।

*** मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल कितना है ?**

§ १५४. यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।**

§ १५५. वह कैसे ? अन्यतर कर्मांशिक लक्षणसे आकर संयमके अभिमुख हुए उत्कृष्ट विशुद्धिसे परिणत अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके द्वारा उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके करने पर उसकी आदि दिखलाई दी। उसके बाद संयमको प्राप्त कर और उसका अन्तर कर सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा पुनः मिथ्यात्वको प्राप्त कर जघन्य अन्तरकालके अविरोधरूपसे विशुद्धिको पूरा कर संयमके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक हो गया। इस प्रकार मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तर काल अन्तर्मुहूर्त

लद्धमंतरं । एदं चेव सुत्तं जाणावयं, जहा उक्कस्सपदेसुदीरणा परिणाममेत्तमवेक्खदे[1] दव्वविसेसं णावेक्खदि त्ति ।

*** उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ।**

§ १५६. कुदो ? पुव्वं व आदिं कादूणंतरिय देसूणद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तकालेण पुणो वि पढमसम्मत्तमुप्पाइय मिच्छत्त गंतूणंतोमुहुत्तेण संजमाहिमुहो होदूण मिच्छाइट्ठिचरिमसमए उक्कस्सपदेसुदीरणाए परिणदम्मि तदुवलंभादो ।

*** सेसेहिं कम्मेहिं अणुमग्गियूण णेदव्वं ।**

§ १५७. सुगममेदमत्थसमप्पणासुत्तं । संपहि एदेण सुत्तेण सूचिदत्थविवरणट्ठमुच्चारणाणुगममेत्थ कस्सामो । त जहा—

§ १५८. अंतरं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–अणताणु०४ उक्क० पदेसुदी० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ट । अणुक्क० जह० एगस०, मिच्छ० अतोमु०, उक्क० बेछावट्ठिसागरो० देसूणाणि । एवमट्ठक० । णवरि अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा ।

प्राप्त हुआ । यहाँ इस सूत्रसे मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके जघन्य अन्तरकालका ज्ञापन होता है वहाँ इसी सूत्रसे यह भी जाना जाता है कि उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा परिणाममात्रकी अपेक्षा करती है, द्रव्यविशेषकी अपेक्षा नहीं करती ।

*** उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है ।**

§ १५६. क्योंकि पहलेके समान मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाकी आदि करके और अन्तर करके कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण कालके बाद फिर भी प्रथम सम्यक्त्वको उत्पन्न कर और मिथ्यात्वमें जाकर अन्तर्मुहूर्तमें संयमके अभिमुख होकर मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमे उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणारूपसे परिणत होने पर उक्त अन्तरकालकी प्राप्ति होती है ।

*** शेष कर्मोंका विचार कर अन्तरकाल जानना ।**

§ १५७. अर्थका समर्पण करनेवाला यह सूत्र सुगम है । अब इस सूत्र द्वारा सूचित हुए अथका विवरण करनेके लिए उच्चारणाका अनुगम यहाँ पर करेंगे । यथा—

§ १५८. अन्तरकाल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अनन्तानुबन्धीचतुष्कका एक समय है, मिथ्यात्वका अन्तर्मुहूर्त है और दोनोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपम है । इसी प्रकार आठ कषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश

१. आ०-ता०प्रत्योः —मुवेक्खदे इति पाठः ।

सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । एवं सम्म० । णवरि उक्क० पदेसुदी० णत्थि अंतरं । चदुसंजल०-भय-दुगुंछा० उक्क० णत्थि अंतरं । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । इत्थिवेद-पुरिसवेद० उक्क० णत्थि अंतरं । अणुक्क० जह० अंतोमु०, पुरिसवेद० जह० एगस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । णवुंस० उक्क० णत्थि अंतरं । अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं । हस्स-रदि-अरदि-सोग० उक्क० णत्थि अंतरं । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि अरदि-सोग० छम्मासं ।

§ १५९. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-अणंताणु०४ उक्क० पदेसुदी० जह० पलिदो० असं०भागो, अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० दोण्हं पि तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । एवं सम्म० । णवरि उक्क० णत्थि अंतरं । बारसक०-सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ।

उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । चार संज्वलन, भय, और जुगुप्साके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नही है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल स्त्रीवेदका अन्तर्मुहूर्त है और पुरुषवेदका जघन्य अन्तरकाल एक समय है तथा दोनोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है । नपुंसकवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरोपमपृथक्त्वप्रमाण है । हास्य, रति, अरति और शोकके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नही है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल हास्य और रतिका साधिक तेतीस सागरोपम तथा अरति और शोकका छह महीना है ।

**विशेषार्थ**—सम्यक्त्व, चार संज्वलन तथा नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा उस-उस प्रकृतिकी क्षपणा करते समय यथास्थान प्राप्त होती है, इसलिए इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके अन्तरकालका निषेध किया है । शेष कथन सुगम है ।

§ १५९. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और दोनोंका ही उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । बारह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक

**अणुक० जह० एयस०, उक० अंतोमु० । णवरि हस्स-रदि० अणुक० जह० एयस०, उक० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । णवुंस०[1] अणुक० जह० एयस०, उक० आवलि० असं०भागो । एवं सत्तमाए । णवरि सम्मत्त० हस्स-रदिभंगो । एवं पढमादि० छट्ठि त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । हस्स-रदि० अरदिभंगो । पढमाए सम्म० उक० णत्थि अंतरं । अणुक० जह० अंतोमु०, उक० सागरो० देसूणं ।**

समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तमुहूर्त है। इतनी विशेषता है कि हास्य और रतिके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वका भंग हास्य और रतिके समान है। इसी प्रकार पहली पृथिवीसे लेकर छटी पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इनमें हास्य और रतिका भंग अरतिके समान है। पहली पृथिवीमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तमुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर काल कुछ कम एक सागरोपम है।

**विशेषार्थ**—नारकियोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका स्वामित्व प्रथम सम्क्त्वके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टि जीवके यथास्थान होता है, यतः सामान्य नारकियोंमें उपशम सम्यक्त्वका जघन्य अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है, इसलिए यहाँ उक्त प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम कहा है। उक्त प्रकृतियोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम एक जीवविषयक प्रकृति उदीरणाके अन्तरकालके समान बन जानेसे उसे तत्प्रमाण कहा है। सम्यग्मिथ्यात्वकी दूसरी बार प्राप्ति नारकियोंमें कमसे कम अन्तमुहूर्तके अन्तरसे और अधिकसे अधिक कुछ कम तेतीस सागरोपमके अन्तरसे प्राप्त होना सम्भव है, इसलिए यहाँ इसके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम कहा है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा क्षपणाके समय यथास्थान होती है, इसलिए इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके अन्तरकालका निषेध किया है। इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल सम्यग्मिथ्यात्वके समान है यह स्पष्ट ही है। नारकियोंमें अप्रत्याख्यानावरण आदि बारह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सर्वविशुद्ध या तत्प्रायोग्य विशुद्ध सम्यग्दृष्टिके होती है, यतः ऐसी योग्यता कमसे कम

१. आ०प्रतौ णवरि हस्स-रदि अणुक० जह० एयस० उक० तेत्तीस सागरोवमाणि देसूणाणि अणुक० जह० एयस० उक० अंतो णवरि हस्सरदि अणुक० जह० एगस० उक० तत्तीस सागरोवमाणि देसूणाणि णवुंस० इति पाठः।

§ १६०. तिरिक्खेसु मिच्छ०–अणंताणु४ ओघं। णवरि अणुक० जह० अंतोमु०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। सम्म०–सम्मामि० ओघं। अपच्चक्खाण०४ ओघं। अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। अट्ठक०–छण्णोक० उक्क० पदे० जह० एयस०, उक्क० अद्धपोग्गल० देसूणं। अणुक्क० जह० एगस०,

एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक कुछ कम तेतीस सागरोपमके अन्तरसे प्राप्त होना सम्भव है, इसलिए तो यहाँ इन प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम कहा है। तथा इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है यह स्पष्ट ही है। मात्र हास्य, रति और नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके उत्कृष्ट अन्तरकालमें कुछ विशेषता है। बात यह है कि सातवें नरकमें निरन्तर अरति और शोककी उदीरणा होती रहे यह सम्भव है, इसलिए जो जीव सातवें नरकमें उत्पन्न होनेके बाद यथायोग्य उसके प्रारम्भ और अन्तमें हास्य और रतिका उदीरणा करता है और मध्यमें अरति-शोककी कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक उदीरणा करता रहता है उसकी अपेक्षा सामान्य नारकियोंमें हास्य और रतिके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है। तथा नरकमें नपुंसकवेदकी निरन्तर उदीरणा होती रहती है, इसलिए यहाँ इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके जघन्य और उत्कृष्ट कालको ध्यानमें रख कर अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण कहा है। सातवें नरकमें सम्यक्त्वको छोड़ कर अन्य सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका यह अन्तरकाल इसी प्रकार बन जाता है, इसलिए उसे सामान्य नारकियोंके समान जाननेकी सूचना की है। मात्र सातवें नरकमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि उत्पन्न नहीं होते, इसलिए वहाँ सम्यक्त्वका भंग हास्य और रतिके समान बन जानेसे उसके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको हास्य और रतिके एतद्विषयक अन्तरकालके समान जाननेकी सूचना की है। दूसरी पृथिवीसे लेकर छटी पृथिवी तकके नारकियोंमें अन्य सब प्ररूपणा सातवीं पृथिवीके समान ही है। मात्र दो बातोंमें फरक है। एक तो इनकी अपनी-अपनी भवस्थिति जुदी-जुदी है, इसलिए जहाँ जो उत्कृष्ट स्थिति हो, कुछ कम तेतीस सागरोपमके स्थानमें कुछ कम वह कहनी चाहिए। दूसरे सातवें नरकमें अरति और शोकके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट जो अन्तरकाल प्राप्त होता है वह इन नरकोंमें हास्य और रतिका बन जानेके कारण उसे अरतिके समान कहना चाहिए। पहली पृथिवीमें भी इसी प्रकार जानना चाहिए। मात्र उसमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि मर कर उत्पन्न हो सकता है, इसलिए उसमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल प्राप्त नहीं होनेसे उसका निषेध किया है। शेष स्पष्ट ही है।

§ १६०. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुल कम तीन पल्योपम है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। अत्याख्यानचतुष्कका भंग ओघके समान है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। आठ कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और

**उक्क० अंतोमुहुत्तं । एवमित्थिवेद–पुरिसवेद० । णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवं णवुंस० । णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं ।**

**§ १६१. पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ०–अट्ठक० उक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । अणुक्क० तिरिक्खोघं । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी । एवं सम्म० । णवरि उक्क० णत्थि अंतरं । अट्ठक०–छण्णोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । तिण्हं वेदाणमुक्क० अणुक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । णवरि पज्जत्त० इत्थिवे० णत्थि । जोणिणीसु पुरिस०–णवुंस० णत्थि । इत्थिवे० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । सम्म० उक्क०**

---

उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनोंके बराबर है। इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—तिर्यञ्चोंमें अन्तिम आठ कषायों और नौ नोकषायोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका जो निर्देश किया है उसे ध्यानमें रख कर यहाँ उनके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए। इसी प्रकार अन्य प्ररूपणा भी स्वामित्व और काल आदिका विचार कर घटित कर लेनी चाहिए। विशेष स्पष्टीकरण जिस प्रकार नरकगतिमें एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकालका विचार करते समय कर आये हैं उसी न्यायसे यहाँ भी कर लेना चाहिए।

§ १६१. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्व और आठ कषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। आठ कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। तीन वेदोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनिनियोंमें स्त्रीवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल

पदेसुदी० जह० एयसमओ, उक्क० पुव्वकोडिपुध० । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी ।

§ १६२. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-णवुंस० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । सोलसक०-छण्णोक० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० ।

§ १६३. मणुसतिये मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-अणंताणु०४ पंचिं०तिरिक्ख-भंगो । अट्ठक० उक्क० पदेसुदी० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । चदुसंजलण-छण्णोक० उक्क० णत्थि

---

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी स्थितिप्रमाण है ।

विशेषार्थ—यहाँ तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें जो पुरुषवेद और नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है सो कर्मभूमिकी अपेक्षा अपनी स्थितिके प्रारम्भ और अन्तमें पुरुषवेद या नपुंसकवेदके साथ रखकर मध्यमें तदितर वेदके साथ रखने पर उक्त अन्तर काल कुछ कम पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण कहा है । तथा तिर्यञ्च योनिनियोंमें सम्यग्दृष्टि जीव मरकर उत्पन्न नहीं होता, इसलिए उनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल बन जानेसे उसका अलगसे उल्लेख किया है । शेष कथन सुगम है ।

§ १६२. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । सोलह कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

विशेषार्थ—उक्त दोनों प्रकारके जीवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाकी स्वामित्वसम्बन्धी विशेषता न होने पर भी सोलह कषायों और छह नोकषायोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके उत्कृष्ट कालको ध्यानमें रख कर यहाँ इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है । तथा ये परिवर्तमान प्रकृतियाँ हैं, इसलिए इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त बन जानेसे उसे भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कहा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ १६३. मनुष्यत्रिकमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी-चतुष्कका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है । आठ कषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटि-प्रमाण है । चार संज्वलन और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं

अंतरं । अणुक्क० जह० उक्क० अंतोमु० । तिण्हं वेदाणं उक्क० पदे० णत्थि अंतरं । अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । णवरि वेदा जाणियव्वा । मणुसिणीसु इत्थिवे० उक्क० णत्थि अतरं । अणुक्क० जह० उक्क० अंतोमु० ।

§ १६४. देवेसु मिच्छ०–अणंताणु०४ उक्क० अणुक्क० पदे० जह० पलिदो० असंखे०भागो अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीस सागरोवमाणि देसूणाणि । एवं सम्म० । णवरि उक्क० णत्थि अंतरं । बारसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । णवरि अरदि–सोग० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० छम्मासं । पुरिसवेद० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । इत्थिवेद० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० पणवण्ण पलिदो० देसूणाणि । अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा ।

---

है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । तीन वेदोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है । इतनी विशेषता है कि वेद जान लेने चाहिए । मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

**विशेषार्थ**—मनुष्य पर्याप्तकोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके उत्कृष्ट अन्तरकालको पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान घटित कर लेना चाहिए । मनुष्यिनियोंमें उपशमश्रेणिकी अपेक्षा स्त्रीवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण कहा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ १६४. देवोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण और अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है । इसी प्रकार सम्यक्त्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है । बारह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि अरति और शोकके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है । पुरुषवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । स्त्रीवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पचवन पल्योपमप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें

**अरदि-सोग० हस्स-रदिभंगो। सहस्सारे अरदि-सोग० अणुक्क० देवोघं। भवण-वाणवें०-जोदिसि० सम्म० उक्क० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। इत्थिवेद० उक्क० पदेसुदी० जह० एयग०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि पलिदोवमसादिरे० प० सा०। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०-भागो। सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं। उवरि इत्थिवेदो णत्थि।**

**§ १६५. अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० उक्क० अणुक्क० पदे० णत्थि अंतरं। बारसक०-सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। णवरि पुरिसवेद० अणुक्क० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं जाव०।**

कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति जाननी चाहिए। अरति और शोकका भंग हास्य और रतिके समान है। किन्तु सहस्रार कल्पमें अरति और शोकके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका भंग सामान्य देवोंके समान है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर काल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। स्त्रीवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल क्रमसे कुछ कम तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है। आगेके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है।

**विशेषार्थ**—यहाँ देवोंमें नपुंसकवेद नहीं होता, इसलिए इनमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जानेसे वह उक्तप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है। इतना अवश्य है कि जहाँ जो विशेषता है उसे समझकर यथास्थान अन्तरकाल घटित करना चाहिए।

§ १६५. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। बारह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पुरुषवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—अनुदिश आदिके देवोंमें नियमसे सम्यग्दृष्टि जीव ही जन्म लेते हैं। तथा जो द्वितीय उपशम सम्यग्दृष्टि जीव मर कर वहाँ उत्पन्न होते हैं उनका उपशम सम्यक्त्वका काल पूरा होने पर नियमसे वेदक सम्यग्दृष्टि हो जाते हैं और जो कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टियोंको छोड़कर अन्य वेदक सम्यग्दृष्टि जीव वहाँ जन्म लेते हैं वे जीवन भर वेदक सम्यग्दृष्टि ही बने रहते हैं। यही कारण है कि इनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकके अन्तरकालका निषेध किया है। शेष सब कथन स्पष्ट ही है।

**§ १६६. जहण्णंतरं पि एदेणेव देसामासियसुत्तेण सूचिदमिदि तदुच्चारणं वत्तइस्सामो। तं जहा—जहण्णए पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–अणंताणु०४ जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अजह० जह० एयस०, उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। एवमट्ठक०। णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। एवं चदुसंज०–छण्णोक०। णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। णवरि हस्स-रदि० अजह० जह० एगस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। अरदि-सोग० अजह० जह० एगस०, उक्क० छम्मास। एवं णवुंस०। णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। सम्म०–सम्मामि० जह० अजह० पदेसुदी० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। इत्थिवेद–पुरिसवेद० जह० अजह० पदेसुदीर० जह० एयस०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।**

§ १६६. इसी देशामर्षक सूत्र द्वारा जघन्य अन्तरकालका भी सूचन हो जाता है, इसलिए उसकी उच्चारणाको बतलावेंगे। यथा—जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपम है। इसी प्रकार आठ कषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। इसी प्रकार चार संज्वलन और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसमें भी इतनी विशेषता है कि हास्य और रतिके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम है। अरति और शोकके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरोपमपृथक्त्वप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—ओघसे प्रत्येक प्रकृतिके जघन्य प्रदेश उदीरकका जो जघन्य स्वामित्व बतलाया है उसके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको तथा अपने-अपने उदय योग्य स्थानके अन्तरकालको ध्यानमें रखकर उक्त अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथ्यात्व और नपुंसकवेदको जघन्य प्रदेश उदीरणा उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले अथवा ईषत् मध्यम परिणामवाले संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवके होती है। यतः इस जीवके ये परिणाम कमसे कम एक समयके अन्तरसे और अधिकसे अधिक असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्तकालके

**§ १६७. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–अणंताणु०४–हस्स-रदि० जह० अजह० जह० एयम०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । एवं बारसक०–अरदि-सोग-भय-दुगुंछा० । णवरि अजह० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । एवं णवुंस० । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । सम्म०–सम्मामि० जह० अजह० पदेसुदी० जह० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । एवं सत्तमाए । एवं पढमाए जाव छट्ठि त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । हस्स-रदि० अरदि-सोग०भंगो ।**

---

अन्तरसे होते है, इसलिए तो इन प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल कहा है। वह अनन्तकाल असंख्यात पुद्गल-परिवर्तनप्रमाण है तथा मिथ्यात्वका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपम है, इसलिए इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तर-काल कुछ कम दो छयासठ सागरोपमप्रमाण कहा है। इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको घटित कर लेना चाहिए। इसी न्यायसे आगे कहे जानेवाले गतिमार्गणाके अवान्तर भेदोंमें अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए।

§ १६७. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धीचतुष्क, हास्य और रतिके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर-काल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार बारह कषाय, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार नपुंसक-वेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवीमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार पहली पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी तक जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। तथा इनमें हास्य और रतिका भंग अरति और शोकके समान है।

**विशेषार्थ**—एक तो सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका स्वामी तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामवाला मिथ्यात्वके अभिमुख हुआ क्रमसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि जीव है, दूसरे मिथ्यात्वका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए तो इन दोनों प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। तथा जो सातवें नरकका नारकी जीव भवके प्रारम्भमें और अन्तमें अपने योग्य कालमें उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है, किन्तु मध्यके कालमें मिथ्यादृष्टि बना रहता है उसकी अपेक्षा यहाँ उक्त प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम कहा है। शेष कथन सुगम है। अपने-अपने स्वामित्व आदिको ध्यानमें लेकर उसे घटित कर लेना चाहिए।

---

१ आ०प्रतौ अजह० एयस० इति पाठः।

**§ १६८. तिरिक्खाणमोघं। णवरि मिच्छ-अणंताणु०४ अजह० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। अट्ठक०-छण्णोक० अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। णवुंस० अज० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि मिच्छ०-सोलसक०-छण्णोक० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। सम्म०-सम्मामि० जह० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। तिण्हं वेदाणं जह० अजह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। णवरि पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० अजह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो।**

§ १६८. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है। आठ कषाय और छह नोकषायोंके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। नपुंसकवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। तीन वेदोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनिनियोंमें स्त्रीवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—कोई सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च मरकर तिर्यञ्चोंमें उत्पन्न होता नहीं, इसलिए यहाँ उनमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके अजघन्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम बन जानेसे उक्तप्रमाण कहा है। तिर्यञ्चों में प्रत्याख्यान कषायचतुष्क और संज्वलनकषायचतुष्क तथा छह नोकषायोंकी उदीरणा कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक नहीं होती, क्योंकि ये अध्रुवोदयी प्रकृतियाँ हैं, इसलिए इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। एक तो भोगभूमियाँ जीव नपुंसकवेदी नहीं होते, दूसरे कर्मभूमिज तिर्यञ्चोंमें नपुंसकवेदका उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण ही बन सकता है, इसलिए इन दो तथ्योंको और इसके जघन्य प्रदेश उदीरणाके जघन्य कालको ध्यानमें रख कर यहाँ नपुंसकवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिककी उत्कृष्ट कायस्थिति यद्यपि पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम है। परन्तु भोगभूमिमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और छह नोकषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका स्वामित्व नहीं बन सकता, इसलिए वहाँ उक्त प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम

§ १६९. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-णवुंस० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। अजह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। सोलसक०-छण्णोक० जह० अजह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०।

§ १७०. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खभंगो। पच्चक्खाण०४ अजह० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि। मणुसिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० अजह० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०।

§ १७१. देवेसु मिच्छ०-अणंताणु०४ जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क०

---

पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें तीन वेदोंका जघन्य प्रदेश स्वामित्व कर्मभूमिमें ही बनता है, दूसरे भोगभूमिमें नपुंसकवेद नहीं होता, इन दोनों तथ्योंको ध्यानमें रखकर यहाँ इनके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि योनिनी तिर्यञ्चोंमें एकमात्र स्त्रीवेदकी ही उदीरणा होती है, इसलिए इनमें स्त्रीवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण ही कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १६९. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—उक्त जीवोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका निरन्तर उदय है, शेष प्रकृतियाँ परावर्तमान हैं। इन तथ्योंको ध्यानमें रख कर इनमें उक्त अन्तरकालकी प्ररूपणा की है। वह विचार कर घटित कर लेनी चाहिए।

§ १७०. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि प्रत्याख्यान कषायचतुष्कके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। स्त्रीवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिकमें संयमकी प्राप्ति सम्भव है, इसलिए इनमें प्रत्याख्यान कषायचतुष्कके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटि बन जानेसे उक्त प्रमाण कहा है। तथा मनुष्यिनियोंमें उपशमश्रेणिमें स्त्रीवेदका अधिकसे अधिक अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होनेसे यहाँ इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। जघन्य अन्तरकाल एक समय स्पष्ट ही है।

§ १७१. देवोंमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागरोपम है।

**अट्ठारस सागरो० सादिरेयाणि। अजह० जह० एगस०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसूणाणि। एवं बारसक०-सत्तणोक०। णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। अरदि-सोग० अजह० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं। पुरिसवेद० अजह० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। सम्म०-सम्मामि० जह० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरो० देसूणाणि। इत्थिवेद० जह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णं पलिदो० देसूणाणि। अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि सगट्ठिदी देसूणा। अरदि-सोग० हस्सभंगो। भवण०-वाणवें०-जोदिसि० इत्थिवेद० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदो० देसूणाणि पलिदो० सादिरेय० प० सा०। अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं। उवरि इत्थिवेदो णत्थि। सहस्सारे अरदि-सोग० देवोघं।**

अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है। इसी प्रकार बारह कषाय और सात नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अरति और शोकके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। पुरुषवेदके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है। स्त्रीवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पचवन पल्योपम है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इनमें अरति और शोकका भंग हास्यके समान है। तथा भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें स्त्रीवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है। अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है। इनसे ऊपरके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है। सहस्रार कल्पमें अरति और शोकका भंग सामान्य देवोंके समान है।

**विशेषार्थ**—सामान्यसे देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणाके योग्य परिणाम सहस्रार कल्पमें होते है, इसलिए सामान्यसे देवोंमें इन प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक अठारह सागरोपम कहा है। तथा मिथ्यात्व गुण नौवें ग्रैवेयक तक ही होता है, इसलिए मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम कहा है। यहाँ कुछ

**§ १७२. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–पुरिसवेद० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा । अजह० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०-भागो । एवं बारसक०–छण्णोक० । णवरि अजह० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । एवं जाव० ।**

*** णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागो परिमाणं खेत्तं पोसणं कालो अंतरं च एदाणि भाणिदव्वाणि ।**

**§ १७३. एदाणि अणियोगद्दाराणि णाणाजीवविसयाणि एगजीवविसयसामित्त-**

कम इकतीस सागरोपम काल तक मध्यमें सम्यग्दृष्टि रख कर यह उत्कृष्ट अन्तरकाल ले आना चाहिए । जघन्य अन्तरकाल एक समय स्पष्ट ही है । शेष सब प्रकृतियोंके अजघन्य प्रदेश उदीरकके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालका समझकर स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए । तथा इसी प्रकार भवनत्रिकसे लेकर नौवें ग्रैवेयक तकके देवोंमें पृथक्-पृथक् अपनी-अपनी विशेषता-को समझ कर अन्तरकालका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। विशेष वक्तव्य न होनेसे यहाँ खुलासा नहीं किया गया है ।

§ १७२. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व और पुरुषवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है । अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल आवलि असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिये ।

**विशेषार्थ**—अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा एक समयके अन्तरसे हो यह भी सम्भव है और अपनी-अपनी भवस्थितिके आदिमें और अन्तमें यथास्थान हो यह भी सम्भव है । यही कारण है कि यहाँ सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण कहा है । इन सब प्रकृतियोंके अजघन्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है यह स्पष्ट ही है । मात्र इनके अज-घन्य प्रदेश उदीरकके उत्कृष्ट अन्तरकालमें कुछ विशेषता है । बात यह है कि जो वेदक सम्य-ग्दृष्टि ( कृतकृत्यवेदक नहीं ) या द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि मर कर वहाँ उत्पन्न होते हैं उनके यथायोग्य जीवन भर सम्यक्त्व प्रकृतिकी उदीरणा होती रहती है तथा पुरुषवेदकी भी उनके निरन्तर उदीरणा होती रहती है, इसलिए इनके जघन्य प्रदेश उदीरकका आवलिके असं-ख्यातवें भागप्रमाण जो उत्कृष्ट काल है वही यहाँ इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण कहा है । मात्र इन दो प्रकृतियोंके अतिरिक्त शेष प्रकृ-तियाँ परावर्तमान है, इसलिए उनके अजघन्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है ।

*** नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल और अन्तर इनका कथन कराना चाहिए ।**

§ १७३. नाना जीव विषयक इन अनुयोगद्वारोंको एक जीवविषयक स्वामित्व, काल

**कालंतरेहिंतो साहियूण भाणियव्वाणि, अत्थि समप्पणापरमेदं सुत्तं ।**

**§ १७४. संपहि एदेण सुत्तेण सूचिदत्थविहासणट्ठमुच्चारणाणुगममेत्थ कस्सामो । तं जहा—णाणाजीवेहिं भंगविचओ दुविहो—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-सम्म०-सोलसक०-णवणोक० उक्कस्सपदेसस्स सिया सव्वे अणुदीरगा, सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च । एवमणुक्क० तिण्णि भंगा । णवरि उदीरगा पुव्वा कादव्वा । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० अट्ठ भंगा । सव्वासु गदीसु जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं । णवरि मणुसअपज्ज० उक्क० अणुक्क० अट्ठ भंगा । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं ।**

**§ १७५. भागाभागाणु० दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० सव्वजी० केव० भागो ? अणंतभागो । अणुक्क० अणंता भागा । सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवेद-पुरिसवेद० उक्क० पदे० केव० ? असंखे०भागो । अणुक्क० असंखेज्जा भागा । एवं तिरिक्खा० ।**

और अन्तरसे साध कर कहलाना चाहिए । इस प्रकार यह समर्पणापरक सूत्र है ।

§ १७४. अब इस सूत्र द्वारा सूचित हुए अर्थका विशेष स्पष्टीकरण करनेके लिए उच्चारणाका अनुगम यहाँ पर करेंगे । यथा—नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेशोंके कदाचित् सब जीव अनुदीरक हैं, कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और एक जीव उदीरक है, कदाचित् नाना जीव अनुदीरक हैं और नाना जीव उदीरक हैं । इसी प्रकार अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाकी अपेक्षा तीन भंग जानने चाहिए । इतनी विशेषता है कि उदीरकोंको पहले करना चाहिए । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाकी अपेक्षा आठ भंग होते हैं । सब गतियोंमें जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा है उनका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्तकोंमें उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाकी अपेक्षा आठ भंग हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार जघन्यका भी कथन करना चाहिए ।

§ १७५. भागाभागानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव अनन्त बहुभागप्रमाण हैं । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए ।

§ १७६. सव्वणिरय–सव्वपंचिं०तिरिक्ख-मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति सव्वपय० उक्क० पदे० केव० ? असंखे०भागो । अणुक्क० असंखेज्जा भागा । मणुसाणं णारयभंगो । णवरि सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवे०–पुरिसवेद० उक्क० पदे० संखे०-भागो । अणुक्क० संखेज्जा भागा । मणुसपज्ज०–मणुसिणी–सव्वट्ठदेवा० सव्वपय० उक्क० संखे०भागो । अणुक्क० संखेज्जा भागा । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं ।

§ १७७. परिमाणाणु० दुविहं—जह० उक्क० । उक्क० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० केत्ति० ? संखेज्जा । अणुक्क० के० ? अणंता । सम्म०–इत्थिवे०–पुरिसवे० उक्क० के० ? संखेज्जा । अणुक्क० पदे० के० ? असंखेज्जा । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदे० उदी० के० ? असंखेज्जा ।

§ १७८. आदेसेण णेरइय० पढमाए तिरिक्खदुगे देवा सोहम्मीसाणादि जाव अवराजिदा त्ति सम्म० ओघ । सेसपयडी० उक्क० अणुक्क० पदे० के० ? असंखेज्जा । विदियादि सत्तमा त्ति जोणिणी–पचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज०–भवण०–

§ १७६. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त, सामान्य देव और अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव असंख्यात बहुभाग-प्रमाण हैं । मनुष्योंमें नारकियोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव संख्यातवें भाग-प्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार जघन्यको भी जान लेना चाहिए ।

§ १७७. परिमाणानुगम दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्टप्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं ।

§ १७८. आदेशसे सामान्य नारकी, प्रथम पृथिवीके नारकी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चद्विक, सामान्य देव तथा सौधर्म और ऐशान कल्पसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है । शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिनी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, भवनवासी, व्यन्तर और

वाण०–जोदिसि० सव्वपय० उक्क० अणुक्क० पदे० उदीर० केत्ति० ? असंखेज्जा ।

§ १७९. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० केत्ति० ? असंखेज्जा । अणुक्क० के० ? अणंता । सम्मत्त० ओघं । सम्मामिच्छत्त–इत्थिवे०–पुरिसवे० उक्क० अणुक्क० के० ? असंखेज्जा । मणुसेसु मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० के० ? संखेज्जा । अणुक्क० पदे० के० ? असंखेज्जा । सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवेद० उक्क० अणुक्क० पदे० के० संखेज्जा । पज्जत्त-मणुसिणी–सव्वट्ठ-देवा० सव्वपयडी० उक्क० अणुक्क० पदे० के० ? संखेज्जा । एवं जाव० ।

§ १८०. जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० जह०[1] पदे० के० ? असंखेज्जा । अजह० के० ? अणंता । सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवेद–पुरिसवेद० जह० अजह० पदे० के० ? असंखेज्जा । एवं तिरिक्खा० । सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति सव्वपय० जह० अजह० के० ? असंखेज्जा । मणुसतिय–सव्वट्ठदेवा० उक्कस्सभंगो । एवं जाव० ।

ज्योतिषी देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं ।

§ १७९. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है । सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । सामान्य मनुष्योंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ १८०. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । अजघन्य प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । मनुष्यत्रिक और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें उत्कृष्टके समान भंग है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

---

१ आ०-ता०प्रत्योः उक्क० इति पाठः ।

§ १८१. खेत्तं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० लोग० असंखे०-भागो । अणुक्क० सव्वलोगो । सम्म०–सम्मामि०–इत्थिवे०–पुरिसवे० उक्क० अणुक्क० पदे० उदीर० लोग० असं०भागो । एवं तिरिक्खा० । सेसगदीसु सव्वपय० उक्क० अणुक्क पदे० उदी० लोग० असंखे०भागो । एवं जाव० । एवं जहण्णयं पि णेदव्वं ।

§ १८२. पोसणं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो–ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० उदी० केव० पोसिदं ? लोग० असंखे०भागो । अणुक्क० केव० पोसिदं ? सव्वलोगो । सम्म० उक्क० खेत्तं । अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस भागा वा । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदे० केव० पोसि० ? लोग० असं०भागो अट्ठ चोद्दस० । इत्थिवेद–पुरिसवेद० उक्क० पदे० खेत्तं । अणुक्क० केव० पोसि० ? लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० सव्वलोगो वा ।

§ १८१. क्षेत्र दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए । शेष गतियोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार जघन्यको भी जानना चाहिए ।

§ १८२. स्पर्शन दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है । लोकके असंख्यातवें भाग, त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**विशेषार्थ**—ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सम्यक्त्वके साथ संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है, यतः इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीवोंका वर्तमान और अतीत स्पर्शन लोकके असंख्यातवें

**§ १८३. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० केव० पोसिदं ? खेत्तं । अणुक्क० पदेसुदी० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । सम्म०–सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० खेत्तं । एवं विदियादि सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तभंगो ।**

भागप्रमाण ही प्राप्त होता है, अतः वह तत्प्रमाण कहा है। इसी प्रकार शेष बारह कषाय और सात नोकषायोंका उक्त स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए, क्योंकि इनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके जो स्वामी हैं उनका इतना ही स्पर्शन प्राप्त होता है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव सर्व लोकमें पाये जाते हैं, इसलिए इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका सर्व लोकप्रमाण स्पर्शन है यह स्पष्ट ही है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके समय यथास्थान होती है, इसलिए इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान और अतीत स्पर्शन क्षेत्रके समान लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होनेसे वह तत्प्रमाण कहा है। यतः वेदक सम्यग्दृष्टियोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण है तथा विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिक पदोंकी अपेक्षा अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण है, अतः इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण कहा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण है, अतः सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका दोनों प्रकारका स्पर्शन उक्तप्रमाण बन जानेसे उस प्रकार कहा है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा क्षपकश्रेणिमें यथास्थान होती है, अतः क्षपकोंके अतीत और वर्तमान स्पर्शनको ध्यानमें रख कर उक्त दोनों वेदोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान और अतीत स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण कहा है। तथा स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भाग और अतीत स्पर्शन वेदना, कषाय और वैक्रियिक पदोंकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग तथा मारणान्तिक और उपपाद पदकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण है, इसलिए इन दोनों वेदोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण तथा अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण कहा है।

§ १८३. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? क्षेत्रके समान स्पर्शन है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन जानना चाहिए। पहली पृथिवीमे स्पर्शन क्षेत्रके समान है।

**विशेषार्थ**—द्वितीयादि पृथिवियोंमें एक तो मरकर सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति नहीं होती; दूसरे छटी पृथिवी तकके जो सम्यग्दृष्टि नारकी मरण करते है वे मनुष्य पर्याप्तकोंमें ही उत्पन्न होते है, तीसरे सातवे नरकके जो सम्यग्दृष्टि हैं वे नियमसे मिथ्यादृष्टि हो कर ही मरण करते हैं, इसलिए तो सामान्यसे नारकियोंमें और द्वितीयादि नरकके नारकियोंमें सम्यक्त्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान कहा है। इनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदी-

§ १८४. तिरिक्खेसु मिच्छ०–अट्ठक० उक्क० पदेसुदी० खेत्तं । अणुक्क० सव्वलोगो । सम्म० उक्क० पदे० उदी० खेत्तं । अणुक्क० पदे० केव० पोसिदं ? लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अट्ठक०–णवणोक० उक्क० पदेसुदी० केव० पोसि० ? लोग० असखे० छ चोद्दस० । अणुक्क० पदे० सव्वलोगो[1] । णवरि इत्थिवेद–पुरिसवेद० अणुक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० खेत्तं ।

रकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है यह स्पष्ट ही है । तथा सम्यग्मिथ्यात्व गुणके साथ मरण ही नहीं होता और न सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव मारणान्तिक समुद्धात ही करते हैं, इसलिए सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन भी क्षेत्रके समान बन जाता है । शेष कथन सुगम है ।

§ १८४. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और आठ कषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । आठ कषाय और नौ नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है ।

**विशेषार्थ**—तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व और प्रारम्भकी आठ कषायोंकी उदीरणाके स्वामीको देखते हुए इनकी अपेक्षा स्पर्शनका भंग क्षेत्रके समान लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होनेसे उसे क्षेत्रके समान जाननेकी सूचना की है । इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है यह स्पष्ट ही है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके समय यथास्थान प्राप्त होती है, इसलिए इसके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होनेसे उसे क्षेत्रके समान बतलाया है । तथा वेदकसम्यग्दृष्टि तिर्यञ्चोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण प्राप्त होनेसे उसे उक्तप्रमाण बतलाया है । आठ कषाय और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सर्वविशुद्ध या तत्प्रायोग्य विशुद्ध संयतासंयतके होती है, यतः ऐसे जीवोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण बन जाता है, इसलिए उक्त प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन उक्त प्रमाण कहा है । इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है । मात्र स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका वर्तमान निवास लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही है, इसलिए स्त्रीवेद और पुरुष-

१ आ०प्रतौ सम्म० उक्क० पदे० उदी० खेत्तं । अणुक्क० पदे० केव० पोसिदं ? लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अणुक्क० पदे० सव्वलोगो ।

**§ १८५. पंचिंदियतिरिक्खतिये सम्म०–सम्मामि० तिरिक्खोघं । मिच्छ०–अट्ठक० उक्क० पदे० खेत्तं । अणुक्क० पदेसुदी० केव० पोसिदं ? लोग० असंखे०-भागो सव्वलोगो वा । एवमट्ठक०–णवणोक० । णवरि उक्क० पदे० लोग० असंखे०-भागो छ चोद्दस० । णवरि वेदा जाणियव्वा ।**

**§ १८६. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० सव्वपय० उक्क० पदे० खेत्तं । अणुक्क० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।**

**§ १८७. मणुसतिये सम्म०–सम्मामि० खेत्तं । सेस० पय० उक्क० खेत्तं । अणुक्क० पदेसुदी० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।**

---

वेदके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है । इनमें सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान ही है यह स्पष्ट ही है ।

§ १८५. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है । मिथ्यात्व और आठ कषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भाग और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार आठ कषाय और नौ नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि अपना-अपना वेद जान लेना चाहिए ।

**विशेषार्थ**—पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन मारणान्तिक और उपपादपदकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण है, इसी तथ्यको ध्यानमें रखकर मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका उक्त क्षेत्र प्रमाण स्पर्शन कहा है । शेष कथन सुगम है ।

§ १८६. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**विशेषार्थ**—उक्त जीवोंमें सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सर्वविशुद्ध अथवा तत्प्रायोग्य विशुद्ध जीवोंके होती है, यह जानकर सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीवोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । तथा उक्त जीवोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन मारणान्तिक और उपपाद पदकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण है, इसलिए यहाँ उक्त सब प्रकृतियोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका उक्त क्षेत्रप्रमाण स्पर्शन कहा है ।

§ १८७. मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है । शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**विशेषार्थ**—यहाँ भी स्वामित्व और मनुष्यत्रिकके स्पर्शनको जानकर यह स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए । इसी प्रकार आगे भी समझ लेना चाहिए ।

**§ १८८. देवेसु सम्म० उक्क० पदे० खत्तं। अणुक्क० पदेसुदी० केव० पोसि० ? लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस०। सम्मामि० उक्क० अणुक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस०। सेसपय० उक्क० पदे० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस०। अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अट्ठ-णव चोद्दस० भागा वा देसूणा। एवं सोहम्मीसाणेसु।**

**§ १८९. भवण०-वाणवें०-जोदिसि० सम्म०-सम्मामि० उक्क० अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस०। सेसपय० उक्क० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दस०। अणुक्क० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा।**

---

§ १८८. देवोंमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण तथा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम आठ और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए।

*विशेषार्थ*—सामान्य देवोंके वर्तमान और अतीत स्पर्शनको ख्यालमें लेकर यहाँ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर शेष प्रकृतियोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, विहारवत्स्वस्थान, वेदना कषाय और वैक्रियिक पदोंकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और मारणान्तिक पदकी अपेक्षा मेरुमूलसे ऊपर कुछ कम सात राजु और नीचे कुछ कम दो राजु कुल त्रसनालीके नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष कथन सुगम है। सौधर्म और ऐशान कल्पमें यह स्पर्शन इसी प्रकार बन जानेसे उसे सामान्य देवोंके समान जाननेकी सूचना की है।

§ १८९. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम साढ़े तीन और कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण तथा त्रसनालीके कुछ कम साढ़े तीन और कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण तथा त्रसनालीके कुछ कम साढ़े तीन कुछ कम आठ और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

*विशेषार्थ*—भवनत्रिकमें सम्यग्दृष्टि जीव मर कर उत्पन्न नहीं होते, इसलिए इनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंके स्पर्शनके समान बन जानेसे दोनोंका स्पर्शन एक समान कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १९०. सणक्कुमारादि जाव सहस्सारे त्ति सव्वपय० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० लोग० असं०भागो अट्ठ चोद्दस० देसूणा। णवरि सम्म० उक्क० खेत्तं। आणदादि जाव अच्चुदा त्ति सव्वपय० उक्क० अणुक्क० पदेसुदी० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। णवरि सम्म० उक्क० पदे० खेत्तं। उवरि खेत्तभंगो। एवं जाव०।

§ १९१. जह० पयदं। दुविधो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०—सोलसक०—सत्तणोक० जह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ तेरह चोद्दस०। अजह० सव्वलोगो। णवरि णवुंस० जह० पदे० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा। सम्म०—सम्मामि० जह० अजह० लोग० असं०भागो अट्ठ चोद्दस०। इत्थिवेद—पुरिस-

§ १९०. सनत्कुमार कल्पसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीवोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। इनसे ऊपरके देवोंमें स्पर्शनका भंग क्षेत्रके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—बारहवें कल्प तकके देवोंका गमन तीसरी पृथिवी तक और तेरहवें कल्पसे लेकर सोलहवें कल्प तकके देवोंका गमन मेरुके मूल भाग तक ही सम्भव है। इसी कारण यहाँ सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमे सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण तथा विहार आदि सम्भव पदोंकी अपेक्षा अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण कहा है। तथा आरणादि चार कल्पोंके देवोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन विहार आदि सम्भव पदोंकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण कहा है। किन्तु यहाँ सर्वत्र सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है यह स्पष्ट ही है। इसी प्रकार नौ ग्रैवेयक आदिके सभी देवोंमें स्पर्शन क्षेत्रके समान है यह भी स्पष्ट है।

§ १९१. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम आठ और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम आठ और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके

**वेद० जह० पदेसुदी० लोग० असंखे०भागो अट्ठ तेरह चोद्दस० । अजह० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० सव्वलोगो वा ।**

**§ १९२. आदेसेण णेरइय० सम्म०–सम्मामि० खेत्तं । सेसपय० जह० अजह० लोग० अस०भागो छ चोद्दस० । एवं विदियादि जाव सत्तमा त्ति । णवरि सगपोसणं । पढमाए खेत्तभंगो ।**

**§ १९३. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सोलसक–सत्तणोक० जह० लोग० असंखे०भागो**

---

असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

**विशेषार्थ**—मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा उत्कृष्ट या ईषत् मध्यम संक्लेश परिणामवाले संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव करते हैं । यतः ऐसे जीवोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भाग और यथा सम्भव पदोंकी अपेक्षा अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण होनेसे यह उक्त प्रमाण कहा है । इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है । यहाँ नपुंसक वेदके विषयमें इतना विशेष जानना चाहिए कि नपुंसकवेदके उदीरक देव नहीं होते, इसलिए इसके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भाग और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण बननेसे वह उक्त प्रमाण कहा है । वेदकसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके वर्तमान और अतीत स्पर्शनको ध्यानमें रख कर यहाँ सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकों-का वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भाग और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण कहा है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकोंके स्पर्शनका खुलासा मिथ्यात्व आदि पूर्वोक्त प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंके स्पर्शनके समान ही है । मात्र इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंके स्पर्शनमें कुछ अन्तर है । बात यह है कि ऐसे जीवों का वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन स्वस्थान विहार आदि यथा सम्भव पदोंकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और मारणा-न्तिक तथा उपपाद पदकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण बन जानेसे वह उक्त प्रमाण कहा है ।

§ १९२. आदेशसे नारकियोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है । शेष प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपना-अपना स्पर्शन कहना चाहिए । पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है ।

**विशेषार्थ**—यहाँ सामान्यसे नारकियोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके अतिरिक्त शेष प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण मारणान्तिक पदकी अपेक्षा कहा है तथा अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण मारणान्तिक और उपपाद पदकी अपेक्षा कहा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ १९३. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके जघन्य प्रदेश

**छ चोद्दस० । अजह० सव्वलोगो । सम्म० जह० खेत्तं । अजह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । सम्मामि० खेत्तं । इत्थिवेद–पुरिसवेद० जह० पदे० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । अजह० लोग० असं०भागो सव्वलोगो वा ।**

**१९४. पंचिंदियतिरिक्खतिये सम्म०–सम्मामि० तिरिक्खोघं । सेसपय० जह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० देसूणा । अजह० पदे लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा । पंचि०तिरिक्खअपज्ज०–मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो सव्वलोगो वा ।**

**१९५. मणुसतिये सम्म०–सम्मामि० खेत्तं । सेसपय० जह० पदे० लोग० असंखे०भागो । अजह० लोग० असं०भागो सव्वलोगो वा ।**

---

उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन क्षेत्रके समान है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**विशेषार्थ**—सामान्य तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा नीचे सातवीं पृथिवी तक मारणान्तिक समुद्घात करते समय बन जाती है, इसलिए यहाँ इनके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण कहा है। इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदके जघन्य प्रदेश उदीरकोंकी अपेक्षा उक्त स्पर्शन जानना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

§ १९४. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**विशेषार्थ**—पूर्वमें सामान्य तिर्यञ्चोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर शेष प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंके स्पर्शनका जो स्पष्टीकरण किया है वह पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिककी अपेक्षा ही घटित होनेसे इसे उक्त प्रकारसे समझ लेना चाहिए। इनका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण बन जानेसे यहाँ उक्त प्रकृतियोंके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन उक्त रूपसे कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १९५. मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग क्षेत्रके समान है। शेष प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

**§ १९६. देवेसु मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० जह० अजह० लोग० असंखे-भागो अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा । सम्म०-सम्मामि० जह० अजह० लोग० असंखे०-भागो अट्ठ चोद्दस० । एवं सोहम्मीसाण० ।**

**§ १९७. भवण-वाणवें-जोदिसि० मिच्छ०-सोलसक०-अट्ठणोक० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ णव चोद्दस० देसूणा । सम्म०-सम्मामि० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो अद्धट्ठा वा अट्ठ चोद्दस० । सणक्कुमारादि जाव सहस्सारा त्ति सव्वपय० जह० अजह० पदेसुदी० लोग० असंखे०भागो अट्ठ चोद्दस० । आणदादि जाव अच्चुदा त्ति सव्वपय० जह० अजह० लोग० असंखे०भागो छ चोद्दस० । उवरि खेत्तभंगो । एवं जाव० ।**

---

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिकका परिणाम संख्यात है। यद्यपि इनके नीचे सातवीं पृथिवी तक मारणान्तिक समुद्घात करते समय सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर शेष प्रकृतियोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा बन जाती है, परन्तु उस सब क्षेत्रका योग लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण होनेसे यहाँ वह उक्तप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १९६. देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम आठ और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंमें जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—सामान्यसे देवोंके और सौधर्म ऐशान कल्पके देवोके प्रकृतमें उपयोगी स्पर्शनको जानकर मिथ्यात्व आदि २५ प्रकृतियोंकी अपेक्षा यह स्पर्शन घटित कर लेना चाहिए। मात्र सम्यग्दृष्टि देव एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते, इसलिए इनमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका वर्तमान स्पर्शन लोकके असंख्यातवे भाग और अतीत स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण कहा है।

§ १९७. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम साढ़े तीन, कुछ कम आठ और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवे भाग तथा त्रसनालीके कुछ कम साढ़े तीन और कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सनत्कुमार कल्पसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत कल्पसे लेकर अच्युत कल्प तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंने लोकके असंख्यातवें भाग और त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। ऊपरके देवोंमें स्पर्शनका भंग क्षेत्रके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**§ १९८. कालो दुविहो—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपय० उक्क० केवचिरं० ? जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । अणुक्क० सव्वद्धा । णवरि सम्मामि० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असं०भागो । अणुक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो ।**

**§ १९९. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सोलसक०–सत्तणोक० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असं०भागो । अणुक्क० सव्वद्धा । सम्म०–सम्मामि० ओघं । एवं पढमाए । विदियादि जाव सत्तमा त्ति एव चेव । णवरि सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो ।**

---

**विशेषार्थ**—भवनत्रिकोंके एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घातके समय सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा सम्भव नहीं है। इस बातको ध्यानमें रख कर यहाँ उक्त दोनों प्रकृतियोंके जघन्य और अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका स्पर्शन कहा है। शेष सब कथन सुगम है।

§ १९८. काल दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होती है। ऐसे जीव कमसे कम एक समय तक हों और दूसरे समयमें न हों यह भी सम्भव है और अत्रुट्यत् सन्तानरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक हों यह भी सम्भव है। यही कारण है कि यहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। तथा सम्यग्मिथ्यात्वका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तमुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। यही कारण है कि यहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। अब रहीं शेष प्रकृतियाँ सो उनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके स्वामित्वको देखते हुए उनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय प्राप्त होनेसे वह उक्त प्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है यह स्पष्ट ही है।

§ १९९. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक इसी प्रकार जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ २००. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सोलसक०–णवणोक० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० सव्वद्धा। सम्म०–सम्मामि० ओघं। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि पज्ज० इत्थिवे० णत्थि। जोणिणीसु पुरिस-णवुंस० णत्थि। सम्म० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। पंचि०तिरि०अपज्ज० सव्वपय० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० सव्वद्धा।

§ २०१. मणुसतिये सम्मामि० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया। अणुक्क० जह० उक्क० अंतोमु०। सेसपय० उक्क० पदे० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो संखे० समया वा। अणुक्क० सव्वद्धा। मणुसअपज्ज०

---

**विशेषार्थ**—नारकियोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके उपक्रमका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होनेसे यहाँ इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है यह स्पष्ट ही है। तथा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है यह भी स्पष्ट है। पहली पृथिवीमें यह प्ररूपणा इसी प्रकार बन जाती है। मात्र द्वितीयादि पृथि-वियोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मरकर उत्पन्न नहीं होते, इसलिए उनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण बन जानेसे वह उक्तप्रमाण कहा है।

§ २००. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है और योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। योनिनियोंमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है।

**विशेषार्थ**—तिर्यञ्च योनिनियोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मरकर नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए इनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जानेसे वह उक्तप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २०१. मनुष्यत्रिकमें सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है अथवा संख्यात समय है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका

**सव्वपय० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असं०भागो। अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो।**

**२०२. देवा० सोहम्मादि जाव णवगेवज्जा त्ति सम्म०-सम्मामि० ओघं। सेसपय० उक्क० पदे० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। अणुक्क० सव्वद्धा। भवण०-वाणवें०-जोदिसि० देवोघं। णवरि सम्म० उक्क० पदे० जह० एयसमओ, उक्क० आवलि० असं०भागो। अणुक्क० सव्वद्धा। अणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठा त्ति सम्म० ओघं। बारसक०-सत्तणोक० उक्क० जह० एगस०, उक्क० आवलियाए असंखेज्जदिभागो। अणुक्क० सव्वद्धा। एवं जाव०।**

---

जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—मनुष्यत्रिकका परिमाण संख्यात है, इसलिए इनमें सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय बननेसे वह तत्प्रमाण कहा है। तथा एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। अब यदि संख्यात नाना जीव सन्ततिका विच्छेद हुए बिना सम्यग्मिथ्यात्व गुणको प्राप्त हों तो उस कालका योग अन्तर्मुहूर्त ही होगा, इसलिए यहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। यहाँ शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है यह तो स्पष्ट ही है। उत्कृष्ट काल जो दो प्रकारसे बतलाया है वह अवश्य ही विचारणीय है। चूर्णिसूत्रोंमें उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके स्वामित्वका जो निर्देश किया है उसे देखते हुए तो वह काल संख्यात समय ही बनता है। इसलिए आगमानुसार इसका विशेष स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। मेरी अल्प बुद्धिमें यह समझमें नहीं आया इसलिए इतना संकेत किया है। शेष कथन सुगम है।

§ २०२. समान्य देव और सौधर्म आदि कल्पोंसे लेकर नौग्रैवेयक तकके देवोंमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वका भंग ओघके समान है। बारह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—भवनत्रिकोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि जीव मरकर नहीं उत्पन्न होते, इसलिए इनमें सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्टकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ २०३. जह० पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपय० जह० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असं०भागो । अजह० सव्वद्धा । णवरि सम्मामि० अजह० जह० अंतोमु०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-सव्वदेवा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं ।

§ २०४. मणुसतिये सम्म० जह० पदे० जह० एगस०, उक्क० संखेज्जा समया । अजह० सव्वद्धा । एवं सम्मामि० । णवरि अजह० जह० उक्क०[1] अंतोमु० । सेसपय० जह० पदे० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अजह० सव्वद्धा । मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० पदे० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अजह० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एवं जाव० ।

§ २०३. जघन्यका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे सब प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है । इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है । सब नारकी, सब तिर्यञ्च और सब देव जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा करते हैं उनका भंग ओघके समान है ।

विशेषार्थ—सब प्रकृतियोकी जघन्य प्रदेश उदीरणाका जो स्वामी बतलाया है उसके अनुसार उनके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है । इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है यह स्पष्ट ही है । मात्र सम्यग्मिथ्यात्व गुण सान्तर मार्गणा है, इसलिए इस गुणके जघन्य और उत्कृष्ट कालको ध्यानमें रखकर इनके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । शेष कथन सुगम है ।

§ २०४. मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । शेष प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

विशेषार्थ—मनुष्यत्रिकमें सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाले मनुष्य अधिकसे अधिक संख्यात ही हो सकते हैं । यतः ऐसे जीव कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक संख्यात समय तक ही इसकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करते हैं, इसलिए इसके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय

१. ता०प्रतौ जह० एगस० उक्क० इति पाठः ।

**§ २०५. अंतरं दुविहं—जह० उक्क० । उक्कस्से पयदं । दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०–बारसक०–छण्णोक० उक्क० पदे० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणुक्क० णत्थि अंतरं । एवं सम्मामि० । णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । सम्मत्त०– लोभसंज० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं । अणुक्क० णत्थि अंतरं । तिण्णिसंजलण–पुरिसवेद० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० वासं सादिरेयं । अणुक्क० णत्थि अंतरं णिरंतरं । इत्थिवेद[1]–णवुंस० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं । अणुक्क० णत्थि अंतरं णिर० । एवं मणुसतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा । मणुसिणीसु खवगपयडीणं वासपुधत्तं ।**

---

कहा है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेश उदीरकोंके जघन्य और उत्कृष्ट कालका निर्णय इसी प्रकार कर लेना चाहिए । वेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य सर्वदा पाये जाते है, इसलिए सम्यक्त्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा कहा है । परन्तु सम्यग्मिथ्यात्व गुण सान्तर मार्गणा है । मनुष्योंमें नाना जीवोंकी अपेक्षा भी इसका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ही बनता है । इसलिए यहाँ इसके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है । जो मनुष्य अपर्याप्त सब प्रकृतियोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करके मरणके अन्तिम समयमें अजघन्य प्रदेश उदीरणा करते है उनकी अपेक्षा मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय कहा है । शेष कथन सुगम है ।

§ २०५. अन्तर दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्टका प्रकरण है । निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, बारह कषाय और छह नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है । सम्यक्त्व और लोभसंज्वलनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है । तीन संज्वलन और पुरुषवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है, निरन्तर है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि वेद जान लेने चाहिए । मनुष्यिनियोंमें क्षपकप्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है ।

**विशेषार्थ**—मिथ्यात्व, बारह कषाय और छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले नाना जीव कमसे कम एक समयके अन्तरालसे हीं यह भी सम्भव है और अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण कालके अन्तरालसे हों यह भी सम्भव है अर्थात् उत्कृष्टरूपसे असंख्यात लोकप्रमाण कालके बाद कोई न कोई जीव उक्त प्रकृतियोंकी अवश्य ही

---

१. आ०प्रतौ उक्क० छम्मासं । अणुक्क० णत्थि अंतर णिरतरं इत्थिवेद० ।

**§ २०६. आदेसेण णेरइय० सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० वासपुधत्तं। अणुक्क० णत्थि अंतरं०। सम्मामि० ओघं। मिच्छ०-अणंताणु०४ उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० सत्त रादिंदियाणि। अणुक्क० णत्थि अंतरं०। बारसक०-सत्तणोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अंतरं०। एवं पढमाए। एवं विदियादि जाव सत्तमा त्ति। णवरि सम्म० बारसकसायभंगो।**

---

उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है, इसलिए उक्त प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव सर्वदा पाये जाते हैं, इसलिए इनके अन्तरकालका निषेध किया है। सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा यह अन्तरकाल बन जाता है। मात्र इस अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक नहीं पाये जाते, इसलिए इसके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। क्षपकश्रेणिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर सम्यक्त्व और संज्वलन लोभके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है यह स्पष्ट ही है, क्योंकि जब सम्यक्त्व और संज्वलन लोभकी उदीरणा न हो ऐसा एक भी समय नहीं उपलब्ध होता। पुरुषवेद और शेष तीन संज्वलनोंकी अपेक्षा क्षपकश्रेणिके अन्तरकालको ध्यानमे रखकर इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव निरन्तर पाये जाते है, इसलिए इसलिए इसका निषेध किया है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी अपेक्षा क्षपकश्रेणिके अन्तरकालको ध्यानमें रख कर इनके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक जीव निरन्तर पाये जाते हैं इसलिए इसका निषेध किया है। मनुष्यत्रिकमे यह अन्तरकाल अविकल बन जाता है, उनमें ओघके समान जाननेकी सूचना की है। मात्र इन तीन प्रकारके मनुष्योंमें जिसके जो वेद सम्भव हों उन्हे जानकर उनके उन्हींकी अपेक्षा कथन करना चाहिए। इतना विशेष जानना चाहिए कि जिन प्रकृतियोंकी क्षपकश्रेणिमें उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा होती है उनकी अपेक्षा मनुष्यिनियोंमें उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहना चाहिए।

§ २०६. आदेशसे नारकियोंमे सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात रात्रि-दिन है अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हैं। बारह कषाय और सात नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हैं। इसी प्रकार पहली पृथिवीमें जानना चाहिए। इसी प्रकार दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इन द्वितीयादि पृथिवियोंमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है।

**§ २०७. तिरिक्खेसु मिच्छ०-सोलसक०-णवणोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अंतरं०। सम्मत्त-सम्मामि० णारय-भंगो। एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा। जोणिणीसु सम्म० बारसक०भंगो। पंचिं०तिरिक्खअपज्ज० सव्वपयडी० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अंतरं०। एवं मणुसअपज्ज०। णवरि अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो।**

---

विशेषार्थ—नरकमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टियोंके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ सम्यक्त्वके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण कहा है। इसके अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक वेदक सम्यग्दृष्टि जीव वहाँ निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए इनके अन्तरकालका निषेध किया है। सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है यह स्पष्ट ही है। नरकमें प्रथमोपशम सम्यक्त्वके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात रात्रि-दिन कहा है। इनकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले अन्य मिथ्यादृष्टि जीव निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए इनके अन्तरकालका निषेध किया है। जिन परिणामोंसे नरकमें बारह कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा होती है उनके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर यहाँ उक्त प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। इनके अनुत्कृष्ट प्रदेशोंके उदीरक जीव यहाँ पर निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए उनके अन्तरकालका निषेध किया है। सातों नरकोंमें यह अन्तरकाल प्ररूपणा बन जाती है, इसलिए उसे सामान्य नारकियोंके समान जाननेकी सूचना की है। मात्र द्वितीयादि पृथिवियोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर नहीं उत्पन्न होते, इसलिए द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान बन जानेसे सम्यक्त्वके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंके अन्तरकालको बारह कषायोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंके अन्तरकालके समान जाननेकी सूचना की है।

§ २०७ तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हैं। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग नारकियोंके समान है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वेद जान लेना चाहिए। योनिनियोंमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हैं। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्तकोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

विशेषार्थ—कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य मर कर तिर्यञ्च योनिनियोंमें उत्पन्न नहीं होते, इसलिए इनमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायोंके समान बन जानेसे उस प्रकार कहा

§ २०८. देवेसु मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–अणंताणु०४ णारयभंगो। बारसक०–अट्ठणोक० उक्क० पदेसुदी० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अतरं०। एवं सोहम्मीसाण०। एवं सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि। भवण०–वाणवें०–जोदिसि० देवोघं। णवरि सम्म० बारसक०भंगो। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० उक्क० पदेसुदी० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं पलिदो० संखे०भागो[1]। अणुक्क० णत्थि अंतरं०। बारसक०–सत्तणोक० देवोघं। एवं जाव०।

§ २०९. जह० पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपय० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अजह० णत्थि अंतरं०। णवरि

है। मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है। इसलिए इसके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर यहाँ मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपम के असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। शेष स्पष्टीकरण पूर्व में किये गये स्पष्टीकरण से यथायोग्य समझ लेना चाहिए।

§ २०८. देवों में मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चतुष्कका भंग सामान्य नारकियों के समान है। बारह कषाय और आठ नोकषायों के उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकों का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकों का अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हैं। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्प मे जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमार कल्प से लेकर नौग्रैवेयक तक के देवों मे जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमे स्त्री वेद नहीं है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवों में सामान्य देवों के समान भंग है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व का भंग बारह कषायों के समान है। अनुदिश से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक के देवो में सम्यक्त्व के उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकों का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर काल नौ अनुदिश और चार अनुत्तरोंमें वर्षपृथक्त्व प्रमाण और सर्वार्थसिद्धि में पल्योपम के संख्यातवें भाग प्रमाण है। अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरकों का अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हे। बारह कषाय और सात नौ कषायों का भंग सामान्य देवों के समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—कृतकृत्यववेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य मर कर भवनत्रिकों में उत्पन्न नहीं होते इसलिये इनमें सम्यक्त्वका भंग बारह कषायों के समान कहा है। नौ अनुदिश और पाँच अनुत्तरोंमें कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टियों की उत्पत्ति के जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल को ध्यान में रखकर यहाँ इनमें सम्यक्त्व के उत्कृष्ट प्रदेश उदीरकों का जघन्य अन्तरकाल एक समय तथा नौ अनुदिश और चार अनुत्तरोंमें उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण और सर्वार्थसिद्धि में पल्योपमके संख्यातवे भागप्रमाण कहा है। शेष स्पष्टीकरण पूर्वके स्पष्टीकरणको ध्यानमें रखकर कर लेना चाहिए।

§ २०९. जघन्य प्रकृत है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल

१. आ०-ता०प्रत्योः संखे०भागो। बारसक० इति पाठः।

**सम्मामि० अजह० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। सव्वणिरय०-सव्वतिरिक्ख-मणुसतिय-सव्वदेवा त्ति जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति तासिमोघं। मणुसअपज्ज० सव्वपय० जह० पदेसुदी० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अजह० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं०भागो। एवं जाव०।**

*** तदो सण्णियासो।**

**§ २१०. तदो णाणाजीवभंगविचयादिअणिओगद्दारविहासणादो अणंतरमिदाणिं सण्णियासो अहिकओ दट्ठव्वो त्ति अहियारसंभालणवक्कमेदं—**

*** मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरगो अणंताणुबंधीणमुक्कस्सं वा अणुक्कस्सं वा उदीरेदि।**

**§ २११. मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरगो णाम संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठी सव्वविसुद्धो, सो अणंताणुबधीणमण्णदरस्स णियमा उदीरगो। एवमुदीरेमाणो उक्कस्सं**

असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं है, वे निरन्तर हैं। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्व के अजघन्य प्रदेश उदीरकों का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। सब नारकी, सब तिर्यञ्च, मनुष्यत्रिक और सब देव जिन प्रकृतियों की उदीरणा करते हैं उनका भंग ओघके समान है। मनुष्य अपर्याप्तकों में सब प्रकृतियों के जघन्य प्रदेश उदीरकों का जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर काल असंख्यात लोकप्रमाण है। अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपम के असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—सम्यग्मिथ्यात्व गुण यह सान्तर मार्गणा है इसलिए ओघ और आदेश से गति मार्गणाके अवान्तर भेदोंमें जहाँ सम्यग्मिथ्यात्व गुण की प्राप्ति सम्भव है, वहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जाने से वह तत्प्रमाण कहा है। मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए इनमें सब प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बन जाने से वह तत्प्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

*** तदनन्तर सन्निकर्ष अधिकृत है।**

§ २१०. तदनन्तर अर्थात् नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय आदि अनुयोगद्वारों का व्याख्यान करने के बाद इस समय सन्निकर्ष अधिकृत जानना चाहिए। इस प्रकार अधिकारकी सम्हाल करने वाला यह सूत्रवचन है।

*** मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करने वाला जीव अनन्तानुबन्धियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा या अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है।**

§ २११. जो संयमके अभिमुख हुआ सर्व विशुद्ध अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व के उत्कृष्ट प्रदेशोंका उदीरक कहलाता है वह अनन्तानुबन्धियोंमें से अन्यतरका

वा अणुक्कस्सं वा उदीरेदि, सामित्तभेदाभावे पि अप्पणो विसेसपच्चयमस्सिदूण तहाभाव-सिद्धीए विरोहाभावादो। तथाणुक्कस्समुदीरेमाणो केत्तिएहिं वियप्पेहिं अणुक्कस्समुदीरेदि त्ति पुच्छिदे तण्णिण्णयकरणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* उक्कस्सादो अणुक्कस्सा चउट्ठाणपदिदा।

§ २१२. कुदो ? मिच्छत्तुक्कस्सपदेसुदीरगस्साणंताणुबंधीणं चउट्ठाणपदिदपदेसु-दीरणाकारणपरिणामाणं पि संभवे विरोहाभावादो। तदो मिच्छत्तुक्कस्सपदेसुदारगो अणंताणुबंधीणमणुक्कस्समुदीरेमाणो असंखे०भागहीणं सखे०भागहीणं सखे०गुणहीणं असंखे०गुणहीणमुदीरेदि त्ति सिद्ध। एवं मिच्छत्तुक्कस्सपदेसुदीरणं णिरुद्धं कादूण तत्थाणंताणुबधाण सण्णियासो कओ। सेसाणं पि कम्माणमेदेण बीजपदेण सण्णियासो णेदव्वो त्ति जाणावणट्ठमाह—

* एवं णेदव्वं।

§ २१३. जहा मिच्छत्तस्साणंताणुबधीहि सह णीदं एवं सेसेहि मि कम्मेहि सह णेदव्वं। अणताणुबंधिकोहादीणं पि पादेक्कणिरुंभणं कादूण सेसकम्मेहि सह सण्णियासो जाणिय कायव्वा। जहण्णसण्णियासो वि चिंतिय णेदव्वो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स

---

नियमसे उदीरक है। इस प्रकार उदीरणा करने वाला उत्कृष्ट या अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है, क्योंकि स्वामित्वका भेद नहीं होनेपर भी अपने विशेष प्रत्ययका आश्रय कर उस प्रकारकी सिद्धिमें कोई विरोध नहीं है। उस प्रकार अनुत्कृष्टको उदीरणा करनेवाला कितने भेदोंके द्वारा अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है ऐसा पूछनेपर उसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते है—

* उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा चतुःस्थान पतित होती है।

§ २१२. मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले जीवके अनन्तानुबन्धियोंकी चतुः-स्थान पतित प्रदेश उदीरणाके कारणभूत परिणामोंके भी सम्भव होनेमें कोई विरोध नहीं आता। इसलिए मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव अनन्तानुबन्धियोंकी अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता हुआ असंख्यात भागहीन, संख्यात भागहीन, संख्यात गुण-हीन या असंख्यात गुणहीन प्रदेश उदीरणा करता है यह सिद्ध हुआ। इस प्रकार मिथ्यात्व-की उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके साथ वहाँ अनन्तानुबन्धियोंका सन्निकर्ष बतलाया। इसी प्रकार शेष कर्मोंका भी इसी बीजपद से सन्निकर्ष जानना चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते है—

* इसी प्रकार शेष कर्मोंका भी जानना चाहिए।

§ २१३. जिस प्रकार मिथ्यात्वका अनन्तानुबन्धियोंके साथ संन्निकर्ष बतलाया है उसी प्रकार शेष कर्मों के साथ भी जानना चाहिए। अनन्तानुबन्धी क्रोधादिमेंसे भी प्रत्येकको विवक्षित कर शेष कर्मों के साथ सन्निकर्ष जानकर करना चाहिए। जघन्य सन्निकर्षका भी

**अत्थसब्भावो। तदो एदेण सुत्तेण समप्पिदत्थविसये सोदाराणं णिण्णयजणणट्ठमुच्चारणं वत्तइस्सामो। तं जहा—**

**§ २१४. सण्णियासो दुविहो—जह० उक्क०। उक्कस्से पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ० उक्क० पदेसमुदीरेंतो अणंताणुबंधिचउक्कं सिया० तं तु चउट्ठाणपदिदं। बारसक०-णवणोक० सिया असंखे०गुणहीणं।**

**§ २१५. सम्म० उक्क० पदेसमुदी० बारसक०-णवणोक० सिया असंखेज्जगुणहीणं। एवं सम्मामि०।**

**§ २१६. अणंताणु०कोधस्स उक्क० पदे० उदीरेंतो मिच्छ० णिय० तं तु चउट्ठाणपदिदं। तिण्हं कोहाणं णिय० अणुक्क० असंखे०गुणहीणं। णवणोक० सिया० असंखे०गुणहीणं। एवं तिण्हं कसायाणं।**

**§ २१७. अपच्चक्खाणकोह० उक्क० पदेसमुदीरेंतो दोण्हं कोहाणं णिय० असंखे०-**

---

विचार कर कथन करना चाहिए यह इस सूत्रका तात्पर्य है। इसलिए इस सूत्र द्वारा प्राप्त हुए अर्थके विषयमें श्रोताओंको निर्णय उत्पन्न करनेके लिए उच्चारणाको बतलाते है। यथा—

§ २१४. सन्निकर्ष दो प्रकारका है—जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्टका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव अनन्तानुबन्धि चतुष्कका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। अर्थात् किसी एकको एक कालमें उदीरक है। यदि उदीरक है तो वह कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। बारह कषाय और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्ट की अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है।

§ २१५. सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव बारह कषाय और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २१६. अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। तीन क्रोधोंका नियमसे उदीरक है जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान आदि तीन कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २१७. अप्रत्याख्यान क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव दो क्रोधोंका नियमसे उदीरक है जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है।

**गुणहीणं । सम्म०–णवणोक० सिया असंखे०गुणहीणं । एवं तिण्हं कसा० ।**

**§ २१८. पच्चक्खाणकोह० उक्क० पदे० उदीरेंतो कोहसंजल० णिय० असंखे०-गुणही० । सम्म०–णवणोक० सिया० असंखे०गुणहीणं । एवं तिण्हं क० ।**

**§ २१९. कोहसंज० उक्क० पदे० उदीरेंतो सव्वपयडीणमणुदीरगो । एवं तिण्णं संजलणाणं ।**

**§ २२०. इत्थिवे० उक्क० पदे० उदीरेंतो चदुसंज० सिया० असंखे०गुणही० । एवं पुरिसवे०–णवुंस० ।**

**§ २२१. हस्सस्स उक्क० पदे० उदीरेंतो रदिं णिय० तं तु चउट्ठाणपदि० । भय-दुगुंछ० सिया तं तु चउट्ठाणप० । तिण्णिवेद–चदुसंजल० सिया असंखे०गुणही० । एवं रदीए । एवमरदि-सोगाणं ।**

---

सम्यक्त्व और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार अप्रत्याख्यान मान आदि तीन कषायोंका मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २१८. प्रत्याख्यान क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव क्रोधसंज्वलनका नियमसे उदीरक है। जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्व और नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार प्रत्याख्यान मान आदि तीन कषायोंकी मुख्यतासे सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २१९. क्रोधसंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव सब प्रकृतियोंका अनुदीरक है। इसी प्रकार मान आदि तीन संज्वलनोंकी मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २२०. स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव चार संज्वलनोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार पुरुषवेद और नपुंसकवेदको मुख्य-कर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २२१. हास्यकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव रतिकी नियमसे उदीरणा करता है। जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्ट की अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। तीन वेद और चार संज्वलनोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदी-रणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

**§ २२२. भय० उक्क० पदे० उदीरेंतो पंचणोक० सिया तं तु चउट्ठाणपदिदा। तिण्णिवेद–चदुसंज० सिया असंखे०गुणहीणा। एवं दुगुंछाए। एवं मणुसतिये। णवरि वेदा जाणियव्वा।**

**§ २२३. आदेसेण णेरइय० मिच्छ० उक्क० पदे० उदीरेंतो सोलसक०–छण्णोक० सिया असंखे०गुणहीणा। णवुंस० णिय० असंखे०गुणहीणा। एवं सम्म० सम्मामि०। णवरि अणंताणु०४ णत्थि।**

**§ २२४. अणंताणु०कोध० उक्क० उदीरेंतो तिण्हं कोधाणं णवुंस० णिय० असंखे०-गुणही०। छण्णोक० सिया असंखे०गुणहीणा। एवं माण-माया-लोहाणं।**

**§ २२५. अपचक्खाणकोध० उक्क० पदेसुदी० दोण्हं कोधाणं णवुंस० णिय० तं तु चउट्ठाणप०। छण्णोक० सिया त तु चउट्ठाणप०। सम्म० सिया असंखे०गुणहीणा। एवमेक्कारसक०।**

---

§ २२२. भयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। तीन वेद और चार संज्वलनोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इसी प्रकार मनुष्यत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वेद जान लेने चाहिए।

§ २२३. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि उक्त दो प्रकृतियों की उदीरणा करनेवाला जीव अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी उदीरणा नहीं करता।

§ २२४. अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव तीन क्रोध और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभ को मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २२५. अप्रत्याख्यान क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव दो क्रोध और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है। जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान-पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनु-

§ २२६. हस्सस्स उक्क० पदे० उदी० बारसक०-भय-दुगुंछ० सिया तं तु चउट्ठाणपदि०। रदि-णवुंस० णिय० तं तु चउट्ठाणप०। सम्म० सिया असंखे०गुणही०। एवं रदीए। एवमरदि-सोगाणं।

§ २२७. भय० उक्क० पदेस० उदीरेंतो बारसक०-पंचणोक० सिया तं तु चउट्ठाणप०। सम्म०-णवुंस० हस्सभंगो। एवं दुगुंछा०। एवं पढमाए।

§ २२८. बिदियादि सत्तमा त्ति। णवरि बारसक०-सत्तणोक० उक्क० पदेसमुदीरेंतो सम्म० सिया तं तु चउट्ठाणप०। सम्म० उक्क० पदे० उदीरे० बारसक०-छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठाणप०। णवुंस० णिय० तं तु चउट्ठाणप०।

---

त्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वका कदाचित उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार शेष ग्यारह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २२६. हास्य की उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करने वाला जीव बारह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित उदीरक है और कदाचित अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्ट की अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। रति और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वका कदाचित उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्य कर सन्निकर्प जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्प जानना चाहिए।

§ २२७. भय की उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करने वाला जीव बारह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक करता है। इसके सम्यक्त्व और नपुंसकवेदका भंग हास्य के समान है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्प जानना चाहिए। इसी प्रकार पहली पृथिवीमे जानना चाहिए।

§ २२८. दूसरीसे लेकर सातवी पृथिवी तक इसी प्रकार है। इतनी विशेपता है कि बारह कषाय और सात नोकपायोकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करने वाला जीव सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्ट की अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव बारह कपाय और छह नोकषायोका कदाचित उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। नपुंसक वेद का नियम से उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक

§ २२९. तिरिक्खेसु मिच्छ०–सम्मामि०–अट्ठक० ओघं। सम्म० उक्क० पदे० उदीरेंतो बारसक०–छण्णोक० सिया असंखे०गुणहीणा। पुरिसवे० णिय० असंखे०-गुणही०।

§ २३०. पच्चक्खाणकोध० उक्क० पदे० उदी० कोहसंजल० णिय० तं तु चउट्ठाण-प०। णवणोक० सिया तं तु चउट्ठाणप०। सम्म० सिया असंखे०गुणही०। एवं सत्तक०।

§ २३१. इत्थिवेद० उक्क० पदे० उदी० अट्ठक०–छण्णोक० सिया तं तु चउ-ट्ठाणप०। सम्म० सिया० असंखे०गुणही०। एवं पुरिस०–णवुंस०।

§ २३२. हस्सस्स उक्क० पदे० उदी० अट्ठक०–तिण्णिवेद–भय-दुगुंछ० सिया

---

है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है।

§ २२९. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और आठ कषायोंका भंग ओघके समान है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करने वाला जीव बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। पुरुषवेदका नियमसे उदीरक है, जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है।

§ २३०. प्रत्याख्यान क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला तिर्यञ्च क्रोध संज्वलनका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार प्रत्याख्यान मान, माया और लोभ तथा संज्वलन क्रोध, मान, माया और लोभ इन सात कषायोंको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २३१. स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला तिर्यञ्च आठ कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार पुरुषवेद और नपुंसकवेदको मुख्यकर सन्निष्कर्ष जानना चाहिए।

§ २३२. हास्यकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला तिर्यञ्च आठ कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश

**तं तु चउट्ठाणप० । रदिं णिय० तं तु चउट्ठा० । सम्म० इत्थिवेदभंगो । एवं रदीए । एवमरदि-सोगाणं ।**

**§ २३३. भय० उक्क० पदे० उदी० अट्ठक०-अट्ठणोक० सिया तं तु चउट्ठाण० । सम्म०-इत्थि० भयभंगो । एवं दुगुंछ० । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि पज्ज० इत्थिवेदो णत्थि । जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि ।**

**§ २३४. अट्ठक०-सत्तणोक० उक्क० पदे० उदीरेंतो सम्म० सिया तं तु चउट्ठा० ।**

**§ २३५. सम्म० उक्क० पदे० उदी० अट्ठक०-छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठाणप० । इत्थिवेद० णिय० तं तु चउट्ठाण० !**

**§ २३६. पंचिं०तिरि०अपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ० उक्क० पदे० उदीरेंतो**

---

उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चार स्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । रतिका नियम से उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । सम्यक्त्वका भंग स्त्रीवेदके समान है । इसी प्रकार रतिको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २३३. भयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरण करनेवाला तिर्यञ्च आठ कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । सम्यक्त्व और स्त्रीवेदका भंग भयके समान है । इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है ।

§ २३४. तथा आठ कषाय और सात नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला तिर्यञ्च योनिनीजीव सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है ।

§ २३५. सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त जीव आठ कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । स्त्रीवेदका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है ।

§ २३६. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित

**सोलसक०–छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठाणप० । णवुंस० णिय० तं तु चउट्ठाणपदि० । एवं णउंसय० ।**

**§ २३७. अणंताणु० कोध० उक्क० पदे० उदीरेंतो मिच्छ० तिण्णं कोध०–णवुंस० णिय० तं तु चउट्ठाणपदिदा । छण्णोक० सिया तं तु चदुट्ठाणपदि० । एवं पण्णारसक० ।**

**§ २३८. हस्सस्स उक्क० पदे० उदीरेंतो मिच्छ०–णवुंसय०–रदि० णिय० तं तु चउट्ठाण० । सोलसक०–भय–दुगुंछ० मिच्छत्तभंगो । एवं रदीए । एवमरदि-सोगाणं ।**

**§ २३९. भय० उक्क० पदे० उदीरेंतो मिच्छ०–णवुंस० हस्सभंगो । सोलसक०–पंचणोक० सिया तं तु चउट्ठा० । एवं दुगुंछ० ।**

**२४०. देवेसु मिच्छ० उक्क० पदे० उदीरेंतो मोलमक०–अट्ठणोक० सिया**

---

अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। नपुंसक वेदका नियमसे उदीरक है जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुः स्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार नपुंसकवेदको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २३७. अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त जीव मिथ्यात्व, तीन क्रोध और नपुंसकवेदका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान-पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार पन्द्रह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २३८. हास्यकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त जीव मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और रतिका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान-पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । सोलह कषाय, भय और जुगुप्साका भंग मिथ्यात्वके समान है । इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २३९. भयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले उक्त जीव के मिथ्यात्व और नपुंसक-वेदका भंग हास्यको मुख्यकर कहे गये इन प्रकृतियों के सन्निकर्ष के समान है । सोलह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टको अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २४०. देवोंमें मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला देव सोलह कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार सम्यग्मि-

असंखे०गुणही० । एवं सम्मामि० । णवरि अणंताणु०चउक्कं णत्थि । सम्म० तिरिक्खोघं ।

§ २४१. अणंताणु०कोध० उक्क० पदे० उदीरेंतो तिण्हं कोधाणं णिय० असंखे०-गुणहीणा । अट्ठणोक० सिया असंखे०गुणही० । एवं तिण्हं कसायाणं ।

§ २४२. अपच्चक्खाणकोध० उक्क० पदे० उदी० दोण्हं कोधाणं णिय० तं तु चउट्ठाणप० । अट्ठणोक० सिया तं तु चउट्ठा० । सम्म० सिया असंखे०गुणही० ॥ एवमेकारस० ।

§ २४३. इत्थिवेद० उक्क० पदे० उदी० सम्म० सिया असंखे०गुणही० । बारसक०–छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठाण०[1] । एवं पुरिसवे० ।

§ २४४. हस्स० उक्क० पदे० उदी० सम्म० इत्थिवेदभंगो । बारसक०–दो वेद–

थ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरक अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी उदीरणा नहीं करता । सम्यक्त्वको मुख्यकर सन्निकर्षका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है ।

§ २४१. अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला देव तीन क्रोधोंका नियमसे उदीरक है, जो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान आदि तीन कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २४२. अप्रत्याख्यान क्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला देव दो क्रोधोंका नियमसे उदीरक है । जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्ट की अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । आठ नोकषायोका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार अप्रत्याख्यान मान आदि ग्यारह कषायोंको मुख्य कर सन्नि कर्ष जानना चाहिए ।

§ २४३. स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला देव सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा असंख्यात गुणहीन अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार पुरुषवेदको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २४४. हास्यकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले देवके सम्यक्त्वका भंग स्त्रीवेदको मुख्यकर कहे गये सम्यक्त्वके सन्निकर्षके समान है। बारह कषाय और दो वेद, भय

१. आ०-ता०प्रत्योः छट्ठाण० इति पाठः ।

भय-दुगुंछा० सिया तं तु चउट्ठाण०[1]। रदिं णिय० तं तु चउट्ठा० । एवं रदीए। एवमरदि-सोगाणं।

§ २४५. भय० उक्क० पदे० उदी० सम्म० इत्थिवेदभंगो। बारसक०-सत्तणोक० सिया तं तु चउट्ठाणप०। एवं दुगुंछाए। एवं सोहम्मीसाण०। एवं सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि पुरिसवेदो धुवो कायव्वो।

§ २४६. भवण०-वाणवें०-जोदिसि० देवोघं। णवरि बारसक०-अट्ठणोक० उक्क० पदे० उदी० सम्म० सिया तं तु चउट्ठा०। सम्म० उक्क० पदे० उदीरेंतो बारसक०-अट्ठणोक० सिया तं तु चउट्ठाण०।

भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदादित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। रतिका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २४५. भयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाले देवके सम्यक्त्वका भंग स्त्रीवेदको मुख्यकर कहे गये सम्यक्त्वके सन्निकर्षके समान है। बारह कषाय और सात नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए। इसी प्रकार सौधर्म और ऐशान कल्पमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें पुरुषवेदको ध्रुव करना चाहिए।

§ २४६. भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमे सामान्य देवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि बारह कषाय और आठ नोकषायोंकी उदीरणा करनेवाला उक्त देव सम्यक्त्वका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त देव बारह कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् उत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है। यदि अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरक है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अनुत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करता है।

१. आ०-ता०प्रत्योः छट्ठाण० इति पाठः।

**§ २४७. अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०–बारसक०–सत्तणोक० आणदभंगो। एवं जाव०।**

**§ २४८. जहण्णए पयदं। दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ० जह० पदे० उदीरेंतो सोलसक०–णवणोक० सिया तं तु चउट्ठा०।**

**§ २४९. सम्म० जह० पदे० उदी० बारसक०–णवणोक० सिया असंखे०-गुणब्भहिया। एवं सम्मामि०।**

**§ २५०. अणंताणु० कोध० जह० पदे० उदी० मिच्छ० तिण्हं कोधाणं णिय० तं तु चउट्ठा०। णवणोक० सिया तं तु चउट्ठाणप०। एवं पण्णारसक०।**

**§ २५१. हस्सस्स जह० पदे० उदी० मिच्छ०–रदि० णिय० तं तु चउट्ठा०। सोलसक०–तिण्णिवे०–भय-दुगुछ० सिया तं तु चउट्ठा०। एवं रदीए। एवमरदिसोगाणं।**

---

§ २४७. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंको मुख्य कर सन्निकर्षका भंग आनत कल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ २४८. जघन्यका प्रकरण है। निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव सोलह कषाय और नौ नोकषायोका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है। यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुणी अधिक और असंख्यात गुणी अधिक इस प्रकार चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है।

§ २४९. सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव बारह कषाय और नौ नोक-षायोंका कदाचित् उदीरक है कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है। यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा असंख्यात गुणी अधिक अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २५०. अनन्तानुबन्धी क्रोधकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव मिथ्यात्व और तीन क्रोधोंका नियमसे उदीरक है। जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित अजघन्य प्रदेश उदीरक है। यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा कहता है। नौ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है। यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है। इसी प्रकार पन्द्रह कषायोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए।

§ २५१. हास्यकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव मिथ्यात्व और रतिका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है। यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है। सोलह कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है। यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित अजघन्य प्रदेश उदीरक है। यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुः-

**§ २५२. भय० जह० पदे० उदी० मिच्छ० णिय० तं तु चउट्ठा० । सोलसक०-अट्ठणोक० सिया तं तु चउट्ठा० । एवं दुगुंछ० ।**

**§ २५३. इत्थिवे० जह० पदे० उदी० मिच्छ० भयभंगो । सोलसक०-छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठा० । एवं दोण्हं वेदाणं ।**

**§ २५४. आदेसेण णेरइय० ओघं । णवरि णवुंसयवेदो धुवो कायव्वो । एवं सव्वणिरय० । तिरिक्खेसु ओघं । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि पज्जत्तएसु इत्थिवेदो णत्थि । जोणिणीसु इत्थिवेदो धुवो कायव्वो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० ओघं । णवरि सम्म०-सम्मामि०-इत्थिवे०-पुरिसवे० णत्थि । णवुंस० धुवो कायव्वो । मणुसतिये पंचिं०तिरिक्खतियभंगो । देवेसु ओघं । णवरि णवुंस० णत्थि । एवं भवणादि जाव सोहम्मा त्ति । सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति एवं चेव । णवरि पुरिसवेदो धुवो कायव्वो ।**

---

स्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार रतिको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २५२. भयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला जीव मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । सोलह कषाय और आठ नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २५३. स्त्रीवेदकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवालेके मिथ्यात्वका सन्निकर्ष भयको मुख्य कर कहे गये मिथ्यात्वके सन्निकर्षके समान है । सोलह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार दो वेदोंको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २५४. आदेशसे नारकियोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदको ध्रुव करना चाहिए । इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए । तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है । इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा तिर्यञ्च योनिनियोंमें स्त्रीवेद ध्रुव करना चाहिए । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनके सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदय उदीरणा नहीं होती । नपुंसक वेद ध्रुव करना चाहिए । मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है । देवोंमें ओघके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनके नपुंसकवेदकी उदय उदीरणा नहीं

§ २५५. अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० जह० पदे० उदी० बारसक०–छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठा० । पुरिसवेद० णियमा तं तु चउट्ठाणप० । एवं पुरिसवेद० ।

§ २५६. अपच्चक्खाणकोध० जह० पदे० उदी० सम्म० दोण्हं कोधाणं पुरिसवेद० णिय० तं तु चउट्ठाणप० । छण्णोक० सिया तं तु चउट्ठा० । एवमेक्कारसक० ।

§ २५७. हस्सस्स जह० पदे० उदीरें० सम्म०–पुरिसवे०–रदि० णिय० तं तु चउट्ठा० । बारसक०–भय-दुगुंछ० सिया तं तु चउट्ठा० । एवं रदीए । एवमरदि-सोग० ।

२५८. भयस्स जह० पदे० उदी० सम्म०–पुरिसवे० णिय० तं तु चउट्ठा० ।

---

होती । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए । सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयकतकके देवोंमें इसी प्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें पुरुषवेदको ध्रुव करना चाहिए ।

§ २५५. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त देव बारह कषाय और छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । पुरुषवेदका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार पुरुषवेदको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २५६. अप्रत्याख्यान क्रोधकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त देव सम्यक्त्व, दो क्रोध और पुरुषवेदका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । छह नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार ग्यारह कषायोंको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २५७. हास्यकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त देव सम्यक्त्व, पुरुषवेद और रतिका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । बारह कषाय, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थानपतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार रतिको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए । तथा इसी प्रकार अरति और शोकको मुख्य कर सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

§ २५८. भयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा करनेवाला उक्त देव सम्यक्त्व और पुरुष वेदका नियमसे उदीरक है, जो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य

बारसक०-पंचणोक० सिया तं तु चउट्ठा० । एवं दुगुंछा० । एवं जाव० ।

२५९. भावो सव्वत्थ ओदइओ भावो ।

* अप्पाबहुअं ।

§ २६०. सुगममेदमहियारसंभालणवक्कं ।

* सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा ।

§ २६१. कुदो ? संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिणा असंखे०लोगपडिभागेण उदीरिददव्ववग्गणादो ?

* अणंताणुबंधीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला संखेज्जगुणा।

§ २६२. कुदो ? मिच्छत्तुदीरणादो अणंताणुबंधीणमण्णदरोदीरणाए उदयपडिभागेण थोवूणचउग्गुणत्तवलंभादो । तं जहा—अणंताणुबंधिकोहादीणमण्णदरस्स उदये संते सेसकसाया तिण्णि वि त्थिउक्कसंकमेणुदयं पविसंति त्ति मिच्छत्तुदयादो अणंताणुबंधिउदयो थोवूणचउग्गुणो होइ, पयडिविसेसवसेण तत्थ थोवूणभावदंसणादो । एवमुदयो होदि त्ति कट्टु उदीरणा वि तप्पडिभागेणेव होदि त्ति घेत्तव्वा । एत्थ चोदओ भणइ—होउ णाम उदयो चउग्गुणो, थिउक्कसंकमबलेण तस्स तहाभावोववत्तीदो । ण वुण उदीरणाए तहाभावसंभवो, एगुदयपयडिं मोत्तूण सेसाणमुदीरणाए अच्चंताभावदंसणादो त्ति ? सच्चमेदं, एक्कादो चेव वेदिज्जमाणपयडिउदीरणा होदि त्ति इच्छिज्जमाण-

---

प्रदेश उदीरणा करता है । बारह कषाय और पाँच नोकषायोंका कदाचित् उदीरक है और कदाचित् अनुदीरक है । यदि उदीरक है तो कदाचित् जघन्य प्रदेश उदीरक है और कदाचित् अजघन्य प्रदेश उदीरक है । यदि अजघन्य प्रदेश उदीरक है तो जघन्यकी अपेक्षा चतुःस्थान पतित अजघन्य प्रदेश उदीरणा करता है । इसी प्रकार जुगुप्साको मुख्यकर सन्निकर्ष जानना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ २५९. भाव की अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है ।

* अल्पबहुत्वका अधिकार है ।

§ २६०. अधिकारकी सम्हाल करनेवाला यह सूत्रवचन सुगम है ।

* मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सबसे स्तोक है ।

§ २६१. क्योंकि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके द्वारा असंख्यात लोक प्रतिभागरूपसे उदीरित द्रव्यका ग्रहण होता है ।

* उससे अनन्तानुबन्धियोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा परस्परमें तुल्य होकर संख्यातगुणी है ।

§ २६२. क्योंकि मिथ्यात्वकी उदीरणासे अनन्तानुबन्धियोंमेंसे अन्यतर कषायकी उदीरणा उदयप्रतिभागके अनुसार कुछ कम चौगुनी उपलब्ध होती है । यथा—अनन्तानुबन्धी क्रोधादिकमेंसे अन्यतरका उदय होने पर शेष तीनों ही कषाय स्तिवुक संक्रमणके द्वारा उदयमें प्रवेश

त्तादो। किंतु सा एक्का पयडी उदीरिज्जमाणा उदयपडिभागेणुदीरिज्जदि त्ति भणामो। कुदो ? उदयाणुसारेणेव सव्वत्थोदीरणाए पवुत्तिअब्भुवगमादो।

*** सम्मामिच्छत्तमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा।**

§ २६३. कुदो ? परिणामपाहम्मादो। तं जहा—अणंताणुबंधीणं मिच्छाइट्ठि-विसोहीए उक्कस्सिया पदेसुदीरणा जादा। सम्मामिच्छत्तस्स पुण तव्विसोहीदो अणंतगुण-सम्मामिच्छाइट्ठिविसोहीए उक्कस्सिया पदेसुदीरणा गहिदा। एदेण कारणेण पुव्विल्लादो एदिस्से असंखेज्जगुणत्तं जादं।

*** अपच्चक्खाणचउक्कस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला असंखेज्जगुणा।**

§ २६४. एत्थ वि परिणाममाहप्पमेवासंखेज्जगुणत्ते कारणमवगंतव्वं, पुव्विल्ल-सम्मामिच्छाइट्ठिविसोहीदो अणंतगुणसंजमाहिमुहचरिमसमयासंजदसम्माइट्ठिसव्वुक्कस्स-विसोहीए अपच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्ससामित्तदंसणादो।

---

कर जाती है, इसलिए मिथ्यात्वके उदयसे अनन्तानुबन्धीका उदय कुछ कम चौगुना होता है, क्योंकि प्रकृतिविशेष वश वहाँ कुछ ऊनपना देखा जाता है। इस प्रकारका उदय है ऐसा समझ कर उदीरणा भी उस प्रतिभागके अनुसार ही होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

**शंका**—यहाँ पर शंकाकार कहता है कि उदय चौगुना होओ, क्योंकि स्तिवुक संक्रमके बलसे वह उस प्रकार बन जाता है। परन्तु उदीरणाका उस प्रकारसे बनना सम्भव नहीं है, क्योंकि एक उदय प्रकृतिके सिवाय शेष प्रकृतियोंकी उदीरणाका अत्यन्त अभाव देखा जाता है ?

**समाधान**—यह कहना सत्य है कि एक ही वेदी जाननेवाली प्रकृतिकी उदीरणा होती है यह स्वीकार करते हैं। किन्तु वह एक प्रकृति उदीर्यमाण होती हुई उदयप्रतिभागके अनुसार उदीरित होती है ऐसा हम कहते हैं, क्योंकि उदयके अनुसार ही सर्वत्र उदीरणाकी प्रवृत्ति स्वीकार की गई है।

*** उससे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है।**

§ २६३. क्योंकि इसका कारण परिणाममाहात्म्य है। यथा—मिथ्यादृष्टिकी विशुद्धिके कारण अनन्तानुबन्धियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा हुई है। परन्तु उस विशुद्धिसे सम्यग्मिथ्या-दृष्टिकी अनन्तगुणी विशुद्धिवश सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा ग्रहण की गई है। इस कारणसे पूर्वकी उदीरणासे यह असंख्यातगुणी हो जाती है।

*** उससे अप्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा परस्पर तुल्य होकर असंख्यातगुणी है।**

§ २६४. यहाँ भी परिणाममाहात्म्य ही असंख्यातगुणे होनेमें कारण जानना चाहिए, क्योंकि पूर्वकी सम्यग्मिथ्यादृष्टिकी विशुद्धिसे संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टिकी अनन्तगुणी सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिवश अप्रत्याख्यान कषायोंका उत्कृष्ट स्वामित्व देखा जाता है।

*** पच्चक्खाणचउक्कस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला असंखेज्जगुणा ।**

§ २६५. किं कारणं ? असंजदसम्माइट्ठिविसोहीदो अणंतगुणसंजमाहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदुक्कस्सविसोहीए पच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सपदेसुदीरणासामित्तपडिलंभादो ।

*** सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ २६६. कुदो ? असंखेज्जसमयपबद्धपमाणत्तादो ।

*** भय-दुगुंछाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा तुल्ला अणंतगुणा ।**

§ २६७. कुदो ? देसघादिपडिभागत्तादो ।

*** हस्स-सोगाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया ।**

§ २६८. कुदो ? पयडिविसेसमस्सिऊण विसेसाहियत्तदंसणादो । तं जहा—भयस्स ताव उक्कस्सपदेसुदीरणाए इच्छिज्जमाणाए दुगुंछाए अवेदगो कायव्वो, दुगुंछाए वि उक्कस्सपदेसुदीरणाए कीरमाणाए भयस्स अणुदीरगो कायव्वो, दोण्हं पि दव्वमेगट्ठं कादूण भयदुगुंछाणमुक्कस्सपदेसुदीरणागहणट्ठं । संपहि हस्स-रदीणमुक्कस्सपदेसुदीरणाए णिरुद्धाए भय-दुगुंछाणं दोण्हं पि अणुदयं कादूण गेण्हियव्वं । एवमरदि-सोगाण पि उक्कस्सभावे

---

*** उससे प्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी प्रकृष्ट प्रदेश उदीरणा परस्पर तुल्य होकर असंख्यातगुणी है ।**

§ २६५. क्योंकि असंयतसम्यग्दृष्टिकी विशुद्धिसे संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतकी अनन्तगुणी उत्कृष्ट विशुद्धिवश प्रत्याख्यान कषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाका स्वामित्व पाया जाता है ।

*** उससे सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ २६६. क्योंकि वह असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण है ।

***उससे भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा परस्पर तुल्य होकर अनन्तगुणी है ।**

§ २६७. क्योंकि इसका कारण देशघातिप्रतिभागपना है ।

*** उससे हास्य और शोककी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है ।**

§ २६८. क्योंकि प्रकृतिविशेषका आश्रय कर विशेषाधिकपना देखा जाता है । यथा—दोनोंके ही द्रव्यको एकत्रित कर भय और जुगुप्साके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके ग्रहण करनेके लिए सर्व प्रथम भयकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा इच्छित होनेपर जुगुप्साका अवेदक करना चाहिए, जुगुप्साकी भी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा करने पर भयका अनुदीरक करना चाहिए । अब हास्य और रतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाके रहने पर भय और जुगुप्सा दोनोंका ही अनुदय करके ग्रहण करना चाहिए । इसी प्रकार अरति और शोकके भी उत्कृष्ट करनेपर भय और जुगुप्साका अनुदय कहना चाहिए । और ऐसा होनेपर हास्य और रतिका उदय होनेपर

कीरमाणे भय-दुगुंछाणमणुदयो वत्तव्वो। एवं च संते हस्स-रदीणमुदए संजादे सोग-दव्वेण सह दुगुंछादव्वं हस्सस्स थिवुकसंकमेण गच्छदि। अरदिदव्वेण सह भयदव्वं रदीए आगच्छदि। एवमरदिसोगाणं पि उदये संजादे हस्सदव्वं दुगुंछादव्वं च सोगस्सागच्छदि। रदिदव्वं भयदव्वं च अरदीए आगच्छइ। एवमागच्छदि त्ति कादूण पुव्विल्लदुगुंछदव्वं संपहियदुगुंछदव्वं च दो वि सरिसाणि भवंति। पुव्विल्लभयदव्वादो पुण संपहियहस्ससोगदव्वमावलि० असंखे०भागपडिभागियपयडिविसेसदव्वेणब्भहियं होइ, तेण भय-दुगुंछाणमुदीरणादो हस्स-सोगाणमुदीरणा अण्णदरा सत्थाणेण समाणा होदूण विसेसाहिया होदि त्ति भणिदा।

* रदि-अरदीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया।

§ २६९. केत्तियमेत्तेण ? पयडिविसेसदव्वमेत्तेण। तं कधं ? हस्स-सोगदव्वादो रदि-अरदिदव्वं पयडिविसेसेणावलि० असंखे०भागपडिभागेणब्भहियं होदि। पुणो दुगुंछादव्वादो भयदव्वमावलि० असंखेज्जभागपडिभागिएण पयडिविसेसेणब्भहियं होइ। तदो दोहिं आवलिएहिं असंखेज्जभागपडिभागियदव्वेहिं विसेसाहियत्तमेत्थ दट्ठव्वं।

शोकके द्रव्यके साथ जुगुप्साका द्रव्य हास्यको स्तिवुकसंक्रमण द्वारा प्राप्त होता है और अरतिके द्रव्यके साथ भयका द्रव्य रतिको प्राप्त होता है। तथा इसी प्रकार अरति और शोकके भी उदय होनेपर हास्यका द्रव्य और जुगुप्साका द्रव्य शोकको प्राप्त होता है और रतिका द्रव्य तथा भयका द्रव्य अरतिको प्राप्त होता है। इस प्रकार प्राप्त होता है ऐसा जानकर पहलेका जुगुप्साका द्रव्य और वर्तमान जुगुप्साका द्रव्य दोनों भी सदृश होते हैं। किन्तु पहलेके भयके द्रव्यसे वर्तमान हास्य और शोकका द्रव्य आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रतिभागसे प्राप्त प्रकृति विशेषके द्रव्यसे अधिक होता है, इसलिए भय और जुगुप्साकी उदीरणासे हास्य और शोककी अन्यतर उदीरणा स्वस्थानकी अपेक्षा समान होकर विशेष अधिक होती है यह कहा है।

* उससे रति और अरतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है।

§ २६९. शंका—कितनी अधिक है ?

समाधान—प्रकृति विशेष द्रव्यमात्र अधिक है।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—हास्य और शोकके द्रव्यसे रति और अरतिका द्रव्य प्रकृति विशेष होनेके कारण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रतिभाग द्वारा जितना प्राप्त हो उतना अधिक है। तथा जुगुप्साके द्रव्यसे भयका द्रव्य प्रकृति विशेष होनेके कारण आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण प्रतिभाग द्वारा जितना प्राप्त हो उतना अधिक है। इसलिए दो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रतिभागों द्वारा जितना द्रव्य प्राप्त हो उतना विशेष अधिक है ऐसा यहाँ जानना चाहिए।

*** इत्थि-णवुंसयवेदाणं उक्कस्सिया[1] पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ २७०. कुदो ? असंखेज्जसमयपबद्धपमाणत्तादो । णेदमसिद्धं, अणियट्टिअद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण पुणो एगभागो अत्थि त्ति दोण्हं पि अप्पप्पणो उदएण चढिदस्स पढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए समाणाणियट्टिकरणपरिणामेण सरिसदव्व-मोकड्डियूण तत्थुदीरिज्जमाणासंखेज्जसमयपबद्धे घेत्तूण सामित्तविहाणण्णहाणुववत्तीए सिद्धत्तादो ।

*** पुरिसवेदे उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ २७१. किं कारण ? इत्थि-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सपदेसुदीरणासामित्तविसयादो अतोमुहुत्तमुवरिं गंतूण समयाहियावलियमेत्तपुरिसवेदपढमट्ठिदीए सेसाए तत्थुदीरिज्ज-माणासंखेज्जसमयपबद्धाणमिह ग्गहणादो ।

*** कोहसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ २७२. किं कारणं ? पुरिसवेदसामित्तुद्देसादो अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण कोहसंजलण पढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए पडिलद्धुक्कस्सभावत्तादो ।

*** माणसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ २७३. सुगम ।

---

*** उससे स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है**

§ २७०. क्योंकि वह असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण है । यह असिद्ध नहीं है, क्योंकि अनिवृत्तिकरणके कालमें संख्यात भाग जानेपर जब एक भाग शेष रहता है तब अपने-अपने उदयसे चढ़े हुए जीवके दोनोंकी भी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल शेष रहने पर अनिवृत्तिकरणके सदृश परिणाम द्वारा सदृश द्रव्यका अपकर्षण कर वहाँ उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धोंको ग्रहण कर स्वामित्वका विधान अन्यथा बन नहीं सकनेसे वह सिद्ध है ।

*** उससे पुरुषवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ २७१. क्योंकि स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणाविषयक स्वामित्वके विषयसे अन्तर्मुहूर्त ऊपर जा कर पुरुषवेदकी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल शेष रहने पर वहाँ उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धोंका यहाँ ग्रहण किया है ।

*** उससे क्रोधसंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ २७२. क्योंकि पुरुषवेदके स्वामित्व विषयसे अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर क्रोधसंज्वलनकी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने पर उसका उत्कृष्टपना उपलब्ध होता है ।

*** उससे मानसंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ २७३. यह सूत्र सुगम है ।

---

१ आ०प्रतौ वेदउक्कस्सिया इति पाठः ।

* मायासंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।

§ २७४. सुगमं ।

* लोहसंजणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।

ओघो समत्तो ।

§ २७५. एवमोघं समाणिय संपहि आदेसपरूवणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* णिरयगदीए सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा ।

§ २७६. कुदो ? सम्मत्ताहिमुहमिच्छाइट्ठिणा उदीरिज्जमाणासंखेज्जलोगपडिभागियदव्वस्स गहणादो ।

* अणंताणुबंधीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा संखेज्जगुणा ।

§ २७७. कुदो ? एगासंखेज्जलोगपडिभागियमिच्छत्तदव्वादो चदुण्हमसंखेज्जलोगपडिभागियदव्वाणं थोवूणचउग्गुणत्तदंसणादो । एत्थ चोदगो भणइ—उवसमसम्मत्ताहिमुहसमयाहियावलियमिच्छाइट्ठिम्मि मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा जादा । अणंताणुबंधीणं पुण मिच्छत्तपढमट्ठिदीए चरिमसमयम्मि उक्कस्ससामित्तं जाद । तहा च संते मिच्छत्तुक्कस्सपदेसुदीरणादो अणंताणुबंधीणमुक्कस्सपदेसुदीरणाए असंखेज्जगुणाए होदव्वमिदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—सच्चमेदं, तहाविह-

* उससे मायासंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।

§ २७४. यह सूत्र सुगम है ।

* उससे लोभसंज्वलनकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।

इस प्रकार ओघ अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

§ २७५. इस प्रकार ओघको समाप्त कर अब आदेशका कथन करनेके लिए आगेके सूत्र-प्रबन्धको कहते हैं—

* नरकगतिमें मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सबसे स्तोक है ।

§ २७६. क्योंकि सम्यक्त्वके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके द्वारा उदीर्यमाण, असंख्यात लोकका भाग देनेपर, एक भागप्रमाण द्रव्यको यहाँ ग्रहण किया है ।

* उससे अनन्तानुबन्धियोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा संख्यातगुणी है ।

§ २७७. क्योंकि असंख्यात लोकका भाग देनेपर एक भागप्रमाण मिथ्यात्वके द्रव्यसे असंख्यात लोकका भाग देने पर चार भाग प्रमाण द्रव्य कुछ कम चौगुना देखा जाता है ।

**शंका**—यहाँ पर शंकाकार कहता है कि उपशमसम्यक्त्वके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहनेपर मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा हुई है, परन्तु अनन्तानुबन्धियोंका मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व हुआ है । और ऐसा होनेपर मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणासे अनन्तानुबन्धियोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी होनी चाहिए ?

सामित्तावलंबणे असंखेज्जगुणत्तब्भुवगमादो। किं तु उवसमसम्मत्ताहिमुहं मोत्तूण वेदयसम्मत्ताहिमुहमिच्छाइट्ठिचरिमसमए मिच्छत्ताणंताणुबंधीणमक्कमेण सामित्तं होदि त्ति एदेणाहिप्पाएण संखेज्जगुणत्तमेदं सुत्तयारेण पदुप्पाइदं, तदो ण दोसो त्ति। उच्चारणाहिप्पाएण पुण णियमा असंखेज्जगुणेण होदव्वं, तत्थ सामित्तभेद-दंसणादो तदणुसारेणेव तत्थ सण्णियासविहाणादो च। तदो उच्चारणासामित्तं मोत्तूण सुत्तसामित्तमण्णारिसं घेत्तूण पयदप्पाबहुअसमत्थणमेदं कायव्वमिदि ण किंचि विरुद्धं।

*** सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा।**

§ २७८. कुदो? सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिसव्वुक्कस्सविसोहीदो अणंत-गुणसम्मत्ताहिमुहसम्मामिच्छाइट्ठिचरिमविसोहीए पडिलद्धुक्कस्सभावत्तादो।

*** अपच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा असंखेज्जगुणा।**

§ २७९. कुदो? सम्मामिच्छाइट्ठिविसोहीदो अणंतगुणसत्थाणसम्माइट्ठिसव्वुक्कस्स-विसोहीए अपच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्ससामित्तावलंबणादो।

*** पच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा विसेसाहिया।**

समाधान—यहाँ उक्त शंकाका समाधान करते हैं—यह सत्य है, क्योंकि उस प्रकारके स्वामित्वके अवलम्बन करनेपर असंख्यातगुणत्व स्वीकार किया है। किन्तु उपशमसम्यक्त्वके अभिमुख हुए जीवको छोड़कर वेदकसम्यक्त्वके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके अन्तिम समयमें मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धियोंका युगपत् स्वामित्व होता है इस प्रकार इस अभिप्रायसे सूत्रकारने यह स्वामित्व संख्यातगुणा कहा है, इसलिए कोई दोष नहीं है। उच्चारणाके अभिप्रायसे तो नियमसे असंख्यातगुणा होना चाहिए, क्योंकि वहाँ स्वामित्वभेद देखा जाता है और उसके अनुसार ही वहाँ सन्निकर्पका विधान किया है। इसलिए उच्चारणाके अनुसार स्वामित्वको छोड़कर अन्य आर्षमें प्रतिपादित सूत्रके अनुसार स्वामित्वको ग्रहण कर इस प्रकृत अल्पबहुत्वका समर्थन करना चाहिए, इसलिए कुछ भी विरुद्ध नहीं है।

*** उससे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है।**

§ २७८. क्योंकि सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिकी सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिसे सम्यक्त्वके अभिमुख हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिकी अनन्तगुणी अन्तिम विशुद्धि-द्वारा यह उत्कृष्टपना प्राप्त होता है।

*** उससे अप्रत्याख्यानकषायोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है।**

§ २७९. क्योंकि सम्यग्मिथ्यादृष्टिकी विशुद्धिसे स्वस्थान सम्यग्दृष्टिकी अनन्तगुणी सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिद्वारा अप्रत्याख्यान कषायोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका अवलम्बन लिया है।

*** उससे प्रत्याख्यानकषायोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा** है।

§ २८०. सामित्तभेदाभावे वि पयडिविसेसमस्सियूण विसेसाहियत्तसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो।

*** सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा।**

§ २८१. एत्थ कारणमोघसिद्धं।

*** णवुंसयवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अणंतगुणा।**

§ २८२. कुदो ? देसघादिमाहप्पादो।

*** भय-दुगुंछाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया।**

§ २८३. त जहा—णिरयगदीए तिण्ह वेदाणमसंखेज्जलोगपडिभागियं दव्वं णवुंसयवेदसरूवेणुदीरिज्जमाणं घेत्तूण एगधुवपयडिपमाणमुदीरणादव्वं होदि। भय-दुगुंछाणं पुण पादेक्कं धुवपयडिपमाणमुदीरणदव्वमुवलंभइ, तेसिं धुवबंधित्तादो। किंतु वेदभागं पेक्खियूण पयडिविसेसेण विसेसहीण होदि। होतं पि भय-दुगुंछाणं दोण्हं पि दव्वं तदण्णदरसरूवेणुदीरिज्जमाणमुवलब्भदे, थिवुक्कसंकमवसेण तेसिमण्णोण्णाणुप्पवेसं कादूणुक्कस्ससामित्तावलंबणादो। एवं लब्भदि त्ति कादूण जदि वेदभागो तत्थेगदव्वं पेक्खियूण पयडिविसेसेणब्भहिओ तो दोण्हमव्वोगाढदव्वसमुदायादो विसेसहीणो चेव होइ, किंचूणद्धमेत्तदव्वेण परिहीणत्तदंसणादो। तदो किंचूणदुगुणपमाणत्तादो विसेसाहियमेदं दव्वमिदि सिद्धं।

§ २८०. क्योंकि स्वामित्वका भेद नहीं होने पर भी प्रकृतिविशेषका आश्रय कर विशेषाधिकपनेकी सिद्धि निर्बाध पाई जाती है।

*** उससे सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है।**

§ २८१. यहाँ पर कारण ओघसिद्ध है।

*** उससे नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा अनन्तगुणी है।**

§ २८२. क्योंकि देशघातिके माहात्म्यवश प्रकृत उदीरणा अनन्तगुणी है।

*** उससे भय जुगुप्साकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है।**

§ २८३. **यथा**—नरकगतिमें असंख्यात लोकका भाग देने पर तीन वेदोंका जो द्रव्य प्राप्त हो उसे नपुंसकवेदरूपसे उदीर्यमाण ग्रहण कर एक ध्रुव प्रकृतिप्रमाण उदीरणा द्रव्य है। परन्तु भय और जुगुप्सामेंसे प्रत्येकका ध्रुव प्रकृतिप्रमाण उदीरणा द्रव्य उपलब्ध होता है; क्योंकि ये दोनों प्रकृतियाँ ध्रुवबन्धी हैं। किन्तु वेदके भागको देखते हुए प्रकृतिविशेषके कारण विशेष हीन है। ऐसा होते हुए भी भय और जुगुप्सा इन दोनोंका भी द्रव्य उनमेंसे किसी एकरूपसे उदीर्यमाण उपलब्ध होता है, क्योंकि स्तिवुकसंक्रमके कारण उनका एक-दूसरेमें प्रवेश कराकर उत्कृष्ट स्वामित्वका अवलम्बन लिया है। इस प्रकार प्राप्त होता है ऐसा जान कर यद्यपि वेद भाग वहाँ एक द्रव्यको देखते हुए प्रकृतिविशेषके कारण अभ्यधिक है तो भी दोनोंके प्रगाढ द्रव्यसमुदायसे विशेष हीन ही है, क्योंकि कुछ कम अर्धमात्र द्रव्यरूपसे हीनपना देखा जाता है। इसलिए कुछ कम दूने प्रमाणरूप होनेसे यह द्रव्य विशेषाधिक है यह सिद्ध हुआ।

* हस्स-सोगाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया ।

§ २८४. सुगममेदं, ओघम्मि परूविदकारणत्तादो ।

* रदि-अरदीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया ।

§ २८५. एदं पि सुगम, पयडिविसेसवसेण विसेसाहियत्तसिद्धीए ओघम्मि समत्थियत्तादो ।

* संजलणाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा संखेज्जगुणा ।

§ २८६. कुदो ? सादिरेयदोरूवमेत्तगुणगारदंसणादो । तं जहा—रदि-अरदिदव्वमोघम्मि परूविदविहाणेण णोकसायभागं पंच खंडाणि कादूण तत्थ बेखंडपमाणं होदि, भयभागस्स वि तत्थ पवेसियत्तादो । संजलणदव्वं पुण णोकसायभागपमाणेण कीरमाणं पंचण्हं भागाणमुप्पत्तीए कारणं होदि, संपुण्णकसायभागपमाणत्तादो । तदो पुव्विल्लबेखंडेहिंतो पचण्ह खंडाणमेदेसिं पयडिविसेसगब्भाणं सादिरेयगुणत्तमिदि णिप्पडिवक्खमिद्धमेद । एवं णिरयोघो समत्ता ।

§ २८७. एव पढमाए । बिदियादि जाव सत्तमि त्ति एवं चेव । णवरि सम्मामिच्छत्तादो उवरि सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा । अपच्चक्खाण उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असखेज्जगुणा । पच्चक्खाण० उक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया ।

* उससे हास्य और शोककी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है ।

§ २८४. यह सूत्र सुगम है, क्योंकि ओघ प्ररूपणाके समय इसके कारणका कथन कर आये हैं ।

* उससे रति और अरतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है ।

§ २८५. यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि प्रकृति विशेषके कारण विशेषाधिकपनेकी सिद्धिका समर्थन ओघप्ररूपणाके समय कर आये हैं ।

* उससे संज्वलनोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा सख्यातगुणी है ।

§ २८६. क्योंकि साधिक दो संख्याप्रमाण गुणकार देखा जाता है । यथा—ओघमें कही गई विधिसे नोकषायके हिस्सेके पाँच भाग खण्ड करके वहाँ दो खण्डपमाण रति-अरतिका द्रव्य है, क्योंकि भयभागका भी उसमें प्रवेश करा दिया है । परन्तु संज्वलन द्रव्य नोकषायभाग-प्रमाणसे करने पर पाँच भागोंकी उत्पत्तिका कारण है, क्योंकि वह सम्पूर्ण कषाय भागप्रमाण है । इसलिए पहलेके दो खण्डोसे प्रकृतिविशेषगर्भ इन पाँच खण्डोंका यह साधिक दुगुणपना बिना बाधाके सिद्ध है । इस प्रकार नरकगतिसम्बन्धी ओघप्ररूपणा समाप्त हुई ।

§ २८७. इसी प्रकार प्रथम पृथिवीमें जानना चाहिए । दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक इसी प्रकार प्ररूपणा है । इतनी विशेषता है कि सम्यग्मिथ्यात्वसे ऊपर सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है । उससे अप्रत्याख्यानचतुष्कमें से अन्यतर प्रकृतिकी-

**णवुंस० उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अणंतगुणा । सेसं तं चेव । सेसगदीसु वि विसेससंभवं जाणियूण णेदव्वं । एवं जाव० ।**

*** एत्तो जहण्णिया ।**

§ २८८. एत्तो उवरि जहण्णिया पदेसुदीरणा अप्पाबहुअविसेसिदा कायव्वा त्ति पयदसंभालणवक्कमेदं । तस्स दुविहो णिद्देसो ओघादेसभेदेण । तत्थोघपरूवणट्ठ माह—

*** सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा ।**

§ २८९. कुदो ? सव्वुक्कस्ससंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिणा उदीरिज्जमाणासंखेज्जलोगपडि- भागियदव्वस्स गहणादो ।

*** अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला संखेज्जगुणा ।**

§ २९०. कुदो ? सामित्तविसयभेदाभावे वि एगासंखेज्जलोगपडिभागियदव्वादो चदुण्हमसंखेज्जलोगपडिभागियदव्वाण समुदायस्स थोवूणचउग्गुणत्तुवलंभादो ।

*** पच्चक्खाणकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला विसेसाहिया ।**

---

की उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है। उससे प्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है। उससे नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा अनन्तगुणी है। शेष अल्पबहुत्व वही है। शेष गतियोंमें भी जहाँ जो विशेष सम्भव हो उसे जान कर कथन करना चाहिए। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

*** इससे आगे जघन्य अल्पबहुत्वका अधिकार है ।**

§ २८८. इससे आगे अल्पबहुत्व विशेषण युक्त जघन्य प्रदेश उदीरणा करनी चाहिए इस प्रकार प्रकृतकी सम्हाल करनेवाला यह वाक्य है। ओघ और आदेशके भेदसे उसका निर्देश दो प्रकारका है। उनमेंसे ओघका कथन करने के लिए आगेका सूत्र कहते है—

*** मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सबसे स्तोक है ।**

§ २८९. क्योंकि सबसे उत्कृष्ट संक्लेश परिणामवाले मिथ्यादृष्टिके द्वारा असंख्यात लोकका भाग देने पर एक भाग प्रमाण उदीर्यमाण द्रव्यका यहाँ ग्रहण किया है।

*** उससे अप्रत्याख्यान कषायोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी जघन्य प्रदेश उदीरणा संख्यातगुणी है ।**

§ २९०. क्योंकि स्वामित्वविषयक भेदका अभाव होनेपर भी असंख्यात लोकका भाग देने पर लब्ध एक भाग प्रमाण द्रव्यसे असंख्यात लोकका भाग देनेपर लब्ध द्रव्योंका समुदाय कुछ कम चौगुना उपलब्ध होता है।

*** उससे प्रत्याख्यान कषायोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी जघन्य प्रदेश उदीरणा परस्पर तुल्य होकर विशेष अधिक है ।**

§ २९१. सुगममेदं, सामित्तभेदाभावे वि पयडिविसेसमस्सियूण विसेसाहियत्तुवलंभादो ।

* अणंताणुबंधीणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला विसेसाहिया ।

§ २९२. एत्थ वि कारणमणंतरपरूविदमेव दट्ठव्वं ।

* सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।

§ २९३. कुदो ? मिच्छाइट्ठिसंकिलेसं पेक्खियूणाणंतगुणहीणसम्मामिच्छाइट्ठिसंकिलेसपरिणामेणुदीरिज्जमाणासंखेज्जलोगपडिभागियदव्वस्स गहणादो ।

* सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।

§ २९४. कुदो ? सम्मामिच्छाइट्ठिसंकिलेसादो अणंतगुणहीणसम्माइट्ठिसंकिलेसपरिणामेणुदीरिज्जमाणदव्वग्गहणादो ।

दुगुंछाए जहण्णिया पदेसुदीरणा अणंतगुणा ।

§ २९५. कुदो ? देसघादिपडिभागियत्तादो । तदो जइ वि मिच्छाइट्ठिसंकिलेसेण जहण्णा जादा तो वि पुव्विल्लादो एसा अणंतगुणा त्ति सिद्धं ।

भयस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया ।

§ २९१. यह सूत्र सुगम है, क्योंकि स्वामित्वभेदका अभाव होनेपर भी प्रकृतिविशेषका आश्रयकर विशेष अधिकपना उपलब्ध होता है ।

* उससे अनन्तानुबन्धियोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी जघन्य प्रदेश उदीरणा परस्पर तुल्य होकर असंख्यातगुणी है ।

§ २९२. यहाँ पर भी अनन्तर पूर्वमें ही कहा गया कारण जानना चाहिए ।

* उससे सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।

२९३. क्योंकि मिथ्यादृष्टिके संक्लेशको देखते हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अनन्तगुणहीन संक्लेशरूप परिणामसे उदीर्यमाण द्रव्यका यहाँ पर ग्रहण किया है जो असंख्यात लोकका भाग देने पर एक भागप्रमाण है ।

* उससे सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।

§ २९४. क्योंकि सम्यग्मिथ्यादृष्टिके संक्लेशसे सम्यग्दृष्टिके अनन्तगुणहीन संक्लेशपरिणामसे उदीर्यमाण द्रव्यका ग्रहण किया है ।

* उससे जुगुप्साकी जघन्य प्रदेश उदीरणा अनन्तगुणी है ।

§ २९५. क्योंकि इसका कारण देशघातिप्रतिभागीपना है । इसलिए यद्यपि मिथ्यादृष्टिके संक्लेशसे जघन्य हो गया है तो भी पूर्वकी प्रकृतिके उदीरणाद्रव्यसे यह अनन्तगुणा है यह सिद्ध हुआ ।

* उससे भयकी जघन्य प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है ।

§ २९६. कुदो ? सामित्तभेदाभावे वि पयडिविसेसेण पुव्विल्लादो संपहियदव्वस्स विसेसाहियत्तदंसणादो। एत्थ भयदुगंछाणमण्णदरस्स जहण्णभावे इच्छिज्जमाणे दोण्हं पि उदयं कादूण गेण्हियव्वं, अण्णहा जहण्णभावाणुववत्तीदो।

*** हस्स-सोगाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया।**

§ २९७. कुदो ? पयडिविसेसादो।

*** रदि-अरदीणं जहण्णिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया।**

§ २९८. कुदो ? पयडिविसेसादो। एदासिं पयडीणं जहण्णभावे इच्छिज्जमाणे भय-दुगुंछाणमुदयं कादूण गेण्हियव्वं, अण्णहा तत्थ थिवुक्कसंकमेण[1] सह पयददव्वस्स बहुत्तप्पसंगादो।

*** तिण्हं वेदाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा विसेसाहिया।**

§ २९९. कुदो ? पयडिविसेसादो।

*** संजलणाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा संखेज्जगुणा।**

§ ३००. को गुणगारो ? सादिरेयपंचरूवमेत्तो, णोकसायभागस्स पचमभागमेत्त-वेदुदीरणादव्वादो संपुण्णकसायभागमेत्तसंजलणोदीरणदव्वस्स पयडिविसेसगब्भस्स तावदिगुणत्तसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो। एवमोघजहण्णओ समत्तो।

§ २९६. क्योंकि स्वामित्व भेदका अभाव होनेपर भी प्रकृतिविशेषके कारण ही पहलेके द्रव्यसे साम्प्रतिक द्रव्य विशेष अधिक देखा जाता है। यहाँ पर भय और जुगुप्सामेंसे अन्यतर का जघन्यपना इच्छित होने पर दोनोका ही उदय करके ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा जघन्यपना नहीं बन सकता।

*** उससे हास्य और शोकको जघन्य प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है।**

§ २९७ क्योंकि प्रकृतिविशेष इसका कारण है।

**उससे रति और अरतिकी जघन्य प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है।**

§ २९८. क्योंकि इसका कारण प्रकृतिविशेष है। इन प्रकृतियोंका जघन्यपना इच्छित होनेपर भय और जुगुप्साका उदय करके ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा वहाँ स्तिवुकसंक्रमके द्वारा प्राप्त द्रव्यके साथ प्रकृत द्रव्यको बहुत्वका प्रसंग आ जायगा।

*** उससे तीनों वेदोंमेंसे अन्यतर वेदकी जघन्य प्रदेश उदीरणा विशेष अधिक है।**

§ २९९. क्यों कि इसका कारण प्रकृतिविशेष है।

*** उससे संज्वलन कषायोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी जघन्य प्रदेश उदीरणा संख्यातगुणी है।**

३००. गुणकार क्या है ? साधिक पाँच अंकप्रमाण गुणकार है। नोकषायके भागके पाँचवें भागमात्र वेदका उदीरणाद्रव्य है, उससे सम्पूर्ण कषायके भागमात्र प्रकृतिविशेषगर्भ संज्वलन कषायके द्रव्यके उतने गुणेकी सिद्धि निर्बाधरूपसे उपलब्ध होती है। इस प्रकार ओघसे जघन्य अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

१. आ०प्रतौ तत्थेवुक्कस्ससंकमेण ता०प्रतौ थिवुक्कस्ससंकमेण इति पाठः।

§ ३०१ एवं सव्वमग्गणासु णेदव्वं । णवरि अप्पप्पणो उदीरिज्जमाणपयडिविसेसो जाणियव्वो । अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वत्थोवा सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा । अपच्चक्खाणकसायपदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला संखेज्जगुणा । सेसं तं चेव ।

एवमप्पाबहुए समत्ते उत्तरपयडिपदेसुदीरणा समत्ता ।

चउवीसमणियोगद्दाराणि समत्ताणि ।

* भुजगार-उदीरणा उवरिमाए गाहाए परूविहिदि । पदणिक्खेवो वड्ढी वि तत्थेव ।

§ ३०२. एदस्स सुत्तस्सत्थो वुच्चदे— तं जहा । सव्वा परूवणा गाहासुत्तसंबद्धा चेव कायव्वा, तदो पदेसुदीरणाविसयभुजगारादिपरूवणा वि गाहासुत्तणिबद्धा चेय विहासियव्वा । ण च तप्पडिबद्धं गाहासुत्तं णत्थि त्ति आसंकणिज्ज, 'बहुदरगं बहुदरगं' इच्चेदीए उवरिमगाहाए परिप्फुडमेव तत्थ पडिबद्धत्तदंसणादो । तम्हा भुजगारउदीरणा उवरिमाए गाहाए परूविहिदि । पदणिक्खेवो वड्ढी वि तत्थेव परूविहिदि त्ति एदमत्थपदमवहारिय तदवट्ठंभबलेण एत्थ उद्देसे भुजगारादिपरूवणा सवित्थरमणुगंतव्वा । जहावसरमेव सव्वत्थ परूवणाए णाइयत्तादो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो । सपहि एदेण चुण्णिसुत्तावयवेण सूचिदभुजगाराणियोगद्दारस्स संगनोणिलीणपदणिक्खेव-वड्ढिपरूव-

§ ३०१. इसी प्रकार सब मार्गणाओंमें अल्पबहुत्व जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी उदीर्यमाण प्रकृति विशेष जाननी चाहिए । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा सबसे स्तोक है । उससे अप्रत्याख्यान कषायोंमेंसे अन्यतर प्रकृतिकी जघन्य प्रदेश उदीरणा परस्पर तुल्य होकर संख्यातगुणी है । शेष अल्पबहुत्व वही है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर उत्तर प्रकृतिप्रदेश उदीरणा समाप्त हुई ।

चौबीस अनुयोगद्वार समाप्त हुए ।

* आगेकी गाथामें भुजगार प्रदेश उदीरणाका व्याख्यान करेंगे । पदनिक्षेप और वृद्धिका भी वहीं पर व्याख्यान करेंगे ।

§ ३०२. इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यथा—समस्त प्ररूपणा गाथा सूत्रसे सम्बद्ध ही करनी चाहिए । अतएव प्रदेश उदीरणा विषयक भुजगारादिप्ररूपणा भी गाथा सूत्रसे निबद्ध ही करनी चाहिए । यदि कहा कि भुजगारादिप्ररूपणासे सम्बन्ध रखनेवाला गाथासूत्र नहीं है सो ऐसी आशंका करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि 'बहुगदरगं बहुगदरगं' इत्यादि उपरिम गाथा स्पष्टरूपसे ही भुजगारादि प्ररूपणामें प्रतिबद्ध देखी जाती है । इसलिए 'भुजगार उदीरणाका उपरिम गाथामें व्याख्यान करेंगे । पदनिक्षेप और वृद्धिका भी वहीं पर व्याख्यान करेंगे ।' इस प्रकार इस अर्थपदका अवधारण कर उसके उपरोधवश इस स्थलपर भुजगारादि प्ररूपणाको विस्तारके साथ जान लेना चाहिए, क्योंकि यथावसर ही सर्वत्र कथन करना न्याय्य है इस प्रकार यह इस सूत्रका भावार्थ है । अब इस चूर्णिसूत्रके अवयवद्वारा सूचित

१ आ० प्रतौ सा च ता०प्रतौ स० (ण) च इति पाठः ।

णस्स किंचि अत्थपरूवणमुच्चारणाइरिओवएसबलेण कस्सामो । तं जहा—

§ ३०३. भुजगारो त्ति तत्थ इमाणि तेरस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि—समुक्कित्तणा जाव अप्पाबहुए त्ति । समुक्कित्तणाए दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपयडी० अत्थि भुजगार० अप्पदर० अवट्ठि० अवत्त० ।

३०४. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-सोलसक०-सत्तणोक० ओघं । णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि । एवं सव्वणिरय० । तिरिक्खेसु ओघं० । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा । जोणिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि । पचिं०तिरिक्खअपज्ज०--मणुसअपज्ज० मिच्छ०--णवुंस० ओघं । णवरि अवत्त० णत्थि । सोलसक०-छण्णोक० ओघं । मणुसतिये ओघं । णवरि वेदा जाणियव्वा ।

३०५. देवेसु ओघं । णवरि णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद-पुरिसवेद० अवत्त० णत्थि । एवं भवणादि जाव सोहम्मीसाणे त्ति । एवं सणक्कुमारादि णवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० आणदभंगो । एवं जाव० ।

---

हुए तथा पदनिक्षेप और वृद्धिप्ररूपणाको अपने भीतर गर्भित कर स्थित हुए भुजगार अनुयोगद्वारका कुछ विशेष व्याख्यान उच्चारणाचार्यके उपदेशके बलसे करेंगे। यथा—

§ ३०३. भुजगार इस अनुयोगद्वारमें ये तेरह अनुयोगद्वार जानने चाहिए—समुत्कीर्तनासे लेकर अल्पबहुत्व तक। समुत्कीर्तनाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंकी भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य प्रदेश उदीरणा है।

§ ३०४. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेदका अवक्तव्यपद नहीं है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वेद जान लेने चाहिए। तिर्यञ्चयोनिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनका अवक्तव्यपद नहीं है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग ओघके समान है। मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि वेद जान लेने चाहिए।

§ ३०५. देवोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए। तथा इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनतकल्पके समान है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३०६. सामित्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-अणंताणु०-४ सव्वपदा कस्स ? अण्णद० मिच्छाइट्ठिस्स । सम्म० सव्वपदा कस्स ? अण्णदरस्स सम्माइट्ठिस्स । सम्मामि० सव्वपदा कस्स ? अण्णद० सम्मामिच्छाइट्ठिस्स। बारसक०-णवणोक० सव्वपदा कस्स ? अण्णद० सम्माइट्ठि० मिच्छाइट्ठि० ।

§ ३०७. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०-सम्म०-सम्मामि०-सोलसक०-सत्तणोक० ओघं । णवरि णवुंस अवत्त० णत्थि । एवं सव्वणिरय० । तिरिक्खेसु ओघं । णवरि तिण्हं वेदाणं अवत्त० मिच्छाइट्ठिस्स । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिये । णवरि वेदा जाणियव्वा । जोणिणीसु इत्थिवे० अवत्त० णत्थि ।

§ ३०८. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज०-अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपय० सव्वपदा कस्स ? अण्णदरस्स । मणुसतिये ओघं । णवरि वेदा जाणियव्वा । मणुसिणीसु इत्थिवे० अवत्त० सम्माइट्ठि० । देवेसु ओघं । णवरि णवुंस णत्थि । इत्थिवे०-पुरिसवे० अवत्त० णत्थि । एवं भवणादि जाव सोहम्मा त्ति । एव सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति। णवरि इत्थिवेदो णत्थि । एवं जाव० ।

§ ३०९. कालाणुगमेण दुविहोणिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण सव्वपयडी०

---

§ ३०६. स्वामित्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके सब पद किसके होते है ? अन्यतर मिथ्यादृष्टिके होते है । सम्यक्त्वके सब पद किसके होते है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टिके होते है । सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद किसके होते हैं ? अन्यतर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके होते हैं। बारह कषाय और नौ नोकषायोंके सब पद किसके होते है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टिके होते है ।

§ ३०७. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेदका अवक्तव्यपद नहीं है। इसी प्रकार सब नारकियोंमे जानना चाहिए। तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि तीन वेदोंका अवक्तव्य पद मिथ्यादृष्टिके होता है। इसी प्रकार पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वेद जानना लेने चाहिए। तिर्यञ्च योनिनियों में स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है।

§ ३०८. पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त मनुष्य अपर्याप्त और अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद किसके होते हैं ? अन्यतरके होते है। मनुष्यत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि वेद जान लेने चाहिए। मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदका अवक्तव्यपद सम्यग्दृष्टिके होता है। देवोंमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदका अवक्तव्यपद नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नही है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३०९. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट

भुज०-अप्पद० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । अवत्त० जह० उक्क० एगस० । सव्वणिरय-सव्वतिरिक्ख-सव्वमणुस-सव्वदेवा त्ति अप्पप्पणो पयडीणं सव्वपदा० ओघं । एवं जाव० ।

३१०. अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ० भुज०-अप्प० जह० एगसमओ, उक्क० बेछावट्ठिसागरो० देसूणाणि । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । एवमणंताणु०४ । णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० बेछावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि । सम्म०-सम्मामि० भुज०-अप्पद०-अवट्ठि०-अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । अट्ठक० भुज०-अप्प०-अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०,

काल अन्तर्मुहूर्त है । अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । सब नारकी, सब तिर्यञ्च, सब मनुष्य और सब देवोंमें अपनी-अपनी सब प्रकृतियोंके सब पदोंका भंग ओघके समान है । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

विशेषार्थ—यहाँ पर सब वृद्धियों और सब हानियोंके जघन्य काल एक समय और अनन्तगुणवृद्धि तथा अनन्तगुणहानिके उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तको ध्यानमें रखकर सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है । उक्त सब प्रकृतियोंकी अवस्थित उदीरणा कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक होती है यह जानकर प्रकृतमें इस पदके उदीरकका जघन्य काल एक समय कहा है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है । इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है यह स्पष्ट ही है । गति मार्गणाके अवान्तर भेद-प्रभेदोंमें जहाँ जिन प्रकृतियोंकी उदीरणा होती है और जो पद हैं उनको ध्यानमें रखकर ओघके समान काल बन जानेसे उसे ओघके समान जाननेकी सूचना की है ।

§ ३१०. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपमप्रमाण है । अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है । अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी-चतुष्कको अपेक्षा जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपमप्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गल परिवर्तनप्रमाण है । आठ कषायोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है

**उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। अवट्ठि० मिच्छत्तभंगो। चदुसंज०-भय-दुगुंछ० एवं चेव। णवरि भुजगार-अप्पदर-अवत्तव्व० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० अंतोमु०। एवं हस्स-रदि०। णवरि भुज०-अप्प०-अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। एवमरदिसोग०। णवरि भुजगार-अप्पद० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं। एवं णवुंस०। णवरि भुज०-अप्प० जह० एगस०, उक्क० सागरोवम-सदपुधत्तं। अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। इत्थिवे०-पुरिसवे० भुज०-अप्प०-अवट्ठि०-अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।**

तथा तीनोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका भंग मिथ्यात्वके समान है। चार संज्वलन, भय और जुगुप्साका भंग इसी प्रकार है। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल दो पदोंका एक समय और अन्तिमका अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार हास्य और रतिकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल साधिक तेतीस सागरोपम-प्रमाण है। इसी प्रकार अरति और शोकका अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है तथा सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सौ सागरोपमपृथक्त्वप्रमाण है। इसके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय तथा अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल अनन्तकाल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—यहाँ सब प्रकृतियोंके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय स्पष्ट ही है, क्योंकि इन पदोंके एक समयके अन्तरसे होनेमें कोई बाधा नहीं आती। तथा मिथ्यात्व गुणस्थानका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपम होनेसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चतुष्कके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपम कहा है। इनकी अवस्थित प्रदेश उदीरणा अधिकसे अधिक असंख्यात लोकप्रमाण काल तक नहीं होती, इसलिए इन पाँचों प्रकृतियोंके अवस्थित प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण कहा है। अब रहा इन पाँचों प्रकृतियोंके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकके अन्तरकालका विचार सो जो सम्यक्त्वसे च्युत होकर मिथ्यादृष्टि हुआ है उसके पुनः सम्यक्त्वको प्राप्तकर मिथ्यादृष्टि होनेमें कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल लगता है तथा वह अधिक-से-अधिक उपार्ध पुद्गल परिवर्तन प्रमाण काल तक मिथ्यादृष्टि रहकर सम्यक्त्वको प्राप्तकर पुनः मिथ्यादृष्टि हो सकता है, इसलिए तो मिथ्यात्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तर काल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्-गल परिवर्तनप्रमाण कहा है। तथा अनन्तानुबन्धियोंका दो बार अवक्तव्यपद कमसे

**§ ३११. आदेसेण णेरइय० मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–अणंताणु०४–हस्स-रदि० भुज०–अप्प०–अवट्ठि०–अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। एवमरदि–सोग०। णवरि भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। एवं बारसक०–भय-दुगुंछ०–णवुंस०। णवरि अवत्त० जहण्णुक्क० अंतोमु०। णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि। एवं सत्तमाए। एवं पढमादि जाव छट्ठि त्ति। णवरि सगट्ठिदी देसूणा। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं भयभंगो।**

कम अन्तर्मुहूर्त कालके अन्तरसे और अधिकसे अधिक कुछ कम दो छयासठ सागरोपम कालके अन्तरसे हो यह सम्भव होनेसे इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तर काल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम दो छयासठ सागरोपमप्रमाण कहा है। अविरत सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल उपार्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण कहा है। तथा वेदकसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व गुणकी दो बार प्राप्ति अन्तर्मुहूर्त कालके अन्तरसे होना सम्भव है, इसलिए उक्त प्रकृतियोंके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। अप्रत्याख्यान कषाय चतुष्क और प्रत्याख्यान-कषायचतुष्कके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त अनन्तानुबन्धीकषायचतुष्कके समान घटित कर लेना चाहिए। तथा संयमासंयम और सकलसंयमका उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण होनेसे इनके भुजगार अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल उक्त कालप्रमाण कहा है, क्योंकि पाँचवे आदि गुणस्थानोंमें अप्रत्याख्यान कषायकी उदीरणा नहीं होती और छटे आदि गुणस्थानोंमें प्रत्याख्यान कषायकी उदीरणा नहीं होती। मात्र जो संयतासंयत आदि गुणस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त रह कर नीचे उतरा है। पुनः अन्तर्मुहूर्तके बाद संयतासंयत या संयत होकर और अपने उत्कृष्ट काल तक वहाँ रह कर पुनः नीचे उतरा है उसके अप्रत्याख्यान कषाय चतुष्ककी अपेक्षा यह उत्कृष्ट अन्तरकाल कहना चाहिए। तथा जो अन्तर्मुहूर्त काल तक संयत हो कर नीचे उतरा है। पुनः अन्तर्मुहूर्तमें संयत होकर और अपने उत्कृष्ट कालतक वहाँ रहकर नीचे उतरा है उसके प्रत्याख्यान कषाय चतुष्ककी अपेक्षा यह उत्कृष्ट अन्तरकाल कहना चाहिए। इन आठों प्रकृतियोंके अवस्थित प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोकप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। इसी प्रकार शेष प्रकृतियोंके अपने-अपने पदोंका अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए। विशेष वक्तव्य न होनेसे यहाँ सबका अलग-अलग स्पष्टीकरण नहीं किया है।

§ ३११. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धीचतुष्क, हास्य और रतिके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। इसी प्रकार अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुर्तप्रमाण है। इसी प्रकार बारह कषाय, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इतनी और विशेषता है कि नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सातवीं पृथिवी-

**§ ३१२. तिरिक्खेसु मिच्छ० ओघं। णवरि भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। एवमणंताणु०४। णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। सम्म०–सम्मामि०–अपच्चक्खाण०४–इत्थिवे०–पुरिसवेद० ओघं। अट्ठक०–छण्णोक० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। अवट्ठि० ओघं। णवुंस० ओघं। णवरि भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं।**

**§ ३१३. पंचिंदियतिरिक्खतिये मिच्छ० भुज०–अप्प० तिरिक्खोघं। अवट्ठि०–अवत्त० जह० एगस० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। सोलसक०–छण्णोक० तिरिक्खोघं। णवरि अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। सम्म०–सम्मामि०**

में जानना चाहिए। इसी प्रकार पहली पृथिवीसे लेकर छटी पृथिवी तक जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। तथा इनमें हास्य, रति, अरति और शोकका भंग भयके समान है।

**विशेषार्थ**—प्रथमादि छह पृथिवियोंमें हास्य, रति, अरति और शोककी अन्तर्मुहूर्तके अन्तरसे नियमसे उदीरणा होती है, इसलिए इन पृथिवियोंमें इनके सभी पदोंके प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल भयके समान बन जानेसे उसके समान जाननेकी सूचना की है। शेष कथन सुगम है।

§ ३१२. तिर्यञ्चोंमें मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धीचतुष्ककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अप्रत्याख्यान कषायचतुष्क, स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग ओघके समान है। आठ कषाय और छह नोकषायोंके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका भंग ओघके समान है। नपुंसकवेदका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—यहाँ पर नपुंसकवेदके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जो उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है सो वह पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंको ख्यालमें रख कर ही कहा है, क्योंकि उन्हींमें यह उत्कृष्ट अन्तरकाल बनता है। शेष कथन सुगम है। अपने-अपने स्वामित्व और कालको जानकर वह घटित कर लेना चाहिए।

§ ३१३. पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकमें मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंका भंग सामान्य तिर्यञ्चोंके समान है। इतनी विशेषता है कि इनके अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल

भुज०-अप्प०-अवट्ठि०-अवत्त० जह० एयस० अंतोमु०, उक्क० सगट्ठिदी। इत्थिवे०-पुरिसवे० भुज०-अप्प०-अवत्त० जह० एयस० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। णवुंस० भुज०-अप्प०-अवट्ठि०-अवत्त० जह० एयस० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं। णवरि पज्जत्त० इत्थिवेद० णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० भुज०-अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। अवत्त० णत्थि।

§ ३१४. पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०-मणुसअपज्ज० मिच्छ०-णवुंस० सव्वपदा० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। एवं सोलसक०-छण्णोक०। णवरि अवत्त० जह० उक्क० अंतोमु०।

§ ३१५. मणुसतिये पंचिं०तिरिक्खतियभंगो। णवरि पच्चक्खाण०४ भुज०-

एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तरकाल अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है, अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। नपुंसकवेदके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सभीका उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। इतनी विशेषता है कि पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है और योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है। तथा योनिनियोंमें भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इनमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है।

**विशेषार्थ**—स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी भुजगार अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल कर्मभूमिज तिर्यञ्चोंमें ही प्राप्त होनेसे वह पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण कहा है। नपुसकवेदकी उदय-उदीरणा भोगभूमिमे नही होती, इसलिए यहाँ इसकी चारों पदरूप प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल भी पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण कहा है। योनिनियोंमें एक स्त्रीवेदकी ही उदय-उदीरणा सम्भव है, इसलिए इनमें स्त्रीवेदकी एक तो अवक्तव्य प्रदेश उदीरणा सम्भव नहीं है। दूसरे इनमें स्त्रीवेदकी भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त बननेसे वह उक्त काल प्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ३१४. पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त और मनुष्यअपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व व नपुंसकवेदके सब पद प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार सोलह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है।

§ ३१५. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि प्रत्याख्यान कषायचतुष्कके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका भंग ओघके

अप्प०–अवत्त० ओघं । मणुसिणीसु इत्थिवेद० अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० पुव्वकोडि-पुधत्तं ।

§३१६. देवेसु मिच्छ०–सम्म०–सम्मामि०–अणंताणु०४ भुज०–अप्प०–अवट्ठि०-अवत्त० जह० एयस० अंतोमु०, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । णवरि सम्म० अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । बारसक०–भय-दुगुंछ० भुज०–अप्प०–अवत्त० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० सम्मत्तभंगो । एवं पुरिसवेद० । णवरि अवत्त० णत्थि । एवं हस्स-रदि० । णवरि अवत्त० जह० अंतोमु०, उक्क० छम्मासं । एवमरदि-सोगाणं । णवरि भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० छम्मासं । इत्थिवेद० भुज०–अप्प० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु० । अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० पणवण्णं पलिदोवमाणि देसूणाणि । एव भवणादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि सगट्ठिदी देसूणा । णवरि हस्स-रदि-अरदि-सोगाण भय०भगो । सहस्सारे हस्स-रदि-अरदि-सोग० देवोघं । भवण०–वाणवें०–जोदिसि० इत्थिवेद० भुज०–अप्प०

समान है। मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है।

**विशेषार्थ**—मनुष्यिनियोंमें उपशमश्रेणिके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर स्त्रीवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ३१६. देवोंमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीचतुष्कके भुजगार, अल्पतर और अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है तथा सबका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम इकतीस सागरोपम है। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम है। बारह कषाय, भय और जुगुप्साके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका भंग सम्यक्त्वके समान है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार हास्य और रतिकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। इसी प्रकार अरति और शोककी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके भुजगार और अल्पतर प्रवेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना है। स्त्रीवेदके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम पचवन पल्योपम है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कुछ कम अपनी-अपनी स्थिति कहनी चाहिए। इतनी और विशेषता है कि यहाँ हास्य, रति, अरति और शोकका भंग भयके समान है। मात्र सहस्रार कल्पमें हास्य, रति,

**देवोघं। अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि पलिदो० सादिरे० पलि० सादि०। सोहम्मीसाण० इत्थिवेद० देवोघं। उवरि इत्थिवेदो णत्थि।**

**§ ३१७. अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म० भुज०-अप्प० जह० एयस०, उक्क० अंतोमु०। अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० सगट्ठिदी देसूणा। अवत्त० णत्थि अंतरं। एवं पुरिसवे०। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं बारसक०-छण्णोक०। णवरि अवत्त० जह० उक्क० अंतोमु०। एवं जाव०।**

**§ ३१८. णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०-णवुंस० तिण्णि पदा णियमा अत्थि, सिया एदेय अवत्तव्वगो च, सिया**

अरति और शोकका भंग सामान्य देवोंके समान है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें स्त्रीवेदके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका भंग सामान्य देवोंके समान है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तीन पल्योपम, साधिक एक पल्योपम और साधिक एक पल्योपम है। सौधर्म और ऐशान कल्पमें स्त्रीवेदका भंग सामान्य देवोंके समान है। आगेके देवोंमें स्त्रीवेद नहीं है।

**विशेषार्थ**—सामान्य देवोंमें सम्यक्त्व प्रकृतिकी उदीरणा तेतीस सागरोपम काल तक बन जाती है, इसलिए इनमें उसके अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम तेतीस सागरोपम बन जानेसे वह उक्त काल प्रमाण कहा है। अरति और शोककी उदीरणाका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त होनेसे यहाँ हास्य और रतिके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है। तथा हास्य और रतिकी उदीरणाका उत्कृष्ट काल छह महीना होनेसे यहाँ इन्हीके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना कहा है। इतना अवश्य है कि दोनों जगह प्रारम्भ और अन्तमें अवक्तव्य पद करा कर यह अन्तरकाल घटित करना चाहिए। अरति और शोककी कमसे कम एक समयके अन्तरसे भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य उदीरणा हो और अधिकसे अधिक छह महीनेके अन्तरसे हो यह सम्भव है, इसलिए यहाँ इनके भुजगार अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल छह महीना कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

§ ३१७. अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। अवस्थित प्रदेश उदीरकका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण है। अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका अन्तरकाल नहीं है। इसी प्रकार पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार बारह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए।

§ ३१८. नाना जीवोंका अवलम्बन लेकर भंगविचयानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके तीन पद प्रदेशउदीरक जीव

पदे य अवत्तव्वगा य। सम्म०–इत्थिवे०–पुरिसवे० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि, सेसपदा भयणिज्जा। सम्मामि० सव्वपदा भयणिज्जा। सोलसक०–छण्णोक० सव्वपदा णियमा अत्थि। एवं तिरिक्खोघं।

§ ३१९. सव्वणिरय–पंचिंदियतिरिक्खतिय-मणुसतिय-देवा जाव णवगेवज्जा त्ति सम्मामि० ओघं। सेसपयडीणं भुज०–अप्प० णियमा अत्थि। सेसपदा भयणिज्जा। पंचिंदियतिरिक्खअपज्ज०–अणुद्दिसादि सव्वट्ठा त्ति सव्वपयडी० भुज०–अप्प० णिय० अत्थि, सेसपदा भयणिज्जा। मणुसअपज्ज० सव्वपयडीणं सव्वपदा भयणिज्जा। एव जाव०।

§ ३२०. भागाभागाणुगमेण दुविहो णिद्देसो–ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०–णवुंस० भुजगार० दुभागो देसूणो। अप्पद० दुभागो सादिरेओ। अवट्ठि० असंखे०भागो। अवत्त० अणंतभागो। एवं सम्म०–सम्मामि०–सोलसक०–अट्ठणोक०। णवरि अवत्त० असंखे०भागो। एवं तिरिक्खा०।

§ ३२१. सव्वणिरय–सव्वपंचिंदियतिरिक्ख–मणुसअपज्ज०–देवा जाव अवराजिदा त्ति सव्वपयडी० भुज०–अप्पद० ओघं। सेसपदा० असंखे०भागो। मणुसा०

---

नियमसे है, कदाचित् ये नाना जीव हैं और एक अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव है, कदाचित् ये नाना जीव है और नाना अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव है। सम्यक्त्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके भुजगार और अल्पतरप्रदेश उदीरक जीव नियमसे है, शेष पद भजनीय है। सम्यग्मिथ्यात्वके सब पद भजनीय है। सोलह कषाय और छह नोकषायोंके सब पद नियमसे है। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ३१९. सब नारकी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिक, मनुष्यत्रिक और सामान्य देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयकतकके देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरक जीव नियमसे हैं, शेष पद भजनीय है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त और अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धितकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरक जीव नियमसे है। शेष पद भजनीय है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद भजनीय हैं। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

§ ३२०. भागाभागानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके भुजगार प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं। अल्पतर प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके साधिक द्वितीय भागप्रमाण है। अवस्थित प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है और अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

§ ३२१. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका भंग ओघके समान है। शेष पद प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण

पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि सम्म०--सम्मामि०--इत्थिवे०--पुरिसवे० अवट्ठि०--अवत्त० संखे०भागो ! मणुमपज्ज० मणुसिणी०--सव्वट्ठदेवा० भुज०--अप्प० ओघं । सेसपदा० संखे०भागो । एवं जाव० ।

§ ३२२. परिमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो--ओघेण आदेसेण य । ओघेण मिच्छ०--सोलसक०--सत्तणोक० सव्वपदा० के० ? अणंता । णवरि मिच्छ०--णवुंस० अवत्त० के० ? असंखेज्जा । सम्म०--सम्मामि०--इत्थिवे०--पुरिसवे० सव्वपदा केत्तिया ? असंखेज्जा । एवं तिरिक्खा० ।

§ ३२३. सव्वणिरय--सव्वपंचिंदियतिरिक्ख--मणुसअपज्ज०--देवा जाव णवगेवज्जा त्ति सव्वपयडीणं सव्वपदा० के० ? असंखेज्जा । मणुसा० पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि मिच्छ०--णवुंस० अवत्त० सम्म०--सम्मामि०--इत्थिवेद-पुरिसवेद० सव्वपदा के० ? संखेज्जा । पज्जत्त-मणुसिणी--सव्वट्ठदेवा० सव्वपयडी० सव्वपदा० के० ? संखेज्जा । अणुदिसादि--अवराजिदा त्ति सव्वपयडी० सव्वपदा० के० ? असंखेज्जा । णवरि सम्म० अवत्त० के० ? संखेज्जा । एवं जाव० ।

§ ३२४. खेत्तं पोसणं भुजगारअणुभागउदीरणाए भंगो ।

हैं । सामान्य मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थित और अवक्तव्य पदके उदीरक जीव सब जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण है । मनुष्यपर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका भंग ओघके समान है । शेष पद प्रदेश उदीरक जीव सब जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणातक जानना चाहिए ।

§ ३२२. परिमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पद प्रदेशउदीरक जीव कितने है ? अनन्त है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव कितने है ? असंख्यात हैं । सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेद के सब पद प्रदेश उदीरक जीव कितने है ? असंख्यात है । इसी प्रकार सामान्य तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए ।

§ ३२३. सब नारकी, सब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य अपर्याप्त और सामान्य देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । सामान्य मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव तथा सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके सब पद प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात है । मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । अनुदिशसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सब प्रकृतियोंके सब पद प्रदेश उदीरक जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव कितने है ? संख्यात हैं । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

§ ३२४. क्षेत्र और स्पर्शनका भंग भुजगार अनुभाग उदीरणाके समान है ।

**§ ३२५. कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वपयडीणंसव्वपदा सव्वद्धा। णवरि मिच्छ०--णवुंस०अवत्त० सम्म०--सम्मामि०--इत्थिवे०--पुरिसवे० अवट्ठि०--अवत्त० जह०एयस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। सम्मामि० भुज०--अप्प० जह० एगस०,उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एवं तिरिक्खा०।**

**§ ३२६. सव्वणिरय-पंचिंदियतिरिक्खतिय-देवा जाव णवगेवज्जा त्ति सम्मामिच्छ० ओघं। सेसपयडी० भुज०-अप्प० सव्वद्धा। सेसपदाण जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। पंचिं०तिरि०अपज्ज० सव्वपय० भुज०--अप्प० सव्वद्धा। सेसपदा० जह० एगस०, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एवं मणुसअपज्ज०। णवरि भुज०--अप्प० जह० एयस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। मणुसा० पंचिंदिय-तिरिक्खभंगो। णवरि मिच्छ०--सम्म०--सम्मामि०--तिण्णिवेद० अवत्त० जह० एयस०,**

§ ३२५. कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे सब प्रकृतियोंके सब पदोंके प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका तथा सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थित और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असख्यातवे भागप्रमाण है। सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है। इसी प्रकार तिर्यञ्चोंमें जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—मिथ्यात्व और नपुंसकवेदकी अवक्तव्य उदीरणा क्रमसे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव ही करते है, इसलिये इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण बन जानेसे वह उक्त प्रमाण कहा है। इसी प्रकार सम्यक्त्व आदि चार प्रकृतियोके अवस्थित और अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीवोंके जघन्य और उत्कृष्ट कालके विषयमें विचार कर उसे घटित कर लेना चाहिए। सम्यग्मिथ्यात्व गुण यह सान्तर मार्गणा है, इसलिए उसके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रख कर यहाँ सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

§ ३२६. सब नारकी, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिक और सामान्य देवोंसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। शेष प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका काल सर्वदा है। शेष पद प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवे भाग प्रमाण। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोका काल सर्वदा है। शेष पद उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्तकोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें सब प्रकृतियोंके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरककोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और तीन वेदोंके

**उक्क० संखेज्जा समया। सम्मामि० भुज०--अप्प० जह० एयस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एवं मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु। णवरि वेदा जाणियव्वा।**

**§ ३२७. अणुदिसादि अवराजिदा त्ति सम्म०--बारसक०--सत्तणोक० आणदभंगो। णवरि सम्म० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। एवं सव्वट्ठे। णवरि सव्वपयडीणं अवत्त० जह० एयस०, उक्क० संखेज्जा समया। एवं जाव०।**

**§ ३२८. अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो--ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०--सोलसक०--सत्तणोक० सव्वपदाणं णत्थि अंतरं णिरंतरं। णवरि मिच्छ० अवत्त०**

---

अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। तथा सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अपने-अपने वेद जान लेने चाहिए।

**विशेषार्थ**—सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें संख्यात जीव ही मिथ्यात्व आदि छह प्रकृतियोंकी अवक्तव्य प्रदेश उदीरणा करते हैं, इसलिए इस पदके प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है। यद्यपि पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यिनियोंका परिमाण ही संख्यात है फिर भी इनमें उक्त प्रकृतियोंके शेष पदोंके प्रदेश उदीरकोंका तथा अन्य शेष प्रकृतियोंके सब पदोंके प्रदेश उदीरकोंका काल पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान बन जानेसे उसे उनके समान जाननेकी सूचना की है। मात्र उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योंमें सम्यग्मिथ्यात्वका नाना जीवोंकी अपेक्षा भी उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त ही प्राप्त होता है, इसलिए इनमें इसके भुजगार और अल्पतर प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है। शेष सब कथन स्पष्ट ही है।

§ ३२७. अनुदिशसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें सम्यक्त्व, बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनतकल्पके समान है। इतनी विशेषता है कि यहाँ सम्यक्त्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ सब प्रकृतियोंके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए।

**विशेषार्थ**—अनुदिश आदिके सब देवोंमें जो द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि जीव मर कर उत्पन्न होते हैं उन्हींके सम्यक्त्वकी अवक्तव्य प्रदेश उदीरणा होती है, ऐसे जीव यदि वहाँ लगातार उत्पन्न हों तो वे संख्यात ही होंगे। यही कारण है कि यहाँ सम्यक्त्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है। सर्वार्थसिद्धिके सब देव ही संख्यात हैं, इसलिए यहाँ सब प्रकृतियोंके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय बन जानेसे वह तत्प्रमाण कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

§ ३२८. अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके सब पदोंके प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल नहीं

जह० एयस०, उक्क० सत्त रादिंदियाणि। णवुंसवेद० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० चउवीसं मुहुत्तं। सम्मत्त० मिच्छत्तभंगो। णवरि अवट्ठि० जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। एवमित्थिवेद-पुरिसवेद०। णवरि अवत्त० णवुंसयवेदभंगो। सम्मामि० भुजगार०-अप्पद०-अवत्त० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा।

§ ३२९. आदेसेण णेरइएसु मिच्छ० ओघं। णवरि अवट्ठि० जह० एयस०, उक्क० असंखेज्जा लोगा। एवं णवुंस०। णवरि अवत्त० णत्थि। एवं सोलसक०-छण्णोक०। णवरि अवत्त० जह० एगस०, उक्क० अंतोमु०। सम्म०-सम्मामि० ओघं। एवं सव्वणिरय०।

---

है, निरन्तर है। इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तर काल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात दिन-रात है। नपुंसकवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल चौबीस मुहूर्त है। सम्यक्त्वका भंग मिथ्यात्वके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके अवस्थित प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर काल असंख्यात लोकप्रमाण है। इसी प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इसके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका भंग नपुंसकवेदके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वके भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है। अवस्थित प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल असंख्यात लोक प्रमाण है।

**विशेषार्थ**—नाना जीवोंकी अपेक्षा उपशमसम्यक्त्वके जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकालको ध्यानमें रखकर यहाँ पर मिथ्यात्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल सात दिन-रात्रि कहा है। सम्यक्त्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका अन्तरकाल इसी प्रकार जानना चाहिए। कोई अविवक्षित अन्य वेदवाला जीव मरकर नपुंसकवेदी, स्त्रीवेदी या पुरुषवेदी न हो तो वह कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक २४ मुहूर्त तक नहीं होता। यही कारण है कि यहाँ पर इन तीनों वेदोंकी अपेक्षा अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तरकाल २४ मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ ३२९. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इसके अवस्थित प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर-काल असंख्यात लोकप्रमाण है। इसी प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ इसका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सोलह कषाय और छह नोकषायोंकी अपेक्षा जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ ३३०. तिरिक्खेसु ओघं। पंचिंदियतिरिक्खतिये णारयभंगो। णवरि णवुंस० अवत्त० ओघं। इत्थिवेद-पुरिसवेद० ओघं। पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि। जोणिणीसु पुरिस०-णवुंस० णत्थि। इत्थिवे० अवत्त० णत्थि। पंचिं०तिरिक्खअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० णारयभंगो। णवरि मिच्छ० अवत्त० णत्थि।

§ ३३१. मणुसतिये पंचिंदियतिरिक्खतियभंगो। णवरि मणुसिणी० इत्थिवेद० अवत्त० जह० एयस०, उक्क० वासपुधत्तं। मणुसअपज्ज० मिच्छ०-सोलसक०-सत्तणोक० अवट्ठि० णारयभंगो। सेसपदा० जह० एयस०, उक्क० पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

§ ३३२. देवाणं पंचि०तिरिक्खभंगो। णवरि णवुंसय० णत्थि। इत्थिवे०-पुरिसवे० अवत्त० णत्थि। एवं भवणादि जाव सोहम्मा त्ति। एवं सणक्कुमारादि णवगेवेज्जा त्ति। णवरि इत्थिवे० णत्थि। अणुदिसादि सव्वट्ठा त्ति सम्म०-बारसक०-सत्तणोक० देवोघं। णवरि सम्म० अवत्तव्व० जह० एगस०, उक्क० वासपुधत्तं। सव्वट्ठे पलिदो० संखे० भागो। एवं जाव०।

§ ३३०. तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भंग है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकमें सामान्य नारकियोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है की इनमें नपुंसकवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका भंग ओघके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भंग ओघके समान है। तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है और तिर्यञ्चयोनिनियोंमें पुरुषवेद तथा नपुंसकवेद नहीं है, तथा इनमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग सामान्य नारकियोंके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्वका अवक्तव्य पद नहीं है।

§ ३३१. मनुष्यत्रिकमें पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिकके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि मनुष्यिनियोंमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंके अवस्थित पदका भंग नारकियोंके समान है। शेष पद-प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

§ ३३२. देवोंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है। तथा स्त्रीवेद और पुरुषवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान, कल्प तकके देवोंमें जानना चाहिए। इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है। अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्व बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग सामान्य देवोंके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें सम्यक्त्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरकोंका जघन्य अन्तरकाल एक समय है और उत्कृष्ट अन्तरकाल नौ अनुदिश और चार अनुत्तर विमानोंमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण है तथा सर्वार्थसिद्धिमें पल्योमकके संख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ३३३. भावाणुगमेण सव्वत्थ ओदइओ भावो।

§ ३३४. अप्पाबहुआणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण मिच्छ०--णवुंस० सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि०उदीरगा अणंतगुणा। भुजगार० असंखे०गुणा। अप्पदर० विसेसाहिया। सम्म०--सम्मामि०--सोलसक०--अट्ठणोक० सव्वत्थोवा अवट्ठि०उदी०। अवत्त०पदेसुदी० असंखे०गुणा। भुजगार० असंखे०गुणा। अप्पदर० विसेसाहिया। एवं तिरिक्खाणं।

§ ३३५. आदेसेण णेरइय० सव्वत्थोवा मिच्छ० अवत्त०। अवट्ठि० असंखे०गुणा। उवरि ओघं। सम्म०--सम्मामि०--सोलसक०--सत्तणोक० ओघं। णवरि णवुंस० अवत्त० णत्थि। एवं सव्वणिरय०।

§ ३३६. पंचिंदियतिरिक्खतिये ओघं। णवरि मिच्छ०--णवुंस० सव्वत्थोवा अवत्त०। अवट्ठि० असंखे०गुणा। उवरि ओघं। णवरि पज्ज० इत्थिवे० णत्थि। णवुंस० पुरिसवेदभंगो। जोणिणीसु पुरिसवे०—णवुंस० णत्थि। इत्थिवेद० अवत्त० णत्थि। पंचि०तिरि०अपज्ज०—मणुसअपज्ज० मिच्छ०—सोलसक०—सत्तणोक० ओघं। णवरि मिच्छ०--णवुंस० अवत्त० णत्थि।

---

§ ३३३. भावानुगमकी अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है।

§ ३३४. अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित प्रदेश उदीरक जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे भुजगार प्रदेश उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अल्पतर प्रदेश उदीरक जीव विशेष अधिक हैं। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और आठ नोकषायोंके अवस्थित पदेश उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे भुजगार प्रदेश उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अल्पतर प्रदेश उदीरक जीव विशेष अधिक हैं।

§ ३३५. आदेशसे नारकियोंमें मिथ्यात्वके अवक्तव्यप्रदेशउदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थितप्रदेशउदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। आगे ओघके समान भंग है। सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। इसी प्रकार सब नारकियोंमें जानना चाहिए।

§ ३३६. पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चत्रिकमें ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदके अवक्तव्यप्रदेशउदीरक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित प्रदेशउदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं। आगे ओघके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि तिर्यञ्च पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा नपुंसकवेदका भंग पुरुषवेदके समान है। तिर्यञ्च योनिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है तथा इनमें स्त्रीवेदका अवक्तव्य पद नहीं है। पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्चअपर्याप्त और मनुष्यअपर्याप्तकोंमें मिथ्यात्व, सोलह कषाय और सात नोकषायोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका अवक्तव्यपद नहीं है।

३३७. मणुसाणं पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि सम्म०--सम्मामि०--इत्थिवे०--पुरिसवे० संखेज्जगुणं कायव्वं । एवं पज्जत्त-मणुसिणीसु । णवरि सव्वत्थ संखेज्जगुणं कायव्वं । पज्जत्त० इत्थिवेदो णत्थि । णवुंस० पुरिसवेदभंगो । मणुसिणीसु पुरिसवे०--णवुंस० णत्थि । इत्थिवेद० सव्वत्थोवा अवत्त०पदेसुदी० । अवट्ठि०उदीरगा संखेज्जगुणा । सेसं तं चेव ।

§ ३३८. देवाणं पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि णवुंस० णत्थि । इत्थिवे०--पुरिसवे० अवत्त०पदेसुदी० णत्थि । एवं भवणादि जाव सोहम्मा त्ति । एवं सणक्कुमारादि जाव णवगेवज्जा त्ति । णवरि इत्थिवेदो णत्थि । अणुदिसादि जाव सव्वट्ठा त्ति सम्मत्त० सव्वत्थोवा अवत्त०पदेसुदीरगा । अवट्ठिदपदेसुदीरगा असंखेज्जगुणा । उवरि ओघं । बारसक०--सत्तणोक० आणदभंगो । एवं सव्वट्ठे । णवरि संखेज्जगुणं कादव्वं । एवं जाव० ।

एवं भुजगारउदीरणा समत्ता

§ ३३९. पदणिक्खेवो वड्ढिउदीरणा च चिंतिय़ूण णेदव्वा ।

तदो पदेसुदीरणा समत्ता ।

एवं विदियगाहापुव्वद्धस्स अत्थपरूवणा समत्ता ।

---

§ ३३७. मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहते समय असंख्यातगुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि यहाँ सर्वत्र असंख्यातगुणके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए । मनुष्य पर्याप्तकोंमें स्त्रीवेद नहीं है तथा नपुंसकवेदका भंग पुरुषवेदके समान है । मनुष्यिनियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद नहीं है तथा इनमें स्त्रीवेदके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अवस्थित प्रदेश उदीरक जीव संख्यातगुणे हैं । शेष अल्पबहुत्व वही है ।

§ ३३८. देवोंमें पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें नपुंसकवेद नहीं है तथा इनमें स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवक्तव्यप्रदेशउदीरक जीव नहीं हैं । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सौधर्म-ऐशान कल्पतकके देवोंमें जानना चाहिए । इसी प्रकार सनत्कुमार कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें स्त्रीवेद नहीं है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें सम्यक्त्वके अवक्तव्य प्रदेश उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अवस्थित प्रदेश उदीरक जीव असंख्यातगुणे हैं । आगे ओघके समान भंग है । बारह कषाय और सात नोकषायोंका भंग आनत कल्पके समान है । इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धिमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि असंख्यात गुणेके स्थानमें संख्यातगुणा करना चाहिए । इसी प्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए ।

इस प्रकार भुजगार प्रदेश उदीरणा समाप्त हुई ।

§ ३३९. पदनिक्षेप और वृद्धि प्रदेश उदीरणाको विचार कर जानना चाहिए ।

इसके बाद प्रदेश उदीरणा समाप्त हुई ।

इस प्रकार दूसरी गाथाके पूर्वार्धकी अर्थप्ररूपणा समाप्त हुई ।

§ ३४०. संपहि विदियगाहापच्छिमद्धस्स अत्थविहासा कायव्वा, पत्तावसरत्तादो। सा वुण हेट्ठदो चेव गया त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

*** 'सांतर-णिरंतरो वा कदि वा समया दु बोद्धव्वा' त्ति। एत्थ अंतरं च कालो च हेट्ठदो विहासिया।**

§ ३४१. गयत्थमेदं सुत्तं, 'सांतर-णिरंतरो वा' त्ति एदेण गाहासुत्तावयवेण सूचिदकालंतराणं हेट्ठिमोवरिमसेसाणिओगद्दाराविणाभावीणं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसुदीरणासु सवित्थरमणुमग्गियत्तादो। एवं विदियगाहाए अत्थपरूवणं समाणिय संपहि तदियगाहाए जहावसरपत्तमत्थविहासणं कुणमाणो तिस्से वि हेट्ठदो चेव विहासियत्तादो वित्थरपरूवणमुज्झियूण संखेवत्थपरूवणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमाह—

*** 'बहुगदरं बहुगदरं से काले को णु थोवदरगं वा' त्ति एत्तो भुजगारो कायव्वो।**

§ ३४२. एसा ताव तदियगाहा भुजगारुदीरणाए कथं पडिबद्धा त्ति पुच्छाए णिण्णयो कीरदे। तं जहा—'बहुगदरं बहुगदरं' इच्चेदेण सुत्तावयवेण भुजगारसण्णिदो अवत्थाविसेसो सूचिदो। 'से काले को णु थोवदरगं वा' त्ति एदेण वि अप्पदरसण्णिदो

---

§ ३४०. अब दूसरी गाथाके उत्तरार्धके अर्थके विशेष व्याख्यानका अवसर प्राप्त होनेसे उसका व्याख्यान करना चाहिए। किन्तु उसका विशेष व्याख्यान पहले ही कर आये हैं इस बातका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

*** 'सांतर-णिरंतरो वा कदि वा समया दु बोद्धव्वा' इस प्रकार इस गाथांशमें सूचित हुए अन्तर और कालका विशेष व्याख्यान पहले ही कर आये हैं।**

§ ३४१. यह सूत्र गतार्थ है, क्योंकि 'सांतर-णिरंतरो वा' इस प्रकार गाथा सूत्रके इस अवयव द्वारा सूचित हुए पिछले और आगे के शेष अनुयोगद्वारोंके अविनाभावी काल और अन्तर अनुयोगद्वारोंका प्रकृति उदीरणा, स्थिति उदीरणा, अनुभाग उदीरणा और प्रदेश उदीरणाके व्याख्यानके समय विस्तारके साथ अनुमार्गण कर आये हैं। इस प्रकार दूसरी गाथाके अर्थका कथन समाप्त कर अब तीसरी गाथाके अवसर प्राप्त अर्थका व्याख्यान करते हुए उसका भी पहले ही व्याख्यान कर आये है, इसलिए विस्तार पूर्वक उसके व्याख्यानको छोड़ कर संक्षेपसे अर्थका कथन करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध कहते हैं—

*** 'बहुगदरं बहुगदरं से काले को णु थोवदरगं वा' इस प्रकार इस तीसरी गाथा द्वारा भुजगार उदीरणाका व्याख्यान करना चाहिए।**

§ ३४२. यह तीसरी गाथा भुजगार उदीरणामें किस प्रकार प्रतिबद्ध है ऐसी पृच्छाके होने पर उसका निर्णय करते है। यथा—'बहुगदरं बहुगदरं' इस प्रकार इस सूत्रावयव द्वारा भुजगार संज्ञावाली अवस्थाविशेष सूचित की गई है। 'से काले को णु थोवदरगं वा' इस

अवत्थाविसेसो सूचिदो। दोण्हमेदेसिं देसामासयभावेणावट्ठिदावत्तव्वसण्णिदाणमवत्थंतराणमेत्थेव संगहो दट्ठव्वो। पुणो 'अणुसमयमुदीरेंतो' इच्चेदेण गाहापच्छद्धेण भुजगारविसयाणं समुक्कित्तणादिअणियोगद्दाराणं देसामासयभावेण कालाणियोगो परूविदो। तदो एवंविहो भुजगारो एत्थ विहासियव्वो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। सो पुण भुजगारो पयडिभुजगारादिभेदेण चउव्विहो होदि त्ति जाणावणट्ठमाह—

* पयडिभुजगारो ट्ठिदिभुजगारो अणुभागभुजगारो पदेसभुजगारो।

§ ३४३. एवमेसो पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसुदीरणाविसयो चउव्विहो भुजगारो एत्थ विहासियव्वो त्ति भणिदं होइ। ण केवलं भुजगारो चेव एत्थ विहासियव्वो, किंतु भुजगारविसेसलक्खणो पदणिक्खेवो, पदणिक्खेवविसेसलक्खणा वड्ढिउदीरणा च विहासियव्वा, तेसिं तत्थेवंतब्भावादो त्ति। एदं च सव्वं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसुदीरणासु जहावसरमेव विहासियं त्ति णेदाणि तप्पवंचो कीरदे।

* एवं मग्गणाए कदाए समत्ता गाहा भवदि।

§ ३४४. सुगममेदं पयदत्थोवसंहारवक्कं। एवं पयदत्थमुवसंहरिय संपहि चउत्थीए गाहाए अत्थविहासणट्ठमुवरिमसुत्तपबंधमोदारइस्सामो—

---

प्रकार इस द्वारा भी अल्पतर संज्ञावाली अवस्थाविशेष सूचित की गई है। इन दोनोंके देशामर्शकभावसे अवस्थित और अवक्तव्य संज्ञावाले अवस्थाविशेषोंका यहीं पर संग्रह कर लेना चाहिए। पुनः 'अणुसमयमुदीरेंतो' इस प्रकार उक्त गाथाके इस उत्तरार्धद्वारा भुजगारविषयक समुत्कीर्तनादि अनुयोगद्वारोंके देशामर्षकरूपसे काल अनुयोगद्वारका कथन किया है। इसलिए इस प्रकार भुजगारका यहाँ पर व्याख्यान करना चाहिए यह इस सूत्रका भावार्थ है। परन्तु वह भुजगार प्रकृति भुजगार आदिके भेदसे चार प्रकारका है यह ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* वह भुजगार चार प्रकारका है—प्रकृतिभुजगार, स्थितिभुजगार, अनुभागभुजगार और प्रदेशभुजगार।

§ ३४३. इस प्रकार प्रकृतिउदीरणा, स्थितिउदीरणा, अनुभागउदीरणा और प्रदेशउदीरणाको विषय करनेवाले चार प्रकारके उस भुजगारका यहाँ व्याख्यान करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँ पर केवल भुजगारका ही व्याख्यान नहीं करना चाहिए, किन्तु भुजगारविशेष है लक्षण जिसका ऐसे पदनिक्षेपका तथा पदनिक्षेपविशेष है लक्षण जिसका ऐसी वृद्धि उदीरणाका व्याख्यान करना चाहिए, क्योंकि उनका उसीमें अर्थात् भुजगारउदीरणामें ही अन्तर्भाव होता है। परन्तु इस सबका प्रकृति उदीरणा, स्थिति उदीरणा, अनुभाग उदीरणा और प्रदेश-उदीरणाके समय यथावसर ही व्याख्यान कर आये हैं, इसलिए इस समय उनका विस्तार नहीं करते हैं।

* इस प्रकार भुजगारका अनुमार्गण करने पर तीसरी गाथाका अर्थ समाप्त होता है।

§ ३४४. प्रकृत अर्थका उपसंहार करनेवाला यह वाक्य सुगम है। इस प्रकार प्रकृत

**जो जं संकामेदि य जं बंधदि जं च जो उदीरेदि ।**
**तं होइ केण अहियं ट्ठिदि-अणुभागे पदेसग्गे ॥६२॥ त्ति**

§ ३४५. पुव्विल्लेहिं तीहिं गाहासुत्तेहि पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसविसयासु उदयोदीरणासु सवित्थर विहासिय समत्तासु किमट्ठमेसा चउत्थी गाहा समोइण्णा त्ति ? तासिं चेव उदयोदीरणाण पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसविसयाणं बंध-संकम-संतकम्मेहिं सह जहण्णुक्कस्सपदेहि अप्पाबहुअं परूवणट्ठमेसा गाहा समागदा । त जहा—

§ ३४६. 'जो जं संकामेदि य' इच्चेदेण सुत्तावयवेण संकमो गहिदो । 'जं बंधदि' त्ति एदेण वि बंधो गहेयव्वो । एदेणेव संतकम्मस्स वि गहण कायव्वं, बंधस्सेव विदियादिसमएसु संतकम्मववएसोववत्तीदो । 'जं च जो उदीरेदि' त्ति एदेण वि उदयो-दीरणाणं दोण्हं पि संगहो कायव्वो, उदीरणाणिद्देसस्स देसामासयत्तादो । एदेसिं च पंचण्हं पदाणं जहण्णुक्कस्सभावविसेसिदाणमेक्कमेक्केण सह अप्पाबहुअं कायव्वमिदि जाणावणट्ठं 'त केण होइ अहियं' ति भणिदं । एदेसिं च संकमादिपदाण पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसविसयत्तजाणावणट्ठ 'ट्ठिदि-अणुभागे पदेसग्गे' त्ति विसेसणं । ण च एत्थ

अर्थका उपसंहार करके अब चौथी गाथाके अर्थका व्याख्यान करनेके लिए आगेके सूत्र-प्रबन्धका अवतार करेंगे—

*** जो जीव स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंमें से जिसे संक्रमित करता है, जिसे बाँधता है और जिसे उदीरित करता है वह किससे अधिक होता है ॥६२॥**

§ ३४५. **शंका**—पूर्वकी तीन गाथाओं द्वारा प्रकृति स्थिति, अनुभाग और प्रदेशविषयक उदय-उदीरणाका विस्तारके साथ व्याख्यान समाप्त होने पर यह चौथी गाथा किसलिए आई है ।

**समाधान**—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशविषयक उन्हीं उदय और उदीरणाके बन्ध, संक्रम और सत्कर्मके साथ जघन्य और उत्कृष्ट विशेषण सहित अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए यह गाथा आई है । यथा—

§ ३४६. उक्त गाथामें आये हुए 'जो जं संकामेदि' इस सूत्रवचन द्वारा संक्रमका ग्रहण किया है । 'जं बंधदि' इस पदद्वारा भी बन्धका ग्रहण करना चाहिए । तथा इसी पदद्वारा सत्कर्मका भी ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि बन्धकी ही द्वितीयादि समयोंमें सत्कर्म संज्ञा बन जाती है । 'जं च जो उदीरेदि' इस पद द्वारा भी उदय और उदीरणा इन दोनोंका भी संग्रह करना चाहिए, क्योंकि यहाँ पर उदीरणा पदका निर्देश देशामर्षक है । जघन्य और उत्कृष्ट विशेषण युक्त इन्हीं पाँचों पदोंका एकका एकके साथ अल्पबहुत्व करना चाहिए इस बातका ज्ञान कराने लिए उक्त गाथामें 'तं केण होइ अहियं' यह पद कहा है । तथा ये संक्र-मादिक प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशविषयक होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए उक्त गाथामें ट्ठिदि अनुभागे पदेसग्गे' यह विशेषण दिया है । यहाँ पर उक्त पदमें 'प्रकृति' पदका

पयडिणिद्देसो णत्थि त्ति आसंकणिज्जं, ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाणं तदविणाभावित्तेण तदुवलद्धीदो। तदो पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसविसयबंध-संकम-संतकम्मोदयोदीरणाणं जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुअपरूवणट्ठमेदं गाहासुत्तमोइण्णं ति सिद्धं । णेदमेत्थासंकणिज्जं, वेदगपरूवणाए उदयोदीरणाओ मोत्तूण बंध-संकम-संतकम्माणं परूवणा असंबद्धा त्ति ? किं कारणं ? उदयोदीरणविसयणिण्णयजणणट्ठमेव तेसिं पि परूवणे विरोहाभावादो। विहत्ति-संकम-वेदगाहियारेसु वुत्तसव्वत्थोवसंहारमुहेण चूलियापरूवणट्ठं गाहासुत्तमेद-मोइण्णं ति भावत्थो। एवमेदिस्से गाहाए चउत्थीए अत्थं[1] परूविय संपहि एत्थेव णिण्णयजणणट्ठं चुण्णिसुत्ताणुगमं कस्सामो—

*** एदिस्से गाहाए अत्थो—बंधो संतकम्मं उदयोदीरणा संकमो एदेसिं पंचण्हं पदाणं उक्कस्समुक्कस्सेण जहण्णं जहण्णेण अप्पाबहुअं पयडीहिं ट्ठिदीहिं अणुभागेहिं पदेसेहिं।**

§ ३४७. एत्थ सुत्तत्थसंबंधे कीरमाणे पयडीहिं ट्ठिदीहिं अणुभागेहिं पदेसेहिं य एदेसिं पंचण्हं पदाणमप्पाबहुअमेदिस्से चउत्थीए सुत्तगाहाए अत्थो त्ति पदसंबधो कायव्वो। तत्थ काणि ताणि पंच पदाणि त्ति वुत्ते 'बंधो संतकम्ममुदयोदीरणा संकमो'

---

निर्देश नहीं किया है ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके अविनाभावी होनेसे उसका ग्रहण हो जाता है। इसलिए प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशविषयक बन्ध, संक्रम, सत्कर्म, उदय और उदीरणाके जघन्य और उत्कृष्ट विशेषणयुक्त अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए यह गाथा सूत्र आया है यह सिद्ध हुआ।

वेदकप्ररूपणामें उदय और उदीरणाके सिवाय बन्ध, संक्रम और सत्कर्मकी प्ररूपणा असम्बद्ध है ऐसी आशंका यहाँ नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उदय और उदीरणाविषयक निर्णयके करनेके लिए ही उनका भी यहाँ कथन करनेमें कोई विरोध नहीं आता। विभक्ति-अधिकार, संक्रम अधिकार और वेदक अधिकारमें जो अर्थ कहा गया है उस सब अर्थके उपसंहार द्वारा चूलिकाका कथन करनेके लिए यह गाथा सूत्र आया है यह उक्त कथनका भावार्थ है। इस प्रकार इस चौथी गाथाके अर्थका कथन करके अब इसी विषयमें निर्णय करनेके लिए चूर्णिसूत्रका अनुगम करेंगे—

*** इस गाथाका अर्थ—बन्ध, सत्कर्म, उदय, उदीरणा और संक्रम इन पाँचों पदोंका प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंका आवलम्बन लेकर उत्कृष्टका उत्कृष्टके साथ और जघन्यका जघन्यके साथ अल्पबहुत्व करना चाहिए।**

§ ३४७. यहाँ पर सूत्र और अर्थका सम्बन्ध करनेपर प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी अपेक्षा इन पाँच पदोंका अल्पबहुत्व करना चाहिए यह इस चौथी सूत्रगाथाका अर्थ है ऐसा यहाँ पदसम्बन्ध करना चाहिए। प्रकृतमें वे पाँच पद कौन है ऐसी पृच्छा

१. आ०–ता०प्रत्योः चउत्थाणत्थं इति पाठः।

त्ति तेसिं णामणिद्देसो कओ। कथं तेसिमप्पाबहुअं कायव्वमिदि पुच्छिदे 'उक्कस्समुक्कस्सेण जहण्णं जहण्णेणे' त्ति भणिदं। पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसविसयजहण्णुक्कस्सबंध-संकम-संतकम्मोदयोदीरणाणं सत्थाणप्पाबहुअमेत्थ कायव्वमिदि वुत्तं भवदि। तदो एदेसिं च जहाकमं परूवणं कुणमाणो सुत्तयारो पयडीहिं ताव उक्कस्सप्पाबहुअपरूवणट्ठमाह—

*** पयडीहिं उक्कस्सेण जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति ओदिण्णाओ च ताओ थोवाओ।**

§ ३४८. एत्थ 'पयडीहिं' ति णिद्देसो ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसवुदासफलो। 'उक्कस्सेणे' त्ति णिद्दसो जहण्णपदपडिसेहट्ठो। 'जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति ओदिण्णाओ च ताओ थोवाओ' त्ति वयणमुदयोदीरणपयडीणं समाणभावपदुप्पायणदुवारेण उवरि भणिस्समाणासेसपदेहिंतो थोवभावविहाणफलं। कुदो एदासिं थोवभावणिण्णयो चेव ? दससंखावच्छिण्णपमाणत्तादो।

*** जाओ बज्झंति ताओ संखेज्जगुणाओ।**

§ ३४९. कुदो ? वावीससंखावच्छिण्णपमाणत्तादो।[1]

होनेपर बन्ध, सत्कर्म, उदय, उदीरणा और संक्रम इस प्रकार उनका नामनिर्देश किया है। उनका अल्पबहुत्व किस प्रकार करना चाहिए ऐसी पृच्छा होनेपर उत्कृष्टका उत्कृष्टके साथ और जघन्यका जघन्यके साथ यह कहा है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशविषयक जघन्य और उत्कृष्ट विशेषण युक्त बन्ध, संक्रम, सत्कर्म, उदय और उदीरणाका स्वस्थान अल्पबहुत्व यहाँ पर करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसलिए इनका क्रमसे कथन करते हुए सूत्रकार प्रकृतियोंकी अपेक्षा सर्व प्रथम उत्कृष्ट अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए सूत्र कहते हैं—

*** प्रकृतियोंकी अपेक्षा जो प्रकृतियाँ उदीरित होती हैं या उदयमें आती हैं वे स्तोक हैं।**

§ ३४८. इस सूत्रमें 'पयडीहिं' पदका निर्देश स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंके निराकरण करनेके लिए किया है। 'उक्कस्सेण' पदका निर्देश जघन्य पदके निराकरण करनेके लिए किया है। 'जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति ओदिण्णाओ च ताओ थोवाओ' पदका निर्देश उदय और उदीरणारूप प्रकृतियोंकी समानताके कथनके द्वारा आगे कहे जानेवाले समस्त पदोंसे स्तोकपनेका विधान करनेके लिए किया है।

**शंका**—इनके स्तोकपनेका निर्णय है ही यह कैसे ?

**समाधान**—क्योंकि इनका दस संख्यारूप परिमितप्रमाण है।

*** जो प्रकृतियाँ बँधती हैं वे उनसे संख्यातगुणी हैं।**

§ ३४९. क्योंकि उनका बाईस संख्यारूप परिमित प्रमाण है।

१. मूलप्रतौ मध्ये 'संखाव' इति पाठः त्रुटितः।

*** जाओ संकामिज्जंति ताओ विसेसाहियाओ ।**

§ ३५० कुदो ? सत्तावीसपयडिपमाणत्तादो ।

*** संतकम्मं विसेसाहियं ।**

§ ३५१ कुदो ? अट्ठावीसमोहपयडीणमुक्कस्ससंतकम्मभावेण समुवलंभादो ।

एवं पयडीहि उक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं ।

§ ३५२. संपहि पयडीहि जहण्णप्पाबहुअगवेसणट्ठमाह—

*** जहण्णाओ जाओ पयडीओ बज्झंति संकामिज्जंति उदीरिज्जंति उदिण्णाओ संतकम्मं च एक्का पयडी ।**

§ ३५३. तं जहा—बंधेण ताव जहण्णेण लोहसंजलणसण्णिदा एक्का चेव पयडी होदि, अणियट्टिम्मि मायासंजलणबंधवोच्छेदे तदुवलंभादो । संकमो वि मायासंजलण-सण्णिदाए एक्किस्से चेव पयडीए होइ, माणसंजलणसंकमवोच्छेदे तदुवलंभादो । उदयोदीरण-संतकम्माणं पि जहण्णभावो अणियट्टि-सुहुमसांपराइएसु घेत्तव्वो । एव-मेदासिं जहण्णबंध-संकम-संतकम्मोदयदीरणाणमेयपयडिपमाणत्तदो णत्थि अप्पाबहुअ-

---

*** जो प्रकृतियाँ संक्रमित होती हैं वे उनसे विशेष अधिक हैं ।**

§ ३५० क्योंकि वे सत्ताईस प्रकृतिप्रमाण हैं ।

*** उनसे सत्कर्मरूप प्रकृतियाँ विशेष अधिक हैं ।**

§ ३५१. क्योंकि उत्कृष्ट सत्कर्मरूपसे अट्ठाईस मोहप्रकृतियोंकी उपलब्धि होती है ।

इस प्रकार प्रकृतियोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

§ ३५२. अब प्रकृतियोंकी अपेक्षा जघन्य अल्पबहुत्वका अनुसन्धान करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** जघन्यरूपसे जो प्रकृतियाँ बँधती हैं, संक्रमित होती हैं, उदीरित होती हैं, उदयको प्राप्त होती हैं तथा सत्कर्मरूपमें हैं वह एक प्रकृति है ।**

§ ३५३. खुलासा इस प्रकार है—बन्धकी अपेक्षा तो कमसे कम लोभसंज्वलन संज्ञा-वाली एक ही प्रकृति है, क्योंकि अनिवृत्तिकरणमें मायासंज्वलनकी बन्धव्युच्छित्ति होने पर उसकी उपलब्धि होती है । संक्रमरूप भी मायासंज्वलन संज्ञावाली एक ही प्रकृति है, क्योंकि मानसंज्वलनके संक्रमकी व्युच्छित्ति होने पर उसकी उपलब्धि होती है । उदय, उदीरणा और सत्कर्मका भी जघन्यपना अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायमें ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार इन जघन्य बन्ध, जघन्य संक्रम, जघन्य सत्कर्म, जघन्य उदय और

मिदि जाणविदमेदेण सुत्तेण ।

एवं जहण्णप्पाबहुए समत्ते पयडिविसयप्पाबहुअं समत्तं ।

§ ३५४. संपहि ट्ठिदिप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तपबंधमाह—

*** ट्ठिदीहिं उक्कस्सेण जाओ ट्ठिदीओ मिच्छत्तस्स बज्झंति ताओ थोवाओ ।**

§ ३५५. एत्थ ठिदिविसयमप्पाबहुअं भणामि त्ति जाणावणट्ठं 'ट्ठिदीहि' त्ति णिद्देसो । तत्थ वि जहण्णुक्कस्समेदेण दुविहप्पाबहुअसंभवे उक्कस्सप्पाबहुअं ताव उच्चदि त्ति पदुप्पायणट्ठमुक्कस्सेणे त्ति णिद्देसो कओ । तं च पयडिपरिवाडिमस्सियूण परूवेमि त्ति जाणावणट्ठं 'मिच्छत्तस्से' त्ति णिद्देसो । तदो मिच्छत्तस्स जाओ ट्ठिदीओ उक्कस्सेण बज्झंति ताओ थोवाओ त्ति सुत्तत्थसंबंधो । किंपमाणाओ मिच्छत्तस्स उक्कस्सेण बज्झमाणट्ठिदीओ ? आबाहूणसत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ताओ । कुदो ? णिसेयट्ठिदीणं चेव विवक्खियत्तादो ।

*** उदीरिज्जंति संकामिज्जंति च विसेसाहियाओ ।**

§ ३५६. मिच्छत्तस्स उक्कस्सेण जाओ ट्ठिदीओ त्ति पुव्वसुत्तादो अणुवट्टदे । तदो मिच्छत्तस्स संकामिज्जमाणोदीरिज्जमाणट्ठिदीओ समाणाओ होदूण पुव्विल्लबज्झमाण-

---

जघन्य उदीरणाके एक प्रकृतिप्रमाण होनेसे अल्पबहुत्व नहीं है इस बातका ज्ञान इस सूत्र द्वारा कराया गया है ।

इस प्रकार जघन्य अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर
प्रकृतिविषयक अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

§ ३५४. अब स्थिति अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

*** स्थितियोंकी अपेक्षा उत्कृष्टरूपसे मिथ्यात्वकी जो स्थितियाँ बँधती हैं वे स्तोक हैं ।**

§ ३५५. यहाँ स्थितिविषयक अल्पबहुत्वको कहते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'ट्ठिदीहिं' पदका निर्देश किया है । उसमें भी जघन्य और उत्कृष्टके भेदसे दो प्रकारके अल्पबहुत्वके सम्भव होनेपर सर्वप्रथम उत्कृष्ट अल्पबहुत्वका कथन करते हैं इस बातका कथन करनेके लिए 'उक्कस्सेण' पदका निर्देश किया है । और उसे प्रकृतियोंकी परिपाटीका आश्रय कर कहते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'मिच्छत्तस्स' पदका निर्देश किया है । इसलिए मिथ्यात्वकी जो स्थितियाँ उत्कृष्टरूपसे बँधती है वे स्तोक है इस प्रकार सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है । मिथ्यात्वकी उत्कृष्टरूपसे बध्यमान स्थितियोंका क्या प्रमाण है ? वे आबाधासे न्यून सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपमप्रमाण हैं, क्योंकि यहाँ पर निषेकस्थितियाँ ही विवक्षित हैं ।

*** उनसे उदीर्यमाण और संक्रमित होनेवाली स्थितियाँ विशेष अधिक हैं ।**

§ ३५६. 'मिच्छत्तस्स जाओ ट्ठिदीओ' इसकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, इसलिए

ट्ठिदीहिंतो विसेसाहियाओ त्ति सुत्तत्थसंबंधो। कुदो एदासिं विसेसाहियत्तं ? बंधावलियाए उदयावलियाए च ऊणसत्तरिसागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो।

*** उदिण्णाओ विसेसाहियाओ।**

§ ३५७. तं कथं ? उदीरिज्जमाणट्ठिदीओ सव्वाओ चेव उदिण्णाओ। पुणो तक्कालवेदिज्जमाणउदयट्ठिदी वि उदिण्णा होइ, पत्तोदयकालत्तादो। तदो एगट्ठिदिमेत्तेण विसेसाहियत्तमेत्थ घेत्तव्वं।

*** संतकम्मं विसेसाहियं।**

§ ३५८. कुदो ? संपुण्णसत्तरिसागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो। केत्तियमेत्तो विसेसो ? समयूणदोआवलिमेत्तो, बंधावलियाए सह समयूणुदयावलियाए एत्थ पवेसुवलंभादो।

*** एवं सोलसकसायाणं।**

§ ३५९. सुगममेदमप्पणासुत्तं, अप्पाबहुआलावकयविसेसाभावणिबंणत्तादो।

*** सम्मत्तस्स उक्कस्सेण जाओ ट्ठिदीओ संकामिज्जंति उदीरिज्जंति च ताओ थोवाओ।**

मिथ्यात्वकी संक्रमित होनेवाली और उदीरित होनेवाली स्थितियाँ समान होकर पूर्वकी बध्यमान स्थितियोंसे विशेष अधिक हैं इस प्रकार सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है।

**शंका**—इनका विशेषाधिकपना किस कारणसे है ?

**समाधान**—क्योंकि ये क्रमसे बन्धावलि और उदयावलिसे न्यून सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपमप्रमाण हैं।

*** उनसे उदयरूप स्थितियाँ विशेष अधिक हैं।**

§ ३५७. वह कैसे ? क्योंकि उदीर्यमाण सभी स्थितियाँ उदयरूप हैं। तथा तत्काल वेद्यमान स्थिति भी उदयरूप है, क्योंकि उसका उदयकाल प्राप्त है। इसलिए उदीर्यमाण स्थितियोंसे उदयरूप स्थितियाँ एक स्थितिमात्र विशेष अधिक है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

*** उनसे सत्कर्म विशेष अधिक है।**

§ ३५८. क्योंकि सत्कर्मरूप स्थितियोंका प्रमाण पूरा सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपम है।

**शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—एक समय कम दो आवलिप्रमाण है, क्योंकि बन्धावलिके साथ एक समय कम उदयावलिका यहाँ प्रवेश उपलब्ध होता है।

*** इसी प्रकार सोलह कषायोंके विषयमें जानना चाहिए।**

§ ३५९. यह अर्पणासूत्र सुगम है, क्योंकि अल्पबहुत्व आलापकृत विशेषभाव इसका कारण है।

*** सम्यक्त्वकी उत्कृष्टरूपसे जो स्थितियाँ संक्रमित होती हैं और उदीरित होती हैं वे स्तोक हैं।**

§ ३६० मिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय अंतोमुहुत्तपडिभग्गेण वेदगसम्मत्ते पडिवण्णे सम्मत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिसंतकम्ममंतोमुहुत्तूणसत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्तं होइ। पुणो तं संतकम्मं सम्माइट्ठिविदियसमए उदयावलियबाहिरादो ओकड्डियूण वेदमाणस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा उक्कस्सट्ठिदिसंकमो च होदि। तेण कारणेणंतोमुहुत्तूणसत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ आवलियूणाओ सम्मत्तस्स संकामिज्जमाणोदीरिज्जमाणट्ठिदीओ होंति त्ति थोवाओ जादाओ।

* उदिण्णाओ विसेसाहियाओ।

§ ३६१. केत्तियमेत्तो विसेसो? एगट्ठिदिमेत्तो। किं कारणं? तक्कालवेदिज्जमाणुदयट्ठिदीए वि एत्थंतब्भावदंसणादो।

* संतकम्मं विसेसाहियं।

§ ३६२. केत्तियमेत्तो विसेसो? संपुण्णावलियमेत्तो। किं कारणं? सम्माइट्ठिपढमसमए गलिदेगट्ठिदीए सह समयूणुदयावलियाए एत्थ पवेसुवलंभादो।

* सम्मामिच्छत्तस्स जाओ ट्ठिदीओ उदीरिज्जंति ताओ थोवाओ।

---

§ ३६०. मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध कर अन्तर्मुहूर्तमें प्रतिभग्न हुए जीवके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेपर सम्यक्त्वका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म अन्तर्मुहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपमप्रमाण होता है। पुनः उस सत्कर्मका सम्यग्दृष्टिके दूसरे समयमें उदयावलिके बाहरसे अपकर्षण कर वेदन करनेवाले जीवके उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा और उत्कृष्ट स्थिति संक्रम होता है। इस कारण अन्तर्मुहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपममेंसे एक आवलि-कम सब स्थितियाँ सम्यक्त्वकी संक्रमित होनेवाली और उदीर्यमाण स्थितियाँ होती हैं, इसलिए वे स्तोक हैं।

* उनसे उदयरूप स्थितियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ३६१. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है?

**समाधान**—एक स्थितिमात्र है, क्योंकि तत्काल वेद्यमान उदय स्थितिका भी यहाँ पर अन्तर्भाव देखा जाता है।

* उनसे सत्कर्म विशेष अधिक है।

§ ३६२. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है?

**समाधान**—सम्पूर्ण आवलिमात्र है, क्योंकि सम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें गलित हुई एक स्थितिके साथ एक समय कम उदयावलिका यहाँ प्रवेश देखा जाता है।

**विशेषार्थ**—तात्पर्य यह है कि जो मिथ्यात्वकी अन्तर्मुहूर्तकम उत्कृष्ट स्थितिके साथ वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उसके सम्यक्त्वको प्राप्त करनेके प्रथम समयमें पूर्वमें कहे अनुसार स्थितियाँ उदीरित होती हैं वे स्तोक हैं।

* सम्यग्मिथ्यात्वकी जो स्थितियाँ उदीरित होती हैं वे स्तोक हैं।

§ ३६३. किंपमाणाओ ताओ ? दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं उदयावलियाए च ऊणसत्तरि-सागरोवमकोडाकोडिपमाणाओ। तं कथं ? मिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिं बंधियूणंतोमुहुत्त-पडिभग्गो सव्वलहुं सम्मत्तं घेत्तूण सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिसंतकम्ममुप्पाइय पुणो सव्वजहण्णेणंतोमुहुत्तेण सम्मामिच्छत्तमुवणमिय तं संतकम्ममुदयावलियबाहिरमुदीरेदि त्ति एदेण कारणेणाणंतरणिद्दिट्ठपमाणाओ होदूण थोवाओ जादाओ।

* उदिण्णाओ ट्ठिदीओ विसेसाहियाओ।

§ ३६४. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो। कुदो ? तक्कालवेदिज्जमाणु-दयट्ठिदीए वि एत्थंतब्भूदत्तादो।

* संकामिज्जंति ट्ठिदीओ विसेसाहियाओ।

§ ३६५. केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंतोमुहुत्तमेत्तो। कुदो ? मिच्छत्तुक्कस्सट्ठिदिं बंधियूण सम्मत्तं पडिवण्णविदियसमए चेव सम्मामिच्छत्तस्सुक्कस्सट्ठिदिसंकमावलंबणादो।

* संतकम्मट्ठिदीओ विसेसाहियाओ।

§ ३६६. केत्तियमेत्तो विसेसो ? संपुण्णावलियमेत्तो। कुदो ? सम्माइट्ठिपढमसमए

---

§ ३६३. शंका—उनका प्रमाण क्या है ?

समाधान—दो अन्तर्मुहूर्त और उदयावलि कम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपमप्रमाण है।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्धकर अन्तर्मुहूर्तमें प्रतिभग्न हुआ जो जीव अतिशीघ्र सम्यक्त्वको ग्रहण करनेके साथ सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मको उत्पन्नकर पुनः सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त कालके बाद सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्तकर उदयावलिके बाहर स्थित उस सत्कर्मकी उदीरणा करता है उस जीवके इस कारण वे उदीर्यमाण स्थितियाँ अनन्तर निर्दिष्ट प्रमाण होनेसे सबसे स्तोक है।

* उनसे उदयरूप स्थितियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ३६४. शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—एक स्थितिमात्र है, क्योंकि तत्काल वेद्यमान उदयस्थितिकी इन स्थितियोंमें सम्मिलित है।

* उनसे सक्रमित होनेवाली स्थितियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ३६५. शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—अन्तर्मुहूर्तमात्र है, क्योंकि मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधकर सम्यक्त्व-को प्राप्त होनेके दूसरे समयमें ही सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितियोंके संक्रमका यहाँ अव-लम्बन है।

* उनसे सत्कर्मस्थितियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ३६६. शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

चेव उक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मावलंवणादो ।

*** णवणोकसायाणं जाओ ट्ठिदीओ बज्झंति, ताओ थोवाओ ।**

§ ३६७. कुदो ? आबाहूणसगसगुक्कस्सट्ठिदिबंधपमाणत्तादो ।

*** उदीरिज्जंति संकामिज्जंति य संखेज्जगुणाओ ।**

§ ३६८. कुदो ? सव्वासिं बंध-संकमणावलियाहिं उदयावलियाए च परिहीण-चत्तालीससागरोवमकोडाकोडीमेत्तट्ठिदीणं संकामिज्जमाणोदीरिज्जमाणाणमुवलंभादो ।

*** उदिण्णाओ विसेसाहियाओ ।**

§ ३६९. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो ।

*** संतकम्मट्ठिदीओ विसेसाहियाओ ।**

§ ३७० केत्तियमेत्तो विसेसो ? समयूणदोआवलिमेत्तो । किं कारण ? समयूणुदयावलियाए सह संकमणावलियाए एत्थ पवेसुवलंभादो ।

एवमुक्कस्सट्ठिदिअप्पाबहुअं समत्तं ।

---

**समाधान**—सम्पूर्ण आवलिमात्र है, क्योंकि सम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें ही उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मका यहाँ अवलम्बन है ।

**विशेषार्थ**—उदयावलिप्रमाण स्थितियोंका संक्रम नहीं होता, किन्तु सत्कर्मस्थितियोंमें उनका अन्तर्भाव हो जाता है । इसलिए यहाँ संक्रमित होनेवाली स्थितियोंसे सत्कर्मरूप स्थितियाँ आवलिमात्र अधिक कहीं है ।

*** नौ नोकषायोंकी जो स्थितियाँ बँधती हैं वे स्तोक हैं ।**

§ ३६७. क्योंकि वे आबाधा कम अपने-अपने उत्कृष्ट स्थितिबन्धप्रमाण हैं ।

*** उनसे उदीर्यमाण और संक्रमित होनेवाली स्थितियाँ संख्यातगुणी हैं ।**

§ ३६८. क्योंकि बंधावलि, संक्रमणावलि और उदयावलिसे न्यून चालीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम प्रमाण सम्पूर्ण स्थितियाँ संक्रमित होती हुई और उदीरित होती हुई उपलब्ध होती हैं ।

*** उनसे उदयरूप स्थितियाँ विशेष अधिक हैं ।**

§ ३६९. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—एक स्थितिमात्र है ।

*** उनसे सत्कर्म स्थितियाँ विशेष अधिक हैं ।**

§ ३७०. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ।

**समाधान**—एक समय कम दो आवलिप्रमाण है, क्योंकि एक समय कम उदयावलिके साथ संक्रमणावलिका इनमें प्रवेश उपलब्ध होता है ।

**विशेषार्थ**—सोलह कषायोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध होकर बन्धावलिके बाद उनकी उदयावलिप्रमाण स्थितियोंको छोड़ कर अन्य सब स्थितियोंका नौ नोकषायरूप संक्रम होने पर नौ नोकषायोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म एक आवलि कम चालीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम पाया जाता है । यही बात यहाँ अल्पबहुत्वके प्रसंगसे बतलाई गई है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

§ ३७१. संपहि जहण्णट्ठिदिअप्पाबहुअपरूवणट्ठमाह—

*** जहण्णेण मिच्छत्तस्स एगा ट्ठिदी उदीरिज्जदि उदयो संतकम्मं च ।**

§ ३७२. तं जहा—उदीरणा ताव पढमसम्मत्ताहिमुहमिच्छाइट्ठिस्स समयाहियावलियमेत्तमिच्छत्तपढमट्ठिदीए सेसाए एगट्ठिदिमेत्ता होदूण जहण्णिया होइ। उदयो वि तस्सेवावलियपविट्ठपढमट्ठिदियस्स जहण्णओ होइ । संतकम्मं पुण दंसणमोहक्खवगस्स एगट्ठिदी दुसमयकालमेत्तमिच्छत्तट्ठिदिसंतकम्मं घेत्तूण जहण्णयं होइ । तदो मिच्छत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा उदयो संतकम्मं च एगट्ठिदिमेत्ताणि होदूण थोवाणि जादाणि।

*** जट्ठिदिउदयो च तत्तियो चेव ।**

§ ३७३. किं कारणं ? मिच्छत्तपढमट्ठिदीए आवलियपविट्ठाए आवलियमेत्तकालं जहण्णओ ट्ठिदिउदओ होइ । तत्थ जट्ठिदिउदयो वि तत्तियो चेव, तम्हा जट्ठिदिउदयो तत्तियो चेवे त्ति भणिदं ।

*** जट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं ।**

---

§ ३७१. अब जघन्य स्थिति अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए कहते हैं—

*** जघन्यरूपसे मिथ्यात्वकी एक स्थिति प्रमाण उदीरणा है, उदय है और सत्कर्म है ।**

§ ३७२. यथा—उदीरणा तो प्रथम सम्यक्त्वके अभिमुख हुए मिथ्यादृष्टिके एक समय अधिक आवलिमात्र मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिके शेष रहने पर एक स्थितिमात्र हो कर जघन्य होती है । उदय भी आवलि प्रविष्ट प्रथम स्थितिवाले उसी जीवके जघन्य होता है। तथा सत्कर्म भी दर्शनमोह–क्षपक मिथ्यादृष्टि जीवके दो समयप्रमाण एक स्थिति सत्कर्मको ग्रहण कर एक स्थितिरूप जघन्य होता है। इसलिए मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति उदीरणा, जघन्य स्थिति उदय और जघन्य स्थिति सत्कर्म एक स्थितिमात्र होकर सबसे स्तोक होते हैं ।

विशेषार्थ—जो जीव दर्शनमोहनीयकी उपशमना कर रहा है उसके मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थितियोंके शेष रहने पर उदयावलिके बाहरकी एक स्थितिकी उदीरणा होने पर उदीरणा एक स्थितिप्रमाण होती है । उसीके उदयावलिमें प्रवेश करने पर प्रत्येक समयमें एक आवलिकाल तक मिथ्यात्वकी एक स्थितिका उदय होता है । तथा जिस दर्शनमोहनीयके क्षपकके मिथ्यात्वकी दो समयप्रमाण एक स्थिति शेष रहती है उसके मिथ्यात्वकी एक स्थितिका सत्त्व होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

*** यत्स्थिति उदय उतना ही है ।**

§ ३७३. क्योंकि मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिके आवलिके भीतर प्रविष्ट होनेपर आवलिप्रमाण काल तक जघन्य स्थिति उदय होता है । वहाँपर यत्स्थिति उदय भी उतना ही है, इसलिए यत्स्थिति उदय उतना ही है यह कहा है ।

*** उससे यत्स्थितिसत्कर्म संख्यातगुणा है ।**

§ ३७४. किं कारणं ? एगट्ठिदीदो दुसमयकालट्ठिदीए दुगुणत्तुवलंभादो ।

*** जट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ ३७५ कुदो ? समयाहियावलियपमाणत्तादो ।

*** जहण्णओ ट्ठिदिसंतकम्मो असंखेज्जगुणो ।**

§ ३७६. कुदो ? पलिदो० असंखे०भागपमाणत्तादो ।

*** जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ।**

§ ३७७ किं कारणं ? सव्वविसुद्धबादरेइंदियपज्जत्तस्स पलिदोवमासंखेज्जभागपरिहीणसागरोवममेत्तजहण्णट्ठिदिबंधग्गहणादो ।

*** सम्मत्तस्स जहण्णगं ट्ठिदिसंतकम्मं संकमो उदीरणा उदयो च एगा ट्ठिदी ।**

---

§ ३७४. क्योंकि एक स्थितिसे दो समयकालवाली स्थिति दुगुनी उपलब्ध होती है ।

*** उससे यत्स्थितिउदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ ३७५. क्योंकि वह एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण है ।

**विशेषार्थ**—यहाँ पर मिथ्यात्वका जघन्य स्थितिउदय और जघन्य यत्स्थितिउदय ये दोनों एक ही है, क्योंकि यहाँ पर जो उदयरूप निषेक है उसकी कालकी अपेक्षा स्थिति भी एक ही समयप्रमाण है, इसलिए प्रकृतमें जघन्य यत्स्थिति उदयको पूर्वोक्त जघन्य स्थिति उदीरणा आदिके समान कहा है । मात्र जघन्य स्थितिसत्कर्मका निषेक तो एक है और उसकी कालकी अपेक्षा स्थिति दो समय है, इसलिए प्रकृतमें यत्स्थितिउदयसे यत्स्थितिसत्कर्मको संख्यातगुणा कहा है । इसी प्रकार जघन्य स्थिति उदीरणा एक निषेकप्रमाण है और उसकी कालकी अपेक्षा स्थिति एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण है, इसलिए प्रकृतमें जघन्य यत्स्थितिसत्कर्मसे जघन्य यत्स्थितिउदीरणा असंख्यातगुणी कही है । यहाँ सर्वत्र यत्स्थितिपदसे निषेकस्थितिको ग्रहण न कर यथास्थान विवक्षित निषेकोंकी कालकी अपेक्षा स्थिति ली गई है ।

*** उससे जघन्य स्थितिसत्कर्म असंख्यातगुणा है ।**

§ ३७६. क्योंकि वह पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है ।

*** उससे जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ।**

§ ३७७. क्योंकि सर्व विशुद्ध बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवके पल्योपमके असंख्यातवें भागहीन सागरोपमप्रमाण जघन्य स्थितिबन्धका यहाँ पर ग्रहण किया है ।

**विशेषार्थ**—यहाँ पर जघन्य स्थितिसत्कर्मसे दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके समय मिथ्यात्वका जो जघन्य स्थितिसत्कर्म प्राप्त होता है उसका ग्रहण किया गया है । जघन्य स्थितिबन्धका स्पष्टीकरण मूलमें किया ही है ।

*** सम्यक्त्वका जघन्य स्थितिसत्कर्म, संक्रम, उदीरणा और उदय एक स्थितिप्रमाण है ।**

§ ३७८. तं जहा—कदकरणिज्जचरिमसमये सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिसंतकम्ममेगट्ठिदिमेत्तमुवलब्भदे। जहण्णट्ठिदिउदयो वि तत्थेव गहेयव्वो। अथवा कदकरणिज्जचरिमावलियाए सव्वत्थेव जहण्णट्ठिदिउदयो व समुवलब्भदे, तेत्तियमेत्तकालमेक्किस्सेव ट्ठिदीए उदयदंसणादो। पुणो कदकरणिज्जस्स समयाहियावलियाए ट्ठिदिउदीरणा जहण्णिया होइ, एगट्ठिदिविसयत्तादो। संकमो वि तत्थेव गहेयव्वो। एवमेदेसिमेगट्ठिदिपमाणत्तादो थोवत्तमिदि सिद्धं।

* जट्ठिदिसंतकम्मं जट्ठिदिउदयो च तत्तियो चेव।

§ ३७९. कुदो? कदकरणिज्जचरिमसमए तेसिं पि एगट्ठिदिपमाणत्तदंसणादो।

* सेसाणि जट्ठिदिगाणि असंखेज्जगुणाणि।

§ ३८०. कुदो? समयाहियावलियपमाणत्तादो।

---

§ ३७८. यथा—कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके अन्तिम समयमें सम्यक्त्वका जघन्य स्थितिसत्कर्म एकस्थितिमात्र उपलब्ध होता है। जघन्य स्थितिउदय भी वहीं पर ग्रहण करना चाहिए। अथवा कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिकी अन्तिम आवलिमें सर्वत्र ही जघन्य स्थिति उदय उपलब्ध होता है, क्योंकि उतने काल तक एक ही स्थितिका उदय देखा जाता है। तथा कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके सम्यक्त्वकी एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थितिके शेष रहनेपर स्थिति उदीरणा जघन्य होती है, क्योंकि प्रकृतमें जघन्य स्थितिउदीरणा एक उदयावलिके बाहरकी एक स्थितिकी ही होती है। संक्रमको भी वहीं पर ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार इन सबके एक स्थितिप्रमाण होनेसे स्तोकपना है यह सिद्ध हुआ।

**विशेषार्थ**—कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके जब सम्यक्त्वकी अन्तिम आवलिप्रमाण स्थिति शेष रहती है तब उसके प्रत्येक समयमें एक आवलि काल तक उदयस्वरूप एक ही स्थितिका उदय होता है, इसलिए यहाँ जघन्य स्थिति उदयको प्रकारान्तरसे एक स्थितिप्रमाण कहा है। शेष कथन सुगम है।

* यत्स्थितिमत्कर्म और यत्स्थितिउदय उतना ही है।

§ ३७९. क्योंकि कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके अन्तिम समयमें ये दोनों भी एक स्थितिप्रमाण देखे जाते हैं।

**विशेषार्थ**—पूर्वमें मिथ्यात्वके जघन्य यत्स्थितिउदयका जिस प्रकार स्पष्टीकरण किया है उसी प्रकार यहाँ पर इन दोनोंका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए।

* उनसे शेष यत्स्थितिक असंख्यातगुणे हैं।

§ ३८०. क्योंकि वे समयाधिक एक आवलिप्रमाण हैं।

**विशेषार्थ**—यहाँ पर 'शेष' पदसे यत्स्थितिउदीरणा, और यत्स्थितिसंक्रम लिया गया प्रतीत होता है, क्योंकि कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिके एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थितिके शेष रहनेपर जिस उपरितन स्थितिकी उदीरणा होती है, वह अपकर्षणपूर्वक होती है और अपकर्षण संक्रमका एक भेद है, इसलिए यत्स्थितिसंक्रम भी उतना ही जानना चाहिए।

*** सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णयं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं ।**

§ ३८१ कुदो ? एगट्ठिदिपमाणत्तादो ।

*** जट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं ।**

§ ३८२ कुदो ? दुसमयकालट्ठिदिपमाणत्तादो ।

*** जहण्णओ ट्ठिदिसंकमो असंखेज्जगुणो ।**

§ ३८३. कुदो ? पलिदोवमासंखेज्जभागपमाणत्तादो ।

*** जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ ३८४. कुदो ? देसूणसागरोवमपमाणत्तादो ।

*** जहण्णओ ट्ठिदिउदओ विसेसाहिओ ।**

§ ३८५. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो । किं कारणं ? उदयट्ठिदीए वि एत्थ पवेसदंसणादो ।

---

*** सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य स्थितिसत्कर्म स्तोक है ।**

§ ३८१. क्योंकि वह एक स्थितिप्रमाण है ।

*** उससे यत्स्थितिसत्कर्म संख्यातगुणा है ।**

§ ३८२. क्योंकि वह दो समय कालस्थितिप्रमाण है ।

**विशेषार्थ**—सम्यग्मिथ्यात्वकी क्षपणाके समय जब उसकी दो समय कालवाली एक निषेक स्थिति शेष रहती है तब इन दोनोंका यह अल्पबहुत्व बन जाता है ।

*** उससे जघन्य स्थितिसंक्रम असंख्यातगुणा है ।**

§ ३८३. क्योंकि वह पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

*** उससे जघन्य स्थिति उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ ३८४. क्योंकि वह कुछ कम एक सागरोपमप्रमाण है ।

*** उससे जघन्य स्थिति उदय विशेष अधिक है ।**

§ ३८५. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—एक स्थितिमात्र है, क्योंकि उदय स्थितिका भी इसमें प्रवेश देखा जाता है ।

**विशेषार्थ**—जघन्य स्थितिसंक्रम सम्यग्मिथ्यात्वकी क्षपणाके समय यथास्थान होता है जो पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए इसे यत्स्थितिसत्कर्मसे असंख्यातगुणा बतलाया है । जघन्य स्थिति उदीरणा वेदक प्रायोग्य जघन्य स्थिति सत्कर्मवाले मिथ्यादृष्टि जीवके सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त करनेके बाद उसके अन्तिम समयमें होती है । इसका प्रमाण कुछ कम एक सागरोपम है, इसलिए इसे जघन्य स्थितिसंक्रमसे असंख्यातगुणा बतलाया है । तथा इसमें उदयस्थितिके मिला देनेपर उससे जघन्य स्थिति उदय विशेष अधिक हो जानेसे उससे विशेष अधिक कहा है । इस प्रकार यहाँ तक स्थिति अल्पबहुत्वका जो स्पष्टीकरण किया उसी प्रकार आगे भी कर लेना चाहिए । जहाँ कहीं विशेष वक्तव्य होगा उसका अवश्य ही स्पष्टीकरण करेंगे ।

* बारसकसायाणं जहण्णयं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं ।

§ ३८६. कुदो ? एगट्ठिदिपमाणत्तादो।

* जट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं ।

§ ३८७ कुदो ? दुसमयकालट्ठिदिपमाणत्तादो ।

* जहण्णगो ट्ठिदिसंकमो असंखेज्जगुणो ।

§ ३८८. कुदो ? पलिदोवमासंखेज्जभागपमाणत्तादो ।

* जहण्णगो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ।

§ ३८९. किं कारणं ? सव्वविसुद्धबादरेइंदियजहण्णट्ठिदिबंधस्स गहणादो ।

* जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया ।

§ ३९० कुदो ? सव्वविसुद्धबादरेइंदियस्स जहण्णट्ठिदिबंधादो विसेसाहियहद-समुप्पत्तियजहण्णट्ठिदिसंतकम्मविसयत्तेण पडिलद्धजहण्णभावत्तादो ।

* जहण्णगो ठिदिउदयो विसेसाहियो ।

§ ३९१. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो । कुदो ? उदयट्ठिदीए वि एत्थंत-ब्भावदंसणादो ।

* तिण्हं संजलणाणं जहण्णिया ठिदिउदीरणा थोवा ।

---

* बारह कषायोंका जघन्य स्थितिसत्कर्म स्तोक है ।

§ ३८६. क्योंकि उसका प्रमाण एक स्थिति है ।

* उससे यत्स्थितिसत्कर्म संख्यातगुणा है ।

§ ३८७. क्योंकि वह दो समय कालस्थितिप्रमाण है ।

* उससे जघन्य स्थितिसंक्रम असंख्यातगुणा है ।

§ ३८८. क्योंकि वह पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

* उससे जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ।

§ ३८९. क्योंकि सर्व विशुद्ध बादर एकेन्द्रियके जघन्य स्थितिबन्धका ग्रहण किया है ।

* उससे जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है ।

§ ३९०. क्योंकि सर्व विशुद्ध बादर एकेन्द्रियके जघन्य स्थितिबन्धसे विशेष अधिक हतसमुत्पत्तिक जघन्य स्थिति सत्कर्म इसका विषय है । वह यहाँ जघन्यपनेको प्राप्त है ।

* उससे जघन्य स्थिति उदय विशेष अधिक है ।

§ ३९१. शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—एक स्थितिमात्र है, क्योंकि उदयस्थितिका भी यहाँ अन्तर्भाव देखा जाता है ।

* तीन संज्वलनोंकी जघन्य स्थिति उदीरणा स्तोक है ।

§ ३९२. किं कारणं ? एगट्ठिदिपमाणत्तादो ।

*** जहण्णगो ट्ठिदिउदयो संखेज्जगुणो ।**

§ ३९३. कुदो ? दोट्ठिदिपमाणत्तादो । णेदमसिद्धं, तम्मि चेव विसए उदयट्ठिदीए सह उदीरिज्जमाणट्ठिदीए जहण्णोदयभावेण विवक्खियत्तादो ।

*** जट्ठिदिउदयो जट्ठिदिउदीरणा च असंखेज्जगुणो ।**

§ ३९४. कुदो ? समयाहियावलियपमाणत्तादो ।

*** जहण्णगो ट्ठिदिबंधो ठिदिसंकमो ठिदिसंतकम्मं च संखेज्जगुणाणि ।**

§ ३९५. कुदो ? आबाहूणवेमास-मास-पक्खपमाणत्तादो । किमट्ठमाबाहाए ऊणत्तमेत्थ कीरदे ? ण, जहण्णबंध-संकम-संतकम्माणं णिसेयपहाणत्तावलंबणादो ।

*** जट्ठिदिसंकमो विसेसाहियो ।**

§ ३९६. केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंतोमुहुत्तमेत्तो । कुदो ? समयूणदोआवलियाहिं परिहीणजहण्णाबाहाए एत्थ पवेसदंसणादो । तं जहा—कोहसंजलणादीणं चरिमसमयणवकबंधं बंधावलियादिक्कंतं संकमणावलियचरिमसमए संकामेमाणस्स जट्ठिदिसंकमो

---

§ ३९२. क्योंकि वह एक स्थितिप्रमाण है ।

*** उससे जघन्य स्थितिउदय संख्यातगुणा है ।**

§ ३९३. क्योंकि वह दो स्थितिप्रमाण है । यह असिद्ध नहीं है, क्योंकि उसी स्थल पर उदय स्थितिके साथ उदीर्यमाण स्थिति जघन्य उदयरूपसे विवक्षित है ।

*** उससे यत्स्थिति उदय और यत्स्थितिउदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ ३९४. क्योंकि वह एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण है ।

*** उनसे जघन्य स्थितिबन्ध, स्थितिसंक्रम और स्थितिसत्कर्म संख्यातगुणे है ।**

§ ३९५. क्योंकि वे क्रमसे आबाधा कम दो माह, एक माह और एक पक्षप्रमाण हैं ।

**शंका**—यहाँ पर आबाधासे कम क्यों किया जाता है ?

**समाधान**—नहीं, क्योंकि जघन्य स्थितिबन्ध, जघन्य स्थितिसंक्रम और जघन्य स्थितिसत्कर्म इनके निषेकप्रधानपनेका अवलम्बन है ।

*** उनसे यत्स्थितिसंक्रम विशेष अधिक है ।**

§ ३९६. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—अन्तर्मुहूर्तमात्र है, क्योंकि एक समय कम दो आवलिसे न्यून जघन्य आबाधाका यहाँ प्रवेश देखा जाता है । यथा—क्रोध संज्वलन आदिके अन्तिम समयसम्बन्धी नवकबन्धका बन्धावलिके बाद संक्रमणावलिके अन्तिम समयमें संक्रमण करनेवाले जीवके यत्स्थितिसंक्रम जघन्य होता है । इस कारणसे जघन्य आबाधामेंसे एक समय कम दो

जहण्णो होदि । एदेण कारणेण जहण्णाबाहाए समयूणदोआवलियाणमवणयणं कादूण अवणिदसेसमेत्तेण विसेसाहियत्तमेत्थ दट्ठव्वमिदि सिद्धं ।

* जट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं

§ ३९७. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो ! किं कारणं ? संकमणावलियाए चरिमसमयम्मि जट्ठिदिसंकमो जहण्णो जादो । जट्ठिदिसंतकम्मं पुण तत्तो हेट्ठिमाणंतरसमए वट्टमाणस्स जहण्णं होइ । तेण कारणेण संकमणावलियाए दुचरिमसमयप्पवेसेण विसेसाहियत्तमेत्थ गहेयव्वं ।

* जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

§ ३९८. केत्तियमेत्तो विसेसो ? दुसमयूणदोआवलियमेत्तो । किं कारणं ? संपुण्णाबाहाए सह जट्ठिदिबंधस्स जहण्णभावदंसणादो ।

* लोहसंजलस्स जहण्णट्ठिदिसंकमो संतकम्ममुदयोदीरणा च तुल्ला थोवा ।

§ ३९९. कुदो ? सव्वेसिमेगट्ठिदिपमाणत्तादो । तं कथं ? सुहुमसांपराइयस्स समयाहियावलियाए ट्ठिदिसंकमो ट्ठिदिउदीरणा च जहण्णिया होइ । तस्सेव चरिमसमए ट्ठिदि-

---

आवलियोंको कम करनेसे शेष बचा आबाधा काल यहाँ अधिक जानना चाहिए यह सिद्ध हुआ ।

* उससे यत्स्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है ।

§ ३९७. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—एक स्थितिमात्र है, क्योंकि संक्रमणावलिके अन्तिम समयमें यत्स्थितिसंक्रम जघन्य हुआ है । किन्तु यत्स्थितिसत्कर्म उससे अनन्तर पूर्व समयमें वर्तमान जीवके जघन्य होता है । इस कारण संक्रमणावलिके द्विचरम समयका प्रवेश हो जानेके कारण यहाँ विशेष अधिकपना ग्रहण करना चाहिए ।

* उससे यत्स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

§ ३९८. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—दो समय कम दो आवलिप्रमाण है, क्योंकि सम्पूर्ण आबाधाके साथ यत्स्थितिबन्धका जघन्यपना देखा जाता है ।

* लोभसंज्वलनका जघन्य स्थिति संक्रम, सत्कर्म, उदय और उदीरणा ये परस्पर तुल्य होकर स्तोक हैं ।

§ ३९९. क्योंकि ये सब एक स्थितिप्रमाण है ।

**शंका**—वह कैसे ?

**समाधान**—सूक्ष्मसाम्परायिक जीवके एक समय अधिक एक आवलि प्रमाण कालके

संतकम्ममुदयो च जहण्णभावं पडिवज्जदे। तदो सव्वेसिमेयट्ठिदिपमाणत्तादो थोवत्तमिदि सिद्धं।

* जट्ठिदिउदयो जट्ठिदिसंतकम्मं च तत्तियं चेव।

§ ४००. किं कारणं? उहयत्थ जहण्णट्ठिदीदो जट्ठिदीए भेदाणुवलंभादो।

* जट्ठिदिउदीरणा संकमो च असंखेज्जगुणा।

§ ४०१ कुदो? समयाहियावलियपमाणत्तादो।

* जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो।

§ ४०२. किं कारणं? अणियट्टिकरणचरिमट्ठिदिबंधस्स अंतोमुहुत्तपमाणस्सा-बाहाए विणा गहिदत्तादो।

* जट्ठिदिबंधो विसेसाहियो।

§ ४०३. कुदो? जहण्णाबाहाए वि एत्थंतब्भावदंसणादो।

* इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णट्ठिदिसंतकम्ममुदयोदीरणा च थोवाणि।

§ ४०४. कुदो? एगट्ठिदिपमाणत्तादो।

* जट्ठिदिसंतकम्मं जट्ठिदिउदयो च तत्तियो चेव।

§ ४०५. किं कारणं? एत्थ जट्ठिदीए जहण्णट्ठिदीदो भेदाणुवलंभादो।

---

शेष रहने पर स्थितिसंक्रम और स्थितिउदीरणा ये जघन्य होते है तथा उसी जीवके अन्तिम समयमें स्थितिसत्कर्म और स्थिति उदय जघन्यपनेको प्राप्त होते है, इसलिए सबके एक स्थितिप्रमाण होनेसे स्तोकपना है यह सिद्ध हुआ।

* यत्स्थिति उदय और यत्स्थितिसत्कर्म उतना ही है।

§ ४००. क्योंकि उभयत्र जघन्य स्थितिसे यत्स्थितिमें भेद नहीं पाया जाता।

* उनसे यत्स्थितिउदीरणा और यत्स्थितिसंक्रम असंख्यातगुणे हैं।

§ ४०१. क्योंकि ये एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण हैं।

* उससे जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है।

§ ४०२. क्योंकि अनिवृत्तिकरणका आबाधा कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अन्तिम स्थितिबन्ध यहाँ लिया गया है।

* उससे यत्स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

§ ४०३. क्योंकि जघन्य आबाधाका भी इसमें अन्तर्भाव देखा जाता है।

* स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके जघन्य स्थितिसत्कर्म, उदय और उदीरणा स्तोक हैं।

§ ४०४. क्योंकि ये एक स्थितिप्रमाण है।

* यत्स्थितिसत्कर्म और यत्स्थिति उदय उतने ही हैं।

§ ४०५. क्योंकि यहाँ यत्स्थितिका जघन्य स्थितिसे भेद नहीं पाया जाता।

*** जट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ ४०६. कुदो ? समयाहियावलियपमाणत्तादो ।

*** जहण्णगो ट्ठिदिसंकमो असंखेज्जगुणो ।**

§ ४०७. कुदो ? पलिदोवमासंखेज्जदिभागमेत्तचरिमफालिविसयत्तादो ।

*** जहण्णगो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ।**

§ ४०८. कुदो ? एइंदियजहण्णट्ठिदिबंधस्स पलिदोवमासंखेज्जभागपरिहीणसागरोवमवे-सत्तभागपमाणस्स गहणादो ।

*** पुरिसवेदस्स जहण्णगो ट्ठिदिउदयो ट्ठिदिउदीरणा च थोवा ।**

§ ४०९. कुदो ? एगट्ठिदिपमाणत्तादो ।

*** जट्ठिदिउदयो तत्तियो चेव ।**

§ ४१०. सुगमं ।

*** जट्ठिदिउदीरणा समयाहियावलिया सा असंखेज्जगुणा ।**

§ ४११. सुगमं ।

*** जहण्णगो ट्ठिदिबंधो ट्ठिदिसंकमो ट्ठिदिसंतकम्मं च ताणि संखेज्जगुणाणि[1] ।**

---

*** उनसे यत्स्थिति उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ ४०६. क्योंकि वह एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण है ।

*** उससे जघन्य स्थितिसंक्रम असंख्यातगुणा है ।**

§ ४०७. क्योंकि वह पल्योपमके असंख्यातवे भागमात्र अन्तिम फालिको विषय करता है।

*** उससे जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ।**

§ ४०८. क्योंकि एकेन्द्रिय जीवके पल्योपमके असंख्यातवें भाग कम ऐसे सागरोपमके दो बटे सात भागप्रमाण स्थितिबन्धका यहाँ पर ग्रहण किया है ।

*** पुरुषवेदका जघन्य स्थिति उदय और स्थिति उदीरणा स्तोक हैं ।**

§ ४०९ क्योंकि वे एक स्थितिप्रमाण हैं ।

*** उनसे यत्स्थितिउदय उतना ही है ।**

§ ४१०. यह सूत्र सुगम है ।

*** उससे यत्स्थितिउदीरणा एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण है, वह असंख्यातगुणी है ।**

§ ४११. यह सूत्र सुगम है ।

*** उससे जघन्य स्थितिबन्ध, स्थितिसंक्रम और स्थितिसत्कर्म ये तीनों संख्यात गुणे हैं ।**

---

१. ता०प्रतौ असंखेज्जगुणाणि इति पाठः ।

§ ४१२. कुदो ? पुरिसवेदचरिमट्ठिदिबंधस्स अट्ठवस्सपमाणस्स आबाहाए विणा गहणादो।

* जट्ठिदिसंकमो विसेसाहियो।

§ ४१३. कुदो ? समयूणदोआवलियाहिं परिहीणजहण्णाबाहाए एत्थ पवेसदंसणादो।

* जट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं।

§ ४१४. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो। किं कारणं ? पुव्विल्लसामित्त-विसयादो हेट्ठिमाणंतरसमए ट्ठिदिसंतकम्मस्स जहण्णसामित्तदंसणादो।

* जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

§ ४१५. केत्तियमेत्तो विसेसो ? दुसमयूणदोआवलियमेत्तो।

* छण्णोकसायाणं जहण्णगो ट्ठिदिसंकमो संतकम्मं च थोवं।

§ ४१६. कुदो ? खवगस्स चरिमट्ठिदिखंडयविसये पडिलद्धजहण्णभावत्तादो।

* जहण्णगो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो।

§ ४१७. किं कारणं ? एइंदियजहण्णट्ठिदिबंधस्स पलिदोवमासंखेज्जभागपरिहीण-सागरोवमवेसत्तभागपमाणस्स गहणादो।

§ ४१२. क्योंकि पुरुषवेदके आठ वर्षप्रमाण अन्तिम स्थितिबन्धका आबाधाके विना यहाँ ग्रहण किया है।

* उससे यत्स्थितिसंक्रम विशेष अधिक है।

§ ४१३. क्योंकि एक समय कम दो आवलि हीन जघन्य आबाधाका इसमें प्रवेश देखा जाता है।

* उससे यत्स्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है।

§ ४१४. शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—एक स्थितिमात्र है, क्योंकि यत्स्थितिसंक्रमके स्वामीसे अनन्तरपूर्व समयमें यत्स्थितिसत्कर्मका जघन्य स्वामीपना देखा जाता है।

* उससे यत्स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

§ ४१५. शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—वह दो समय कम दो आवलिप्रमाण है।

* छह नोकषायोंका जघन्य स्थितिसंक्रम और सत्कर्म स्तोक हैं।

§ ४१६. क्योंकि क्षपकके जघन्य स्थितिकाण्डकके समय इनका जघन्यपना प्राप्त होता है।

* उससे जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है।

§ ४१७. क्योंकि एकेन्द्रिय जीवके पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग कम ऐसा सागरोपमका दो बटे सात भागप्रमाण जघन्य स्थितिबन्धका यहाँ पर ग्रहण किया है।

*** जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा[1] ।**

§ ४१८. किं कारणं ? पलिदोवमासंखेज्जभागपरिहीणसागरोवमचदुसत्तभागमेत्त-जहण्णट्ठिदिसंतकम्मविसयत्तेण ट्ठिदिउदीरणाए जहण्णसामित्तपवुत्तिदंसणादो ।

*** जहण्णओ ट्ठिदिउदयो विसेसाहियो ।**

§ ४१९. केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगट्ठिदिमेत्तो ।

एवं जहण्णट्ठिदिविसयमप्पाबहुअं समत्तं ।

§ ४२०. एदेणेव बीजपदेणादेसो वि जाणिय णेदव्वो ।

एवं ट्ठिदिअप्पाबहुअं समत्तं ।

*** एत्तो अणुभागेहिं अप्पाबहुगं ।**

§ ४२१. कीरदि त्ति वक्कज्झाहारो कायव्वो । तं च दुविहमप्पाबहुअं जहण्णुक्कस्स-भेदेण । तत्थुक्कस्सप्पाबहुअं ताव परूवेमि त्ति जाणावणट्ठमाह—

*** उक्कस्सेण ताव ।**

§ ४२२. सुगममेदं, उक्कस्समप्पाबहुएण ताव पयदमिदि जाणावणफलत्तादो ।

---

*** उससे जघन्य स्थिति उदीरणा संख्यातगुणी है ।**

§ ४१८. क्योंकि प्रकृतमें पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग कम ऐसा सागरोपमका चार बटे सात भागप्रमाण जघन्य स्थितिसत्त्वको विषय करनेवाला होनेसे स्थिति उदीरणाके जघन्य स्वामिपनेकी प्रवृत्ति देखी जाती है ।

*** उससे जघन्य स्थिति उदय विशेष अधिक है ।**

§ ४१९. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—एक स्थितिमात्र है ।

इस प्रकार जघन्य स्थितिविषयक अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

§ ४२०. इसी बीजपदके अनुसार आदेशका भी जान कर कथन करना चाहिए ।

इस प्रकार स्थिति अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

*** आगे अनुभागकी अपेक्षा अल्पबहुत्व करते हैं ।**

§ ४२१. इस सूत्रमें 'कीरदि' इस वाक्यका अध्याहार करना चाहिए । वह अल्पबहुत्व जघन्य और उत्कृष्टके भेदसे दो प्रकारका है । उनमेंसे सर्व प्रथम उत्कृष्ट अल्पबहुत्वका कथन करते है इसका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** उसमें सर्व प्रथम उत्कृष्टका प्रकरण है ।**

§ ४२२. यह सूत्र सुगम है, क्योंकि सर्व प्रथम उत्कृष्टका प्रकरण है इसका ज्ञान कराना इसका प्रयोजन है ।

---

१. ता०प्रतौ असखेजगुणा इति पाठः ।

* मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणमुक्कस्सअणुभागउदीरणा उदयो च थोवा ।

§ ४२३. कुदो ? उक्कस्साणुभागबंधसंतकम्माणमणंतिमभागे चेव सव्वकालमुदयोदीरणाणं पवुत्तिदंसणादो ।

* उक्कस्सओ बंधो संकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि ।

§ ४२४. कुदो ? सण्णिपंचिंदियमिच्छाइट्ठिस्स सव्वुक्कस्ससंकिलेसेण बद्धुक्कस्साणुभागस्स अणूणाहियस्स गहणादो ।

* सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्सअणुभागउदओ उदीरणा च थोवाणि ।

§ ४२५. कुदो ? एदेसिमुक्कस्साणुभागसंतकम्मचरिमफद्दयादो अणंतगुणहीणफद्दयसरूवेण सव्वद्धमुदयोदीरणाणं पवुत्तिदंसणादो ।

* उक्कस्सओ अणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि ।

४२६. कुदो ? किंचि वि घादमपावेयूण ट्ठिदसगुक्कस्साणुभागसरूवेण पत्तुक्कस्सभावत्तादो ।

एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं ।

* एत्तो जहण्णयमप्पाबहुअं ।

---

* मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा और उदय स्तोक हैं ।

§ ४२३. क्योंकि उत्कृष्ट अनुभागबन्ध और उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मके अनन्तवे भागरूपसे ही सर्वदा उदय और उदीरणाकी प्रवृत्ति देखी जाती है ।

* उनसे उत्कृष्ट अनुभाग बन्ध, संक्रम और सत्कर्म अनन्तगुणे हैं ।

§ ४२४. क्योंकि संज्ञी पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिके सर्वोत्कृष्ट संक्लेशसे बन्धको प्राप्त न्यूनाधिकतासे रहित उत्कृष्ट अनुभागका यहाँ पर ग्रहण किया है ।

* सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभाग उदय और उदीरणा स्तोक हैं ।

§ ४२५. क्योंकि इनके उत्कृष्ट अनुभाग और उत्कृष्ट सत्कर्मके अन्तिम स्पर्धकसे अनन्तगुणे हीन स्पर्धकरूप उदय और उदीरणाकी सर्वदा प्रवृत्ति देखी जाती है ।

* उनसे उत्कृष्ट अनुभाग सक्रम और सत्कर्म अनन्तगुणे हैं ।

§ ४२६. क्योंकि कुछ भी घातको प्राप्त किये विना स्थित अपने-अपने उत्कृष्ट अनुभागरूपसे इन्होंने उत्कृष्टपना प्राप्त किया है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट अनुभाग समाप्त हुआ ।

* इसके आगे जघन्य अल्पबहुत्व प्रकृत है ।

§ ४२७. सुगममेदं पयदसंभालणवक्कं ।

* मिच्छत्त-बारसकसायाणं जहण्णगो अणुभागबंधो थोवो ।

§ ४२८. कुदो ? मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिणा सव्वुक्कस्सविसोहीए बद्धजहण्णाणुभागग्गहणादो । अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं पि संजमाहिमुहचरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिसंजदासंजदाणमुक्कस्सविसोहिणिबंधणाणुभाग-बंधम्मि जहण्णसामित्तावलंबणादो ।

* जहण्णयो उदयोदीरणा च अणंतगुणाणि ।

§ ४२९. किं कारणं ? संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिअसंजदसम्माइट्ठिसंजदा-संजदेसु जहण्णबंधेण समकालमेत्र पत्तजहण्णभावाणं पि उदयोदीरणाणं चिराणसंतसरूवेण तत्तो अणंतगुणत्तदंसणादो ।

* जहण्णगो अणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि ।

§ ४३०. कि कारणं ? मिच्छत्त-अट्ठकसायाणं सुहुमेइंदियहदसमुप्पत्तियजहण्णाणु-भागविसयत्तेण अणंताणुबंधीणं पि विसंजोयणापुव्वसजोगपढमसमयजहण्णणवकबंध-विसयत्तेण संकम-संतकम्माण जहण्णसामित्तावलंबणादो । ण च एवंविहसामित्तावलंबणे पुव्विल्लादो एदस्साणंतगुणत्तं संदिद्ध, परिप्फुडमेव तहाभावोवलंभादो । तं जहा—

---

§ ४२७. प्रकृतकी सम्हाल करनेवाला यह वाक्य सुगम है ।

* मिथ्यात्व और बारह कषायोंका जघन्य अनुभागबन्ध स्तोक है ।

§ ४२८. क्योकि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके द्वारा सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिसे मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धियोंके बद्ध जघन्य अनुभागका यहाँ पर ग्रहण किया है । अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान कषायोंकी अपेक्षा भी संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतके उत्कृष्ट विशुद्धिनिमित्तक अनुभागबन्धमें जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है ।

* उनसे जघन्य अनुभाग उदय और उदीरणा अनन्तगुणी हैं ।

§ ४२९. क्योंकि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके जघन्य बन्धके समकालमें ही जघन्यपनेको प्राप्त उदय और उदीरणाके पुराने सत्त्वमें स्थित अनुभागस्वरूप होनेसे तत्काल होनेवाले अनुभागबन्धकी अपेक्षा अनन्त-गुणापना देखा जाता है ।

* उनसे जघन्य अनुभागसंक्रम और सत्कर्म अनन्तगुणे हैं ।

§ ४३०. क्योंकि मिथ्यात्व और आठ कषायोंका जघन्य अनुभाग सूक्ष्म एकेन्द्रिय सम्बन्धी हतसमुत्पत्तिक जघन्य अनुभागको विषय करता है तथा अनन्तानुबन्धियोंका भी जघन्य अनुभाग विसंयोजनापूर्वक संयोगके प्रथम समयके नवकबन्धको विषय करता है, इसलिए यहाँ संक्रम और सत्कर्मके जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है । और इस

संजमाहिमुहचरिमसमयुक्कस्सविसोहीए उदीरिज्जमाणजहण्णाणुभागं पेक्खियूण हद-समुप्पत्तियं कादूणावट्ठिदसव्वविसुद्धसुहुमेइंदियविसोहीए उदीरिज्जमाणजहण्णाणुभागो अणंतगुणो, पुव्विल्लविसोहीदो एत्थतणविसोहीए अणंतगुणहीणत्तदंसणादो । एदम्हादो पुण तस्सेव सुहुमेइंदियस्स हदसमुप्पत्तियजहण्णाणुभागसंतकम्ममणंतगुणं, संतकम्माणंतिमभागे चेव सव्वत्थ उदयोदीरणाणं पवुत्तिदंसणादो । तदो एवंविहसुहुमे-इंदियहदसमुप्पत्तियजहण्णाणुभागविसयत्तादो मिच्छत्त-अट्ठकसायाणं जहण्णसंकम-संतकम्माणि अणंतगुणाणि त्ति सिद्धं । अणंताणुबंधीणं पुण संजुत्तपढमसमयजहण्णबंध-विसयो अणुभागो जहण्णसकम-संतकम्मसरूवो जइ वि सुहुमाणुभागादो अणंतगुणहीणो तो वि संजमाहिमुहचरिमसमयजहण्णोदयोदीरणाहितो अणंतगुणो चेय, संजमाहि-मुहचरिमविसोहि पेक्खियूण सजुत्तपढमसमयविसोहीए अणंतगुणहीणत्तदंसणादो ।

*** सम्मत्तस्स जहण्णयमणुभागसंतकम्ममुदयो च थोवाणि ।**

४३१. कुदो ? अणुसमयोवट्टणाघादेण सुट्ठु घादं पावियूण ट्ठिदकदकरणिज्जचरिम-समयजहण्णाणुभागसरूवत्तादो ।

*** जहण्णिया अणुभागुदीरणा अणंतगुणा ।**

---

प्रकारके स्वामित्वका अवलम्बन लेने पर पूर्वके जघन्य अनुभाग उदय और उदीरणाके स्वामीसे इसका अनन्तगुणत्व संदिग्ध भी नहीं है, क्योंकि स्पष्टरूपसे यह अनन्तगुणा उपलब्ध होता है । यथा—संयमाभिमुख अन्तिम समयवर्ती उत्कृष्ट विशुद्धिसे उदीर्यमाण जघन्य अनुभागको देखते हुए हृदसमुत्पत्ति करके अवस्थित सर्वविशुद्ध सूक्ष्म एकेन्द्रियसम्बन्धी विशुद्धिसे उदीर्यमाण जघन्य अनुभाग अनन्तगुणा है, क्योंकि पूर्वकी विशुद्धिसे यहाँकी विशुद्धि अनन्तगुणी हीन देखी जाती है । तथा इस उदीर्यमाण जघन्य अनुभागसे उसी सूक्ष्म एकेन्द्रियका हतसमुत्पत्तिक जघन्य अनुभागसत्कर्म अनन्तगुणा है, क्योंकि सत्कर्मोंके अनन्तवे भागमें ही सर्वत्र उदय और उदीरणाकी प्रवृत्ति देखी जाती है । इसलिए इस प्रकारके सूक्ष्म एकेन्द्रियसम्बन्धी जघन्य अनुभागको विषय करनेवाला होनेसे मिथ्यात्व और आठ कषायोंके जघन्य अनुभाग संक्रम और जघन्य अनुभाग सत्कर्म अनन्तगुणे हैं यह सिद्ध हुआ । तथा अनन्तानुबन्धियोंका संयुक्त प्रथम समयके जघन्य बन्धको विषय करनेवाला अनुभाग जघन्य संक्रम और सत्कर्मस्वरूप होकर भी यद्यपि सूक्ष्म एकेन्द्रियके अनुभागसे अनन्तगुणा हीन है तो भी संयमके अभिमुख हुए जीवके अन्तिम समयवर्ती उदय और उदीरणारूप अनुभागसे अनन्तगुणा ही है, क्योंकि संयमाभिमुख अन्तिम विशुद्धिको देखते हुए संयुक्त प्रथम समयकी विशुद्धि अनन्तगुणी देखी जाती है ।

*** सम्यक्त्वके जघन्य अनुभाग सत्कर्म और उदय स्तोक हैं ।**

§ ४३१. क्योंकि प्रति समय अपवर्तनाघातके द्वारा प्रचुर घातको पाकर स्थित हुआ वह कृतकृत्यवेदकके अन्तिम समयमें जघन्य अनुभागस्वरूप है ।

*** उनसे जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ४३२. किं कारणं ? हेट्ठा समयाहियावलियमेत्तमोसरिदूण पडिलद्धजहण्णभावत्तादो ।

* जहण्णओ अणुभागसंकमो अणंतगुणो ।

§ ४३३. जइ वि जहण्णोदीरणाविसये चेव ओकड्डणावसेण जहण्णाणुभागसंकमो जादो तो वि तत्तो एसो अणंतगुणो । कि कारणं ? ओकड्डिज्जमाणाणुभागस्स अणंतभागसरूवेण उदयोदीरणाणं तत्थ पवुत्तिदंसणादो ।

* सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णगो अणुभागसंकमो संतकम्मं च थोवाणि।

§ ४३४ कुदो ? दंसणमोहक्खवयअपुव्वाणियट्टिकरणपरिणामेहि सुट्ठु घादं पावेयूण ट्ठिदचरिमाणुभागखंडयविसयत्तेण पडिलद्धजहण्णभावत्तादो ।

* जहण्णगो अणुभागउदयोदीरणा च अणंतगुणाणि।

§ ४३५. कुदो ? घादेण विणा सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गुक्कस्सविसोहीए उदीरिज्जमाणजहण्णाणुभागविसयत्तेण पयदजहण्णसामित्तावलंबणादो ।

* कोहसंजलणस्स जहण्णगो अणुभागबंधो संकमो संतकम्मं च थोवाणि ।

---

§ ४३२. क्योंकि जघन्य अनुभाग सत्कर्म और उदयसे पीछे समयाधिक एक आवलिमात्र जाकर इसने जघन्यपना प्राप्त किया है।

* उसमे जघन्य अनुभागसक्रम अनन्तगुणा है ।

§ ४३३. यद्यपि जघन्य अनुभाग उदीरणारूप स्थानमें ही अपकर्षणवश जघन्य अनुभागसंक्रम प्राप्त हो जाता है तो भी उससे यह अनन्तगुणा है, क्योंकि अपकर्षित होनेवाले अनुभागके अनन्तवें भागरूप उदय और उदीरणाकी वहाँ पर प्रवृत्ति देखी जाती है ।

* सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागसंक्रम और सत्कर्म स्तोक हैं ।

§ ४३४. क्योंकि दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करनेवाले अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण परिणामोंके द्वारा अच्छी तरह घातको प्राप्तकर स्थित हुए अन्तिम अनुभागकाण्डकको विषय करनेवाला होनेके कारण उसने जघन्यपना प्राप्त किया है ।

* उनसे जघन्य अनुभाग उदय और उदीरणा अनन्तगुणे हैं ।

§ ४३५. क्योंकि घातके विना सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिके द्वारा उदीर्यमाण जघन्य अनुभागको विषय करनेवाला होनेके कारण उसने प्रकृत जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है ।

* क्रोधसंज्वलनके जघन्य अनुभागबन्ध, संक्रम और सत्कर्म स्तोक हैं ।

§ ४३६. कुदो ? कोधवेदगचरिमसमयजहण्णाणुभागबंधविसयत्तेण तिण्हमेदेसिं जहण्णसामित्तोवलंभादो ।

*** जहण्णाणुभागउदयोदीरणा च अणंतगुणाणि ।**

§ ४३७. तं जहा—कोधवेदगपढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए जहण्ण-बंधेण समकालमेव उदयोदीरणाणं पि जहण्णसामित्तं जादं । किंतु एसो चिराणसंत-कम्मसरूवो होदूणाणंतगुणो जादो ।

*** एवं माण-मायासंजलणाणं**

§ ४३८. जहा कोहसंजलणस्स जहण्णप्पाबहुअं कयमेवं माणमायासंजलणाणं पि कायव्वं, विसेसाभावादो ।

*** लोहसंजलणस्स जहण्णगो अणुभागउदयो संतकम्मं च थोवाणि ।**

§ ४३९. कुदो ? सुहुमसांपराइयखवगचरिमसमयम्मि लद्धजहण्णभावत्तादो ।

*** जहण्णिया अणुभागउदीरणा अणंतगुणा ।**

§ ४४०. किं कारणं ? तत्तो समयाहियावलियमेत्तं हेट्ठा ओसरिदूण तक्कालभावि-उदयसरूवेणुदीरिज्जमाणाणुभागस्स गहणादो ।

*** जहण्णगो अणुभागसंकमो अणंतगुणो ।**

---

§ ४३६. क्योंकि क्रोधवेदकके अन्तिम समयके जघन्य अनुभागबन्धको विषय करनेवाला होनेके कारण इन तीनोंका जघन्य स्वामित्व उपलब्ध होता है ।

*** उनसे जघन्य अनुभाग उदय और उदीरणा अनन्तगुणे हैं ।**

§ ४३७. यथा—क्रोधवेदककी प्रथम स्थितिके समयाधिक एक आवलिमात्र शेष रहने पर जघन्य बन्धके सम कालमें ही उदय और उदीरणाका भी जघन्य स्वामित्व हुआ है । किन्तु यह प्राचीन सत्कर्मस्वरूप होनेसे अनन्तगुणा हो गया है ।

*** इसी प्रकार मान और मायासंज्वलनके विषयमें जानना चाहिए ।**

§ ४३८. जिस प्रकार क्रोधसंज्वलनका जघन्य अल्पबहुत्व किया है उसी प्रकार मान और मायासंज्वलनका भी करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

*** लोभसंज्वलनका जघन्य अनुभाग उदय और सत्कर्म स्तोक हैं ।**

§ ४३९. क्योंकि सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके अन्तिम समयमें इसने जघन्यपना प्राप्त किया है ।

*** उससे जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ४४०. क्योंकि उससे समयाधिक एक आवलि पीछे जाकर तत्कालभावी उदयस्वरूप उदीयमाण अनुभागका प्रकृतमें ग्रहण किया है ।

*** उससे जघन्य अनुभागसंक्रम अनन्तगुणा है ।**

§ ४४१. तं कथं उदीरणा णाम उदयसरूवेण सुट्ठु ओहट्टियूण पदिदाणुभागं घेत्तूण जहण्णा जादा। संकमो पुण तत्तो अणंतगुणोकड्डिज्जमाणाणुभागं घेत्तूण जहण्णो जादो। तेण कारणेणाणंतगुणत्तमेदस्स ण विरुज्झदे।

*** जहण्णगो अणुभागबंधो अणंतगुणो।**

§ ४४२. कुदो? बादरकिट्टिसरूवेणाणियट्टिकरणचरिमसमये बज्झमाणजहण्णाणुभागबंधस्स गहणादो।

*** इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णगो अणुभागउदयो संतकम्मं च थोवाणि।**

§ ४४३. कुदो? देसघादिएगट्ठाणियसरूवत्तादो।

*** जहण्णिया अणुभागुदीरणा अणंतगुणा।**

§ ४४४. कुदो? एसा वि देसघादिएगट्ठाणियसरूवा चेय, किंतु हेट्ठा समयाहियावलियमेत्तो ओसरियूण जहण्णा जादा। तदो उवरिमावलियमेत्तकालमपत्तघादत्तादो एसा अणंतगुणा त्ति सिद्धं।

*** जहण्णगो अणुभागबंधो अणंतगुणो।**

§ ४४५. किं कारणं? बिट्ठाणियसरूवत्तादो। तं जहा—सम्मत्तं संजमं च जुगवं गेण्हमाणो मिच्छाइट्ठि अंतोमुहुत्तकालं पुव्वमेव इत्थि-णवुंसयवेदे णो बंधदि। तेण

---

§ ४४१. शंका—वह कैसे?

समाधान—उदीरणा तो अच्छी तरह अपवर्तित होकर उदयरूपसे प्राप्त हुए अनुभागको ग्रहण कर जघन्य हुई है। परन्तु संक्रम उससे अनन्तगुणे अपकर्षित होनेवाले अनुभागको ग्रहण कर जघन्य हुआ है। इस कारणसे इसका अनन्तगुणापना विरोधको प्राप्त नहीं होता।

*** उससे जघन्य अनुभागबन्ध अनन्तगुणा है।**

§ ४४२. क्योंकि अनिवृत्तिकरणमें बादर कृष्टिरूपसे बँधनेवाले जघन्य अनुभागबन्धको प्रकृतमें ग्रहण किया है।

*** स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका जघन्य अनुभाग उदय और सत्कर्म स्तोक हैं।**

§ ४४३. क्योंकि वह देशघाति एकस्थानीय है।

*** उनसे जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है।**

§ ४४४. क्योंकि यह भी देशघाति एकस्थानीयस्वरूप ही है, किन्तु यह उदय समयसे एक समय अधिक एक आवलिमात्र पीछे जाकर जघन्य हुई है। इसलिए यह उपरिम आवलिमात्रकाल तक घातको प्राप्त न होनेसे अनन्तगुणी है यह सिद्ध हुआ।

*** उससे जघन्य अनुभागबन्ध अनन्तगुणा है।**

§ ४४५. क्योंकि यह द्विस्थानीयस्वरूप है। यथा—सम्यक्त्व और संयमको युगपत् ग्रहण करनेवाला मिथ्यादृष्टि जीव अन्तर्मुहूर्तकाल पहलेसे ही स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका बन्ध नहीं

**कारणेण सत्थाणमिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गुक्कस्सविसोहीए बद्धाणुभागं घेत्तूण जहण्ण-सामित्तमेत्थ जादं । एसो च देसघादिबिट्ठाणियसरूवो सुहुमेइंदियजहण्णाणुभागबंधादो अणंतगुणहीणो होदूण पुव्विल्लादो देसघादिएयट्ठाणियसरूवादो अणंतगुणो त्ति णत्थि संदेहो ।**

*** जहण्णगो अणुभागसंकमो अणंतगुणो ।**

§ ४४६. **एत्थ कारणं वुच्चदे । तं जहा—सुहुमेइंदियजहण्णाणुभागसंतकम्मादो तस्सेव जहण्णाणुभागबंधो अणंतगुणहीणो होइ । एदम्हादो बादरेइंदियजहण्णाणुभागबंधो अणंतगुणहीणो । एवं बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिया त्ति एदेसिं जहण्णबंधा जहाकममणंतगुणहीणा होंति, तव्विसोहीणमणंतगुणाहियकमेण वड्ढिदंसणादो । एवंविहमेदं पंचिंदियजहण्णबंधं घेत्तूण पुव्विल्लसामित्तं जादं । संपहि जहण्णसंकमो णाम अंतरकरणे कदे सुहुमेइंदियजहण्णाणुभागसंतकम्मादो हेट्ठा अणंतगुणहीणो होदूण पुणो वि संखेज्जसहस्साणुभागखंडएसु घादिदेसु चरिमफालिसरूवेण जहण्णो जादो । एवंविहघादं पत्तो वि चिराणसंतकम्मं होदूण पुव्वुत्तबंधादो संकमाणुभागो अणंतगुणो जादो ।**

*** पुरिसवेदस्स जहण्णगा अणुभागबंधो संकमो संतकम्मं च थोवाणि ।**

§ ४४७. **कुदो ? चरिमसमयसवेदजहण्णाणुभागबंधं देसघादिएयट्ठाणियसरूव**

---

करता । इस कारण स्वस्थान मिथ्यादृष्टिके तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको निमित्तकर बन्धको प्राप्त हुए अनुभागको ग्रहण कर जघन्य स्वामित्व यहाँ पर प्राप्त हुआ है । देशघाति द्विस्थानीय-स्वरूप यह अनुभाग सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके जघन्य अनुभागबन्धसे अनन्तगुणाहीन है फिर भी देशघाति एकस्थानीयस्वरूप जघन्य अनुभागउदीरणासे अनन्तगुणा है इसमें सन्देह नहीं।

*** उससे जघन्य अनुभागसंक्रम अनन्तगुणा है ।**

§ ४४६. यहाँ पर कारणका कथनकरते है । यथा—सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके जघन्य अनुभाग-सत्कर्मसे उसीके जघन्य अनुभागबन्ध अनन्तगुणा हीन होता है । उससे बादर एकेन्द्रिय जीवके जघन्य अनुभागबन्ध अनन्तगुणाहीन होता है । इसी प्रकार द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पञ्चन्द्रिय और संज्ञी पञ्चन्द्रिय इन जीवोंके जघन्य अनुभागबन्ध क्रमसे अनन्तगुणे हीन होते हैं, क्योकि उनके विशुद्धियोंकी अनन्तगुण अधिकके क्रमसे वृद्धि देखी जाती है । इस प्रकार पञ्चन्द्रियके इस जघन्यबन्धको ग्रहण कर पूर्वोक्त स्वामित्व हुआ है । किन्तु यह जघन्य संक्रम अन्तरकरण करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके जघन्य अनुभाग सत्कर्मसे अनन्त-गुणा हीन होकर फिर भी संख्यात हजार अनुभागकाण्डकोंके घातित होने पर अन्तिम फालि-रूपसे जघन्य हुआ है । यद्यपि वह इस प्रकार घातको प्राप्त हुआ है फिर भी वह प्राचीन सत्कर्मरूप है, इसलिए पूर्वोक्त बन्धसे संक्रमानुभाग अनन्तगुणा होता है ।

*** पुरुषवेदका जघन्य अनुभाग बन्ध, संक्रम और सत्कर्म स्तोक हैं ।**

§ ४४७. क्योकि सवेदभागके अन्तिम समयमें होनेवाले देशघाति और एक स्थानीय-

घेत्तूण तिण्हमेदेसिं जहण्णसामित्तावलंबणादो ।

*** जहण्णगो अणुभागउदयो अणंतगुणो ।**

§ ४४८. कुदो ? देसघादिएयट्ठाणियत्ताविसेसे वि संपहिबंधादो उदयो अणंतगुणो त्ति णायमस्सियूण पुव्विल्लाणुभागादो एदस्स तहाभावसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो ।

*** जहण्णिया अणुभागउदीरणा अणंतगुणा ।**

§ ४४९. एसा वि देसघादिएयट्ठाणियसरूवा चेव, किंतु समयाहियावलियमेत्तं हेट्ठा ओसरियूण जहण्णा जादा । तेण पुव्विल्लादो एदिस्से अणंतगुणत्तं ण विरुज्झदे ।

*** हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णाणुभागबंधो थोवो ।**

§ ४५०. कुदो ? अपुव्वकरणचरिमसमयणवकबंधस्स देसघादिविट्ठाणियसरूवस्स गहणादो ।

*** जहण्णगो अणुभागउदयोदीरणा च अणंतगुणा ।**

§ ४५१. कुदो ? एदेसिं पि तत्थेव जहण्णसामित्ते संते वि संपहिबंधादो संपहियउदयस्साणंतगुणत्तमस्सियूण तहाभावसिद्धीदो ।

*** जहण्णगो अणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि ।**

---

स्वरूप जघन्य अनुभागबन्धके ध्यानमें रखकर यहाँ इन तीनोंके जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है ।

*** उनसे जघन्य अनुभाग उदय अनन्तगुणा है ।**

§ ४४८. देशघाति और एक स्थानीयपनेकी अपेक्षा विशेषता न होनेपर भी साम्प्रतिक बंधसे उदय अनन्तगुणा है इस न्यायका आश्रयकर पूर्वोक्त बन्धके जघन्य अनुभागसे इसके उस प्रकारकी सिद्धि निर्बाध पाई जाती है ।

*** उससे जघन्य अनुभाग उदीरणा अनन्तगुणी है ।**

§ ४४९. यह भी देशघाति एक स्थानीय स्वरूप ही है । किन्तु समयाधिक एक आवलिमात्र पीछे जाकर जघन्य हुई है, इसलिए जघन्य अनुभाग उदयसे इसका अनन्तगुणापना विरोधको प्राप्त नहीं होता ।

*** हास्य, रति, भय और जुगुप्साका जघन्य अनुभागबन्ध स्तोक है ।**

§ ४५०. क्योंकि अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें होनेवाले देशघाति द्विस्थानीयस्वरूप नवकबन्धको यहाँ पर ग्रहण किया है ।

*** उससे जघन्य अनुभाग उदय और उदीरणा अनन्तगुणे हैं ।**

§ ४५१. क्योंकि इनका भी जघन्य स्वामित्व होनेपर भी साम्प्रतिक बन्धसे साम्प्रतिक उदय अनन्तगुणा है, इसलिए उससे इसका अनन्तगुणपना सिद्ध होता है ।

*** उनसे जघन्य अनुभाग संक्रम और सत्कर्म अनन्तगुणे हैं ।**

§ ४५२. किं कारणं ? खवगसेढिम्मि चरिमाणुभागखंडयचरिमफालीए सव्वघादिविट्ठाणियसरूवाए पयदजहण्णसामित्तावलंभादो ।

*** अरदि-सोगाणं जहण्णगो अणुभागउदयो उदीरणा च थोवाणि ।**

§ ४५३. किं कारणं ? अपुव्वकरणचरिमसमयम्मि देसघादिविट्ठाणियसरूवेण तदुभयसामित्तावलंबणादो ।

*** जहण्णगो अणुभागबंधो अणंतगुणो ।**

§ ४५४. किं कारणं ? पमत्तसजदतप्पाओग्गविसोहीए बद्धदेसघादिविट्ठाणियसरूवणवकबंधावलंबणेण पयदजहण्णसामित्तविहाणादो ।

*** जहण्णाणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि ।**

§ ४५५. कुदो ? सव्वघादिविट्ठाणियचरिमफालिविसयत्तेण पडिलद्धजहण्णभावत्तादो ।

एवं जहण्णप्पाबहुअं समत्तं ।

तदो अणुभागविसयमप्पाबहुअ समत्तं होदि ।

*** पदेसेहिं उक्कस्समुक्कस्सेण ।**

§ ४५६. एत्तो पदेसेहिं उक्कस्समुक्कस्सेण ढोएदूण पुव्वुत्तपचपदाणयप्पाबहुअं कस्सामो त्ति पयदसभालणवक्कमेदं ।

---

§ ४५२. क्योंकि क्षपकश्रेणिमें अन्तिम अनुभागकाण्डकको अन्तिम फालि सर्वघाति द्विस्थानीय स्वरूप उपलब्ध होती है।

*** अरति और शोकका जघन्य अनुभाग उदय और उदीरणा स्तोक हैं ।**

§ ४५३. क्योंकि अपूर्वकरणके अन्तिमसमयमे देशघाति और द्विस्थानीयरूपसे इन दोनोंके स्वामित्वका अवलम्बन लिया है ।

*** उनसे जघन्य अनुभागबन्ध अनन्तगुणा है ।**

§ ४५४. क्योंकि प्रमत्तसंयतकी तत्प्रायोग्य विशुद्धिको निमित्त कर बद्ध देशघाति द्विस्थानीयस्वरूप नवकबन्धके अवलम्बन द्वारा प्रकृत जघन्य स्वामित्वका विधान किया है ।

*** उससे जघन्य अनुभाग संक्रम और सत्कर्म अनन्तगुणे हैं ।**

§ ४५५. क्योंकि ये सर्वघाति द्विस्थानीय अन्तिम फालिको विषय करनेवाले होनेसे जघन्यपनेको प्राप्त हुए हैं ।

इस प्रकार जघन्य अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इसके बाद अनुभागविषयक अल्पबहुत्व समाप्त होता है ।

*** अब प्रदेशोंकी अपेक्षा उत्कृष्टका उत्कृष्टके साथ अल्पबहुत्व करते हैं ।**

§ ४५६. जघन्य अनुभागविषयक अल्पबहुत्वका कथन करनेके बाद अब प्रदेशोंकी अपेक्षा उत्कृष्टको उत्कृष्टके साथ स्वीकार कर पूर्वोक्त पाँच पदोंके अल्पबहुत्वका करेंगे इस प्रकार प्रकृतकी सम्हाल करनेवाला यह वाक्य है ।

*** मिच्छत्तबारसकसायछण्णोकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा थोवा।**

४५७. कुदो ? अप्पप्पणो सामित्तविसये उक्कस्सविसोहीए उदीरिज्जमाणासंखेज्ज-लोगपडिभागियदव्वस्स गहणादो।

*** उक्कस्सगो बंधो असंखेज्जगुणो।**

४५८. कुदो ? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तेणुक्कस्सजोगिणा बज्झमाणुक्कस्सस्स समय-पबद्धस्स अणूणाहियस्स गहणादो। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा।

*** उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो।**

§ ४५९. कुदो ? असंखेज्जसमयबद्धपमाणत्तादो। तं जहा—मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं संजदासंजद-संजदगुणसेढिसीसयाणि एक्कदो कादूण मिच्छत्तं पडिवण्णपढमसमयमिच्छाइ-ट्ठितदुदयसमकालमुक्कस्ससामित्तं जादं। अट्ठकसायाणं च संजमासंजम-संजम-दंसणमो-हक्खवयगुणसेढिसीसयाणं तिण्हमेकलग्गाणमुदयेणुक्कस्ससामित्तं गहिदं। छण्णोकसा-याणं पि अपुव्वकरणचरिमसमए वेदिज्जमाणगुणसेढिगोवुच्छं घेत्तूणुक्कस्ससामित्तं दिण्णं। तदो गुणसेढिमाहप्पेणासंखेज्जपंचिंदियसमयपबद्धपमाणत्तादो पुव्विल्लं पेक्खिदूण एसो असंखेज्जगुणो त्ति सिद्धं। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

*** मिथ्यात्व, बारह कषाय और छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा स्तोक है।**

§ ४५७. क्योंकि उत्कृष्ट अनुभाग उदीरणा विषयक अपने-अपने स्वामित्वको ध्यानमें रख-कर उत्कृष्ट विशुद्धिवश उदीर्यमाण असंख्यात लोकप्रतिभागी द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है।

*** उससे उत्कृष्ट अनुभागबन्ध असंख्यातगुणा है।**

§ ४५८. क्योंकि उत्कृष्ट योगसे युक्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीव द्वारा न्यूनाधिकतासे रहित बँधनेवाले उत्कृष्ट समयप्रबद्धको प्रकृतमें ग्रहण किया है।

**शंका**—गुणकार क्या है ?

**समाधान**—असंख्यात लोक गुणकार है।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदय असंख्यातगुणा है।**

§ ४५९. क्योंकि वह असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण है। यथा—मिथ्यात्व और अनन्तानु-बन्धियोंका संयतासंयत और संयतसम्बन्धी गुणश्रेणिशीर्षोंको एकत्रितकर मिथ्यात्वको प्राप्त हुए प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उदयसमकालीन उत्कृष्ट स्वामित्व हुआ है। और आठ कषायोंका संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहक्षपकसम्बन्धी परस्पर संलग्न तीन गुणश्रेणिशीर्षोंके उदयसे उत्कृष्ट स्वामित्व ग्रहण किया है। छह नोकषायोंको भी अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें वेद्यमान गुणश्रेणिगोपुच्छको ग्रहणकर उत्कृष्ट स्वामित्व दिया है। इसलिए गुणश्रेणियोंके माहात्म्यवश पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण होनेसे पिछलेको देखते हुए यह असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ।

१. ता०प्रतौ -इट्ठि [ स्स ] तदुदय-इति पाठः।

* उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो ।

§ ४६०. किं कारणं ? किंचूणसगसगुक्कस्सदव्वपमाणत्तादो । णेदमसिद्धं, गुणिदकम्मंसियस्स सव्वसंकमेण पयदुक्कस्ससामित्तावलंबणेण सिद्धत्तादो । एत्थ गुणगारो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

* उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं ।

§ ४६१. कुदो ? गुणिदकम्मंसियलक्खणेणुक्कस्ससंचयं कादूणावट्ठिदचरिमसमयणेरइयम्मि पयदुक्कस्ससामित्तविहाणादो । केत्तियमेत्तो विसेसो ? णिरयादो उव्वट्टिय मणुसगदिमागंतूण सव्वलहु सव्वसंकमेण परिणममाणस्स अंतराले पयडिगोवुच्छसरूवेण गुणसेढिणिज्जराए गुणसंकमेण च णट्ठदव्वमेत्तो ।

* सम्मत्तस्स उक्कस्सपदेससंकमो थोवो ।

§ ४६२. किं कारणं ? अधापवत्तसंकमेण पडिलद्धुक्कस्सभावत्तादो ।

* उक्कस्सपदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।

§ ४६३. कुदो ? दंसणमोहक्खवयस्स समयाहियावलियमेत्तट्ठिदिसंतकम्मे सेसे

---

शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम असंख्यातगुणा है ।

§ ४६०. क्योंकि गुणितकर्मांशिक जीवके सर्वसंक्रमके द्वारा प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वका अवलम्बन लेनेसे यह सिद्ध है । यहाँ पर गुणकार पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेशसत्कर्म विशेष अधिक है ।

§ ४६१. क्योंकि गुणित कर्मांशिक लक्षण द्वारा उत्कृष्ट संचय करके अवस्थित हुए अन्तिम समयवर्ती नारकीके प्रकृत उत्कृष्ट स्वामित्वका विधान किया है ।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—नरकसे निकल कर और मनुष्यगतिमें आकर अतिशीघ्र सर्वसंक्रम द्वारा परिणमन करने वाले जीवके अन्तरालमें प्रकृति गोपुच्छरूपसे तथा गुणश्रेणिनिर्जरा और गुणसंक्रम द्वारा जितना द्रव्य नष्ट होता है उतना है ।

* सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम स्तोक है ।

४६२. क्योंकि अधःप्रवृत्त संक्रम द्वारा इसने उत्कृष्टपना प्राप्त किया है ।

§ उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।

§ ४६३. क्योंकि दर्शनमोह क्षपकके समयाधिक आवलिमात्र स्थितिसत्कर्मके शेष रहनेपर

उदीरिज्जमाणदव्वस्स किंचूण मिच्छत्तुक्कस्सदव्वमोकड्डुणभागहारेण[1] खंडेयूण तत्थेयखंडपमाणस्स गहणादो। को गुणगारो ? अधापवत्तभागहारस्स असंखेज्जदिभागो।

*** उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो।**

§ ४६४. किं कारणं ? उदीरणा णाम गुणसेढिसीसयस्स असंखेज्जदिभागो। उदयो पुण गुणसेढिसीसयं सव्वं चेव भवादे। तेणासंखेज्जगुणत्तमेदस्स ण विरुज्झदे। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

*** उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं।**

§ ४६५. केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठा दुचरिमादिगुणसेढिगोवुच्छासु णट्ठदव्वमेत्तो।

*** सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरणा थोवा।**

§ ४६६. कुदो ? सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिणा तप्पाओग्गुक्कस्सविसोहीए उदीरिज्जमाणातसंखेज्जलोगपडिभागियदव्वस्स गहणादो।

*** उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो।**

उदीर्यमाण द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है। वह मिथ्यात्वके उत्कृष्ट द्रव्यको अपकर्षणभागहारके द्वारा खण्डित करने पर वहाँ जो एक खण्डप्रमाण प्राप्त हो उतना है।

**शंका**—गुणकार क्या है ?

**समाधान**—अधःप्रवृत्त भागहारका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदय असंख्यातगुणा है।**

§ ४६४. क्योंकि उदीरणा गुणश्रेणिशीर्षके असंख्यातवें भागप्रमाण है। परन्तु उदय सम्पूर्ण गुणश्रेणिशीर्षरूप होता है। इसलिए उदीरणासे उदय असंख्यातगुणा है यह विरोधको प्राप्त नहीं होता।

**शंका**—गुणकार क्या है ?

**समाधान**—पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेशसत्कर्म विशेष अधिक है।**

§ ४६५. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—अधस्तन द्विचरम आदि गुणश्रेणिगोपुच्छाओं जितना द्रव्य नष्ट हुआ है उतना है।

*** सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा स्तोक है।**

§ ४६६. क्योंकि सम्यक्त्वके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव तत्प्रायोग्य विशुद्धिवश असंख्यात लोक प्रतिभागीय द्रव्यकी उदीरणा करता है, उसे यहाँ उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणारूपसे ग्रहण किया है।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदय असंख्यातगुणा है।**

---

१. ता०प्रतौ—मोकड्डियूण भागहारेण इति पाठः।

§ ४६७. किं कारणं ? असंखेज्जसमयपबद्धपमाणगुणसेढिगोवुच्छसरूवत्तादो । एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा ।

*** उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो ।**

§ ४६८. कुदो ? थोवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तुक्कस्ससमयपबद्धपमाणत्तादो । एत्थ गुणगारो ओकड्डुक्कड्डणभागहारादो असंखेज्जगुणो ।

*** उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं ।**

§ ४६९. केत्तियमेत्तो विसेसो ? मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तम्मि पक्खिविय पुणो सम्मामिच्छत्तं खवेमाणो जाव चरिमफालिं ण पादेदि[1] ताव एदम्मि अंतरे गुणसेढीए गुणसंकमेण च विणट्ठदव्वमेत्तो ।

*** तिसंजलणतिवेदाणमुक्कस्सपदेसबंधो थोवो ।**

§ ४७०. किं कारणं ? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तेणुक्कस्सजोगेण बद्धसमयपबद्धपमाणदो

*** उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा ।**

§ ४७१. कुदो ? णववसेढीयअप्पप्पणो पढमट्ठिदीए समयाहियावलियमेत्तसेसाए उदीरिज्जमाणमसंखेज्जसमयपबद्धाणमिहग्गहणादो । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

---

§ ४६७. क्योंकि वह असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण गुणश्रेणिगोपुच्छास्वरूप है । यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है ।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम असंख्यातगुणा है ।**

§ ४६८. क्योंकि वह कुछ कम डेढ़ गुणहानिमात्र उत्कृष्ट समयप्रबद्धप्रमाण है । यहाँ पर गुणकार अपकर्षण उत्कर्षणभागहारसे असंख्यातगुणा है ।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेशसत्कर्म विशेष अधिक है ।**

§ ४६९. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—मिथ्यात्वको सम्यग्मिथ्यात्वमें प्रक्षिप्त करके पुनः सम्यग्मिथ्यात्वका क्षय करता हुआ जब तक अन्तिम फालिका पतन नहीं करता है तब तक इस अन्तरालमें गुणश्रेणि और गुणसंक्रम द्वारा जितना द्रव्य नष्ट होता है उतना है ।

*** तीन संज्वलन और तीन वेदोंका उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध स्तोक है ।**

§ ४७०. क्योंकि वह संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीव द्वारा उत्कृष्ट योगको निमित्तकर बद्ध समयप्रबद्धप्रमाण है ।

*** उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है ।**

§ ४७१. क्योंकि क्षपकश्रेणिमें अपनी-अपनी प्रथम स्थिति समयाधिक आवलि मात्र शेष रहने पर उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धोंको यहाँ ग्रहण किया है, यहाँ पर गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

१. आ० प्रतौ पावेदि इति पाठः ।

* उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो ।

§ ४७२. किं कारणं ? उदीरणा णाम गुणसेढिसीसयदव्वस्सासंखेज्जभागमेत्ती होइ । उक्कस्सुदयो पुण अप्पप्पणो चरिमोदयमणूणाहियगुणसेढिगोवुच्छसरूवं घेत्तूण जादो । तदो सिद्धमखेसंज्जगुणत्तमेदस्स पुव्विल्लादो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-मेत्तो ।

* उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो ।

§ ४७३. को गुणगारो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । किं कारणं ? अप्पप्पणो सव्वुक्कस्ससव्वसंकमदव्वस्स गहणादो ।

* उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं ।

§ ४७४. केत्तियमेत्त विसेसो ? अप्पप्पणो दव्वमुक्कस्सं कादूण पुणो जाव सव्वसं-कमेण ण परिणमइ ताव एदम्मि अंतराले णट्ठासंखे०भागमेत्तो ।

* लोभसंजलणस्स उक्कस्सपदेसबंधो थोवो ।

§ ४७५. सुगमं ।

* उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो ।

---

* उससे उत्कृष्ट उदय असंख्यातगुणा है ।

§ ४७२. क्योंकि उदीरणा गुणश्रेणिशीर्ष द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है। परन्तु उत्कृष्ट उदय अपने-अपने न्यूनाधिकतासे रहित गुणश्रेणि गोपुच्छस्वरूप अन्तिम उदयरूपसे विवक्षित है। इसलिए उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणासे इसका असंख्यात गुणापना सिद्ध है।

**शंका**—गुणकार क्या है ?

**समाधान**—पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम असंख्यातगुणा है ।

§ ४७३. **शंका**—गुणकार क्या है ?

**समाधान**—पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है, क्योंकि अपने-अपने सर्वोत्कृष्ट सर्वसंक्रम द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेशसत्कर्म विशेष अधिक है ।

§ ४७४. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—अपना-अपना द्रव्य उत्कृष्टकर पुनः जब तक वह सर्वसंक्रम रूपसे परिणत नहीं होता तब तक इस अन्तरालमें जो असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्य नष्ट होता है उतना है।

* लोभसंज्वलनका उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध स्तोक है ।

§ ४७५. यह सूत्र सुगम है।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम असंख्यातगुणा है ।

---

१. आ०-ता० प्रत्योः गुणगारो च पलिदोवमस्स इति पाठ.

§ ४७६. कुदो ? अंतरकरणकारयचरिमसमयम्मि अधापवत्तसंकमेण संकमंताण-मसंखेज्जाणं समयपबद्धणमेत्थ सामित्तविसईकयाणमुवलंभादो। एत्थ गुणगारो असंखे-ज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि।

* उक्कस्सपदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा।

§ ४७७. किं कारणं ? उक्कस्ससंकमो णाम अणियट्टिकरणम्मि अंतरं करेमाणो से काले लोभस्स असंकामगो होहिदि त्ति एत्थुद्देसे अधापवत्तसंकमेण जादो। उदीरणा पुण सव्वं मोहणीयदव्वं पडिच्छिय सुहुमसांपराइयखवगस्स पढमट्ठिदीए समयाहिया-वलियमेत्तसेसाए उदीरिज्जमाणाए असंखेज्जसमयपबद्धे[1] घेत्तूणुक्कस्सा जादा, तेणासंखेज्जगुणा भणिदा। अधापवत्तभागहारं पेक्खियूणुदीरणाहेदुभूदोकड्डणाभागहारस्सासंखेज्जगुणही-णत्तादो।

* उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो।

§ ४७८. कुदो ? सुहुमसांपराइयखवगचरिमगुणसेढिसीसयसव्वदव्वस्स गहणादो। एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो।

* उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं।

§ ४७६. क्योंकि अन्तरकरण करनेवालेके अन्तिम समयमें अधःप्रवृत्तसंक्रम द्वारा संक्रमको प्राप्त हुए असंख्यात समयप्रबद्ध स्वामित्वके विषयरूपसे यहाँ पर उपलब्ध होते हैं। यहाँ पर गुणकार पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण हैं।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदीरणा असंख्यातगुणी है।

§ ४७७. क्योंकि उत्कृष्ट संक्रम अनिवृत्तिकरणमें अन्तरको करता हुआ जब तदनन्तर समयमें लोभका असंक्रामक होगा ऐसे स्थलपर अधःप्रवृत्त संक्रमके द्वारा हुआ है। परन्तु उदीरणा तो मोहनीयके समस्त द्रव्यको लोभसंज्वलनमें संक्रमित कर सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकको प्रथम स्थितिमें समयाधिक एक आवलिमात्र शेष रहने पर उदीर्यमाण असंख्यात समयप्रबद्धको ग्रहण कर उत्कृष्ट हुई है इसलिए उसे उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमसे असंख्यातगुणी कहा है, क्योंकि अधःप्रवृत्त भागहारको देखते हुए उदीरणाका हेतुभूत अपकर्षण भागहार असंख्यातगुणा हीन है।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेश उदय असंख्यातगुणा है।

§ ४७८. क्योंकि सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके अन्तिम गुणश्रेणिशीर्षके समस्त द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है। यहाँ पर गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भागप्रमाण है।

* उससे उत्कृष्ट प्रदेश सत्कर्म विशेष अधिक है।

१. आ०–ता०प्रत्योः सखेज्जसमयपबद्धे इति पाठः।

§ ४७९. केत्तियमेत्तो विसेसो ? मायादव्वं पडिच्छियूण जाव चरिमसमयसुहुमसांपराइयो ण होइ, ताव एदम्मि अंतराले णट्ठदव्वमेत्तो ।

एवमुक्कस्सपदेसप्पाबहुअं समत्तं

*** जहण्णयं ।**

§ ४८० सुगममेदमहियारसंभालणवक्कं ।

*** मिच्छत्त-अट्ठकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा ।**

§ ४८१. कुदो ? मिच्छाइट्ठिणा सव्वुक्कस्ससंकिलेसेणुदीरिज्जमाणासंखेज्जलोगपडिभागियदव्वस्स सव्वत्थोवत्तं पडि विरोहाभावादो ।

*** उदयो असंखेज्जगुणो ।**

§ ४८२. तं जहा—मिच्छत्तस्स ताव उवसमसम्माइट्ठी सासणगुणं पडिवज्जिय छावलियाओ अच्छियूण मिच्छत्तं गदो । तस्स आवलियमिच्छाइट्ठिस्स असंखेज्जलोगपडिभागेणोकड्डिय णिमित्तदव्वं घेत्तूण जहण्णोदयो जादो । जेण सत्थाणमिच्छाइट्ठिसव्वुक्कस्ससंकिलेसादो एत्थतणसंकिलेसो अणंतगुणहीणो तेणेदं दव्वं पुव्विल्लदव्वादो असंखेज्जगुणं जादं । अट्ठकसायाणं पुण उवसंतकसायो कालं कादूण देवेसुववण्णो, तस्स असंखेज्जलोगपडिभागेणुदयावलियब्भंतरे णिमित्तदव्वस्स चरिमणिसेयं घेत्तूण जहण्ण-

---

§ ४७९. **शंका**—विशेषका प्रमाण कितना है ?

**समाधान**—मायाके द्रव्यको संक्रमित कर जब तक अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक नहीं होता तब तक इस अन्तरालमें जो द्रव्य नष्ट होता है तत्प्रमाण है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेश अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

*** अब जघन्यका प्रकरण है ।**

§ ४८०. अधिकारको सम्हाल करनेवाला यह वाक्य सुगम है ।

*** मिथ्यात्व और आठ कषायोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है ।**

§ ४८१. क्योंकि मिथ्यादृष्टिके द्वारा सर्वोत्कृष्ट संक्लेश परिणामोंसे उदीर्यमाण असंख्यात लोक प्रतिभागीय द्रव्यके सबसे स्तोकपनेके प्रति विरोधका अभाव है ।

*** उससे उदय असंख्यातगुणा है ।**

§ ४८२. यथा—सर्व प्रथम मिथ्यात्वकी अपेक्षा कहते हैं, उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादन गुणस्थानको प्राप्त कर और छह आवलिप्रमाण काल तक वहाँ रह कर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ । एक आवलि काल तक मिथ्यादृष्टि रहे हुए उस जीवके असंख्यात लोक प्रतिभाग के क्रमसे अपकर्षित होकर निक्षिप्त हुए द्रव्यको ग्रहण कर मिथ्यात्वका जघन्य उदय हुआ है । यतः स्वस्थान मिथ्यादृष्टि जीवके सबसे उत्कृष्ट संक्लेशसे इस जीवका संक्लेश अनन्तगुणा हीन है, इसलिए यह द्रव्य पूर्वके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है, तथा आठ कषायोंका, उपशान्तकषाय जीवके मर कर देवोंमें उत्पन्न होने पर उसके असंख्यात लोक प्रतिभागके क्रमसे उदयावलिके भीतर निक्षिप्त हुए द्रव्यके अन्तिम निषेकको ग्रहण कर जघन्य स्वामित्व हुआ है । इसलिए

सामित्तं जादं । एसो च असंजदसम्माइट्ठिविसोहिणिबंधणो उदीरणोदयो सत्थाणमिच्छाइट्ठिस्स सव्वुक्कस्ससंकिलेसेणुदीरिददव्वादो असंखेज्जगुणो त्ति णत्थि संदेहो । एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गासंखेज्जरूवाणि ।

* संकमो असंखेज्जगुणो ।

§ ४८३. पुव्वुत्तुदयो णाम असंखेज्जलोगमेत्तभागहारेण जादो । इमो पुण अंगुलस्सासंखेज्जदिभागमेत्तभागहारेण जादो । तदो सिद्धमसंखेज्जगुणत्तं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

* बंधो असंखेज्जगुणो ।

§ ४८४. किं कारणं ? सुहुमणिगोदजहण्णोववादजोगेण बद्धेगसमयपबद्धपमाणत्तादो । एत्थ गुणगारो अंगुलस्सासंखेज्जदिभागो ।

* संतकम्ममसंखेज्जगुणं ।

§ ४८५. कुदो ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खवणाए एगट्ठिदिदुसमयकालसेसे असंखेज्जपंचिंदियसमयपबद्धसंजुत्तगुणसेढिगोवुच्छावलंबणेण जहण्णसामित्तगहणादो । तदो सिद्धमसंखेज्जगुणत्तं । गुणगारो च पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

* सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा ।

---

असंयतसम्यग्दृष्टिके विशुद्धिनिमित्तक यह उदीरणोदयरूप द्रव्य स्वस्थान मिथ्यादृष्टिके सर्वोत्कृष्ट संक्लेशवश प्राप्त हुए उदीरणाद्रव्यसे असंख्यातगुणा है इसमें सन्देह नहीं है । यहाँ पर गुणकार तत्प्रायोग्य असंख्यात रूप प्रमाण है ।

* उससे संक्रम असंख्यातगुणा है ।

§ ४८३. पूर्वोक्त उदय असंख्यात लोकप्रमाण भागहारसे उत्पन्न हुआ है, परन्तु यह संक्रम अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण भागहारसे उत्पन्न हुआ है, इसलिए यह असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ । गुण्कार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ।

* उससे बन्ध असंख्यातगुणा है ।

§ ४८४. क्योंकि वह सूक्ष्मनिगोद जीवके जघन्य उपपाद योगसे बद्ध एक समयप्रबद्धप्रमाण है । यहाँ पर गुणकार अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण है ।

* उससे सत्कर्म असंख्यातगुणा है ।

§ ४८५. क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर क्षपणामें दो समय कालप्रमाण एक स्थितिके शेष रहने पर पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी असंख्यात समयप्रबद्धसंयुक्त गुणश्रेणि गोपुच्छाका अवलम्बन कर जघन्य स्वामित्वका ग्रहण किया है । इसलिए यह असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ । यहाँ पर गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

* सम्यक्त्वकी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है ।

§ ४८६. कुदो ? मिच्छत्ताहिमुहअसंजदसम्माइट्ठिणा उक्कस्ससंकिलेसेणुदीरिज्ज-माणासंखेज्जलोगपडिभागियदव्वस्स गहणादो ।

* उदयो असंखेज्जगुणो ।

§ ४८७. किं कारणं ? उवसमसम्मत्तपच्छायदवेदयसम्माइट्ठिस्स पढमावलिय-चरिमसमये उदीरणोदयदव्वं घेत्तूण जहण्णसामित्तावलंबणादो । एसो वि असंखेज्जलोग-पडिभागिओ चेव । किंतु पुव्विल्लसंकिलेसादो संपहियसंकिलेसो अणंतगुण-हीणो, तेणुदयो असंखेज्जगुणो त्ति सिद्धं । को गुणगारो ? तप्पाओग्गासंखेज्ज-रूवाणि ।

* संकमो असंखेज्जगुणो ।

§ ४८८. किं कारणं ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूणुव्वेल्लेमाणस्स दुचरिमखं-डयचरिमफालीए उव्वेल्लणभागहारेण जहण्णसामित्तावलंबणादो । एत्थ असंखेज्ज-लोगमेत्तो गुणगारो ।

* संतकम्ममसंखेज्जगुणं ।

§ ४८९. किं कारणं ? सम्मत्तमुव्वेल्लेमाणखविदकम्मंसियस्स एयट्ठिदिदुसमय-कालसेसे जहण्णसामित्तपडिलंभादो । एदं च सम्मत्तचरिमुव्वेलणखंडयचरिमफालीजहण्ण-दव्वं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेयखंडमेत्तं । जहण्णसंकमदव्वं पुण तं चेव

---

§ ४८६. क्योंकि मिथ्यात्वके अभिमुख हुए असंयतसम्यग्दृष्टिके द्वारा उत्कृष्ट संक्लेशवश उदीर्यमाण असंख्यात लोक प्रतिभागीय द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है ।

* उससे उदय असंख्यातगुणा है ।

§ ४८७. क्योंकि उपशमसम्यक्त्वके अनन्तर जो वेदकसम्यग्दृष्टि हुआ है उसके प्रथम आवलिके अन्तिम समयमें उदीरणोदयरूप द्रव्यको ग्रहण कर प्रकृतमें जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है। यह भी असंख्यात लोकका भाग देनेपर एक भागप्रमाण हो है। किन्तु पूर्वके संक्लेशसे साम्प्रतिक संक्लेश अनन्तगुणा हीन है, इसलिए उदय असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ। गुणकार क्या है ? तत्प्रायोग्य असंख्यातरूप गुणकार है।

* उससे संक्रम असंख्यातगुणा है ।

§ ४८८. क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर उद्वेलना करनेवाले जीवके उद्वेलना भागहारद्वारा द्विचरमकाण्डककी अन्तिम फालिके प्राप्त होनेपर जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है। यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

* उससे सत्कर्म असंख्यातगुणा है ।

§ ४८९. क्योंकि सम्यक्त्वकी उद्वेलना करनेवाले क्षपितकर्मांशिकके दो समय एक स्थितिके शेष रहनेपर जघन्य स्वामित्वकी उपलब्धि होती है। और यह द्रव्य सम्यक्त्वके अन्तिम उद्वेलनकाण्डककी अन्तिम फालिस्वरूप जघन्य द्रव्यको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर एक खण्डप्रमाण है। परन्तु जघन्य संक्रम द्रव्य उसी जघन्य सत्कर्मको

जहण्णसंतकम्ममंगुलस्सासंखे०भागमेत्तुव्वेल्लणभागहारेण खंडिदेयखंडपमाणं होइ। तेण संकमादो संतकम्ममसंखेज्जगुणमिदि सिद्धं। एत्थ गुणगारो अंगुलस्सासंखे० भागो।

* एवं सम्मामिच्छत्तस्स।

§ ४९०. सुगममेदमप्पणासुत्तं।

* अणंताणुबंधीणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा।

§ ४९१. कुदो ? सव्वसंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिणा असंखेज्जलोगपडिभागेणुदीरिज्जमाण-दव्वस्स गहणादो।

* संकमो असंखेज्जगुणो।

§ ४९२. कुदो ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण तसकाइएसुप्पज्जिय सव्वलहुम-णंताणुबंधीणं विसंजोयणापुव्वसंजोगेणतोमुहुत्तमच्छिय वेदगसम्मत्तपडिवत्तिपुरस्सरं वेछावट्ठिसागरोवमकालम्मि असंखेज्जगुणहाणीओ गालिय पुणो गलिदसेससंतकम्मं विसं-जोएमाणअधापवत्तकरणचरिमसमयम्मि अंगुलस्सासंखे०भागमेत्तविज्झादभागहारेण संका-मिददव्वस्स पुव्विल्लासंखेज्जलोगपडिभागियदव्वादो असंखेज्जगुणत्तं पडि विरोहा-भावादो। एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा।

---

अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण उद्वेलन भागहारसे खण्डित करनेपर एक खण्डप्रमाण है, इस कारण संक्रम द्रव्यसे सत्कर्मका द्रव्य असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ। यहाँ पर गुणकार अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

* इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा अल्पबहुत्व जानना चाहिए।

§ ४९०. यह अर्पणा सूत्र सुगम है।

* अनन्तानुबन्धियोंकी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है।

§ ४९१. क्योंकि सर्वसंक्लेशयुक्त मिथ्यादृष्टिके द्वारा असंख्यातलोकप्रमाण भागहारके आश्रयसे उदीर्यमाण द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है।

* उससे संक्रम असंख्यातगुणा है।

§ ४९२. क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर तथा त्रसकायिकोंमें उत्पन्न होकर अति-शीघ्र अनन्तानुबन्धियोंकी विसंयोजनपूर्वक उनके संयोगके साथ अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर वेदकसम्यक्त्वकी प्राप्तिपूर्वक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण कालके भीतर असंख्यात गुणहा-नियोंको गलाकर पुनः गलित होनेसे शेष बचे हुए सत्कर्मकी विसंयोजना करते हुए अध-प्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण विध्यात भागहारके द्वारा संक्रमित हुआ द्रव्य असंख्यात लोकप्रमाण भागहारके आश्रयसे प्राप्त हुए पूर्वद्रव्यसे असंख्यातगुणा है इसे स्वीकार करनेमें कोई विरोध नहीं है। यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

* उदयो असंखेज्जगुणो।

§ ४९३. तं कथं ? दिवड्ढगुणहाणिगुणिदमेगमेइंदियसमयपबद्धं ठ विय तम्मि ओकड्डुकड्डुणभागहारमधापवत्तभागहारं बेछावट्ठिअण्णोण्णब्भत्थरासिं च अण्णोण्णगुणं करिय भागे हिदे बेच्छावट्ठीसु गलिदसेसमणंताणु० जहण्णदव्वं होइ । पुणो एदम्मि दिवड्ढगुणहाणीहि ओवट्टिदे उदयजहण्णदव्वमागच्छइ । जेणेसो दिवड्ढगुणहाणिमेत्त-भागहाररासी पलिदो० असंखे०भागपमाणो होदूण विज्झादभागहारादो असंखे०गुण-हीणो तेण पुव्विल्लसंकमदव्वादो एदस्सासंखेज्जगुणत्तमविप्पडिवत्तिसिद्धं । एत्थ गुण-गारो विज्झादभागहारस्सासंखे०भागो ।

* बंधो असंखेज्जगुणो ।

§ ४९४. किं कारणं ? उदयजहण्णदव्वं णाम सामित्तसमयजहण्णसंतकम्मस्स पलिदोवमासंखेज्जभागपडिभागियं होदूण पुणो अणंताणुबंधीणमंतोमुहुत्तसंचिदजहण्णदव्वं पेक्खिय अंगुलस्सासंखे०भागेण खंडिदेयखंडमेत्तं होइ । जहण्णदव्वं पि पेक्खियूण पलिदो० असंखे०भागपडिभागिओ होइ, जोगगुणगारपदुप्पण्णदिवड्ढगुणहाणीहि तम्मि ओवट्टिदे तदागमणदंसणादो । एवं होइ त्ति कादूण असंखेज्जगुणत्तमेदस्स सिद्धं । को

* उससे उदय असंख्यातगुणा है ।

§ ४९३. **शंका**—वह कैसे ?

**समाधान**—डेढगुणहानिसे गुणित एकेन्द्रियसम्बन्धी समयप्रबद्धको स्थापितकर उसमें अपकर्षण उत्कर्षण भागहार, अधःप्रवृत्तभागहार तथा दो छयासठ सागरोपमकी अन्योन्या-भ्यस्तराशि इन तीनोंका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका भाग देनेपर दो छयासठ सागरोपमके भीतर गलकर शेष बचा हुआ अनन्तानुबन्धियोंका जघन्य द्रव्य होता है । पुनः इसमें डेढ गुणहानिका भाग देनेपर उदय स्वरूप जघन्य द्रव्य आता है । अतः यह डेढ़ गुणहानिप्रमाण भागहार राशि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर विध्यात भागहारसे असंख्यातगुणी हीन है, इसलिए पूर्वके संक्रम द्रव्यसे यह द्रव्य असंख्यातगुणा है यह बिना विवादके सिद्ध है । यहाँ पर गुणकार विध्यातभागहारका असंख्यातवां भागप्रमाण है ।

* उससे बन्ध असंख्यातगुणा है ।

§ ४९४. क्योंकि उदयसम्बन्धी जघन्य द्रव्य अपने स्वामित्वके समयमें प्राप्त जघन्य सत्कर्ममें पल्योपमके असंख्यातवें भाग देने पर जो एक भाग प्राप्त हो उतना है फिर भी अनन्तानुबन्धियोंके अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर सञ्चित हुए जघन्य द्रव्यको देखते हुए अंगुलके असंख्यातवे भाग देने पर एक भागप्रमाण है । परन्तु जघन्य बन्ध स्वस्थान क्षपितकर्मां-शिकके जघन्य द्रव्यकी अपेक्षा भी पल्योपमके असंख्यातवे भागसे भाजित करनेपर एक भागप्रमाण है, क्योंकि योगगुणकारसे प्रत्युत्पन्न डेढ गुणहानियोंके द्वारा उसके अपवर्तित करनेपर उसका आगमन देखा जाता है । इस प्रकार होता है ऐसा समझकर असंख्यातगुणा

१. आ०प्रतौ ओकड्डुक्कड्डुणभागहारेहि इति पाठः ।

गुणगारो ? पलिदो ० असंखे० भागो । ओकड्डुक्कड्डण–अधापवत्त–भागहारेहि पदुप्पण्णबेछावट्ठिअण्णोण्णब्भत्थरासिस्स असंखे० भागो जोगगुणगारपडिभागिओ एत्थ गुणगारो त्ति भणिदं होइ ।

* संतकम्ममसंखेज्जगुणं ।

§ ४९५. किं कारणं ? असंखेज्जपंचिंदियसमयपबद्धसंजुत्तगुणसेढिगोवुच्छसरूवत्तादो । को गुणगारो ? दिवड्ढगुणहाणीए असंखे० भागो ।

* कोहसंजलणस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा ।

§ ४९६. कुदो ? मिच्छाइट्ठिणा सव्वुक्कस्ससंकिलिट्ठेणुदीरिज्जमाणासंखे० लोगपडिभागियदव्वस्स गहणादो ।

* उदयो असंखेज्जगुणो ।

§ ४९७. किं कारणं ? उवसमसेढीए अंतरकरणं समाणिय कालं कादूण देवेसुप्पण्णस्स असंखे० लोगपडिभागेणुदयावलियब्भंतरे णिसित्तदव्वस्स चरिमणिसेयमस्सियूण पयदजहण्णसामित्तावलंबणादो । को गुणगारो ? तप्पाओग्गासंखे० रूवाणि ।

* बंधो असंखेज्जगुणो ।

---

है यह सिद्ध हुआ ।

शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है । अपकर्षण-उत्कर्षण भागहार और अधःप्रवृत्तभागहारसे प्रत्युत्पन्न दो छयासठ सागरोपमकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका असंख्यातवां भाग योगगुणकारका भागहाररूप यहाँ गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* उससे सत्कर्म असंख्यातगुणा है ।

§ ४९५. क्योंकि वह पञ्चेन्द्रियसम्बन्धी असंख्यात समयप्रबद्धसंयुक्त गुणश्रेणिके गोपुच्छस्वरूप है ।

शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—डेढ गुणहानिका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है ।

* क्रोधसंज्वलनकी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है ।

§ ४९६. क्योंकि मिथ्यादृष्टिके द्वारा सर्वोत्कृष्ट संक्लेश परिणामोंसे उदीर्यमाण द्रव्य असंख्यात लोकका भाग देने पर एक भागप्रमाण प्रकृतमें लिया गया है ।

* उससे उदय असंख्यातगुणा है ।

§ ४९७. क्योंकि उपशमश्रेणिमें अन्तरकरणको समाप्तकर और मर कर देवोंमें उत्पन्न हुए जीवके असंख्यात लोकका भाग देने पर जो एक भागप्रमाण द्रव्य उदयावलिमें निक्षिप्त होता है उसके अन्तिम निषेकको ग्रहण कर प्रकृत जघन्य स्वामित्वका यहाँ अवलम्बन लिया है । गुणकार क्या है ? तत्प्रायोग्य असंख्यात रूप गुणकार है ।

* उससे बन्ध असंख्यातगुणा है ।

§ ४९८. किं कारणं ? सुहुमेइंदियउववादजोगेण बद्धसमयपबद्धस्स गहणादो। एत्थ गुणगारो असंखेज्जलोगा।

संकमो असंखेज्जगुणो।

§ ४९९. किं कारण ? जहण्णबंधो णाम एइंदियजहण्णोववादजोगेण बद्धेयसमय पबद्धमेत्तो। संकमो पुण पंचिंदियघोलमाणजहण्णजोगेण बद्धकोहसंजलणचरिमणवकबंधस्स असंखे०भागमेत्तो, बधसमयादो समयूणदोआवलियमेत्तं गतूण असंखे०भागे सत्थाणेचेव उवसामिय तदसंखे०भागमेत्तदव्वमधापत्तसकमेण सकामेमाणमुवसामियम्मि पयदजहण्णसामित्तदंसणादो। तदा घोलमाणजहण्णजोगेण बद्धेयसमयपबद्धस्स असंखे० भागमेत्तो होदूण एसो पुव्विल्लदव्वादो[1] असंखेज्जगुणो त्ति घेत्तव्वं। जोगगुणगारादो अधापवत्तभागहारस्स असंखे०गुणहीणत्तादो जोगगुणगारस्स असंखे०भागमेत्तो एत्थ गुणगारो वत्तव्वो।

* संतकम्ममसंखेज्जगुणं।

§ ५०० कि कारणं ? अणियट्टिखवगम्मि कोधवेदगचरिमसमयघोलमाण जहण्णजोगेण बद्धणवकबंधस्स असंखेज्जे भागे घेत्तूण चरिमफालिविसए जहण्णसामित्तावलंबणादो। एत्थ गुणगारो पलिदो० असंखे० भागो।

§ ४९८. क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके उपपाद योगसे बद्ध समयबद्धको यहाँ ग्रहण किया है। यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

* उससे संक्रम असंख्यातगुणा है।

§ ४९९. क्योंकि जघन्य बन्ध एकेन्द्रियजीवके जघन्य उपपाद योगसे बद्ध एक समयप्रबद्ध प्रमाण है। परन्तु संक्रम पञ्चेन्द्रिय जीवके घोलमान जघन्य योगसे बद्ध क्रोधसंज्वलनके अन्तिम नवकबन्धके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि बन्धसमयसे एक समय कम दो आवलिमात्र जाकर असंख्यातवें भागमें या स्वस्थानमें ही उपशान्तकर उसके असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्यको अधःप्रवृत्त संक्रमके द्वारा संक्रम करते हुए उपशामकके प्रकृत जघन्य स्वामित्व देखा जाता है। इसलिए घोलमाण जघन्य योगसे बद्ध एक समयप्रबद्धका असंख्यातवाँ भाग होकर यह पूर्वके द्रव्यसे असंख्यात गुणा है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। योगगुणकारसे अधःप्रवृत्त भागहार असंख्यातगुणा हीन होनेके कारण योगगुणकारका असंख्यातवां भाग गुणकार यहाँ पर कहना चाहिए।

* उससे सत्कर्म असंख्यातगुणा है।

§ ५००. क्योंकि अनिवृत्तिकरण क्षपकके क्रोधवेदकके अन्तिम समयसम्बन्धी घोलमान जघन्य योगसे बद्ध नवकबन्धके असंख्यात बहुभागको ग्रहणकर अन्तिम फालिके आश्रयसे जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है। यहाँ पर गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

१. ता०प्रतौ पुव्विल्लादो इति पाठः।

*** एवं माणमायासंजलणपुरिसवेदाणं वंजणदो च अत्थदो च कायव्वं।**

§ ५०१ जहा कोहसंजलणस्स जहण्णपदेसप्पाबहुअं कदमेवमेदेसिं पि कम्माणं कायव्वं विसेसाभावादो। तं पुण कथं कायव्वमिदि भणिदे 'वंजणदो च अत्थदो च कादव्वं' इति वुत्तं। शब्दतश्चार्थतश्च कर्तव्यमित्यर्थः न शब्दगतोऽर्थगतो वा कश्चिद्विशेषोऽस्तीत्यभिप्रायः। तदो कोहसंजलणजहण्णप्पाबहुआलावो अणूणाहिओ एदेसिं पि कम्माणमणुगंतव्वो त्ति सिद्धं।

*** लोहसंजलणस्स वि एसो चेव आलावो। णवरि अत्थेण णाणत्तं, वंजणदो ण किंचि णाणत्तमत्थि।**

§ ५०२ अत्थदो वुण को विसेससंभवो अत्थि सो जाणियव्वो त्ति भणिदं होइ। को वुण सो अत्थगओ विसेसो चे[1]? जहण्णसंकमसंतकम्मेसु दव्वगओ विसेसो त्ति भणामो। तं जहा—लोहसंजलणस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। उदयो असंखे० गुणो। बंधो असंखे०गुणो। एत्थ पुव्वं व गुणगारो वत्तव्वो, विसेसाभावादो। संकमो असंखेज्जगुणो। कुदो? खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खवणाए अब्भुट्ठिदस्स अपुव्व-

---

* इसी प्रकार मानसंज्वलन, मायासंज्वलन और पुरुषवेदका व्यञ्जन और अर्थ दोनों प्रकारसे अल्पबहुत्व करना चाहिए।

§ ५०१. जिस प्रकार क्रोधसंज्वलनका जघन्य प्रदेश अल्पबहुत्व किया है उसी प्रकार इन कर्मोंका भी करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। परन्तु वह कैसे करना चाहिए ऐसी पृच्छा होने पर, 'व्यञ्जन और अर्थ दोनों प्रकारसे करना चाहिए' यह कहा है। शब्द रूपसे और अर्थरूपसे करना चाहिए यह उक्त कथनका अर्थ है। शब्दगत और अर्थगत कोई विशेषता नहीं है यह उक्तवचनका अभिप्राय है। इसलिए क्रोधसंज्वलनका न्यूनाधिकतासे रहित जघन्य अल्पबहुत्वालाप इन कर्मोंका भी जानना चाहिए यह सिद्ध हुआ।

* लोभसंज्वलनका भी यही आलाप है। इतनी विशेषता है कि अर्थकी अपेक्षा नानात्व है, व्यञ्जनकी अपेक्षा कुछ भी नानात्व नहीं है।

§ ५०२. अर्थकी अपेक्षा तो जो विशेष सम्भव है वह जान लेना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

**शंका**—वह अर्थगत विशेष क्या है?

**समाधान**—जघन्य संक्रम और जघन्य सत्कर्म इनमें द्रव्यगत विशेष है ऐसा हम कहते है। यथा—लोभसंज्वलनकी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है। उससे उदय असंख्यातगुणा है। उससे बन्ध असंख्यातगुणा है। यहाँ पर गुणकारका कथन पूर्वके समान करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमे कोई भेद नहीं है। उससे संक्रम असंख्यातगुणा है, क्योंकि क्षपितकर्मा-

१. आ० प्रतौ चेर इति पाठः।

करणावलियचरिमसमये वट्टमाणस्स अधापवत्तसंकमजहण्णदव्वग्गहणादो। को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि।

§ ५०३. संतकम्ममसंखेज्जगुणं। कुदो ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खवगसेढिं चढणुम्मुहस्स अधापवत्तकरणचरिमसमये दिवड्ढगुणहाणिमेत्तेइंदियसमयपबद्धे घेत्तूण जहण्णसामित्तविहाणादो। एत्थ गुणगारो अधापवत्तभागहारो एवमेसो अत्थविसेसो एत्थ जाणेयव्वोत्ति एसो सुत्तस्स भावत्थो।

*** इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोगाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा।**

§ ५०४. किं पमाणमेदं दव्वं ? असंखेज्जलोगपडिभागिय-मिच्छाइट्ठिउदीरिददव्वमेत्तं। तदो सव्वत्थोवत्तमेदस्स ण विरुज्झदे।

*** संकमो असंखेज्जगुणो।**

§ ५०५. किं कारणं ? अप्पप्पणो पाओग्गखविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खवणाए अब्भुट्ठिदस्स अधापवत्तकरणचरिमसमये विज्झादसंकमेण जहण्णसामित्तपडिलंभादो। एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा।

---

शिकलक्षणसे आकर क्षपणाके लिए उद्यत हुए तथा अपूर्वकरणसम्बन्धी आवलिके अन्तिम समयमें विद्यमान जीवके अधःप्रवृत्तसंक्रमरूपसे जघन्य द्रव्यको ग्रहण किया है।

**शंका**—गुणकार क्या है ?

**समाधान**—पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है।

§ ५०३. लोभसंज्वलनके जघन्य संक्रमसे उसका जघन्य सत्कर्म असंख्यातगुणा है, क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर क्षपकश्रेणिपर चढ़नेके लिए सन्मुख हुए जीवके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें डेढ़ गुणहानिमात्र एकेन्द्रिय सम्बन्धी समयप्रबद्धोंको ग्रहणकर जघन्य स्वामित्वका विधान किया है। यहाँ पर गुणकारअधः प्रवृत्त भागहारप्रमाण है। इसलिए यह अर्थविशेष यहाँ पर जानना चाहिए यह सूत्रका भावार्थ है।

*** स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति और शोककी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है।**

§ ५०४. **शंका**—इस द्रव्यका कितना प्रमाण है ?

**समाधान**—असंख्यात लोकका भाग देने पर जो एक भागकी मिथ्यादृष्टि जीव उदीरणा करता है तत्प्रमाण है। इसलिए इसका सबसे स्तोकपना विरोधको नहीं प्राप्त होता।

*** उससे संक्रम असंख्यातगुणा है।**

§ ५०५. क्योंकि अपने-अपने प्रायोग्य क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर क्षपणाके लिए उद्यत हुए जीवके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें विध्यातसंक्रमणके द्वारा जघन्य स्वामित्व प्राप्त होता है। यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

*** बंधो असंखेज्जगुणो ।**

§ ४०६. **किं कारणं ? सुहुमणिगोदजहण्णोववादजोगेण बद्धसमयपबद्धपमाणत्तादो। एत्थ गुणगारो अंगुलस्सासंखेज्जदिभागमेत्तो ।**

*** उदयो असंखेज्जगुणो ।**

§ ५०७. **किं कारणं ?** इत्थिवेद-अरदि-सोगाणं खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेढिणिज्जरमणुपालिय तदो समयाविरोहेण वेमाणियदेवेसु देवेसु च जहाकममुप्पण्णस्स अपज्जत्तद्धं बोलाविय उक्कस्ससंकिलेसं गंतूण पडिभग्गस्साव-लियपडिभग्गावत्थाए उदयगदगोवुच्छं घेत्तूण जहण्णसामित्तावलंबणादो। णवुंसयवेदस्स वि तेणेव लक्खणेणागंतूण अपच्छिमे मणुसभवग्गहणे देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेढि-णिज्जरमणुपालिय तदो अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गंतूण दसवस्ससहस्साउअदेवेसु-ववज्जिय सव्वलहुं पज्जत्तयदभावेण सम्मत्तं पडिवज्जिय पुणो अंतोमुहुत्तावसेसे जीवि-दव्वए त्ति मिच्छत्त गत्तूण संकिलेसमावूरिय एइंदिएसुववण्ण-पढमसमए वट्टमाण जीवम्मि तक्कालपडिबद्धउदयगदगोवुच्छावलंबणेण जहण्णसामित्त-विहाणादो। एत्थुदयगदगोवुच्छदव्वं जइ वि सव्वपयत्तेण जहण्णीकय तो वि एइंदिय-परिणाम-जोगेण बद्धजहण्णसमयपबद्धमेत्तमत्थि, खविदकम्मंक्षियसचयगोवुच्छाण जहाखया-गदाणं पि तप्पमाणत्तोवएसादो। तदो पुव्विल्लादो उववादजोगेण बद्धजह-

*** उससे बन्ध असंख्यातगुणा है ।**

§ ५०६. क्योंकि वह सूक्ष्म निगोदके जघन्य उपपाद योगसे बद्ध समयप्रबद्धप्रमाण है। यहाँ गुणकार अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

*** उससे उदय असंख्यातगुणा है ।**

§ ५०७. क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर कुछ कम एक पूर्वकोटि कालतक संयम-गुणश्रेणिनिर्जराका पालनकर तदनन्तर समयके अविरोधपूर्वक वैमानिक देवों और देवोंमें क्रमसे उत्पन्न हुए तथा अपर्याप्तकालको वितानेके बाद तथा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्तकर प्रतिभग्न हुए जीवके एक आवलि कालतक प्रतिभग्न अवस्थाके प्राप्त होनेपर उदयगत गोपुच्छको ग्रहण-कर स्त्रीवेद, अरति और शोकके जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है। तथा इसी लक्षणसे आकर अन्तिम मनुष्य भवमें कुछकम एक पूर्वकोटि कालतक संयमसम्बन्धी गुणश्रेणिनिर्जराका पालनकर तदनन्तर अन्तर्मुहुर्त काल शेष रहनेपर मिथ्यात्वमें जाकर तथा दशहजार आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होकर पर्याप्त होनेके बाद अतिशीघ्र सम्यक्त्वको प्राप्तकर पुनः जीवनमें अन्तर्मुहुर्त काल शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्तकर और संक्लेशको आपूरित कर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें विद्यमान जीवके तत्काल प्रतिबद्ध उदयगत गोपुच्छाका अवलम्बन लेकर नपुंसक-वेदके जघन्य स्वामित्वका विधान किया है। यहाँपर उदयगत गोपुच्छासम्बन्धी द्रव्य यद्यपि सब प्रकारके प्रयत्नसे जघन्य किया है तो भी एकेन्द्रिय जीवके परिणामयोगसे बद्ध जघन्य समयप्रबद्धप्रमाण है, क्योंकि क्षपितकर्मांशिक जीवके यथा क्रमसे क्षयको प्राप्त हुई संचयगोपु-च्छाओंके तत्प्रमाण होनेका उपदेश है। इसलिए पूर्वके उपपाद योगद्वारा बद्ध जघन्य समय-

ण्णसमयपबद्धदव्वादो एसो जहण्णोदयो असंखेज्जगुणो त्ति सिद्धं । गुणगारो च जोग-गुणगारमेत्तो ।

* संतकम्ममसंखेज्जगुणं ।

§ ५०८. किं कारणं ? इत्थि-णवुंसयवेदाणं खविदकम्मंसियखवगस्स चरिमफालि-णिवदणाणंतरमेगट्ठिदिएगसमयमेत्तकालावसेसे उदयगदगुणसेढिगोवुच्छावलंबणेण जह-ण्णसामित्तविहाणादो । अरदि-सोगाणं च खविदकम्मंसियखवगस्स सव्वसंकमचरिमफा-लिमस्सियूण जहण्णसामित्तपदुप्पायणादो । तदो सिद्धमसंखेज्जगुणत्तं । एत्थ गुणगारो पलिदो० असंखे०भागो ।

* हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा ।

§ ५०९. कुदो ? सव्वुक्कस्ससंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिजहण्णोदीरणादव्वग्गहणादो ।

* उदयो असंखेज्जगुणो ।

§ ५१०. किं कारणं ? उवसामयपच्छायददेवस्स उदीरणोदयदव्वं घेत्तूणावलिय-चरिमसमये जहण्णसामित्तावलंबणादो । एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गासंखे०रूवाणि ।

* बंधो असंखेज्जगुणो ।

---

प्रबद्धप्रमाण द्रव्यसे यह जघन्योदय असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ। यहाँपर गुणाकार योग के गुणकारप्रमाण है।

* उससे सत्कर्म असंख्यातगुणा है ।

§ ५०८. क्योंकि क्षपितकर्मांशिक क्षपकके अन्तिम फालिके पतनके बाद एक समयप्रमाण एक स्थितिके शेष रहनेपर उदयगत गुणश्रेणिगोपुच्छाका अवलम्बन लेकर स्त्रीवेद और नपुंसक-वेदके जघन्य स्वामित्वका विधान किया है। तथा क्षपितकर्मांशिकक्षपकके सर्वसंक्रमकी अन्तिम फालिका आश्रयकर अरति और शोकके जघन्य स्वामित्वका प्रतिपादन किया है। इसलिए इनका सत्कर्म असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हुआ। यहाँपर गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

* हास्य, रति, भय और जुगुप्साकी जघन्य प्रदेश उदीरणा स्तोक है ।

§ ५०९. क्योंकि सबसे उत्कृष्ट संक्लिष्ट मिथ्यादृष्टिके जघन्य उदीरणा द्रव्यको प्रकृतमें ग्रहण किया है।

* उससे उदय असंख्यातगुणा है ।

§ ५१०. क्योंकि उपशामनासे आकर जो देव हुआ है उसके उदीरणोदय द्रव्यको ग्रहणकर आवलिकालके अन्तिम समयमें जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है। यहाँ पर गुणकार तत्प्रायोग्य असंख्यात रूप है।

* उससे बन्ध असंख्यातगुणा है ।

§ ५११. कुदो ? सुहुमणिगोदुववादजोगेण बद्धजहण्णसमयपबद्धपमाणत्तादो । एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा ।

* संकमो असंखेज्जगुणो ।

§ ५१२. किं कारणं ? अपुव्वकरणावलियपविट्ठचरिमसमये अधापवत्तसंकमेण जहण्णभावावलंबणादो । एत्थ गुणगारो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । जोगगुणगारगुणिददिवड्ढगुणहाणीए अधापवत्तभागहारेणोवट्टिदाए पयदगुणगारुप्पत्तिदंसणादो ।

*संतकम्ममसंखेज्जगुणं ।

§ ५१३. को गुणगारो ? अधापवत्तभागहारो । किं कारणं ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागदखवगचरिमफालीए किंचूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तएइंदियसमयपबद्धपडिबद्धाए पयदजहण्णसामित्तावलंबणादो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते 'जो जं संकामेदि य' एदिस्से चउत्थीए सुत्तगाहाए अत्थो समत्तो होइ । एवं 'वेदगे' त्ति अणियोगद्दारे चउण्हं सुत्तगाहाणमत्थविहाणं समत्तं ।

तदो वेदगेत्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

णमो अरहंताणं० णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

---

§ ५११. क्योंकि वह सूक्ष्म निगोद जीवके उपपाद योगसे बद्ध जघन्य समयप्रबद्धप्रमाण है । यहाँपर गुणकार असंख्यात लोक है ।

* उससे संक्रम असंख्यातगुणा है ।

§ ५१२. क्योंकि अपूर्वकरणके आवलि प्रविष्ट अन्तिम समयमें अधःप्रवृत्त संक्रम द्वारा जघन्यपनेका अवलम्बन लिया है । यहांपर गुणकार पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल-प्रमाण है, क्योंकि योगगुणकारसे गुणित डेढ गुणहानिके अधःप्रवृत्तभागहारसे भाजित करनेपर प्रकृत गुणकारकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

* उससे सत्कर्म असंख्यातगुणा है ।

§ ५१३. शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—अधःप्रवृत्त भागहारप्रमाण गुणकार है, क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आकर कुछ कम डेढ़ गुणहानिप्रमाण एकेन्द्रियसम्बन्धी समयप्रबद्धप्रतिबद्ध क्षपककी अन्तिम फालिरूपसे प्रकृत जघन्य स्वामित्वका अवलम्बन लिया है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर 'जो जं संकामेदि य' इस चौथी सूत्रगाथाका अर्थ समाप्त हुआ । इस प्रकार 'वेदक' इस अनुयोगद्वारमें चार सूत्रगाथाओंका कथन समाप्त हुआ ।

इस प्रकार वेदक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

# १ वेदगअत्थाहियारचुण्णिसुत्ताणि

[1]वेदगे त्ति अणियोगद्दारे दोण्णि अणियोगद्दाराणि । तं जहा—उदयो च उदीरणा च । तत्थ चत्तारि सुत्तगाहाओ । [2]तं जहा—

कदि आवलियं पवेसेइ कदि च पविस्संति कस्स आवलियं ।
खेत्त-भव-काल-पोग्गल-ट्ठिदिविवागोदयखयो दु ॥५९॥
[3]को कदमाए ट्ठिदीए पवेसगो को व के य अणुभागे ।
सांतर-णिरंतरं वा कदि वा समया दु बोद्धव्वा ॥६०॥
[4]बहुगदरं बहुगदरं से काले को णु थोवदरगं वा ।
अणुसमयमुदीरेंतो कदि वा समयं उदीरेदि ॥६१॥
[5]जो जं संकामेदि य जं बंधदि जं च जो उदीरेदि ।
तं केण होइ अहियं ट्ठिदि अणुभागे पदेसग्गे ॥६२॥

[6]तत्थ पढमिल्ला गाहा पयडिउदीरणाए पयडिउदये च बद्धा । कदि आवलियं पवेसेदि त्ति एस गाहाए पढमपादो पयडिउदीरणाए । [7]एदं पुण सुत्तं पयडिट्ठाणउदीरणाए बद्धं । एदं ताव ट्ठवणीयं । एगेगपयडिउदीरणा दुविहा—एगेगमूलपयडिउदीरणा च एगेगुत्तरपयडिउदीरणा च । एदाणि वे वि पत्तेगं चउवीसमणियोगद्दारेहिं मग्गिऊणा ।

[8]तदो पयडिट्ठाणउदीरणा कायव्वा । [9]तत्थ ट्ठाणसमुक्कित्तणा । अत्थि एक्किस्से पयडीए पवेसगो । दोण्हं पयडीणं पवेसगो । [10]तिण्हं पयडीणं पवेसगो णत्थि । चउण्हं पयडीणं पवेसगो । एत्तो पाए णिरंतरमत्थि जाव दसण्हं पयडीणं पवेसगा । [11]एदेसु ट्ठाणेसु पयडिणिद्देसो कायव्वो भवदि । एयपयडिं पवेसेदि सिया कोहसंजलणं वा सिया माणसंजलणं वा सिया मायासंजलणं वा सिया लोभसंजलणं वा । [12]एवं चत्तारि भंगा । दोण्हं पयडीणं पवेसगस्स बारस भंगा । [13]चउण्हं पयडीणं पवेसगस्स चदुवीसं भंगा । पंचण्हं पयडीणं पवेसगस्स चत्तारि चउवीसं भंगा । [14]छण्हं पयडीणं पवेसगस्स सत्त चउवीसं भंगा । [15]सत्तण्हं पयडीणं पवेसगस्स दस चउवीसं भंगा । [16]अट्ठण्हं पयडीणं पवेसगस्स एक्कारस चउवीसं भंगा । णवण्हं पयडीणं पवेसगस्स छ चदुवीसं भंगा । [17]दसण्हं पयडीणं पवेसगस्स एक्का चदुवीसं भंगा [18]एदेसिं भंगाणं गाहा दसण्हमुदीरणमादिं कादूण । तं जहा—

एक्कग छक्केक्कारस दस सत्त चउक्क एक्कगं चेव ।
दोसु च बारस भंगा एक्कम्हि य हांति चत्तारि ॥१॥

---

(१) पृ०२ । (२) पृ०३ । (३) पृ०६ । (४) पृ०७ । (५) पृ०८ । (६) पृ०९ । (७) पृ०१० । (८) पृ०४२ । (९) पृ०४३ । (१०) पृ०४४ । (११) पृ०४५ । (१२) पृ०४६ । (१३) पृ०४७ । (१४) पृ०-४८ । (१५) पृ०४९ । (१६) पृ०५० । (१७) पृ०५१ । (१८) पृ०५२ ।

[1]सामित्तं । सामित्तस्स साहणट्ठमिमाओ दो सुत्तगाहाओ । तं जहा—

सत्तादि दसुक्कस्सा मिच्छत्ते मिस्सए णउक्कस्सा ।
छादी णव उक्कस्सा अविरदसम्मे दु आदिस्से ॥२॥
[2]पचादि अट्ठणिहणा विरदाविरदे उदीरणट्ठाणा ।
एगादी तिगरहिदा सत्तुक्कस्सा च विरदेसु ॥३॥

[3]एदासु दोसु गाहासु विहासिदासु सामित्तं समत्तं भवदि ।

एयजीवेण कालो । एक्किस्से दोण्हं चदुण्ह पंचण्हं छण्हं सत्तण्हं अट्ठण्हं णवण्हं दसण्हं पयडीण पवेसगो केवचिर कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [4]उक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । [5]एगजीवेण अंतरं । एक्किस्से दोण्हं चउण्ह पयडीणं पवेसगतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । [6]उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । पंचण्हं छण्हं सत्तण्हं पयडीणं पवेसगतरं केवचिरं कालादो होइ ? [7]जहण्णेण एयसमओ । [8]उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । अट्ठण्हं णवण्हं पयडीणं पवेसगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [9]उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । दसण्हं पयडीणं पवेसगस्स अंतरं केवचिरं कालादो होदि ? [10]जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।

[11]णाणाजीवेहि भंगविचयो । [12]सव्वजीवा दसण्ह णवण्हमट्ठण्ह सत्तण्हं छण्हं पंचण्हं चदुण्हं णियमा पवेसगा । दोण्हमेक्किस्से पवेसगा भजियव्वा ।

[13]णाणाजीवेहि कालो । एक्किस्से दोण्हं पवेसगा केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णेण एयसमओ । [14]उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सेसाणं पयडीणं पवेसगा सव्वद्धा ।

[15]णाणाजीवेहि अंतरं । एक्किस्से दोण्हं पवेसगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण छम्मासा । सेसाणं पयडीणं पवेसगाणं णत्थि अंतरं ।

[16]सण्णियासो । एक्किस्से पवेसगो दोण्हमपवेसगो । [17]एवं सेसाणं ।

अप्पाबहुअं । सव्वत्थोवा एक्किस्से पवेसगा । दोण्हं पवेसगा संखेज्जगुणा । चउण्हं पयडीणं पवेसगा संखेज्जगुणा । [18]पंचण्हं पयडीणं पवेसगा असंखेज्जगुणा । छण्हं पयडीणं पवेसगा असंखेज्जगुणा । सत्तण्हं पयडीणं पवेसगा असंखेज्जगुणा । दसण्हं पयडीणं पवेसगा अणंतगुणा । णवण्ह पयडीणं पवेसगा संखेज्जगुणा । [19]अट्ठण्हं पयडीणं पवेसगा संखेज्जगुणा । णिरयगदीए सव्वत्थोवा छण्हं पयडीणं पवेसगा । सत्तण्हं पयडीणं पवेसगा असंखेज्जगुणा । दसण्हं पयडीणं पवेसगा असंखेज्जगुणा । णवण्हं पयडीणं पवे-

(१) पृ०५३ । (२) पृ०५४ । (३) पृ०५७ । (४) पृ०५९ । (५) पृ०६० । (६) पृ०६१ । (७) पृ०६२ । (८) पृ०६३ । (९) पृ०६४ । (१०) पृ०६५ । (११) पृ०६९ । (१२) पृ०७० । (१३) पृ०७५ । (१४) पृ०७६ । (१५) पृ०७७ । (१६) पृ०७८ । (१७) पृ०७९ । (१८) पृ०८० । (१९) पृ०८१ ।

सगा संखेज्जगुणा । [1]अट्ठण्हं पयडीणं पवेसगा असंखेज्जगुणा ।

[2]एत्तो भुजगारपवेसगो । तत्थ अट्ठपदं कायव्वं । [3]तदो सामित्तं । भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदपवेसगो को होइ ? अण्णदरो । अवत्तव्वपवेसगो को होइ ? अण्णदरो उवसामणादो परिवदमाणगो ।

[4]एगजीवेण कालो । भुजगारपवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [5]उक्कस्सेण चत्तारि समया । अप्पदरपवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण तिण्णि समया । अवट्ठिपवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । [6]अवत्तव्वपवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ ।

[7]एयजीवेण अंतरं । भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदपवेसगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [8]उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । [9]अवत्तव्वपवेसगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।

[10]णाणाजीवेहि भंगविचयादि अणियोगद्दाराणि अप्पाबहुअवज्जाणि कायव्वाणि । [11]अप्पाबहुअं । सव्वत्थोवा अवत्तव्वपवेसगा । भुजगारपवेसगा अणंतगुणा । अप्पदरपवेसगा विसेसाहिया । अवट्ठिदपवेसगा असंखेज्जगुणा ।

[12]पदणिक्खेव-वड्ढीओ कादव्वाओ ।

[13]कदि च पविसंति कस्स आवलियं ति । [14]एत्थ पुव्वं गमणिज्जा ठाणसमुक्कित्तणा पयडिणिद्देसो च । ताणि एक्कदो भणिस्संति । अट्ठावीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति । सत्तावीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति सम्मत्ते उव्वेल्लिदे । [15]छव्वीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेसु उव्वेल्लिदेसु । पणुवीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति दंसणतियं मोत्तूण । [16]अणंताणुबंधीणमविसंजुत्तस्स उवसंतदंसणमोहणीयस्स । णत्थि अण्णस्स कस्स वि । चउवीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति अणंताणुबंधिणो वज्ज । तेवीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति मिच्छत्ते खविदे । [17]बावीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति सम्मामिच्छत्ते खविदे । [18]एक्कवीसं पयडीओ उदयावलियं पविसंति दंसणमोहणीए खविदे । एदाणि ट्ठाणाणि असंजदपाओग्गाणि ।

[20]एत्तो उवसामगपाओग्गाणि ताणि भणिस्सामो । उवसामणादो परिवदंतेण

(१) पृ०८२ । (२) पृ०८३ । (३) पृ०८४ । (४) पृ०८५ । (५) पृ०८६ । (६) पृ०८७ । (७) पृ०८८ । (८) पृ०८९ । (९) पृ०९० । (१०) पृ०९२ । (११) पृ०९३ । (१२) पृ०९९ । (१३) पृ०१०० । (१४) पृ०११२ । (१५) पृ०११३ । (१६) पृ०११४ । (१७) पृ०११५ । (१८) पृ०११६ । (१९) पृ०११७ । (२०) पृ०११८ ।

तिविहो लोहो ओकड्डिदो । तत्थ लोभसंजलणमुदए दिण्णं, दुविहो लोहो उदयावलियबाहिरे णिक्खित्तो । ताधे एक्का पयडी पविसदि । से काले तिण्णि पयडीओ पविसंति । [1]तदो अंतोमुहुत्तेण तिविहा माया ओकड्डिदा । तत्थ मायासंजलमुदए दिण्णं, दुविहमाया उदयावलियबाहिरे णिक्खित्ता । ताधे चत्तारि पयडीओ पविसंति । से काले छप्पयडीओ पविसंति । तदो अंतोमुहुत्तेण तिविहो माणो ओकड्डिदो । तत्थ माणसंजलणमुदए दिण्णं दुविहो माणो उदयावलियबाहिरे णिक्खित्तो । ताधे सत्त पयडीओ पविसंति । से काले णव पयडीओ पविसंति । तदो अंतोमुहुत्तेण तिविहो कोहो ओकड्डिदो । तत्थ कोह-संजलणमुदए दिण्णं, दुविहो कोहो उदयावलियबाहिरे णिक्खित्तो । ताधे दस पयडीओ पविसंति । से काले बारसपयडीओ पविसंति । तदो अंतोमुहुत्तेण पुरिसवेद-छण्णोकसाय वेदणीयाणि ओकड्डिदाणि । तत्थ पुरिसवेदो उदए दिण्णो, छण्णोकसाय- वेदणीयाणि उदयावलियबाहिरे णिक्खित्ताणि । ताधे तेरसपयडीओ पविसंति । से काले एगूणवीसं पयडीओ पविसंति । [2]तत्तो अंतोमुहुत्तेण इत्थिवेदमोकड्डिऊण उदयावलियबाहिरे णिक्खिवदि । से काले वीसं पयडीओ पविसंति । ताव जाव अंतरं ण विणस्सदि । अंतरं विणासिज्जमाणे णवुंसयवेदमोकड्डिदूण उदयावलियबाहिरे णिक्खिवदि । से काले एक्कावीसं पयडीओ पविसंति । [3]एत्तो पाए जइ खीणदंसणमोहणीयो एदाओ एक्कवीसं पयडीओ पविसंति जाव अक्खवग-अणुवसामगो ताव । एदस्स चेव कसायोवसामणादो परिवदमाणयस्स । [4]जाधे अंतरं विणट्ठं तत्तो पाए एक्कवीसं पयडीओ पविसंति जाव सम्मत्तमुदीरेंतो समत्तमुदए देदि, सम्मामिच्छत्तं मिच्छत्तं च आवलियबाहिरे णिक्खिवदि । ताधे बावीसं पयडीओ पविसंति । [5]से काले चउवीसं पयडीओ पविसंति । जइ [6]सो कसायउवसामणादो परिवदिदो दंसणमोहणीयउवसंतद्धाए अचरिमेसु समएसु आसाणं गच्छइ तदो आसाणगमणादो से काले पणुवीसं पयडीओ पविसंति । जाधे मिच्छत्तमुदीरेदि ताधे छव्वीसं पयडीओ पविसंति । तदो से काले अट्ठावीसं पयडीओ पविसंति । [7]अह सो कसाय उवसामणादो परिवदिदो दंसणमोहणीयस्स उवसंतद्धाए चरिमसमए आसाणं गच्छइ, से काले मिच्छत्तमोकड्डमाणयस्स छव्वीसं पयडीओ पविसंति । तदो से काले अट्ठावीसं पयडीओ पविसंति । एदे वियप्पा कसायउवसामणादो परिवदमाणगादो ।

[8]एत्तो खवगादो मग्गियव्वा कदि पवेसट्ठाणाणि त्ति । [9]तं जहा—दंसणमोहणीए खविदे एक्कावीसं पयडीओ पविसंति । अट्ठकसाएसु खविदेसु तेरस पयडीओ पविसंति । अंतरे कदे दो पयडीओ पविसंति । [10]पुरिसवेदे खविदे एक्का पयडी पविसदि । कोधे

(१) पृ० ११९ । (२) पृ० १२० । (३) पृ० १२१ । (४) पृ० १२२ । (५) पृ० १२३ । (६) पृ० १२४ । (७) पृ० १२५ । (८) पृ० १२६ । (९) पृ० १२७ । (१०) पृ० १२८ ।

खविदे माणो पविसदि । माणे खविदे माया पविसदि । मायाए खविदे लोभो पविसदि । लोभे खविदे अपवेसगो ।

[1]एवमणुमाणिय सामित्तं णेदव्वं । [2]एयजीवेण कालो । एक्किस्से दोण्हं तिण्हं छण्हं णवण्हं बारसण्हं तेरसण्हं एगूणवीसण्हं वीसण्हं पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होइ ? जहण्णेण एयसमओ । [3] उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ! चदुण्हं सत्तण्हं दसण्हं पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होइ ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । [4]पंच-अट्ठएक्कारस-चोद्दसादि जाव अट्ठारसा त्ति एदाणि सुण्णट्ठाणाणि । एक्कवीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । [5]उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । बावीसाए पणुवीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [6]उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तेवीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कसेण अंतोमुहुत्तं । चउवीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? [7]जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण वेछावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि । छव्वीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? [8]तिण्णि भंगा । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सत्तावीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [9]उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । अट्ठावीसाए पयडीणं पवेसगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । [10]उक्कस्सेण वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । [11]अंतरमणुचिंतिऊण णेदव्वं ।

[12]णाणाजीवेहि भंगविचयो । अट्ठावीस-सत्तावीस-छव्वीस-चदुवीस-एक्कवीसाए पयडीओ णियमा पविसंति । सेसाणि [13]ट्ठाणाणि भजियव्वाणि । [14]णाणाजीवेहि कालो अंतरं च अणुचिंतिऊण णेदव्वं ।

[15]अप्पाबहुअं । चउण्हं सत्तण्हं दसण्हं पयडीण पवेसगा तुल्ला थोवा । तिण्हं पवेसगा संखेज्जगुणा । छण्हं पवेसगा विसेसाहिया । [16]णवण्हं पवेसगा विसेसाहिया । बारसण्हं पवेसगा विसेसाहिया । एगूणवीसाए पवेसगा विसेसाहिया । वीसाए पवेसगा विसेसाहिया । [17]दोण्हं पवेसगा संखेज्जगुणा । एक्कवीसाए पवेसगा असंखेज्जगुणा । [18]तेरसण्हं पवेसगा संखेज्जगुणा । तेवीसाए पवेसगा संखेज्जगुणा । बावीसाए पवेसगा असंखेज्जगुणा । सत्तावीसाए पवेसगा असंखेज्जगुणा । एक्कवीसाए पवेसगाअसंखेज्जगुणा । [19]चउवीसाए पवेसगा असंखेज्जगुणा । अट्ठावीसाए पवेसगा असंखेज्जगुणा । छव्वीसाए

(१) पृ० १३० । (२) पृ० १३१ । (३) पृ० १३३ । (४) पृ० १३४ । (५) पृ० १३५ । (६) पृ० १३६ । (७) पृ० १३७ । (८) पृ० १३८ । (९) पृ० १३९ । (१०) पृ० १४० । (११) पृ० १४१ । (१२) पृ० १४७ । (१३) पृ० १४८ । (१४) पृ० १५३ । (१५) पृ० १५८ । (१६) पृ० १५९ । (१७) पृ० १६० । (१८) पृ० १६१ । (१९) पृ० १६२ ।

पवेसगा अणंतगुणा ।

[1]भुजगारो कायव्वो । पदणिक्खेवो कायव्वो । वड्ढी कायव्वा ।

[2]'खेत्त-भव-काल-पोग्गल-ट्ठिदिविवागोदयखयो दु' त्ति एदस्स विहासा । कम्मोदयो खेत्त-भव-काल-पोग्गल-ट्ठिदिविवागोदयक्खओ भवदि ।

[3]को कदमाए ट्ठिदीए पवेसगो त्ति पदस्स ट्ठिदिउदीरणा कायव्वा । [4]एत्थ ट्ठिदिउदीरणा दुविहा—मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा उत्तरपयडिट्ठिदिउदीरणा च । तत्थ इमाणि अणियोगद्दाराणि । तं जहा—पमाणाणुगमो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचयो कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं भुजयारो पदणिक्खेवो वड्ढी ट्ठाणाणि च । [5]एदेसु अणियोगद्दारेसु विहासिदेसु 'को कदमाए ट्ठिदीए पवेसगो' त्ति पदं समत्तं ।

## भाग ११

'को व केय अणुभागे' त्ति अणुभागउदीरणा कायव्वा । [6]तत्थ अट्ठपदं । तं जहा-अणुभागा पयोगेण ओकड्डियूण उदये दिज्जंति सा उदीरणा । [7]तत्थ जं जिस्से आदिफद्दयं तं ण ओकड्डिज्जदि । एवमणंताणि फद्दयाणि ण ओकड्डिज्जंति । केत्तियाणि ? जत्तिगो जहण्णगो णिक्खेवो जहण्णिया च अइच्छावणा तत्तिगाणि । आदीदो पहुडि एत्तियमेत्ताणि फद्दयाणि अइच्छिदूण तं फद्दयमोकड्डिज्जदि । [8]तेण परमपडिसिद्ध । एदेण अट्ठपदेण अणुभागुदीरणा दुविहा—मूलपयडिअणुभागउदीरणा च उत्तरपयडिअणुभागउदीरणा च । एत्थ मूलपयडिअणुभागउदीरणा भाणियव्वा ।

[10]उत्तरपयडिअणुभागुदीरणं वत्तइस्सामो । तत्थेमाणि चउवीसमणियोगद्दाराणि—सण्णा सव्वउदीरणा एवं जाव अप्पाबहुए त्ति भुजगार-पदणिक्खेववड्ढि-ट्ठाणाणि च । [11]तत्थ पुव्वं गमणिज्जा दुविहा सण्णा—घाइसण्णा ठाणसण्णा च । ताओ दो वि एक्कदो वत्तइस्सामो । त जहा मिच्छत्त-बारसकसायाणमणुभागउदीरणा सव्वघादी । [12]दुट्ठाणिया तिट्ठाणिया चउट्ठाणिया वा । सम्मत्तस्स अणुभागमुदीरणा देसघादी । एयट्ठाणिया वा दुट्ठाणिया वा । सम्मामिच्छत्तस्स अणुभागउदीरणा सव्वघादी विट्ठाणिया । [13]चदुसंजलण-तिवेदाणमणुभागुदीरणा देसघादी वा सव्वघादी वा । एगट्ठाणिया वा दुट्ठाणिया तिट्ठाणिया चउट्ठाणिया वा । छण्णोकसायाणमणुभागउदीरणा देसघादी वा सव्वघादी वा । [14]दुट्ठाणिया वा तिट्ठाणिया वा चउट्ठाणिया वा । चदुसंजलणणवणोकसायाणमणुभागउदीरणा एइंदिए वि देसघादी होइ ।

[15]एगजीवेण सामित्तं । तं जहा—मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स ?

(१) पृ० १६८ । (२) पृ० ३८७ । (३) पृ० १८८ । (४) पृ० १८९ । (५) पृ० १९० । (६) पृ० १ । (७) पृ० २ । (८) पृ० ३ । (९) पृ० ४ । (१०) पृ० ३६ । (११) पृ० ३७ । (१२) पृ० ३८ । [१३] पृ० ३९ । [१४] ४० । [१५] पृ० ४६ ।

मिच्छाइट्ठिस्स सण्णिस्स सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तयदस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स। [1]एवं सोलसकसायाणं। [2]सम्मत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स? मिच्छत्ताहिमुह-चरियसमय असंजदसम्मादिट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स। [3]सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभा-गुदीरणा कस्स? मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स। इत्थि-वेद-पुरिसवेदाणमुक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स? [4]पंचिंदियतिरिक्खस्स अट्ठवासजादस्स करहस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स। णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणमुक्कस्साणुभागुदीरणा कस्स? सत्तमाए पुढवीए णेरइयस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स। हस्स-रदीणमुक्कस्साणुभाग उदीरणा कस्स? सदारसहस्सारदेवस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स।

[5]एत्तो जहण्णिया उदीरणा। मिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? [6]संजमाहि-मुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स। सम्मत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? समयाहियावलिय अक्खीणदंसणमोहणीयस्स। [7]सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणभागुदीरणा कस्स? सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स। अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभाग उदीरणा कस्स? संजमाहिमुचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स। अपच्चक्खाणकसायस्स जहण्णाणुभाग उदीरणा कस्स? [8]संजमाहिमुहचरिमसमय-असंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स। पच्चक्खाणकसायस्स जहण्णाणुभागमुदीरणा कस्स? संजमाहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स। कोहसंजलणस्स जहण्णा-णुभागउदीरणा कस्स? खवगस्स चरिमसमयमाणवेदगस्स। मायासंजलणस्स जहण्णा-णुभागउदीरणा कस्स? खवगस्स चरिमसमयमायावेदगस्स। लोहसंजलणस्स जहण्णा-णुभागउदीरणा कस्स? [11]खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स। इत्थि-वेदस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स? इत्थिवेदखवगस्स समयाहियावलियचरिमसमय-सवेदस्स। पुरिसवेदस्स जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स? पुरिसवेदखवगस्स समयाहिया-वलिय चरिमसमयसवेदस्स। णवुंसयवेदस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? णवुंसयवेद-खवयस्स समयाहियावलियचरिमसमयसवेदस्स। [12]छण्णोकसायाणं जहणाणुभागुदीरणा कस्स? खवगस्स चरिमसमयअपुव्वकरणे वट्टमाणस्स।

[13]एगजीवेण कालो। मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो

(१) पृ० ४८। (२) पृ० ४९। (३) पृ० ५०। (४) पृ० ५१। (५) पृ० ५२। (६) पृ० ५४। (७) पृ०५५। (८) पृ०५६। (९) पृ०५७। (१०) पृ०५८। (११) पृ०५९। (१२) पृ०६०। (१३) पृ० ६२।

होदि ? जहण्णेण एयसमओ । [1]उक्कस्से वे समया । अणुक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । [2]उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । सम्मत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्साणुभाग उदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं [3]उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमयो । अणुक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? [4]जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सेसाणं कम्माणं मिच्छत्तभंगो । णवरि अणुक्कस्साणुभागुदीरगउक्कस्सकालो पयडिकालो कादव्वो ।

[5]एत्तो जहण्णगो कालो । सव्वासिं पयडीणं जहण्णाणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेो एगसमओ । [6]अजहण्णाणुभागुदीरणा पयडि-उदीरणाभंगो ।

[7]अंतरं । मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । [8]उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्साणुभागुदीरगतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण बे छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि [9]एवं सेसाणं कम्माणं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तवज्जाणं । णवरि अणुक्कसाणुभागुदीरगतरं पयडिअंतरं कादव्वं । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुक्कस्साणुभागुदीरगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? [10]जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ।

[11]जहण्णाभागुदीरगंतरं केसिंचि अत्थि, केसिंचि णत्थि ।

[12]णाणजीवेहि भंगविचओ भागभागो परिमाणं खेत्तं फोसणं कालो अंतरं सण्णि-यासो च एदाणि कादव्वाणि ।

[13] अप्पाबहुअं । सव्वतिव्वाणुभागा मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा । [14]अणंता-णुबंधीणमण्णदरा उक्कस्साणुभागुदीरणा तुल्ला अणंतगुणहीणा । संजलणा-णमण्णदरा उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा । पच्चक्खाणावरणीयाणमुक्कस्सा-णुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणहीणा । [15]अपच्चक्खाणावरणीयाणमुक्कस्साणु-भागमुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणहीणा । णवुंसयवेदस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंत-गुणहीणा । अरदीए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा । सोगस्स उक्कस्साणुभागु-

(१) पृ० ६३ । (२) पृ० ६४ । (३) पृ० ६५ । (४) पृ० ६६ । (५) पृ० ७० । (६) पृ० ७१ । (७) पृ० ७२ । (८) पृ० ७५ । (९) पृ० ७६ । (१०) पृ० ७७ । (११) पृ० ८१ । (१२) पृ० ८७ । (१३) पृ० १२३ । (१४) पृ० १२४ । (१५) पृ० १२५ ।

दीरणा अणंतगुणहीणा। भए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा। [1]दुगुंछाए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा। इत्थिवेदस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा पुरिसवेदस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा। रदीए उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा। हस्से उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा। [2]सम्मत्ते उक्कस्साणुभागुदीरणा अणंतगुणहीणा।

जहण्णाणुभागुदीरणा। सव्वमंदाणुभागा लोभसंजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा। मायासंजलणस्स जहण्णाणुभागउदीरणा अणंतगुणा। [3]माणसंजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। कोहसंजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। सम्मत्ते जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। पुरिसवेदे जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। [4]इत्थिवेदे जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। णवुंसयवेदे जहण्णाणुभागउदीरणा अणंतगुणा। हस्से जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। रदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। [5]दुगुंछाए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। भये जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। सोगस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। अरदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। पच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। अपच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। [6]अणंताणुबंधीण जहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। मिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। एवमोघजहण्णओ सम्मत्तो।

णिरयगदीए सव्वमंदाणुभागा सम्मत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा। हस्सस्स जहण्णाणुभागउदीरणा अणंतगुणा। [7]रदीए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। दुगुंछाए जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। सोगस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। अरदीए जहण्णाणुभागुदीरणा। णवुंसयवेदे जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। संजलणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। अपच्चक्खाणावरणजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। [8]पच्चक्खाणावरणाजहण्णाणुभागुदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। सम्मामिच्छत्तस्सजहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभाग उदीरणा अण्णदरा अणंतगुणा। मिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागुदीरणा अणंतगुणा। [9]एवं देवगदीए वि।

भुजगारउदीरणा उवरिमगाहाए परूविहिदि, पदणिक्खेवो वि तत्थेव, वड्ढी वि तत्थेव।

पदेसुदीरणा दुविहा—मूलपयडिपदेसुदीरणा उत्तरपयडिपदेसुदीरणा च। मूलप-

(१) पृ० १२६। (२) पृ० १२७। (३) पृ० १२८। (४) पृ० १२९। (५) पृ० १३०। (६) पृ० १३१। (७) पृ० १३२। (८) पृ० १३३। (९) पृ० १३४।

यडिपदेसुदीरणं भग्गियूण [1]त्तदो उत्तरपयडिपदेसुदीरणा च समुक्कित्तणादि अप्पाबहु-अअंतेहि अणिओगद्दारेहि भग्गियव्वा । [2]तत्थसामित्तं । [3]मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसु-दीरणा कस्स ? संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिव-ज्जमाणगस्स । [4]सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? समयाहियावलिय अक्खी-णदंसणमोहणीयस्स । [5]सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? सम्मत्ताहि-मुहचरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । [6]अणंताणुबंधीणं उक्कस्सिया पदे-सुदीरणा कस्स ? संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स । अपच्चक्खाण-कसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? संजमाहिमुहचरिम मयअसंजदसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा । [7]पच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? संजमाहिमुहचरिमसमय संजदासजदस्स सव्वविसुद्धस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा । [8]कोह संजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? खवगस्स चरिमसमयकोधवेदगस्स । [9]एवं माण-मायासंजलणाणं । लोहसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स । [10]इत्थिवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमय इत्थिवेदगस्स । पुरिसवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? खवगस्स समयाहियावलियचरिमसमयपुरिसवेदगस्स । णवुंसय-वेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? [11]खवगस्स समयाहियावलिय चरिमस-मयणवुंसयवेदगस्स । छण्णोकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा कस्स ? खवगस्स चरिमसमयअपुव्वकरणे वट्टमाणगस्स ।

[12]जहण्णसामित्तं । [13]मिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा कस्स ? सण्णि-मिच्छा-इट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स इसिमज्झिमपरिणामस्स वा । सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदी-रणा कस्स ? [14]मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसम्माइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ईसिमज्झिमपरि-णामस्सवा । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा कस्स ? मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमय-सम्मामिच्छाइट्ठिस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ईसिमज्झिमपरिणामस्स वा सोलसकसाय-णवणोकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा मिच्छत्तभंगो ।

[15]एयजीवेण कालो । [16]मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । अणुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? एत्थ

---

(१) पृ० २०८ । (२) पृ० २०८ । (३) पृ० २१० (४) पृ० २११ । (५) पृ० २१२ । (६) पृ० २१३ । (७) पृ० २१४ । (८) पृ० २१५ । (९) पृ० २१६ । (१०) पृ० २१७ । (११) पृ० २१८ । (१२) पृ० २२० । (१३) पृ० २२१ । (१४) पृ० २२२ । (१५) पृ० २२३ । (१६) पृ० २२४ ।

तिण्णि भंगा । जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सेसाणं कम्माणमुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । अणुक्कस्सपदेसुदीरगो पयडिउदीरणाभंगो ।

णिरयगदीए मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणंताणुबंधीणमुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । [2]अणुक्कस्सपदेसुदीरगो पयडिउदीरणाभंगो । सेसाणं कम्माणमित्थि-पुरिसवेदवज्जाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? [3]जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अणुक्कस्सपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । [4]णवरि णवुंसयवेद-अरइ-सोगाणमुदीरगो उक्कस्सादो तेत्तीसं सागरोवमाणि । एवं सेसासु गदीसु उदीरगो साहेयव्वो ।

[5]एत्तो जहण्णपदेसुदीरगाणं कालो । सव्वकम्माणं जहण्णपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । [6]अजहण्णपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण पयडिउदीरणाभंगो । णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णपदेसुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? [7]जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । अजहण्णपदेसुदीरगो जहा पयडिउदीरणाभंगो ।

[8]एगजीवेण अंतरं । मिच्छत्तुक्कस्सपदेसुदीरगंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । सेसेहिं कम्मेहिं अणुमग्गियूण णेदव्वं ।

[9]णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागो परिमाणं खेत्तं पोसणं कालो अंतरं च एदाणि भाणिदव्वाणि ।

[10]तदो सण्णियासो । मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरगो अणंताणुबंधीणमुक्कस्सं वा उदीरेदि । [11]उक्कस्सादो अणुक्कस्सा चउट्ठाणपदिया । एवं णेदव्वं ।

[12] अप्पाबहुअं । सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा । अणंताणुबंधीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला संखेज्जगुणा । [13] सम्मामिच्छत्तमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा । अपच्चक्खाणचउक्कस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला असंखेज्जगुणा । [14] पच्चक्खाणचउक्कस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला असं-

(१) पृ० २२५ । (२) पृ० २२६ । (३) पृ० २२७ । (४) पृ० २२८ । (५) पृ० २३३ । (६) पृ० २३४ । (७) पृ० २३५ । (८) पृ० २३९ । (९) पृ० २५३ । (१०) पृ० २७४ । (११) पृ० २७५ । (१२) पृ० २८८ । (१३) पृ० २८९ । (१४) पृ० २९० ।

खेज्जगुणा। सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। भय-दुगुंछाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा तुल्ला अणंतगुणा। हस्स-सोगाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। [1]रदि-अरदीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। [2]इत्थि-णवुंसयवेदाणं उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। पुरिसवेदे उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। कोहसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। माणसजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। [3]मायासंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। लोहसंजलणस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा।

णिरयगदीए सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा। अणंताणुबंधीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा संखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। अपच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा असंखेज्जगुणा। पच्चक्खाणकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा अण्णदरा विसेसाहिया। [4]सम्मत्तस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। णवुंसयवेदस्स उक्कस्सिया पदेसुदीरणा अणंतगुणा। भय-दुगुंछाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। [6]हस्ससोगाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। रदि-अरदीणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। संजलणाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा संखेज्जगुणा।

[7]एत्तो जहण्णिया। सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा। अपच्चक्खाणकसायाण जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला संखेज्जगुणा। पच्चक्खाणकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला विसेसाहिया। [8]अणंताणुबंधीणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा तुल्ला विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। दुगुंछाए जहण्णिया पदेसुदीरणा अणंतगुणा। भयस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। [9]हस्स-सोगाण जहण्णिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। रदि-अरदीणं जहण्णिया पदेसुदीरणा विसेसाहिया। तिण्हं वेदाण जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा विसेसाहिया। संजलणाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा अण्णदरा संखेज्जगुणा।

[10]भुजगारउदीरणा उवरिमाए गाहाए परूविहिदि। पदणिक्खेवो वड्ढी वि तत्थेव।

[11]'सांतर-णिरंतरो वा कदि वा समया दु बोद्धव्वा' त्ति एत्थ अंतरं च कालो च हेट्ठदो विहासिया। 'बहुगदरं बहुगदरं से काले को णु थोवदरगं वा' त्ति एसो भुजगारो

(१) पृ० २९१। (२) पृ० २९२। (३) पृ० २९३। (४) पृ० २९४। (५) पृ० २९५। (६) पृ० २९६। (७) पृ० २९७। (८) पृ० २९८। (९) पृ० २९९। (१०) पृ० ३००। (११) पृ० १३८।

कायव्वो। [1]पयडिभुजगारो ट्ठिदिभुजगारो अणुभागभुजगारो पदेसभुजगारो। एवं मग्गणाए कदाए समत्ता गाहा।

[2]जो जं संकामेदि य जं बंधदि जं च जो उदीरेदि।
तं होइ केण अहियं ट्ठिदि अणुभागे पदेसग्गे॥

एदिस्से गाहाए अत्थो—बंधो संतकम्मं उदयोदीरणा संकमो एदेसिं पंचण्हं पदाणं उक्कस्समुक्कस्सेण जहण्णं जहण्णेण अप्पाबहुअं पयडीहिं ट्ठिदीहिं अणुभागेहिं पदेसेहिं। पयडीहिं उक्कस्सेण जाओ पयडीओ उदीरिज्जंति उदिण्णाओ च ताओ थोवाओ। जाओ बज्झंति ताओ संखेज्जगुणाओ। [3]जाओ संकामिज्जंति ताओ विसेसाहियाओ। सतकम्मं विसेसाहियं। जहण्णाओ जाओ पयडीओ बज्झंति संकामिज्जंति उदीरिज्जंति उदिण्णाओ संतकम्मं च एक्का पयडी।

[4]ट्ठिदीहि उक्कस्सेण जाओ ट्ठिदीओ मिच्छत्तस्स बज्झंति ताओ थोवाओ। उदीरिज्जंति सकामिज्जति च विसेसाहियाओ। [5]उदिण्णाओ विसेसाहियाओ। संतकम्मं विसेमाहियं। एवं सोलसकसायाणं। सम्मत्तस्स उक्कस्सेण जाओ ट्ठिदीओ संकामिज्जंति उदीरिज्जंति च ताओ थोवाओ। [6]उदिण्णाओ विसेसाहियाओ। संतकम्मं विसेसाहियं। सम्मामिच्छत्तस्स जाओ ट्ठिदीओ उदीरिज्जंति ताओ थोवाओ। [7]उदिण्णाओ ट्ठिदीओ विसेसाहियाओ। संकामिज्जंति ट्ठिदीओ विसेसाहियाओ। संतकम्मट्ठिदीओ विसेसाहियाओ। [8]णवणोकसायाणं जाओ ट्ठिदीओ बज्झंति ताओ थोवाओ। उदीरिज्जंति संकामिज्जंति य सखेज्जगुणाओ। उदिण्णाओ विसेसाहियाओ। सतकम्मट्ठिदीओ विसेसाहियाओ।

[9]जहण्णेण मिच्छत्तस्स एगा ट्ठिदी उदीरिज्जदि। उदयो संतकम्मं च। जट्ठिदिउदयो च तत्तियो चेव। जट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। [10]जट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा। जहण्णओ ट्ठिदिसंतकम्मो असंखेज्जगुणो। जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो।

सम्मत्तस्स जहण्णगं ट्ठिदिसंतकम्मं संकमो उदीरणा उदयो च एगा ट्ठिदी।

[11]जट्ठिदिसंतकम्मं जट्ठिदिउदयो च तत्तियो चेव। सेसाणि असंखेज्जगुणाणि

[12]सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णयं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं। जट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। जहण्णओ ट्ठिदिसंकमो असंखेज्जगुणो। जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा। जहण्णओ ट्ठिदिउदओ विसेसाहिओ।

(१) पृ० ३१९। (२) पृ० ३२०। (३) ३२३। (४) पृ० ३२४। (५) पृ० ३२५। (६) पृ० ३२६। (७) पृ० ३२७। (८) पृ० ३२८। (९) ३२९। (१०) पृ० ३३०। (११) पृ० ३३१। (१२) पृ० ३३२।

बारसकसायाण जहण्णय ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं। जट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। जहण्णओ ट्ठिदिसंकमो असंखेज्जगुणो। जहण्णगो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जहण्णगो ठिदिउदयो विसेसाहियो।

तिण्हं संजलणाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा थोवा। [२]जहण्णगो ट्ठिदिउदयो संखेज्जगुणो। जट्ठिदिउदयो जट्ठिदिउदीरणा च असंखेज्जगुणो। जहण्णगो ठिदिबंधो ठिदिसंकमो ट्ठिदिसंतकम्मं च संखेज्जगुणाणि। जट्ठिदिसंकमो विसेसाहिओ। [३]जट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं। जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

लोहसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिसंतकम्ममुदयोदीरणा च तुल्ला थोवा। [४]जट्ठिदिउदयो जट्ठिदिसंतकम्मं च तत्तियं चेव। जट्ठिदिउदीरणा संकमो च असंखेज्जगुणा। जट्ठिदिबंधो विसेसाहियो।

इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णट्ठिदिसंतकम्ममुदयोदीरणा च थोवाणि। जट्ठिदिसंतकम्मं जट्ठिदिउदयो च तत्तियो चेव। [५] जट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा। जहण्णगो ट्ठिदिसंकमो असंखेज्जगुणो। जहण्णगो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो।

पुरिसवेदस्स जहण्णगो ट्ठिदिउदयो ट्ठिदिउदीरणा च थोवा। जट्ठिदिउदयो तत्तियो चेव। जट्ठिदिउदीरणा समयाहियावलिया सा असंखेज्जगुणा। जहण्णगो ट्ठिदिबंधो ट्ठिदिसंकमो ट्ठिदिसंतकम्मं च ताणि संखेज्जगुणाणि। [६]जट्ठिदिसंकमो विसेसाहियो। जट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं। जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

छण्णोकसायाणं जहण्णगो ट्ठिदिसंकमो संतकम्मं च थोवं। जहण्णगो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। [७] जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जहण्णओ ट्ठिदिउदयो विसेसाहियो।

एत्तो अणुभागेहिं अप्पाबहुगं। उक्कस्सेण ताव। [८]मिच्छत्त-सोलस कसाय-णवणोकसायाणमुक्कस्सअणुभागउदीरणा उदयो च थोवा। उक्कस्सओ बंधो संकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्सअणुभागउदयो उदीरणा च थोवाणि। उक्कस्सओ अणुभागसंकमो सतकम्म च अणंतगुणाणि।

एत्तो जहण्णयमप्पाबहुअं। मिच्छत्त-बारसकसायाणं जहण्णगो अणुभागबंधो थोवो। जहण्णयो उदयो उदीरणा च अणंतगुणाणि। जहण्णगो अणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि।

---

(१) पृ० ३३३। (२) पृ० ३३४। (३) पृ० ३३५। (४) पृ० ३३६। (५) पृ० ३३७। (६) पृ० ३३८। (७) पृ० ३३९। (८) पृ० ३४०। (९) पृ० ३४१।

[1]सम्मत्तस्स जहण्णयमणुभागसंतकम्ममुदयो च थोवाणि। जहण्णिया अणुभागुदीरणा अणंतगुणा। [2]जहण्णओ अणुभागसंकमो अणंतगुणो।

सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णगो अणुभागसंकमो संतकम्मं च थोवाणि। जहण्णगो अणुभागउदयोदीरणा च अणंतगुणाणि।

कोहसंजलणस्स जहण्णगो अणुभागबंधो संकमो संतकम्मं च थोवाणि। [3]जहण्णाणुभागउदयोदीरणा च अणंतगुणाणि। एवं माण-मायासंजलणाणं।

लोहसंजलणस्स जहण्णगो अणुभागउदयो संतकम्मं च थोवाणि। जहण्णिया अणुभागउदीरणा अणंतगुणा। जहण्णगो अणुभागसंकमो अणंतगुणो। [4] जहण्णगो अणुभागबंधो अणंतगुणो।

इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णगो अणुभागउदयो संतकम्मं च थोवाणि। जहण्णिया अणुभागुदीरणा अणंतगुणा। जहण्णगो अणुभागबंधो अणंतगुणो। जहण्णगो अणुभागसंकमो अणंतगुणो।

पुरिसवेदस्स जहण्णगो अणुभागबंधो संकमो संतकम्मं च थोवाणि। जहण्णगो अणुभागउदयो अणंतगुणो। जहण्णिया अणुभागउदीरणा अणंतगुणा।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णाणुभागबंधो थोवो। जहण्णगो अणुभागउदयोदीरणा च अणंतगुणा। जहण्णगो अणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि।

[5]अरदि-सोगाणं जहण्णगो अणुभागउदयो उदीरणा च थोवाणि। जहण्णगो अणुभागबंधो अणंतगुणो। जहण्णाणुभागसंकमो संतकम्मं च अणंतगुणाणि।

पदेसेहिं उक्कस्समुक्कस्सेण। मिच्छत्त-बारसकसाय-छण्णोकसायाणमुक्कस्सिया पदेसुदीरणा थोवा। उक्कस्सगो बंधो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो। [8]उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेससंतकम्म विसेसाहियं।

सम्मत्तस्स उक्कस्सपदेससकमो थोवो। उक्कस्सपदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। [10]उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं।

सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदीरणा थोवा। उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो। [11]उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं।

तिसंजलण-तिवेदाणमुक्कस्सपदेसबंधो थोवो। उक्कस्सिया पदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। [12]उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं।

---

(१) पृ० ३४२। (२) पृ० ३४३। (३) पृ० ३४४। (४) पृ० ३४५। (५) पृ० ३४६। (६) पृ० ३४७। (७) ३४८। (८) पृ० ३४९ (९) पृ० ३५० (१०) पृ० ३५१। (११) पृ० ३५२। (१२) पृ० ३५३।

लोभसंजलणस्स उक्कस्सपदेसबंधो थोवो। उक्कस्सपदेससंकमो असंखेज्ज-गुणो। [1]उक्कस्सपदेसुदीरणा असंखेज्जगुणा। उक्कस्सपदेसुदयो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सपदेससंतकम्मं विसेसाहियं।

[2]जहण्णयं। मिच्छत्त अट्ठकसायाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। उदयो असंखेज्जगुणो। [3]संकमो असंखेज्जगुणो। बंधो असंखेज्जगुणो। संतकम्ममसंखे-ज्जगुणं।

सम्मत्तस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। [4]उदयो असंखेज्जगुणो। संकमो असंखेज्जगुणो। संतकम्ममसंखेज्जगुणं। [5]एव सम्मामिच्छत्तस्स।

अणंताणुबंधीणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। संकमो असंखेज्जगुणो। [6]उदयो असंखेज्जगुणो। बंधो असंखेज्जगुणो। [7]संतकम्ममसंखेज्जगुणं।

कोहसंलणस्स जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। उदयो असंखेज्जगुणो। बंधो असंखेज्जगुणो। [8]संकमो असंखेज्जगुणो। संतकम्मंमसंखेज्जगुणं। [9]एवं माणमाया-संजलण-पुरिसवेदाण वंजणदो च अत्थदो च कायव्वं। लोहसंजलणस्स वि एसो चेव आलावो। णवरि अत्थेण णाणत्तं, वंजणदो ण किंचि णाणत्तमत्थि।

[10]इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोगाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। संकमो असंखे-गुणो। [11]बंधो असंखेज्जगुणो। उदयो असंखेज्जगुणो [12]संतकम्ममसंखेज्जगुणं।

हस्स-रदि-भय-दुगुछाणं जहण्णिया पदेसुदीरणा थोवा। उदयो असंखेज्जगुणो। बंधो असंखेज्जगुणो। [13]संकमो असंखेज्जगुणो। संतकम्ममसंखेज्जगुणं।

(१) पृ० ३५४। (२) पृ० ३५५। (३) पृ० ३५६। (४) पृ० ३५७। (५) पृ० ३५८। (६) पृ० ३५९। (७) पृ० ३६०। (८) पृ० ३६१। (९) पृ० ३६२। (१०) पृ० ३६३। (११) पृ० ३६४। (१२) पृ० ३६५। (१३) पृ० ३६६।

## २ अवतरण सूची

| पुस्तक १० | | पुस्तक १० | | पुस्तक ११ | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रमाक | पृ० | क्रमाक | पृ० | क्रमाक | पृ० |
| अ १. अपक्वयाचनमुदीरणा | २ | क २. कालेन उवायेण | २ | अ १. अपक्वपाचनमुदीरणा | २ |

## ३ ऐतिहासिक नाम सूची

### पुस्तक १०

| | पृ० | | पृ० | | पृ० |
|---|---|---|---|---|---|
| उ उच्चारणाचार्य | १८० | च चूर्णिसूत्रकार | ५, ९, ७१ | स सूत्रकार | ४, १८७, १८८ |
| ग गुणधराचार्य | ३ | व व्याख्यानाचार्य | १८८ | | |

### पुस्तक ११

| | पृ० | | पृ० | | पृ० |
|---|---|---|---|---|---|
| उ उच्चारणाचार्य | ४, ८७, १३५, १८१, ३०१ | च चूर्णिसूत्रकार | २०८ | स सूत्रकार | २९४ |

## ४ ग्रन्थनामोल्लेख

### पुस्तक १०

| | पृ० | | पृ० | | पृ० |
|---|---|---|---|---|---|
| उ उच्चारणा | ११, ६५, ७१, ९३, १००, १२८, १४०, १४३, १४९, १६२ | उ उच्चारण | ५२, ६०, ६६, ७०, ७७, ८१, १८१, २०८, २१८, २२३, २२८, २३५, २४०, २५४, २७६, २९४ | तदो उच्चारणा सामित्त मोत्तूण सुत्त सामित्तमण्णारिस घेत्तूण पयदप्पाबहुअसमत्थणमेद कायव्वमिदि ण किंचि विरुद्धं | २९४ |
| क कषाय पाभृत | २ | च चूर्णिसूत्र | १३५ | | |
| च चूर्णिसूत्र | ४, १४९, १८७ | | | | |

## ५ न्यायोक्ति

### पुस्तक ११

पृ०

जहा उद्देसो तहा णिद्देसो १८१

# ६ गाथा-चूर्णिसूत्रगत शब्दसूची

## पुस्तक १०

## पुस्तक ११

सूचना—इस शब्दसूची मे कध, तह, एव, च, य, धाव, ताव, केवडियं, केवचिरं, वि, मि इत्यादि शब्दोका सग्रह नही किया गया है।

## ७. जयधवलागत-पारिभाषिकशब्दसूची

सूचना—यहाँ मात्र वे पारिभाषिक शब्द लिए गये है जिन की मूल मे परिभाषा दी है—

### पुस्तक १०



### पुस्तक ११



•